KERALA JYOTI

Vol. 23 1988-89 G. K .V. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

११०२९२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

FREE
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार
110272

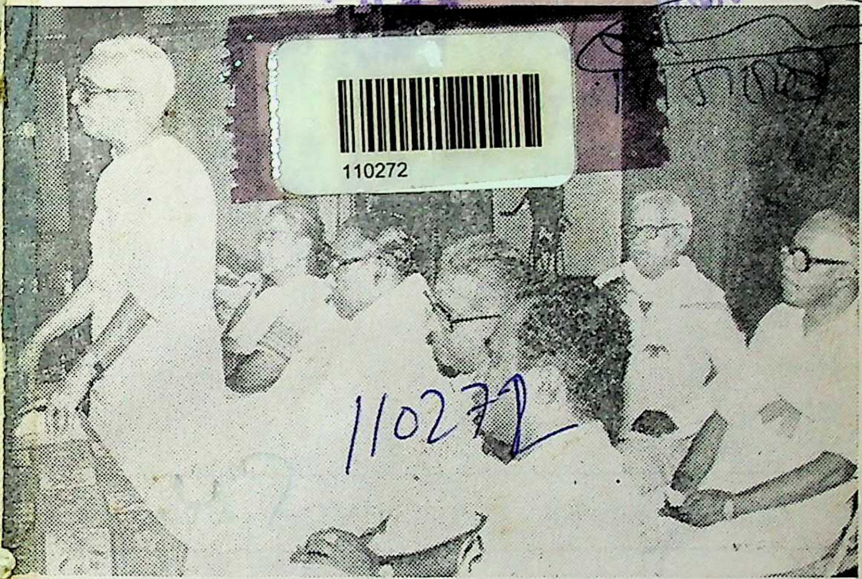

नवीकरण पाठ्यक्रम का समापन.

प्रमाण पत्र वितरण सम्मेलन का उद्‌घाटन कर रहे हैं केरल विधान सभा के विरोधी दल के अध्यक्ष एवं केरल के भूतपूर्व मुख्य मंत्री श्री. के. करुणाकरन। बैठे हैं प्रथम पंक्ति (बायें से) प्रो० पी. लक्ष्मीकुट्टी अम्मा, श्री. ए. माधवन, श्री. के. बालकृष्णन और सांसद प्रो० के. वी. तोमस। द्वितीय पंक्ति (दायें से) श्री. एम. के. वेलायुधन नायर और श्री. के पी. के. पिषारटी।

केरल हिन्दी प्रचार सभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

* प्रधान संपादक
प्रो० पी. जे. जोसफ़

* संपादक
श्री. के. जी. बालकृष्ण पिल्लै

* सह संपादक
श्री. आर. सुकुमारन नायर

* संपादक मण्डल
प्रो० एम. जनार्द्दनन पिल्ले
प्रो. सी. जी. राजगोपाल
श्री० के वी. कृष्णनकुट्टी
डा० एस. सी. चन्द्रन
डा० एन. जो. देवकी
श्री. एम. के. वेलायुधन नायर

* विज्ञापन दर

		मासिक	वार्षिक
आवरण पृष्ठ 4	रु.	500 00	5000 00
आवरण पृष्ठ 2 एवं 3	रु.	400 00	4000 00
साधारण पृष्ठ पूरा	रु.	300 00	3000 00
साधारण पृष्ठ $\frac{1}{2}$	रु.	175 00	1750 00
साधारण पृष्ठ $\frac{1}{4}$	रु.	100 00	1000 00

संपर्क करें — मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम-695 014

लेखकों से निवेदन

हिन्दी प्रचार, हिन्दी शिक्षण, भारतीय भाषायें, भारतीय साहित्य, भारतीय संस्कृति जैसे विषयों पर लिखे गये उच्च स्तरीय सचित्र लेखों व संगोष्ठी समाचारों का स्वागत किया जायेगा।

हिन्दीतर प्रान्तों की सांस्कृतिक, साहित्यिक, कलात्मक विशेषताओं पर लिखी गयी मौलिक और अनूदित रचनाओं को और हिन्दीतर भारतीय भाषाओं की उत्तम रचनाओं के अनुवादों को प्राथमिकता दी जायेगी।

पांडुलिपियां साफ अक्षरों में लिखकर या टाइप करके भेजें। कार्बन प्रतियां स्वीकृत नहीं होंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरभाष : 61378 और "जय हिन्दी"

केरलज्योति

पुष्प 23
दल 1

एक प्रति—1 रु० 50 पै०
वार्षिक—15 रु०

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका

अप्रैल 1988

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

संपादकीय

जनभाष ही राजभाषा हो

केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा फरवरी-मार्च 1988 में आयोजित हिन्दी साहित्य-कला प्रतियोगिताओं का औपचारिक उद्‌घाटन करते हुए अखिल भारतीय कांग्रेस के महामंत्री एवं संसदीय राजभाषा समिति के सदस्य श्री. नरेशचन्द्र चतुर्वेदा द्वारा भाषा संबन्धी जो उद्‌गार व्यक्त किये वे इस अंक में प्रकाशित हैं। उनका कथन है कि स्वतंत्रता अभियान के दो लक्ष्य थे। एक था बाहरी बंधनों से मुक्ति। दूसरा था आन्तरिक बंधनों से मुक्ति। बाहरी बंधन से हमें छुटकारा मिल गया है। आन्तरिक बंधन हमें अभी जकडे हुए हैं।

आन्तरिक बंधनों में प्रमुख है विदेशी भाषा का बंधन। भारत में जहाँ अंग्रेज़ी जाननेवालों की संख्या पाँच प्रतिशत से कम मानी जाती है आज भी शासन का मुख्य अंश विदेशी भाषा अंग्रेज़ी में चलता है। इस बंधन से मुक्ति पाने केलिए हम ने राजभाषा नियम तो बनाये। पर उन नियमो के पालन में तीव्रता नहीं आ रही है।

श्री. चतुर्वेदी ने इस बात की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है कि जनभाषा और राजभाषा का फ़र्क केवल गुलाम राष्ट्रों में ही पायी जाती है। स्वतंत्र राष्ट्रों में जनभाषा ही राजभाषा हुआ करती है। यह तथ्य हमें यह सोचने केलिए विवश कर देती है कि हम किस सीमा तक आज भी गुलाम बने हुए हैं। इन्डोनेशिया, तुर्की, रूस जैसे देशों ने भाषा समस्या को कब के ही सुलझा लिया। हम आज भी उलझे हुए हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में

दक्षिण में हिन्दी का व्यापक प्रचार हो 3
श्री. के. करुणाकरन
दक्षिण भारत हिन्दी को स्वीकार करे 6
श्री. ए. माधवन
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार में बहुत पीछे है 8
श्री. के. बालकृष्णन
हिन्दी खादी का पुराना संबंध 10
प्रो॰ पी. लक्ष्मीकुट्टी अम्मा
हिन्दी प्रचारक नवीकरण पाठ्यक्रम 12
जनभाषा और राजभाषा में अंतर न रहे 15
श्री. नरेशचन्द्र चतुर्वेदी
भाषा द्वारा ही राष्ट्रीय एकता संभव है 23
डा॰ रुद्रप्रताप सिंह
हिन्दी द्वारा नयी पीढी में देश प्रेम उत्पन्न करें 28
श्री. ए. नीललोहितदासन नाडार
हिन्दीतर साहित्यों को हिन्दी में प्रवेश मिले 30
महाकवि एम. पी. अप्पन
हिन्दी माध्यम से कलात्मक प्रतिभायें विकसित करें 32
श्री टी. आर सुकुमारन नायर
हिन्दी-साहित्य-कला-प्रतियोगितायें—1987–88 34
मेरी माँ की साडी 40
मूल : श्री. गोपाल होन्नालगेरे
अनु : डा॰ बीना शर्मा

जनभाषा को राजभाषा बनाने का काम केवल सरकार पर छोडना ठीक नहीं होगा । जनतंत्र में हर नागरिक का यह कर्तव्य बन जाता है कि वह राष्ट्र के लक्ष्यों की पूर्ति के लिए प्रयत्न करे । स्वैच्छिक संस्थाओं को, विशेष कर हिन्दी प्रचार संस्थाओं को इस दिशा में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है । जैसे संसदीय राजभाषा उपसमिति के उपाध्यक्ष डा॰ रुद्रप्रताप सिंह ने उक्त सम्मेलन में बताया, अब तक हिन्दी प्रचार संस्थायें राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी का प्रचार करती रही हैं, अब उन्हें राजभाषा के रूप में भी हिन्दी का प्रचार करना है ।

यह अत्यंत उचित हुआ कि इस विषय पर स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं का ध्यान आकृष्ट करने केलिए केन्द्र सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा संस्थापित अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ ने मार्च 1988 में नयी दिल्ली के हिमाचल भवन में एक द्विदिवसीय संगोष्ठी आयोजित की जिस में संघ की बीसों सदस्य संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया । ये संस्थायें राष्ट्रीय महत्व की संस्थायें हैं जिन की स्थापना से महात्मा गांधी, महामना मदन मोहन मालवीय,

(शेष पृष्ठ 39 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

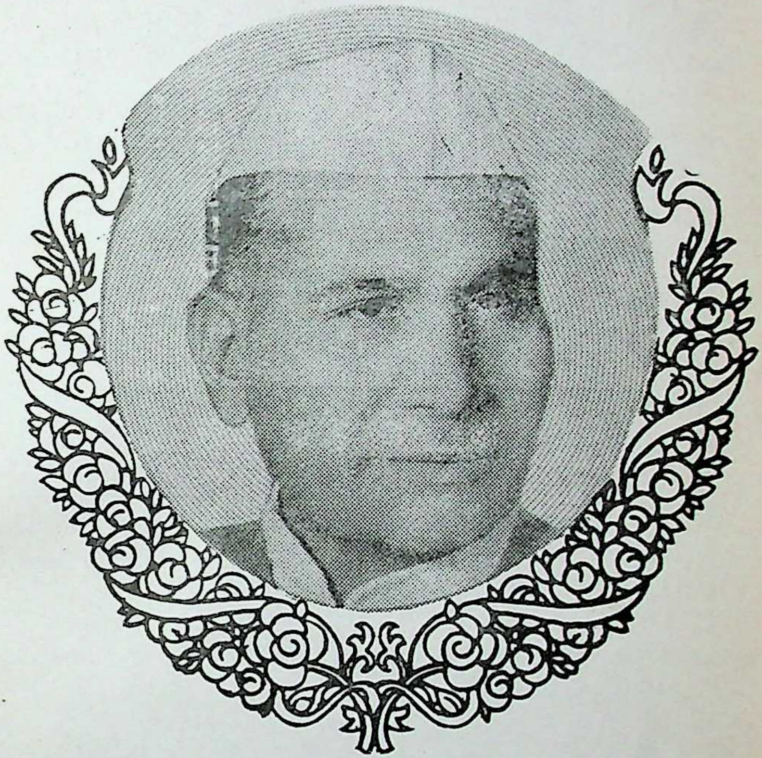

"हम मातृभूमि के सैनिक हैं आजादी के मतवाले हैं"

पं० सोहनलाल द्विवेदी

[1905—1988]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

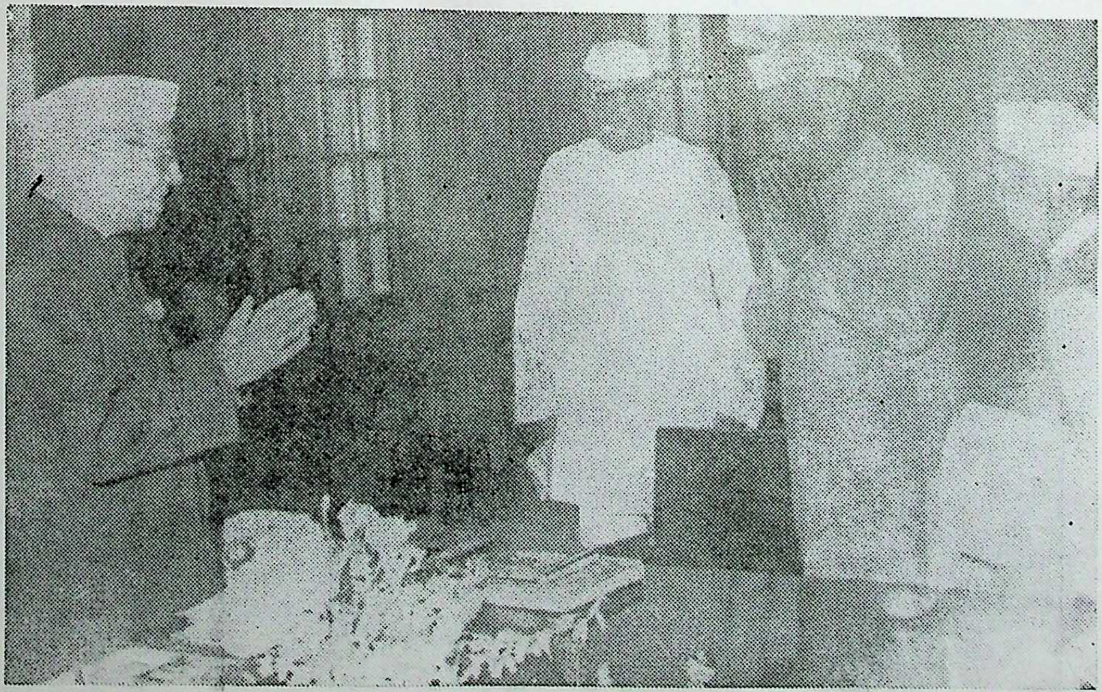

राष्ट्र शिल्पि पं० जवाहरलाल नेहरु, लालबहादूर शास्त्री एवं उमाशंकर दीक्षित के साथ गांधीवादी विचारक एवं राष्ट्रीय नवोन्मेष के कविवर पद्मश्री सोहनलाल द्विवेदी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रचारक नवीकरण पाठ्यक्रम के प्रमाण-पत्र वितरण का उद्घाटन केरल विधान सभा के विरोधी दल के नेता एवं केरल के भूतपूर्व मुख्य मंत्री श्री. के. करुणाकरन कर रहे हैं। पास खडे हैं (बायें) श्री. के. एम. सामुवल, श्री. ए. माधवन, श्री. एम. के वेलायुधन नायर और प्रो-पी. लक्ष्मीक्कुट्टी अम्मा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

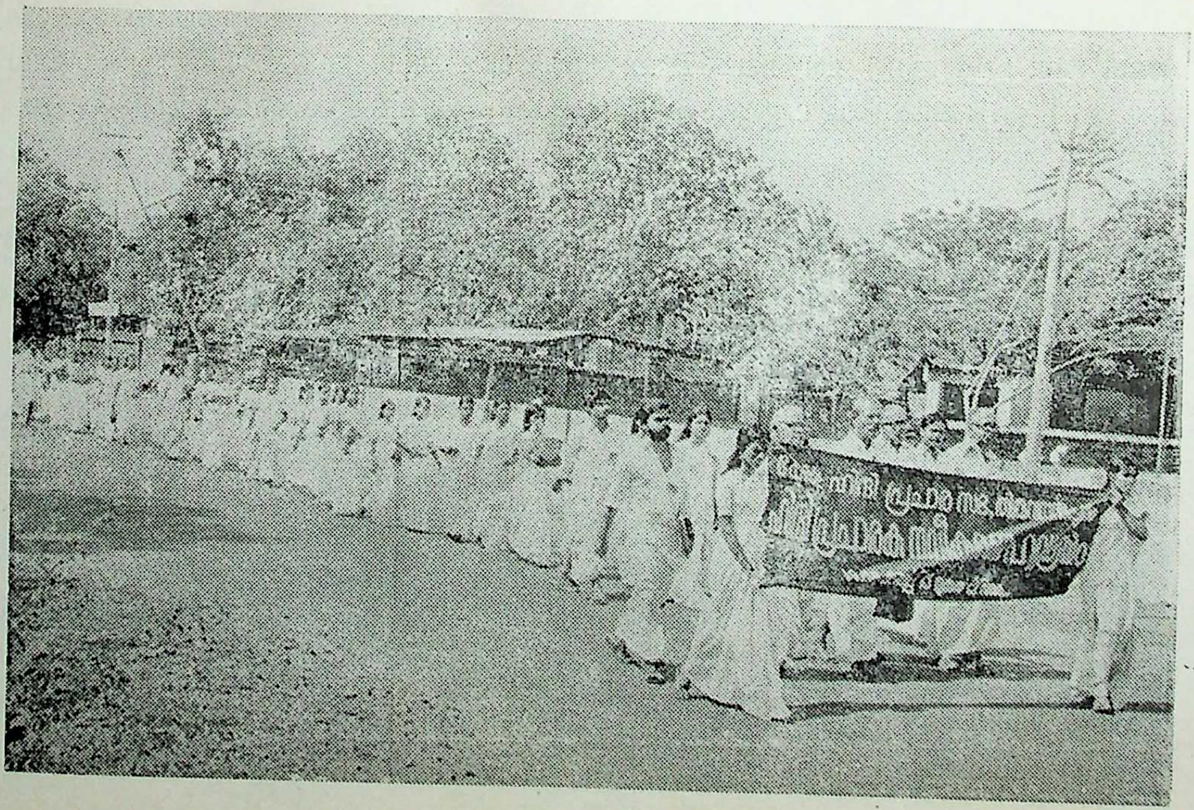

केरल हिन्दी प्रचार सभा के तत्वावधान में तृश्शूर में आयोजित हिन्दी प्रचारक नवीकरण पाठ्यक्रम के प्रतिभागी नगर के प्रमुख मार्ग से भारतीय भाषा जुलूस निकालते हुए। नेतृत्व कर रहे हैं (दायें से) श्री. के. केशवन नायर, श्री. एम. के. वेलायुधन नायर, श्री. के. एम. सामुवल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरस्कार वितरण समारोह

उद्घाटन भाषण देते हुए केरल के खेल एवं युवाकार्य मंत्री श्री. ए. नीललोहित दासन नाटार। बैंठे हैं (दायें से) प्रॉ० पी. जे. जोसफ (अध्यक्ष, केरल हिन्दी प्रचार सभा) श्री. टी. आर. सुकुमारन नायर (अध्यक्ष, केरल संगीत नाटक अकादमी और महाकवि श्री. एम. पी. अप्पन)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

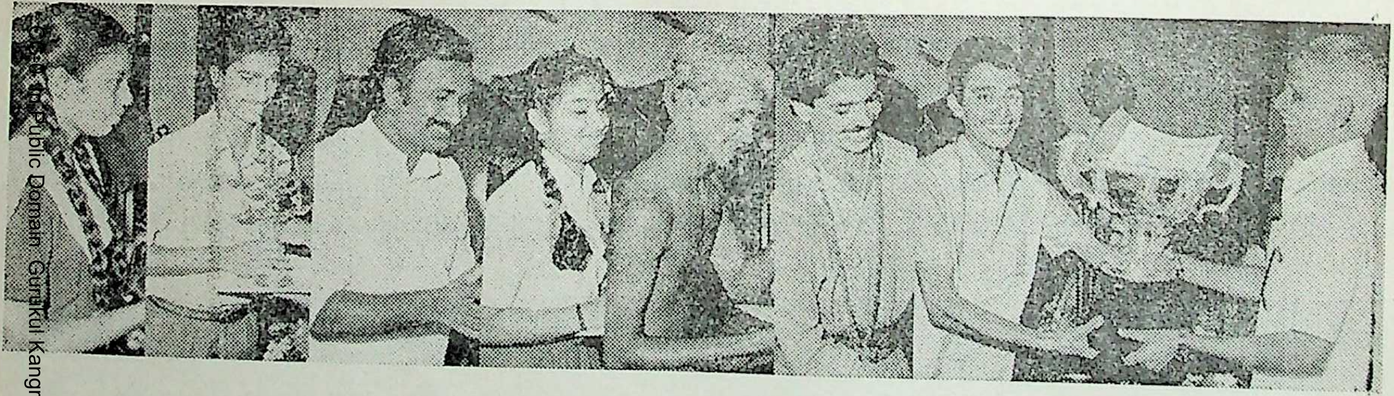

नाटक, देशभक्तिगान प्रतियोगिताओं के विजेता पुरस्कार पा रहे हैं केरल संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष श्री. टी. आर. सुकुमारन नायर के कर कमलों से ! (दायें से) श्री. पी. के. सनलकुमार (गुरुवायूरप्पन कॉलेज, कोषिक्कोट), श्री. बी. जयकुमार (हिन्दी स्नातकोत्तर केन्द्र, तिरुवनन्तपुरम), श्री. दिव्येशकुमार (गुरुवायूरप्पन कॉलेज, कोषिक्कोट), कु. श्रीति एस. नायर (केन्द्रीय विद्यालय, पट्टम), श्री. जी. रघुनाथन नायर (केन्द्रीय विद्यालय, पट्टम) श्री. रजु जोसफ (मार इवानियोस कॉलेज, तिरुवनन्तपुरम) और कु० सुचेता छडगा (केन्द्रीय विद्यालय, पट्टम)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य प्रतियोगिताओं के विजेता श्री. टी. आर सुकुमारन नायर से पुरस्कार ग्रहण कर रहे हैं। (दायें से) आर. श्रीकला (सरकारी विमेन्स कालेज, तिरुवनन्तपुरम), एल. शोभा (एन. एस. एस. विमेन्स कालेज, तिरुवनन्तपुरम) श्री. राजीवकुमार, डोनिया जोर्ज (मार इवानियोस कॉलेज, तिरुवनन्तपुरम), एम. जी. जयश्री (सेन्ट तेरेसास कालेज, एरणाकुलम) शान्ति नायर (महाराजास कालेज, एरणाकुलम), सविता श्रीवास्तव, सुनिता नांचिया (सेन्ट तेरेसास कालेज, एरणाकुलम), सीमा नंपियार और सी. गायत्री (प्रोपिडेन्स विमेन्स कालेज, कोषिक्कोट)

CC-0. Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिण में हिन्दी का व्यापक प्रचार हो

श्री. के. करुणाकरन्
विरोधी दल के नेता, केरल विधान सभा

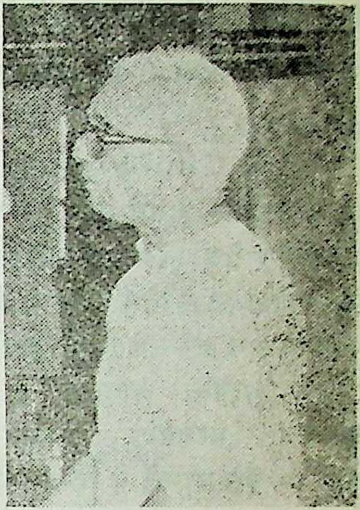

श्री. के. करुणाकरन

[केन्द्र सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सहयोग से केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा —13-3-1988 से 27-3-1988 तक तृशूर में आयोजित हिन्दी प्रचारक नवीकरण पाठ्यक्रम के प्रमाण-पत्र वितरण सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए 27-3-1988 को दिये गये भाषण का सारांश ।]

दक्षिण भारत के प्रान्तों को हिन्दी अध्ययन में अधिक रुचि दिखानी है। इस बात का मुझे खेद है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के चालीस वर्ष बाद भी यह बात दुहरानी पड रही है। भाषा आशयों के आदान-प्रदान के लिए और शिक्षा के लिए

दक्षिण भारत के प्रान्तों को हिन्दी अध्ययन में अधिक रुचि दिखाना है।

आवश्यक है। शिक्षा के माध्यम के स्वरूप में हिन्दी का स्थान प्रमुख है। इसको समझ कर हिन्दी के अध्ययन अध्यापन का प्रबन्ध किया जाना है। संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी का स्थान और भी प्रमुख है। दक्षिण भारत का, विशेष कर केरल का भविष्य आशयों के पारस्परिक संप्रेषण की सुविधा पर निर्भर है।

केरल जैसे प्रान्तों में जहाँ शिक्षित युवकों की बेकारी बढ रही है, हिन्दी का विशेष महत्व है। केरल के युवक सभी प्रकार के का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिण भारत का, विशेषकर केरल का भविष्य आशयों के पारस्परिक संप्रेषण की सुविधा पर निर्भर है।

करने में अत्यन्त समर्थ माने जाते हैं। कई केरलीय युवक उत्तर भारत में जीवितोपार्जन करते हैं। इन प्रांतों में जीवनयापन करने के लिए हिन्दी का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। राजस्थान, मध्यप्रदेश, बिहार, उत्तरप्रदेश जैसे प्रान्तों मे हिन्दी को इस हद तक अपनाया है कि वहाँ के अंग्रेजी जाननेवालों से भी अंग्रेज़ी में प्रश्न पूछे तो उत्तर हिन्दी में मिलता है। इस स्थिति में हिन्दी का अध्ययन हमारे स्वार्थ की सिद्धि के लिए भी आवश्यक है। पहले हिन्दी में बोलने की क्षमता हमें प्राप्त करनीहै। साथ ही साथ ज्ञानार्जन के साधन के रूप मे भी हमें हिन्दी का अध्ययन और प्रचार करना है।

स्वतंत्रता संग्राम के समय अंग्रेजों से लडने के लिए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने जो रचनात्मक कार्यक्रम बनाये उन में हिन्दी प्रचार का प्रमुख स्थान था। दीर्घ वीक्षण से गांधीजा ने स्वतंत्र भारत के भविष्य का स्पष्ट ढांचा ध्यान में रखकर, स्वतंत्र भारत के नवनिर्माण की नींव डालने के लिए ये रचनात्मक कार्यक्रम बनाए थे।

तृशूर में स्वतंत्रता संग्राम के समय ही दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के नेतृत्व में हिन्दी प्रचार आरंभ हुआ था। उस समय हिन्दी प्रचार के केन्द्र स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों के मन्दिर माने जाते थे। इस सम्मेलन में उपस्थित प्रो० पी. लक्ष्मीकुट्टी अम्मा उस समय दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा और राष्ट्रीय अभियान का प्रतीक थीं। अनेक लोगों को हिन्दी की ओर आकृष्ट करने में और हिन्दी सिखाने में श्रीमती लक्ष्मीकुट्टी अम्मा और उनके साथियों ने महत्व-पूर्ण कार्य किया है। केरल में हिन्दी का व्यापक प्रचार करने का कार्य

यदि भाई भाई आपस में बात नहीं कर सकते हैं तो देश की एकता कैसे बनी रह सकेगी? पारस्परिक सपर्क की भाषा ही भारत की भावात्मक एकता और अखण्डता की बुनियाद है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज केरल हिन्दी प्रचार सभा भी कर रही है। तृशूर में सभा का एक निजी भवन बनाने में हमें पूर्ण सहयोग देना है।

हिन्दी का प्रचार हमारे देश के लिए अनुपेक्षणीय है। यदि भाई भाई आपस में बात नहीं कर सकते तो देश की एकता कैसे बनी रह सकेगी? पारस्परिक संपर्क की भाषा ही भारत की भावात्मक एकता और अखण्डता की बुनियाद है।

आज भी हमें परभाषा अंग्रेज़ी का अश्रय लेना पडता है। वह अंतर देशीय भाषा नहीं। उसे हमें गुलामी की भाषा के रूप में देखना है। इस स्थिति में हिन्दी प्रचार के सभी श्रमों को प्रोत्साहित करना हर देशप्रेमी का कर्तव्य है। आशा करता हूँ कि सब इस में सहयोग देंगे।

हिन्दी सीखनेवालों और सिखानेवालों का लक्ष्य निजी स्वार्थ की पूर्ति नहीं हिन्दी का उज्ज्वल भविष्य रहे। उन्हें चाहिए कि एक उपासना के रूप में हिन्दी प्रचार का व्रत ले लें।

जय हिन्द

*

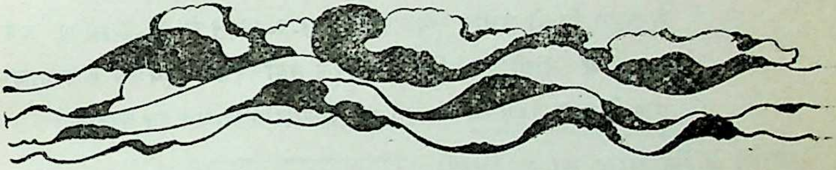

प्रान्तीय शिक्षा और साहित्य का विकास प्रान्तीय भाषाओं के द्वारा ही होगा, लेकिन एक प्रान्त दूसरे प्रान्त से मिले तो पारस्परिक विचार-विनिमय का माध्यम हिन्दी ही होनी चाहिए।

लोकमान्य बालगंगाधर तिलक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

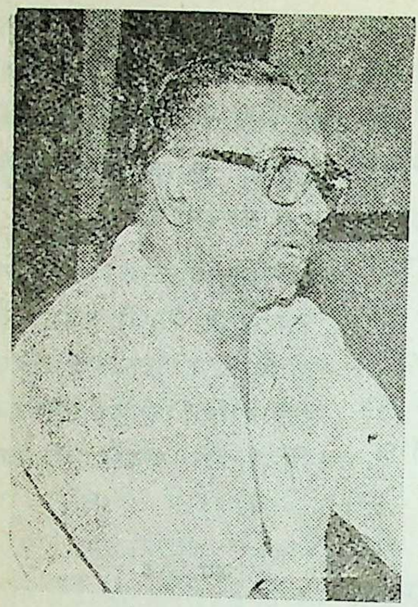

दक्षिण भारत हिन्दी को स्वीकार करे ।

श्री. ए. माधवन
अध्यक्ष, कोच्चिन देवस्वम बोर्ड

श्री. ए. माधवन

[केन्द्र सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सहयोग से केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा 13-3-1988 से 27-3-1988 तक तृश्शूर में आयोजित हिन्दी प्रचारक नवीकरण पाठ्यक्रम के प्रमाण-पत्र वितरण सम्मेलन में दिये गये अध्यक्षीय भाषण का सारांश]

लगता है कि आज भी न हिन्दी को उचित प्रोत्साहन दिया जाता है न हिन्दी का व्यापक प्रचार हो रहा है। उत्तर भारतीयों केलिए हिन्दी एक नशा है। दक्षिण भारतीयों को व्यवहार क्षम राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को स्वीकार करना है। यह स्वीकृति वांछित मात्रा में नहीं हो पायी है। कुछ दिन पहले देश में कहीं कहीं हिन्दी विरोधी आन्दोलन चला। केरल में इसका बडा असर

उत्तर भारतीयों केलिए हिन्दी एक नशा है। दक्षिण भारतीयों को व्यवहार क्षम राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को स्वीकार करना है।

नहीं हुआ। तो भी यह इस बात का लक्षण है कि हम कई प्रकार की संकुचित विचारधाराओं में उतर रहे हैं। इन संकुचित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन संकुचित विचारधाराओं से ऊपर उठ कर हमें उन कार्यक्रमों को आगे बढाना है जिन्हें भारत के राष्ट्रीय नवोत्थान के अग्रणी सेनानियों ने हमारे समक्ष रखा है।

विचारधाराओं से ऊपर उठ कर हमें उन कार्यक्रमों को आगे बढाना है जिन्हें भारत के राष्ट्रीय नवोत्थान के अग्रणी सेनानियों न हमारे समक्ष रखा है।

पता चला कि केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा आयोजित हिन्दी प्रचारक नवीकरण पाठ्यक्रम अत्यन्त सफल रहा है। ऐसे कार्यक्रम बहुत उपयोगी हैं। लिपि सुधार, भाषा सुधार जैसे विषयों पर भी समय समय पर चर्चा करनी है।

तृशूर से हिन्दी का प्रचार व्यापक बनाने में अपना अंशदान देने केलिए मैं हमेशा तैयार रहूंगा।

हिन्दी ही हिन्दुस्तान के शिक्षित समुदाय की सामान्य भाषा हो सकती है, यह बात निर्विवाद सिद्ध है।

—श्री. महात्मा गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार में बहुत पीछे है

श्री. के. बालकृष्णन्
संपादक, एक्सप्रेस, तृशूर

[केन्द्र सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सहयोग से केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा 13-3-1988 से 27-3-1988 तक तृशूर में आयोजित हिन्दी प्रचारक नवीकरण पाठ्यक्रम के प्रमाण पत्र वितरण करते हुए दिये गये भाषण का सारांश]

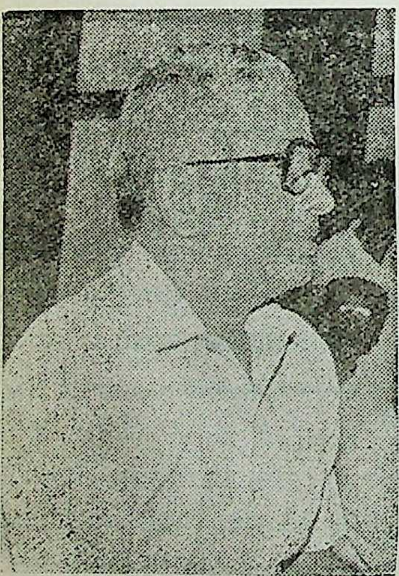

श्री. क. बालकृष्णन

यदि हिन्दी नहीं पढेंगे तो दक्षिण भारत के युवकों को बेकार भटकना पडेगा।

इस सम्मेलन में उपस्थित श्री. पीताम्बरन जी से मैं ने हिन्दी सीखी है। हिन्दी के प्रति मेरे मन में बडी श्रद्धा है। जैसे उद्घाटक और अध्यक्ष ने बताया, यह सत्य है कि दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार में बहुत पीछे है। यदि हिन्दी नहीं पढेंगे तो दक्षिण भारत के युवकों

हिन्दी और खादी हमारी राष्ट्रीयता के चिह्न हैं।

को बेकार भटकना पडेगा। आइ० ए० एस० जैसी परीक्षाओं में हिन्दी एक अविभाज्य घटक है। हिन्दी की अनभिज्ञता से कई उम्मीदवार इस क्षेत्र में पीछे रह जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी और खादी हमारी राष्ट्रीयता के चिह्न हैं। इस दृष्टि से हिन्दी का प्रचार हमें करना है। यह बोध हम उत्पन्न करना है। हिन्दी हमें अपनानी है।

केवल किताबी हिन्दी सीखने से काम नहीं चलेगा। जैसे 'स्पोकण इंग्लीश' के पाठ्यक्रम चलते हैं उसी प्रकार 'स्पोकण हिन्दी' केलिए पाठ्यक्रम चलाये जायें। त्तरउ भारत जानेवालों केलिए यह बहुत लाभकारी होगा।

हिन्दी में बोलने का अभ्यास नहीं करें तो उत्तर भारत में काम चलाना बहुत कठिन होगा। मेरे एक मित्र ने हिन्दी में विद्वान परीक्षा उत्तीर्ण की है। उनके साथ मैं दिल्ली गया। लेकिन वे हिन्दी में एक शब्द भी नहीं बोल सके। टूटी फूटी हिन्दी से मैं ने काम चलाया।

आंकडों से पता चलता है दूरदर्शन में हिन्दा रामायण देखनेवालों में अधिक सख्या दक्षिग भारतीयों की है।

मेरा सुझाव है कि केरल हिन्दी प्रचार सभा बोलचाल का हिन्दी के ह्रस्वकालीन पाठ्यक्रम भी आयोजित करे।

आंकडों से पता चलता है दूरदर्शन में हिन्दी रामायण देखने-वालों में अधिक संख्या दक्षिण भारतीयों की है। इस अवसर से लाभ उठा कर हिन्दी प्रेमियों को मिलकर आगे बढना है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार देश के सभी लोगों को साथ लेकर सद्भावना और प्रेरणा से इस प्रकार करना होगा कि वह देश की मिली-जुली संस्कृति तथा विज्ञान और टेक्नोलॉजी के विकास की अभिव्यक्ति का सर्वमान्य माध्यम बन सके।

—श्री० राजीव गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी खादी का पुराना संबंध

प्रो० पो. लक्ष्मीकुट्टी अम्मा
भूतपूर्व प्रधानाचार्य
सरकारी ट्रेइनिंग कॉलेज, तृशूर

[केन्द्र सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सहयोग से केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा 13-3-1988 से 27-3-1988 तक तृशूर में आयोजित हिन्दी प्रचारक नवीकरण पाठ्यक्रम के प्रमाण-पत्र वितरण समारोह में दिये गये आशीर्वाद भाषण का सारांश]

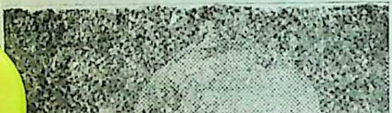

प्रो० पी. लक्ष्मीकुट्टी अम्मा

बडा कष्ट उठाकर मैं ने हिन्दी सीखी । पुस्तकें नहीं थीं । पढानेवाले नहीं थे ।

मुझे उन दिनों का स्मरण हुआ था जब करीब पचास वर्ष पहले प्रो० ए. चन्द्रहासन तृशूर में हिन्दी का प्रचार करते थे । तृशूर केन्द्र से दस लडकियाँ राष्ट्रभाषा विशारद की परीक्षा में शामिल हुई थीं । प्रमाण-पत्र स्वीकार करने के लिए उन्हें प्रो० चन्द्रहासन मद्रास ले गये थे । प्रो० चन्द्रहासन ने ही हिन्दी एम. ए. की परीक्षा देने के लिए मुझे प्रेरित किया था । वे ही मुझे बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय ले गये थे । उन्होंने इलाहाबाद में शोध करने की सुविधा मुझे दिलायी थी ।

उन दिनों ब्रिटिश सरकार से हिन्दी को कोई मान्यता नहीं मिलती थी । बडा कष्ट उठाकर मैंने हिन्दी सीखी । पुस्तकें नहीं थीं । पढानेवाले नहीं थे । उन दिनों केरल के शीर्षस्थ हिन्दी प्रचारक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे स्व० प्रो० ए. चन्द्रहासन और स्व० के. वासुदेवन पिल्लै । वेलायुधन मास्टर और विमलजी का भी मैं स्मरण करती हूं जिन्होंने हिन्दी की तपोनिष्ठ सेवा की थी ।

यह देखकर मुझे प्रसन्नता हो रही है कि नवीकरण पाठ्यक्रम के प्रतिभागी जो भविष्य में हिन्दी प्रचार करने की तैयारी में हैं, सब के सब सफेद खादी का वस्त्र पहने हुए हैं । यह दृश्य पुन: उन पुराने हिन्दी

मोटी खादी का वस्त्र पहनना हमारे लिए गौरव की बात थी ।

प्रचारकों की याद दिला देता है जो हिन्दी के साथ खादी को भी अपनाते थे । पुरुष खादी टोपी भी पहनते थे । उन दिनों इतन महीन खादी नहीं मिलती थी । मोटी खादी का वस्त्र पहनना हमारे लिए गौरव की बात थी । नौकरी नहीं मिलती थी । जो भी तैयार होते उन्हें हिन्दी सिखाते थे । विद्यालयों में हिन्दी की मान्यता नहीं थी । किसी किसी के घर के बरामदे पर बैठ कर हिन्दी पढते पढाते थे । बाद को विवेकोदयम स्कूल का एक छोटा कमरा हिन्दी कक्षा चलाने केलिए मिला । यह जानकर बडी खुशी हुई कि आपका नवीकरण पाठ्यक्रम भी वहीं चला ।

हिन्दी का अध्ययन करते समय ही आप हिन्दी का अध्यापन भी कर सकते हैं । ऐसा करने से आप का उच्चारण सुधर जाएगा ।

मेरा सुझाव है कि केरल हिन्दी प्रचार सभा हिन्दी प्रचार केलिए उत्तर भारत में अध्ययन यात्रा की योजना बनायें । ऐसी योजना को कार्यान्वित करने में भारत सरकार का अनुदान भी शायद मिलेगा ।

हिन्दी शिक्षित वर्गों के बीच समान माध्यम ही नहीं, बल्कि जनसाधारण के हृदय तक पहुँचने का द्वार बन सकती है ।

महात्मा गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रचारक नवीकरण पाठ्यक्रम

केन्द्र सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय की सहायता से केरल हिन्दी प्रचार सभा ने 13-3 1988 से 27-3-1988 तक तृशूर के विवेकोदय हाई स्कूल में एक हिन्दी प्रचारक नवीकरण पाठ्यक्रम आयोजित किया। अनुभवी हिन्दी प्रचारक एवं सभा की निर्वाहक समिति के सदस्य श्री. के. केशवन नायर पाठ्यक्रम के निदेशक रहे।

पाठ्यक्रम में हिन्दी अध्यापन की नई प्रणालियों पर विशद चर्चा हुई। निम्न लिखित विद्वानों ने पाठ्यक्रम में विविध विषयों पर चर्चा की।

डा० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर
भूतपूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
कोचिन विश्वविद्यालय
26/2035 कॉलेज लेइन
तिरुवनन्तपुरम–695 001

प्रो० पी. लक्ष्मीकुट्टी अम्मा
सेवानिवृत्त प्रधानाचार्या
सरकारी ट्रेइनिंग कॉलेज, तृशूर

डा० वी. गोविन्द शेणाय
सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य
V/13-ए ओल्लूरकरा
तृशूर - 673 635

डा० एच. परमेश्वरन
प्रोफेसर, महाराजास कॉलेज,
एरणाकुलम

श्री. ई. वासुदेव मेनोन
शिक्षक, हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान
तिरुवनन्तपुरम–695 033

डा० एम. मलिक मुहम्मद
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
कोषिक्कोट विश्वविद्यालय
कोषिक्कोट–673 635

डा० महादेव वासूतकर
रीडर, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान,
बाग अंबर पेट, 2-2-12/5
हैदराबाद–560 768

डा० सुधांशु चतुर्वेदी
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
केरलवर्मा कॉलेज, तृश्शूर

श्री. पी. नारायणन
सन्यासी परम्प्, नीलीक्काट
पालक्काट–678 002

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री पी. जी कामत
दयानन्दम, चेम्पुक्काव
तृशूर–680 020

डा० के. एम. मालती
प्रोफेसर, सरकारी आर्ट्स
एण्ड साइन्स कॉलेज
कोषिक्कोट–673 018

श्री. पी. बालचन्द्रन
शिक्षक, क्षेत्रीय हिन्दी प्रशिक्षण
संस्थान, रामवर्मपुरम,
तृशूर–680 631

डा० एस. राजप्पन नायर
कार्यकारी प्रधानाचार्य
सरकारी ट्रेइनिंग कॉलेज
तृशूर

डा० जी. गोपीनाथन
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
कोषिक्कोट विश्वविद्यालय
कोषिक्कोट 673 635

श्री. के वी. कृष्णन कुट्टी
उप निदेशक, जनसंपर्क विभाग
केरल सरकार,
तिरुवनन्तपुरम–695 001

प्रो० टी. के. भास्कर वर्मा
अध्यक्ष हिन्दी विभाग
सरकारी वनिता कॉलेज
तिरुवनन्तपुरम–695 014

प्रो० एम. के. सुकुमारन नायर
सुप्रभा, पालकुलंगरा
तिरुवनन्तपुरम–695 024

श्री. के जी. बालकृष्ण पिल्लै
प्रशासन अधिकारी
कृषि विश्वविद्यालय
वेल्लायणी, तिरुवनन्तपुरम

श्री. वी. के. सुब्रह्मण्यन नंपूतिरी
प्रधानाचार्य
साहित्याचार्य महाविद्यालय
केरल हिन्दी प्रचार सभा
तिरुवनन्तपुरम–695 014

श्री पी. रवि
राजभाषा अधिकारी
मण्डल रेल प्रबंधक कार्यालय
दक्षिण रेलवे
तिरुवनन्तपुरम–695 014

पाठचक्रम में केरल के विविध भागों से पचास प्रचारकों ने भाग लिया। पाठचक्रम का उद्घाटन 13-3-1988 को तृशूर नगरपालिका के अध्यक्ष श्री. बालन ने किया। समारोह में अधिवक्ता श्री. तेरंबिल रामकृष्णन अध्यक्ष रहे। डा० वी. गोविन्द शेणाय एवं प्रो० लक्ष्मिकुट्टी पिषारस्यार ने आशीर्वाद भाषण दिया। निदेशक श्री. के. केशवन नायर ने स्वागत भाषण दिया और सभा की कार्यकारिणी समिति के सदस्य श्री. के. के. गंगाधरन ने कृतज्ञता प्रकाशित की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

27 - 3 1988 को संगीत नाटक अकादमी भवन, तशूर में आयोजित प्रमाण-पत्र वितरण समारोह का उद्‌घाटन केरल विधान सभा के विरोधीदल के नेता एवं केरल के भूत-पूर्व मुख्य मंत्री श्री. के. करुणाकरन ने किया। कोचिन देवस्वम बोर्ड के अध्यक्ष श्री. ए. माधवन समारोह के अध्यक्ष रहे। मलयालम दैनिक 'एक्सप्रेस' के संपादक श्री. के. बालकृष्णन ने प्रमाण-पत्र वितरण किया। हिन्दी की विख्यात लेखिका प्रो० पी. लक्ष्मीक्कुट्टी अम्मा ने आशीर्वाद भाषण दिया। केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री श्री. एम. के. वेलायुधन नायर ने स्वागत भाषण दिया और सभा की निर्वाहक समिति के सदस्य श्री. के. के. गंगाधरन ने कृतज्ञता प्रकाशित की।

पाठ्यक्रम की एक विशेष उपलब्धि यह थी कि पाठ्यक्रम के अंत तक सभी प्रतिभागी खादीधारी हो गये। समापन दिवस पर प्रतिभागियों ने श्री. एम. के. वेलायुधन नायर के नेतृत्व में नगर के प्रमुख मार्ग से एक भारतीय भाषा जुलूस निकाली।

(समापन समारोह के मुख्य भाषणों के सारांश इस अंक में अन्यत्र प्रकाशित हैं।)

मानव का प्रकृति के साथ मानव का मानव के साथ और स्वात्म के साथ संबंध जो भाषा कराएगी वही विश्वभाषा होगी और वही विश्व साहित्य होगा।

—श्रीमती निर्मला देशपांडे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनभाषा और राजभाषा में अंतर न रहे

श्री. नरेशचन्द्र चतुर्वेदी

[महामंत्री, अखिल भारतीय कॉंग्रेस समिति एवं सदस्य, संसदीय राजभाषा समिति]

मैं तो राजभाषा का काम इस लिए नहीं करता हूँ कि यह संविधान में राजभाषा है। मैं तो राजभाषा के रूप में उसका एक विनम्र सेवक हूँ। जिस दिन राष्ट्रभाषा की स्वाधीनता केलिए एक संघर्ष शुरू किया था महात्मा गांधी के नेतृत्व में उसी दिन राष्ट्रभाषा के आन्दोलन से मैं भी जुड गया था

यह बात हमको बार-बार कचोटती है कि स्वतन्त्रता के चालीस वर्ष बीत जाने के बाद भी इस देश में हमें राज भाषा-राष्ट्रभाषा और संपर्क भाषा की व्याख्या करने में उलझना पडे।

अपने आप। क्योंकि भारतीय स्वाधीनता के संघर्ष में दो ही संघर्ष मुख्य थे। एक तो देश की आज़ादी और दूसरा देशभाषा का प्रयोग। यही तो मुख्य लडाई थी। एक में बाहरी बन्धनों से मुक्त होना था तो दूसरे में आन्तरिक बन्धनों से मुक्त हो जाना था। बाहरी बन्धन हम ने पन्द्रह अगस्त 1947 को समाप्त कर दिये। लेकिन आन्तरिक बन्धन अभी हमको थोडा बहुत जकड़े हुए हैं। यह बात हमको बार-बार कचोटती है कि स्वतन्त्रता के चालीस वर्ष बीत जाने के बाद भी इस देश में हमें राजभाषा राष्ट्र भाषा और संपर्क भाषा की व्याख्या करने में उलझना पडे। कोई कहता है संविधान में राजभाषा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजभाषा माने औफिशल लैंग्वेज। हम लोग उसे राष्ट्रभाषा कहते आये हैं। ज्यादा पढे-लिखे लोग अब दो शब्दों का प्रयोग करते हैं। एक राजभाषा का दफ्तर के संदर्भ में और एक राजाभाषा का आम जनता के संदर्भ में। लेकिन मुझे तोकोई फर्क नहीं मालूम पडता क्योंकि राज भाषा संपर्क भाषा और राष्ट्रभाषा

जो देश परधीन होते हैं, जो देश गुलाम होते हैं, जिनका शासन कोई दूसरा करता है और शासित कोई दूसरे होते हैं वहाँ की संपर्क भाषा राष्ट्रभषा और राजभाषा में फर्क होता है।

इनमें कोई मूलत: फर्क नहीं है। राजभाषा और संपर्क भाषा जन भाषा या राष्ट्रभाषा इनका फर्क कहाँ होता है? इनका अंतर केवल दो जगह पर देखा जा सकता है। जो देश पराधीन होते हैं, जो देश गुलाम होते हैं, जिनका शासन कोई दूसरा करता है, और शासित कोई दूसरे होते हैं वहाँ की संपर्क भाषा राष्ट्र भाषा और राजभाषा में फर्क होता है। जिस देश का शासन उस देश के निवासी स्वयं करते हो, शासक भी वही हो शासित भी वही हो, वहाँ पर इस प्रकार का फर्क नहीं होता।

अंग्रेज जब शासन करते थे तो इस देश की ओफ़िश्यल लैंग्वेज अंग्रेज़ी थी। लेकिन देश की भाषा अंग्रेज़ी नहीं थी। देश की भाषा तब भी हिन्दी, मलयालम, गुजराती, मराठी, तमिल, तेलुगु थीं और उन में केन्द्रीय भाषा के रूप में हिन्दी का ही स्थान सर्वोत्तम था। जब इसके पहले मुगलों का साम्राज्य था, क्योंकि वे भी बहुत दूर से आये थे उनके यहाँ ओफ़िश्यल लैंग्वेज फारसी थी। लेकिन उस दिन भी देश की भाषा हिन्दी थी। अकबर का साम्राज्य तो चलता था ऑफीस में, फारसी में। लेकिन देश की जनता गोस्वामी तुलसीदास का रामचरितमानस पढा करती थी, सूर के पद पढा करती थी, मीरा के पद पढा करती थी, कबीर के पद पढा करती थी।

मैं तो केरल की ही याद दिलाना चाहता हूँ। जब आठवीं शताब्दी में आदि शंकराचार्य केरल की इस पवित्र भूमि से निकल कर संपूर्ण भारत की यात्रा पर गये तो उन्होंने इस देश को क्या दिया? मैं समझता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हूँ पिछले बारह सौ वर्षों में इस भारत में एक आधुनिक क्रांति की है। उस पहली क्राति के कर्ता, दाता मुक्ति दाता या एकीकरण के एक मात्र संस्थापक मैं आदि शंकराचार्य को मानता हूँ जो कालटि जैसे छोटे गाँव से चलकर सारे हिन्दुस्थान में पहुँचे। संपूर्ण भारत को उन्होंने भौगोलिक रूप से, सामाजिक रूप से, धार्मिक रूप से, सांस्कृतिक रूप से, दार्शनिक रूप से प्रभावित किया और देश को एक रूप में संगठित किया। अगर उनका लक्ष्य इतना बडा न होता तो आज शंकराचार्य की जो चार गद्दियाँ दिखाई पडती हैं, हिन्दुस्थान के चारों क्षेत्रों में, वे नहीं होती। उन्होंने कभी नहीं कहा कि दक्षिण कहीं ओर है, पश्चिम कहीं ओर है, उत्तर कहीं ओर है और पूर्व कहीं ओर है। उनके दिमाग में तो भारत वर्ष का पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण चारों रूप बिलकुल एक थे। "एक हृदय हो भारत जननी" जब आप पढते हैं तो मुझे लगता है कि हजारों साल के लबे इतिहास मे 'एक हृदय हो भारत जननी' का प्रतिष्ठापक सबसे पहले भगवान शंकराचार्य थे जिन्होंने आज से, साढ़े ग्यारह सौ, बारह सौ वर्ष पहले इस कार्य को पूरा किया था। दक्षिण में भी गद्दी श्रृंगेरी मठ, पश्चिम में भी गद्दी द्वारिका पीठ, पूर्व में भी गद्दी जगन्नाथपुरी और उत्तर में भी गद्दी बदरी केदारनाथ का जोषी मठ। आखिरकार इतने बड़े एक संपूर्ण भारत की परिकल्पना और किस योगी, सन्यासी, महात्मा और विद्वान ने को हैं? उस पर आजतक कोई झगडा भी नहीं खडा हुआ।

संपूर्ण भारत को उन्होंने भौगोलिक रूप से, सामाजिक रूप से, धार्मिक रूप से सांस्कृतिक रूप से, दार्शनिक रूप से प्रभावित किया और देश को एक रूप में संगठित किया।

आज मैं आप की चित्रकला देख रहा था, म्यूसियम में। मैं ने कहा कि राजा रविवर्मा का, मुझे वह कक्ष दिखाइये जहाँ मैं अधिक से अधिक उनको देख सकूँ। राजा रविवर्मा के चित्रों को मैं ने देखा था। इस देश का बहुत ही महत्वपूर्ण हिन्दी पत्रिका 'सरस्वती' के पृष्ठों में। कोई मासिक पत्रिका थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक उसके बंगाली थे। संपादक उसके आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी थे और सुदूर दक्षिण के राजा रविवर्मा का चित्र प्रत्येक अंक में निकलता था। चित्र होता था राजा रविवर्मा का बनाया हुआ। कविता होती थी किसी हिन्दी के बहुत बडी कवि की। और पढते थे तो उसको लाखों कम

प्रकाशक उसके बंगाली थे। संपादक उसके आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी थे और सुदूर दक्षिण के राजा रविवर्मा का चित्र प्रत्येक अंक में निकलता था।

लोग! आज वह चित्रकला देखी तो मन प्रसन्नता से और भी भर गया। राजा रविवर्मा ने तो जितने चित्र बनाये संपूर्ण भारतीय संस्कृति की चेतना का उस में आत्मसात मिलता है। कहीं यह नहीं मालूम पडता कि भारत का एक सुदूर दक्षिण में बैठा हुआ व्यक्ति भारत की आत्मा को ही छूता हुआ दिखाई पडता है अपनी तूलिका से आधुनिक हिन्दी के महान संस्थापक थे आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी। मैं ने उनकी जीवनी लिखं थी बहुत दिन पहले शायद पेंती साल पहले, छत्तीस साल पहले तो आचार्य द्विवेदी ने कौन सा का किया था? आचार्य द्विवे इलहबाद से निकलनेवाली पत्रिक का संपादन करते थे, चित्र मँगवा थे यहाँ से, लेख मँगवाते थे सा हिन्दुस्थान के। न मालूम कितने कितने बडे विद्वानों से। आज गुजराती और मराठी ये तो पास पास के लोग हैं। लेकिन पूर्व ओडिया का रहनेवाला या बंगा या राज्यस्थान का रहनेवाला ज आपस में मिलते हैं तो वे भारती

लेकिन पूर्व में ओडिया व रहनेवाला या बंगाल व रहनेवाला या पश्चिम द्वारिका या राजस्थान व रहनेवाला जब आपस में मिल हैं तो वे भारतीय हिन्दी माध्यम से मिलते हैं दक्षिण और उत्तर के ज भारतीय मिलते हैं हिन्दी के माध्यम मिलते हैं

का रहनेवाला, पश्चिम में द्वारिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी के माध्यम से मिलते हैं। दक्षिण और उत्तर के जब भारतीय मिलते हैं तो हिन्दी के माध्यम से मिलते हैं। मैं ने बीसों बार यह बात पूछी है कि संपर्क भाषा की बात क्यों उठती है? संपर्क भाषा तो आज सात सौ वर्षों से हिन्दी है ही। अंग्रेज़ी, तो अठारहवीं शताब्दी तक इस देश में कोई जानता ही नहीं था। उन्नीसवीं शताब्दी में अंग्रेज़ी के जाननेवाले ·1% से शुरू हुए और ·05% से 1% तक डेढ सौ वर्षों में पहुँचे। लेकिन बदरी केदार से चलकर गढवाल से चलकर के रामेश्वरम का यात्रा करने वाले हिन्दी से काम चलाते थे। मेरी तो माँ अकेली आई थी। मैं तो थोडा बहुत अग्रेज़ी से काम कर लेता। लेकिन मेरी माता तो निरक्षर थी, हिन्दी में भी नहीं लिख पाती। और वह आज से पचास साल पहले तो रामेश्वरम की यात्रा करके गयी थी। संपूर्ण दक्षिण की यात्रा करके गयी थी। और हिन्दी में भी उसको व्रजभाषा आती है। खडीबोली उसको भी नहीं आती। जिसे आज सपर्क भाषा, राष्ट्रभाषा कहते हैं वह हिन्दी तो भारतवर्ष के हिन्दी क्षेत्र के लोग भी पूरी तरह से शुद्ध नहीं बोलते। मैं समझता हूँ वह काम तो दक्षिणवाले ज्यादा करते हैं। हिन्दी जितना शुद्ध लिखना बोलना दक्षिण के हिन्दी जानकार जानते हैं उतना उत्तर के लोग नहीं जानते। यह मैं हिन्दीभाषी होने के नाते कहता हूँ। क्यो? वे अपनी बोलियों का सम्मिश्रण कर देते हैं। अंग्रेज़ी अगर कोई भारतीय बोलता है तो शुद्ध बोलता है। लेकिन जब अंग्रेज बोलता है तो अशुद्ध बोलता है। ये बात सुनने में शायद आश्चर्य चकित करेगी। लेकिन असलियत यही है। हम जब मातृभाषा या स्वभाषा बोलते हैं तो अंतर से बोलते हैं। उसमें व्याकरण का उतना ध्यान नहीं रखते हैं। लेकिन जो हम अर्जित करते हैं भाषा ज्ञान, वह हम व्याकरण सम्मत करते हैं। केरल ज्योति जो आपने दी थी मैं कल रात को देख रहा था। उसमें आप ने अनुस्वार और चन्द्रबिन्दु की व्याख्या करायी है एक लेख में। मैं देख रहा था अनुनासिक नासिकता को। मैं खुद जो हिन्दी का बडा विद्वान हूँ प्रसिद्ध हूँ देश में। बडा लेखक प्रसिद्ध हूँ, बडा आलोचक प्रसिद्ध हूँ। अगर मुझसे आप कहें तो उनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उतनी बारीकी के साथ से भाषण नहीं कर सकूँगा। क्यों कि व्याकरण की इतनी बारीकियों में जाने का मेरा काम ही नहीं। क्यों कि हिन्दी मेरी मातृभाषा है। मैं नहीं जानता कि जो शब्द मैं बोल रहा हूँ उनमें अनुनासिकता कहाँ है अनुस्वार कहाँ है? लेकिन यह बात जो हिन्दी सीखेगा वह जानेगा। लेकिन अंग्रेज़ी की ये बातें आप बता देंगे। किसी अंग्रेज की अंग्रेज़ी की तारीफ मैं ने नहीं पायी। लेकिन श्रीनिवास शास्त्री की, डा० राधाकृष्णन की, महात्मा गांधी की अंग्रेज़ी की तारीफ मैंने सुनी है। एक विशेषता देखिये। डा० राधाकृष्णन की लच्छेदार अंग्रेज़ी श्रीनिवासशास्त्री की पुरानी अंग्रेज़ी और महात्मा गांधी की मोडर्न इंग्लीश। मैं समझता हूँ कि भारत में से तीन नाम मैं ऐसे ले सकता हूँ। आज अगर किसी को ज्यादा अच्छी अंग्रेजी सीखनी हो तो गांधीजी की शैली ही अपनानी पड़ेगी। क्यों कि आज एक आन्दोलन है भाषा की सरलता, भाषा की प्रांजलता, भाषा की स्वच्छता की। बाकी बड़े बड़े नेताओं को जब देखता हूँ उनमें गांधी मुझे बहुत सरल दिखाई पडते हैं। आज हिन्दी का भी मैं वही रूप देखता हूँ। आप बड़े-बड़े साहित्यकारों को पढ़िये। लेकिन जो मज़ा प्रेमचन्द में है, जो मज़ा नरेन्द्र शर्मा में है, जो बच्चन में भी है वह और किसी में नहीं। एक लेख में मैं ने लिखा था बच्चन ने हिन्दी कविता में एक ही काम किया। दर्शन की दृष्टि से उनका महत्व कम है। यह बात मैं कह सकता हूँ आलोचक होने के नाते। लेकिन भाषा का महत्व उनका बहुत जबरदस्त है।

और हिन्दी और उर्दु का जो झगडा करते हैं उनके बीच में मुझे अक्सर बोलना पड़ता है। क्यों कि उत्तर भारत उर्दू का क्षेत्र भी है, हिन्दी का क्षेत्र तो है ही। हिन्दी और उर्दू में कोई फर्क नहीं है व्याकण का तो। क्योंकि संपूर्ण व्याकरण हिन्दी उर्दू का एक है। उस में कहीं कोई फर्क नहीं है। अकबर इलाहाबादी ने कहा था उर्दु और हिन्दी का झगडा करनेवालों से कि

"उर्दू को अरबी को क्यों न करें।
वे हिन्दी को भाषा क्यों न करें।
गर इससे मूलक का दिल बहले
हम लोग तमाशा क्यों न करें?"

मैं जानता हूँ उर्दू कम आती होगी यहाँ लोगों को। मैं बताना चाहता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

110272

हूँ। भाषा संस्कृत केलिए प्रयोग होता है उर्दू में। उर्दू में जब भाषा शब्द का प्रयोग होता है वह संस्कृत केलिए होता है। उन्होंने कहा अरबी और फारसी इन दो को क्लिष्ट बनाने में उर्दू ने बडा कमाल किया। उर्दू और हिन्दी अलग होती है ऐसे आन्दोलन से। जब उर्दू में अरबी और पर्सियन शब्दों को भरा गया और हिन्दी में जब लोगों ने संस्कृत के शब्दों को गढना शुरू किया उसकी नकल पर तो अकबर इलाहाबादी जैसे विश्व प्रसिद्ध शायर ने कहा कि उर्दू में अरबी के शब्द क्यों डालते हो और हिन्दी में पुरानी संस्कृत के शब्दों को क्यों डालते हो? लगता है हम को झगडे में मजा आता है। इसलिए तमाशा खडा किया करते हैं। कितनी अच्छी बात कही! मैं उर्दू वालों से पूछता हूँ क्या आप फर्क कर सकते हैं? सबसे बडे पोयट है आपके नील, गालिब, जौर आदि आधुनिक पोयट भी हैं और बहुत अच्छे पोयट हैं। उन्होंने कहा :

"जब से खो गया है दिल अपना,
चीज रखते हैं, भूल जाते हैं।

यह उर्दू है। यह तो उर्दू के बहुत बडे पोयट की लाइन है। मौलाना हसरतमानी बहुत बडे हैं। उनका यह शायर है

"है रात वह रात है
दिन वही दिन है
जो तेरी याद में गुजर जायें।"

वे तो दार्शनिक कवि थे। जो रात और दिन तेरी रात में गुजरते हैं या खुदा, वही तो असली दिन और रात हैं। और हिन्दी के नीरज का नाम तो सभी ने सुना होगा, बच्चन का भी सुना होगा। मैं बच्चन के लाइनें कहता हूँ।

आज मुझ से बोल बादल तम भराते
तम भरा मैं,
गम भरातुम गम भरा में,
आज अपने हृदय से तू हृदय मेरा
तोल बादल"

नीरज कहता है—

क्या करेगा वह इमान को,
क्या करेगा प्यार वह भगवान को
जन्म लेकर गोद में इनसान को प्यार
करता जो न वह इनसान को?

मैंने हिन्दी, उर्दू की दो बडी बडी कविताओं को उद्धृत किया है। क्या कोई फर्क करके बता सकता है मुझ को, व्याकरण का भाषा का स्वर का शब्द का। लेकिन जिनको लडना होता है उनको तो लडना ही है।

110272

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिण के सारे आन्दोलन का नेतृत्व केरलीय ही करेगा।

दक्षिण म एक जगह, मैं उस प्रदेश का नाम नहीं लेना चाहता। आज जानते हुए भी यह बताया जाता है कि हम हिन्दी जानते ही नहीं। लेकिन केरल में यह शिकायत हम को कभी नहीं मिलती। इसलिए मैं कहता हूँ कि दक्षिण के सारे आन्दोलन का नेतृत्व केरल ही करेगा।

मैं आपसे अन्त में सिर्फ एक बात कहना चाहता हूँ। हिन्दी का काम स्वर्गीय पिल्लै जी ने शुरू किया था। गांधी जी ने आज से सत्तर साल पहले मद्रास में शुरू किया था संपूर्ण भारतीय भाषा के रूप में। कभी दक्षिण उत्तर पश्चिम पूरब को देश को नहीं नापा गया। जो काम ग्यारह सौ वर्ष पहले शंकराचार्य ने शुरू किया था वह काम बीसवीं शताब्दी में गांधी ने पूरा किया। और देश की आजादी के बाद वह काम भारतीय संविधान के द्वारा संपन्न हो गया। अब नियम तो बन गये, लेकिन नियमों का पालन तो देशवासियों को करना है। केरल हिन्दी प्रचार सभा के जो हमारे छात्र छात्राएं बैठे हुए हैं संपूर्ण भारत को 'एक हृदय हो भारत जननी' की आकांक्षा ले करके राष्ट्रभक्ति के साथ आगे बढते हैं। उनको बधाइयाँ देते हुए उनको शुभ कामनायें देते हुए आपसे केवल एक ही बात कहता हूँ" आप बढे चलिए, स्वभास्ते पन्थाना" धन्यवाद।

जब तक हमारी मातृभाषा में हमारे सारे विचार प्रकट करने की शक्ति नहीं आ जाती और जब तक वैज्ञानिक विषय मातृभाषा मे नहीं समझाये जा सकते, तब तक राष्ट्र को नया ज्ञान नहीं मिल सकेगा।

— महात्मा गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा द्वारा ही राष्ट्रीय एकता संभव है

डा० रुद्रप्रताप सिंह

[केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा आयोजित हिन्दी साहित्य-कला प्रतियोगिताओं के उद्घाटन सम्मेलन में 19-3-1988 को दिये गये अध्यक्षीय भाषण का सारांश]

संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष के रूप में मेरे लिए यह अत्यंत सौभाग्य की बात है, अत्यंत गौरव की बात है कि मुझको केरल हिन्दी प्रचार सभा में दूसरी बार आने का सौभाग्य प्रदान किया गया है। जैसा कि आदरणीय श्री एम. के. वेलायुधन नायर साहब ने बताया है हमारी जो संसदीय राजभाषा की साक्ष्य आलेख उप समिति है यहाँ आई हुई है राजभाषा के प्रगामी प्रयोग से संबंधित कार्यों की समीक्षा करने केलिए। आदरणीय नायर जी ने हम लोगों से कहा कि हम लोग यहाँ आयें आप लोगों के बीच में। आदरणीय नायरजी की जो सेवाएँ हैं हिन्दी जगत केलिए, उनको ध्यान में रखते हुए मैं समझता हूँ कि कोई भी राजनेता, कोई भी सार्वजनिक कार्यकर्ता, उनके आग्रह को अस्वीकार करने की सामर्थ्य नहीं रखता। तो हम लोग आए आपके बीच में।

जैसा कि आप सभी जानते हैं संसदीय राजभाषा समिति का कार्य बहुत सीमित है। यह केवल यह देखती है कि राजभाषा नियम (उन्नीस सौ छहत्तर) का पालन भारत सरकार के मंत्रालयों विभागों, कार्यालयों और सरकारी उपक्रमों में हो रहा है अथवा नहीं; समय समय पर जो आदेश, निर्देश भेजे जाते हैं राजभाषा विभाग के द्वारा उनका परिपालन किया जाता है, अथवा नहीं और जो प्रत्येक वर्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्षिक कार्यक्रम भेजा जाता है उसके अनुसार कार्य होता है कि नहीं। हमारी पूरी समिति में तीस लोग सदस्य हैं। लगभग सभी दलों को उसमें प्रतिनिधित्व है। उसकी तीन उपसमितियाँ हैं। भारत सरकार के समस्त मंत्रालयों को तीन भागों में विभाजित किया गया है। एक उपसमिति एक तिहाई मंत्रालय के काम को देखती है। और एक चौथी समिति है साक्ष्य आलेख उपसमिति जो यहाँ आई हुई है। जो भारत वर्ष के इस काम में लगे हुए हैं हमारे नेता गण हैं अधिकारी गण हैं उनके साथ विचार विमर्श करती है और विभिन्न संस्थाओं में जाकर उनके साथ में वहाँ बातचीत करके फिर अपना प्रतिवेदन बनाती है जो महामहिम राष्ट्रपतिजी को भेंट किया जाता है। आपको प्रसन्नता होगी कि अभी तक इस समिति अपने दो प्रतिवेदन प्रस्तुत कर चुकी है; एक अनुवाद व्यवस्था पर जिसका भी अभी माननीय मंत्री जी ने उल्लेख किया है। दूसरा प्रतिवेदन यांत्रिक व्यवस्था पर। हमारा जो यांत्रिक व्यवस्था है वह किस प्रकार के द्विभाषिक हो, किस प्रकार से हमारे हिन्दी के टाइप रैटर का उत्पादन किया जा सके, टंकण के मशीन, टेलिप्रन्टर आदि किस प्रकार से द्विभाषी बनाए जाएँ, कंप्यूटर में हिन्दी का प्रयोग कैसे हो, किस प्रकार से हिन्दी के सोफ़्टवेयर बनाए जा सके और किस प्रकार से टंकक हैं, आशुलिपिक हैं उनको कम से कम समय में राजभाषा हिन्दी का ज्ञान कराया जा सके इन सब बातों से संबंधित दूसरा प्रतिवेदन यह समिति दे चुकी है। अभी तीसरा जो बहुत महत्वपूर्ण प्रतिवेदन है प्रशिक्षण व्यवस्था पर वह हमारी समिति बना रही है और उसी के बारे में विचार विमर्श करने केलिए समिति को सौभाग्य प्राप्त हुआ यहाँ केरल आने का।

हमें बहुत प्रसन्नता है कि यहाँ जो आपकी यह केरल हिन्दी प्रचार सभा लगभग चौवन वर्षों से राष्ट्रभाषा हिन्दी की उत्कृष्ट सेवा कर रही है। जब हम लोग यहाँ पहली बार आये थे तो इस सभा के बारे में उतनी जानकारी नहीं थी। आज हम दुबारा आये हैं तो हमारी जानकारी बढी है। मुझे आशा है कि हमारे नायर साहब हमें तिबारा आने का अवसर प्रदान करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगातार आपकी अच्छाइयाँ हमारे सामने आती हैं। अभी तक कोई बुराई तो आपकी हमारे सामने आई नहीं। और मुझे विश्वास है कि आगे भी कोई बुराई आप की हमारे सामने नहीं आएगी। क्योंकि बुराई सामने तभी आती है जब बुराई हो। जब बुराई हो ही नहीं तो सामने कैसे आ सकती है?

हमारे राजभाषा विभाग के द्वारा हमारे मंत्रालयों में, कार्यालयों में, विभागों में, सरकारी उपक्रमों में राजभाषा का हिन्दी के रूप में प्रयोग हो उसमें आप उसका एक आधारभूत ढाँचा बनाने में बहुत सहायक हैं।

यहाँ पर प्रतियोगिता में सम्मिलित होने के लिए आप सब लोग यहाँ पर आए हुए हैं। टंकण की प्रतियोगिता और आशुलिपि की प्रतियोगिता। प्रत्यक्ष रूप से या नहीं तो परोक्ष रूप से तो राजभाषा के प्रगामी प्रयोग में हो आप की यह सभा हमारी सहायता कर रही है। राष्ट्रभाषा की तो आप सेवा कर रहे हैं। मगर भारत सरकार की जो अपेक्षाएं हैं राजभाषा नियम के रूप में उसमें भी आपका बहुत बड़ा योगदान है। इस बात के लिए मैं संसदीय राजभाषा

किसी भी देश की एकता केलिए आवश्यक है कि वहाँ पर सद्भावना हो, साम्प्रदायिक सद्भावना हो, क्षेत्रीय सद्भावना हो और भाषाई सद्भावना हो।

समिति की ओर से, पूरी समिति की ओर से आपको बधाई देना चाहूँगा। इसके अतिरिक्त जहाँ तक राष्ट्रभाषा के रूप में हैं उसकी तो आपकी जितनी सराहना की जाये कम है। क्योंकि मैं ऐसा मानता हूँ कि किसी भी देश की एकता केलिए आवश्यक है कि वहाँ पर जातीय सद्भावना हो, साम्प्रदायिक सद्भावना हो, क्षेत्रीय सद्भावना हो और भाषाई सद्भावना हो। तभी हम राष्ट्र भावात्मक एकता की बात कर सकते है। परंतु कठिनाई यह है कि इतना बडा देश है और इसके अन्दर नाना प्रकार की जातियाँ और उपजातियाँ हैं; नाना प्रकार की भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं। विभिन्न भागों में पूरे देश के वासी बसे हुए हैं। पूरे देश के लोगों को न तो एक जाति के बनाना संभव है, न एक भाषा भाषी बनाना संभव है, न एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साम्प्रदायिक के बनाना संभव है, न एक धर्म के माननेवाला बनाना संभव है। न ही उनको कोई एक क्षेत्र विशेष में बसाना संभव है। एक ही मार्ग है कि हम भाषा के माध्यम से ही पूरे देश को एकता के सूत्र में जोडे। भाषा के द्वारा ही भारत की

एक ही मार्ग है कि हम भाषा के माध्यम से ही पूरे देश को एकता के सूत्र में जोडे।

एकता, भारत की अखंडता और भारत की प्रभुसत्ता रह सकती है। राष्ट्रभाषा हिन्दी की जो आप सेवा कर रहे हैं यह आपका साध्य है। और साधन तो राष्ट्र की अखंडता और एकता ही है। तो इस तरह से राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार करते हुएं भारत की अखंडता और एकता में आप बहुत सहायक हैं।

आप लोग जो यह प्रतियोगिता में आए हैं भाग लेने केलिए मैं आप सब को शुभकामना देता हूँ। इसका विशेष महत्व है आपका मनोबल बढाने का। प्रतियोगिता में कोई विजयी होता है, कोई विजयी नहीं होता है। मगर इससे भी बड़ी है जीवन का प्रतियोगिता। इस प्रति-योगिता में सबको पुरस्कार तो नहीं मिलेगा। न सब लोग सांसद हो सकते हैं न सब लोग मंत्री हो सकते हैं, न सब लोग पारितोषिक पा सकते हैं। मगर यही महत्वपूर्ण नहीं है जीवन में। जीवन में महत्वपूर्ण यह है कि आप में कितनी मनुष्यता है, कितनी नागरिकता है और कितनी अपनी आत्मा की उन्नति कर सकते हैं। क्यों कि मैं ऐसा मानता हूँ कि आप स्वयं परमात्मा हैं परमात्मा कहीं अलग नहीं हैं। जो बीज होता है आत्मा के रूप में, जब वह फल बन जाता है तब वह परमात्मा हो जाता है। मुझे आशा है कि आप जो आत्मा के रूप में बैठे हुए हैं, एक दिन परमात्मा बन सकेंगे ऐसा मेरा विश्वास है।

अन्त में केरल केलिए दो शब्द कहना चाहूँगा। संपूर्ण भारत वर्ष में केरल का अपना महत्व है। क्योंकिअहिन्दी भाषी प्रदेशों में केरल एक ऐसा राज्य है जहाँ पर दर्जा दस तक अनिवार्य रूप से हिन्दी पढाई जाती है। तो मैं ऐसा मानता हूँ कि भारत की अखण्डता और एकता की दृष्टि से जितने अहिन्दी भाषी प्रदेश हैं उनमें केरल का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत की अखण्डता और एकता की दृष्टि से जितने अहिन्दी भाषी प्रदेश हैं उनमें केरल का स्थान सबसे सम्मान पूर्ण है, महत्वपूर्ण है।

स्थान सबसे सम्मानपूर्ण है, महत्वपूर्ण है। इस केलिए केरल हिन्दी प्रचार सभा के साथ-साथ, केरल की महान जनता को, केरल के तमाम देवियों को, सज्जनों को, केरल के तमाम नागरिकों को बधाई देना चाहूँगा। यहाँ की जो सरकार रही है उसने भी इस बात का ध्यान रखा है कि जन भावना जनाकांक्षा को देखते हुए कि विद्यालयों में हिन्दी चलती रहे, अनिवार्य रूप से चलती रहे। तो मैं उस सरकार को बधाई दूँगा। वर्तमान सरकार से भी अपेक्षा करूँगा कि जो भावना पिछली सरकार की रखी है, जनता की भावना के अनुसार राष्ट्रभाषा के संबंध में जो नीति रही है पिछली सरकार की, वर्तमान सरकार की नीति इससे अच्छी होगी। पूरी शुभ कामना है हमारी अपने व्यक्तिगत रूप से, अपनी समिति की ओर से आप की केरल हिन्दी प्रचार सभा ने अतीत में तो अच्छा काम किया है। वर्तमान में अच्छा काम कर रही है। भविष्य में उससे अच्छा काम कर सके जो राष्ट्र की अखण्डता और एकता में सहायक हो।

"धन्यवाद"

★

समाज की हम जो सबसे बड़ी सेवा कर सकते हैं, वह यह है कि हम ने अंग्रेज़ी भाषा की शिक्षा के प्रति जो अंधविश्वासपूर्ण सम्मान करना सीखा है उससे स्वयं मुक्त हों और समाज को मुक्त करें।

—महात्मा गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी द्वारा नयी पीढी में देश प्रेम उत्पन्न करें

श्री. ए. नीललोहितदासन नाडार
खेल एवं युवा कार्य मंत्री, केरल सरकार

[केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा राज्य स्तर पर आयोजित हिन्दी साहित्य कला प्रतियोगिताओं के पुरस्कार वितरण सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए 19-3-1988 को दिये गये भाषण का सारांश]

जैसे स्वागत भाषण में श्री एम. के. वेलायुधन नायर ने बताया, केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा गत कुछ वर्षों से आयोजित हिन्दी साहित्य कला प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले बालकों और युवकों की बढती हुई संख्या इस बात का सूचक है कि हिन्दी को युवा पीढी बड़े प्रेम से अपना रही है।

इसी भवन में आयोजित एक सम्मेलन में केरल विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति डा॰वी.के. सुकुमारन नायर ने यह प्रश्न उठाया था कि देश के सांस्कृतिक जीवन को हिन्दी ने कहाँ तक प्रभावित किया है। उन्होंने पूछा था कि हिन्दीतर प्रान्तों में हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं का व्यापक प्रचार क्यों नहीं होता ?

मेरा विचार है कि इस प्रकार की हिन्दी साहित्य कला प्रतियोगितायें उक्त दिशा में अग्रसर होने में बहुत सहायक होंगी। हर विद्यालय में और महाविद्यालय में हिन्दी में ऐसी प्रतियोगितायें प्रतिवर्ष आयोजित हों। इससे हिन्दी में साहित्य सृजन करने की और कलात्मक अभिव्यक्ति करने की क्षमता नयी पीढी में विकसित होगी।

सभा द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में हिन्दी देश भक्ति गानों की प्रतियोगिता भी थी। इसका बडा महत्व है। स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में हिन्दी के देश भक्ति गानों ने हिन्दी क्षेत्र और अहिन्दी क्षेत्र की जनता में देशभक्ति और एकता, स्वतंत्रता, आत्मगौरव का बोध उत्पन्न करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में हिन्दी के देशभक्ति गानों ने हिन्दो क्षेत्र और अहिन्दी क्षेत्र को जनता में देशभक्ति, एकता, स्वतंत्रता और आत्म गौरव का बोध उत्पन्न करने में सहायता पहुँचायी थो ।

में सहायता पहुँचायी थी । स्वतंत्रता प्राप्ति के चालीस वर्षों के बाद हम देखते हैं कि वह बोध आज नष्ट सा हो रहा है । स्वतंत्र भारत के संबंध में हमारे जो स्वप्न थे वे अभी पुष्पित नहीं हो पाये हैं । हमारी शिक्षा पद्धति युवकों में देश की स्वतंत्रता का महत्व, स्वतंत्रता संग्राम की चेतना, देश की गौरवपूर्ण परंपरा आदि समझाने में सफल नहीं हुई । स्वातन्त्र्योत्तर काल की पीढी में समस्याओं को राष्ट्रीय और सामाजिक जीवन की विशाल पृष्ठभूमि में देखने की क्षमता विकसित नहीं कर पाए ।

इस दिशा में हमारे साहित्यकारों और कलाकारों को अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है । 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात् भारत के विविध भाषा भाषी प्रान्तों के साहित्यकारों और कलाकारों ने जनता में देशभक्ति और एकता का बोध उत्पन्न करने में बडा योगदान दिया । आज की परिस्थिति में नयी पीढी में देशप्रेम, एकता, पारस्परिक स्नेह, समता आदि भाव विकसित करने का प्रयत्न विविध भाषाओं के माध्यम से, विशेषकर हिन्दी के माध्यम से करना है । हिन्दी साहित्य-

व्यक्ति, दल, समूह आदि के निहित स्वार्थों से ऊपर उठकर देश को प्रगति को प्रमुखता देते हुए देशप्रेम के आवेश से आगे बढनेवाली एक नय पोढो का निर्माण इस तरह के प्रयत्नों से हमारे साहित्यकार कलाकार और शिक्षाविद कर सकेंगे ।

कला प्रतियोगिताओं का आयोजन इस दृष्टि से करना है । व्यक्ति, दल, समूह आदि के निहित स्वार्थों से ऊपर उठ कर देश की प्रगति को प्रमुखता देते हुए देशप्रेम के आवेश से आगे बढनेवाली एक नयी पीढी का निर्माण इस तरह क प्रयत्नों से हमारे साहित्यकार, कलाकार, और शिक्षाविद कर सकेंगे ।

इन प्रतियोगिताओं के प्रतिभागियों का अभिनन्दन करते हु मैं इस समारोह का उद्घाटन करता हूँ । ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दोतर साहित्यों को हिन्दी में प्रवेश मिले

महाकवि एन. पी. अप्पन

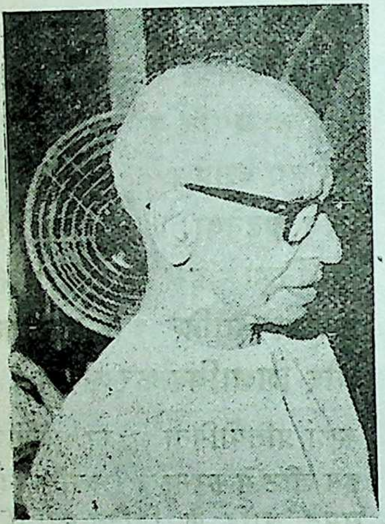

[केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा राज्य स्तर पर आयोजित हिन्दी साहित्य-कला प्रतियोगिताओं के पुरस्कार वितरण सम्मेलन में 19-3-1988 को दिये गये अध्यक्षीय भाषण का सारांश]

जैसे केरल सरकार के खेल एवं युवाकार्य मंत्री श्री. ए. नीललोहितदासन नाटार ने अपने उद्घाटन भाषण में बताया, स्वतंत्रता संग्राम के बाद भारत की जनता में एकता का जो बोध सुदृढ हो गया था वह आये दिन कुछ क्षीण पड़ गया है। भारतीय जनता को अखण्ड बनाये रखना हम सब का धर्म है। इस धर्म के पालन में भाषा विशेष कर हिन्दी भाषा सबसे अधिक सहायक है।

भारतीय जनता को अखण्ड बनाये रखना हम सब का धर्म है। इस धर्म के पालन में भाषा विशेष कर हिन्दी भाषा सबसे अधिक सहायक है।

जिस प्रकार छोटी बडी रंग बिरंगी बत्तियों में एक ही बिजली प्रवाहित और प्रज्वलित होती है उसी प्रकार विविध भाषाओं और आचार विचारों से संपन्न भारतीय जनता की अन्तर्धारा एक है भारतीय संस्कृति है।

हिन्दी समस्त भारतीयों की आ भाषा है। इसका प्रचार और व्यापक करना है।

हिन्दी भाषी विद्वानों को चाहिए कि इतर भारतीय भाषायें सीखकर उन भाषाओं के श्रेष्ठ साहि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी भाषी विद्वानों को चाहिए कि इतर भारतीय भाषायें सीखकर उन भाषाओं के श्रेष्ठ साहित्य हिन्दी में अनूदित करें ।

हिन्दी में अनूदित करें । इस सम्मेलन में उपस्थित डा० सुधांशु चतुर्वेदी ने मलयालम सीखी, मलयालम की अनेक पुस्तकें हिन्दी में अनूदित कीं । इस प्रकार उन्होंने हिन्दी भाषी विद्वानों के सम्मुख एक आदर्श प्रस्तुत किया है ।

आज प्रान्तीयता की भावना बुरीतरह प्रबल हो रही है । भाषा के नाम पर व्यक्ति का अस्मिता बोध विकसित होता है । इसके बदले मनुष्यत्व का अवबोध विकसित करना है । तदनुसार आचरण करना है ।

केरल में हिन्दी का प्रचार बढता जा रहा है । केरल हिन्दी प्रचार सभा इस दिशा में स्तुत्यर्ह कार्य कर रही है । सभा के वर्तमान मंत्री श्री. वेलायुधन नायर सभा के संस्थापक स्वर्गीय वासुदेवन पिल्लै के चरण चिह्नों का अनुगमन बडी धीरता से कर रहे हैं । हिन्दी भाषी विद्वानों का आदर सम्मान सभा द्वारा यहाँ किया जाता है । इस प्रकार उत्तरभारत में भी हिन्दीतर भाषा भाषी विद्वानों का भी आदर किया जाना चाहिए ।

उत्तर भारत में भी हिन्दीतर भाषा भाषी विद्वानों का भी आदर किया जाना चाहिए ।

केरल के विद्यार्थी हिन्दी सीखने में अधिक समर्थ हैं । राष्ट्र स्तरीय हिन्दी प्रतियोगिताओं में हिन्दी भाषियों से होड लगाने की क्षमता केरल, तमिलनाडु जैसे हिन्दीतर प्रान्तों के विद्यार्थी प्राप्त करें ।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी माध्यम से कलात्मक प्रतिभायें विकसित करें।

श्री. टी. आर. सुकुमारन नायर
अध्यक्ष, केरल संगीत नाटक अकादमी, तृशूर

[केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा राज्य स्तर पर आयोजित हिन्दी साहित्य कला प्रतियोगिताओं का पुरस्कार वितरण करते हुए 19-3-1988 को दिये गये भाषण का सारांश]

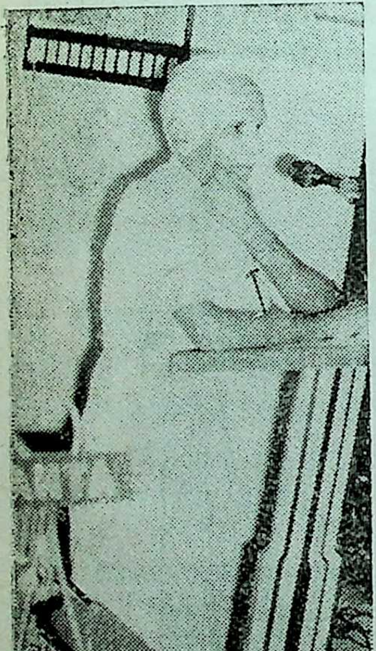

उद्घाटन भाषण में केरल सरकार के खेल एवं युवाकार्य मंत्री श्री. ए. नीललोहितदासन नाटार ने जैसे बताया, स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी प्रेम कम होता जा रहा है। हर राष्ट्र की एक राष्ट्रभाषा होनी चाहिए और अधिकांश जनता की भाषा ही राष्ट्रभाषा हो सकती है।

भारत के नानात्व की एकता की बात कही जाती है। लेकिन लगता है भाषा और प्रान्तों के गठन से इस एकता में शिथिलता आ गयी है। एक आम भाषा का अभाव इस एकता के सूत्र को सुदृढ होने नहीं देता। इस सूत्र को सुदृढ करना है। इसके लिए केरल हिन्दी प्रचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक आम भाषा का अभाव इस एकता के सूत्र का सुदृढ होने नहीं देता । इस सूत्र को सुदृढ करना है ।

सभा द्वारा आयोजित ये हिन्दी साहित्य-कला प्रतियोगितायें अत्यन्त सहायक होंगी ।

नाटक एक बहुत बडा प्रभावकारी माध्यम है । इसकी एक अलग भाषा है जो पात्रों के कथोपकथन की भाषा से परे है । यही कारण है कि दूरदर्शन द्वारा प्रदर्शित रामायण देखने में केरल की आबालवृद्ध जनता बडी रुचि लेती है । इन में अनेकों ऐसे भी हैं जिन्हें हिन्दी नहीं आती । हिन्दी के प्रचार में ऐसे कार्यक्रमों का बहुत बडा महत्व है ।

हमारे बच्चों में कई ऐसे हैं जिन में कलात्मक प्रतिभा के अंकुर हैं । इन प्रतिभाओं को यदि हिन्दी के माध्यम से विकसित होने का अवसर प्रदान करें तो भावात्वक एकता सहज ही आ जाएगी ।

इन प्रतिभाओं को यदि हिन्दी के माध्यम से विकसित होने का अवसर प्रदान करें तो भावात्मक एकता सहज ही आ जाएगी ।

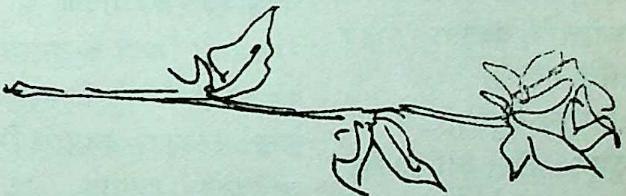

जिस भाषा से देश की उन्नति और अवनति हो सकती है और देश एक सूत्र में बँध सकता है, उसे कुछ भी आज कहे, लेकिन वह हिन्दी भाषा ही है ।

—आचार्य रघुनाथ शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य कला-प्रतियोगिताएँ—1987-88

केन्द्र सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय की सहायता से केरल हिन्दी प्रचार सभा के तत्वावधान में फरवरी-मार्च 1988 में राज्य स्तर पर निम्न लिखित हिन्दी साहित्य-कला प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयीं।

निबन्ध रचना, कहानी-कथन, कहानी रचना, कविता पाठ, कविता रचना, प्रश्नोत्तरी, वक्तृता, नाटक और देशभक्ति गान।

पहले तिरुवनन्तपुरम, एरणाकुलम, तृशूर और कोषिक्कोट, केन्द्रों में क्षेत्रीय प्रतियोगिताएँ आयोजित हुईं। इस में प्रथम और द्वितीय स्थान पानेवालों के लिए राज्य स्तरीय प्रतियोगिताएँ तिरुवनन्तपुरम में आयोजित हुईं।

राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं का औपचारिक उद्घाटन अखिल भारतीय कांग्रेज़ समिति के महामंत्री एवं संसदीय राजभाषा समिति के सदस्य श्री. नरेशचन्द्र चतुर्वेदी ने सभा के तिरुवनन्तपुरम परिसर में 19-3-1988 को आयोजित समारोह में किया। संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष डा० रुद्रप्रताप सिंह समारोह में अध्यक्ष रहे। केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री श्री. एस. के. वेलायुधन नायर ने अपने स्वागत भाषण में केरल में राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढावा देने के लिए सभा द्वारा केन्द्र सरकारी कार्यालयों को दिये जानेवाले सहयोग पर प्रकाश डाला। सभा के साहित्याचार्य महाविद्यालय के प्रधानाचार्य श्री. वी. के. एस. नंपूतिरी ने कृतज्ञता प्रकट की।

पुरस्कार वितरण समारोह का उद्घाटन केरल सरकार के खेल एवं युवा कार्य मंत्री श्री. ए. नीललोहित दासन नाटार ने किया। मलयालम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के विख्यात महाकवि श्री. एम. पी. अप्पन समारोह में अध्यक्ष रहे। केरल संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष श्री. टी. आर. सुकुमारन नायर ने पुरस्कार वितरण किया।

केरल ज्योति के संपादक श्री. के. जी. बालकृष्ण पिल्लै ने स्वागत भाषण दिया और केरल हिन्दी प्रचार सभा के कोषाध्यक्ष प्रो० एम. जनार्द्दनन पिल्लै ने कृतज्ञता प्रकाशित की।

(इस समारोह के मुख्य भाषणों के सारांश इसी अंक में अन्यत्र प्रकाशित हैं।)

राज्य स्तरीय पुरस्कारों के विजेताओं का विवरण नीचे दिया जा रहा है :-

प्रबन्ध रचना (कनिष्ठ)

प्रथम स्थान :

कुमारी एल. शोभा
एन. एस. एस. वनिता कॉलेज
नीरमणकरा, तिरुवनन्तपुरम

द्वितीय स्थान :

1. श्री. यू. भरत
केन्द्रीय विद्यालय, पट्टम
तिरुवनन्तपुरम
2. कुमारी बिजी सोमन
केन्द्रीय विद्यालय, पट्टम
तिरुवनन्तपुरम

तृतीय स्थान :

श्री. जो जोसफ
केन्द्रीय विद्यालय, पट्टम
तिरुवनन्तपुरम

प्रबन्ध रचना (वरिष्ठ)

प्रथम स्थान :

कुमारी आर. श्रीकला
सरकारी वनिता कॉलेज
तिरुवनन्तपुरम

द्वितीय स्थान :

कुमारी एम. जी. जयश्री
सेन्ट तेरेसास कॉलेज
एरणाकुलम

तृतीय स्थान :

1. कुमारी एस. सुनिता
यूनिवेर्सिटी कॉलेज
तिरुवनन्तपुरम
2. कुमारी जे. मीनाकुमारी
आल सेइन्टस कॉलेज
तिरुवनन्तपुरम
3. कुमारी सविता श्रीवास्तव
सेन्ट तेरेसास कॉलेज
एरणाकुलम

कथाकथन (कनिष्ठ)

प्रथम स्थान :

कुमारी डोणिया जोर्ज
मार इवानियोस कॉलेज
तिरुवनन्तपुरम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय स्थान :

कुमारी आशा सखरिया
मार इवानियोस कॉलेज
तिरुवनन्तपुरम

तृतीय स्थान :

1. श्री. विवेक नायक
केन्द्रीय विद्यालय, पट्टम
तिरुवनन्तपुरम
2. श्री. श्रीरंगन
केन्द्रीय विद्यालय, पट्टम
तिरुवनन्तपुरम
3. कुमारी सीमा नंपियार
प्रोविडन्स वनिता कॉलेज
कोषिक्कोट

कथा रचना (वरिष्ठ)

प्रथम स्थान :

कुमारी एम. जी. जयश्री
सेन्ट तेरेसास कॉलेज
एरणाकुलम

द्वितीय स्थान :

1. कुमारी आर. श्रीकला
सरकारी वनिता कॉलेज
तिरुवनन्तपुरम
2. श्री. राजीव कुमार
मार इवानियोस कॉलेज
तिरुवनन्तपुरम

तृतीय स्थान :

1. कुमारी चित्रा
सरकारी होमियो कॉलेज
तिरुवनन्तपुरम
2. श्री. हरिशंकर
सरकारी आर्टस कॉलेज
कोषिक्कोट

कविता पाठ (कनिष्ठ)

प्रथम स्थान :

श्री. जी. श्रीधर
सरकारी गणपत बाइस हाई स्कूल
कोषिक्कोट

द्वितीय स्थान :

कुमारी डोणिया जोर्ज
मार इवानियोस कॉलेज
तिरुवनन्तपुरम

तृतीय स्थान :

1. श्री. यू. भरत
केन्द्रीय विद्यालय, पट्टम
तिरुवनन्तपुरम
2. कुमारी सीमा नंपियार
प्रोविडन्स वनिता कॉलेज
कोषिक्कोट

प्रोत्साहन पुरस्कार :

कुमारी दिव्या उण्णी
भारतीय विद्या भवन
कोच्ची

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविता रचना (वरिष्ठ)

प्रथम स्थान :

कुमारी आर. श्रीकला
सरकारी वनिता कॉलेज
तिरुवनन्तपुरम

द्वितीय स्थान :

कुमारी एम. जी. जयश्री
सेन्ट तेरेसास कॉलेज
एरणाकुलम

तृतीय स्थान :

कुमारी मीरा नायर
मार इवानियोस कॉलेज
तिरुवनन्तपुरम

प्रश्नोत्तरी (कनिष्ठ)

प्रथम स्थान :

श्री. श्रीरंगन
केन्द्रीय विद्यालय, पट्टम
तिरुवनन्तपुरम

द्वितीय स्थान :

श्री. टी. वी. विजू
केन्द्रीय विद्यालय, पट्टम
तिरुवनन्तपुरम

तृतीय स्थान :

कुमारी सी. गायत्री
प्रोविडन्स वनिता कॉलेज
कोषिक्कोट

प्रश्नोत्तरी (वरिष्ठ)

प्रथम स्थान :

1. श्री. विनायक मोहन
   मार इवानियोस कॉलेज
   तिरुवनन्तपुरम
2. कुमारी सुनिता नांचिया
   सेन्ट तेरेसास कॉलेज
   एरणकुलम

द्वितीय स्थान :

श्री. एन. राघवन
मेडिकल कॉलेज
तिरुवनन्तपुरम

तृतीय स्थान :

कुमारी शान्ति नायर
महराजास कॉलेज
एरणाकुलम

वक्तृता (कनिष्ठ)

प्रथम स्थान :

श्री. श्रीरंगन
केन्द्रीय विद्यालय, पट्टम
तिरुवनन्तपुरम

द्वितीय स्थान:

कुमारी एल. शोभा
एन. एस एस. वनिता कॉलेज
नीरमणकरा, तिरुवनन्तपुरम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतिय स्थान

कुमारी सी. इन्दुलेखा

होली फामिली जी. एच. स्कूल

तृशूर

वक्तृता (वरिष्ठ)

प्रथम स्थान :

कुमारी एस. सुनिता

यूनिवेर्सिटी कॉलेज

तिरुवनन्तपुरम

द्वितीय स्थान

श्री. बिमल

मार इवानियोस कॉलेज

तिरुवनन्तपुरम

तृतीय स्थान :

कुमारी शान्ति नायर

महाराजास कॉलेज

एरणाकुलम

अखिल केरल हिन्दी नाटक प्रतियोगिता

प्रस्तुति :

प्रथम स्थान :

गुरुवायूरप्पन कॉलेज

कोषिक्कोट

नाटक :

'कहाँ जा रहे हो?'

द्वितीय स्थान :

स्नातकोत्तर केन्द्र

केरल हिन्दी प्रचार सभा

तिरुवनन्तपुरम

नाटक :

'राखी का मूल्य'

सर्वश्रेष्ठ अभिनेता

प्रथम स्थान :

श्री. पी. के. सनल

गुरुवायूरप्पन कॉलेज

कोषिक्कोट

द्वितीय स्थान :

श्री. एस. दिव्येष कुमार

गुरुवायूरप्पन कॉलेज

कोषिक्कोट

सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री

प्रथम स्थान :

कुमारी इरादिदी

केन्द्रीय विद्यालय, पट्टम

तिरुवनन्तपुरम

द्वितीय स्थान :

कुमारी श्रीति एस. नायर

केन्द्रीय विद्यालय, पट्टम

तिरुवनन्तपुरम

सर्वश्रेष्ठ निदेशक

प्रथम स्थान

डा० ए. अच्युतन

हिन्दी विभाग

कोषिक्कोट विश्वविद्यालय

द्वितीय स्थान :

श्री. पी. रघुनाथन नायर

केन्द्रीय विद्यालय

पट्टम, तिरुवनन्तपुरम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशभक्ति गान प्रतियोगिता

प्रथम स्थान :

मार इवानियोस कॉलेज
तिरुवनन्तपुरम

द्वितीय स्थान :

केन्द्रीय विद्यालय, पट्टम
तिरुवनन्तपुरम

तृतीय स्थान :

सरकारी वनिता कॉलेज
तिरुवनन्तपुरम

(पृष्ठ 2 से आगे)

राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन, काका कालेलकर, के. वासुदेवन पिल्लै जैसे महापुरुष जुड़े हुए थे। इनकी एक महान परंपरा है जो देश सेवा और त्याग पर आधारित है। हजारों कार्यकर्ता इन के मार्गदर्शन पर गाँव गाँव में हिन्दी का और अन्य भारतीय भाषाओं का काम करते हैं। इन को यदि राजभाषा आन्दोलन की ओर प्रवृत्त किया जा सके तो निश्चय ही अच्छे परिणाम निकल सकते हैं।

इन का नेतृत्व करने केलिए अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ में वाबू गंगाशरण सिंह, प्रो० रामलाल परीख, श्री. शंकरराव लोंढ़े जैसे कर्मठ और तपोनिष्ठ हिन्दी सेवी हैं। वे आशयों के धनी हैं। पर उन के संकल्पों को, आग्रह को, आशयों को कार्यरूप देने केलिए पर्याप्त साधन अखिल भारतीय संस्था संघ में उपलब्ध नहीं है। यद्यपि संघ की बीस सदस्य संस्थाओं की परीक्षार्थियों की वार्षिक संख्या तीस लाख के करीब है तो भी संघ का अब तक कोई निजी भवन भी नहीं बन पाया है। जब कि भारतीय विश्वविद्यालय संघ को जिन के एक सौ सत्तर सदस्य विश्वविद्यालयों की परीक्षार्थियों की संख्या चालीस लाख है हर प्रकार की सुविधा प्राप्त है। जैसे श्री. रामलाल परीख ने उक्त सम्मेलन में बताया-अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ को वही स्टाटस दिया जाना है जो भारतीय विश्व-विद्यालय संघ को दिया जा रहा है। ऐसा करें तो निश्चय ही जनभाषा-राजभाषा वाले संकल्प को यथार्थ करने में संघ अपनी भूमिका अदा कर सकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंग्रेज़ी कविता

'मेरी माँ की साड़ी'

मूल : श्री. गोपाल होन्नालगेरे
अनुवाद : डा० बीना शर्मा

जब हुआ हो उनमें वैचारिक मतभेद
तात ने खींची हो साड़ी
जी हाँ, माँ की साड़ी, जो फट गई
थी बेचारी ।

आये थे घूम पिताश्री
मन में उल्लास भरा था
ये धूम्रपान के मद में
पकड़ी थी माँ की साड़ी
जी हाँ, माँ की साड़ी, जो जल
गई थी बेचारी ।

दिया जन्म था हमको
हम आठों ही की जननी
करते थे मूत्र विष्ठा भी
आधार थी माँ की साड़ी
जी हाँ, माँ की साड़ी, जो सब
सहती थी बेचारी ।

ये उत्पात मचाते
हम बाहर जाना चाहते
रहती थी हमको जल्दी
भिगो पानी में पल्लू
मुख पोंछा था हम सबका
वह भी थी माँ की साड़ी
जी हाँ, माँ की साड़ी, जो 'टावल'
बनी बेचारी ।

निहित सभी था उसमें
जो कुछ भी उसने भोगा
प्रेम समर्पण मुख्य ध्येय था
इच्छा अनिच्छा का प्रश्न नहीं था
चुप सहती थी बेचारी,
जी हाँ, माँ की साड़ी, जो पर्दा
बनी बेचारी ।

धोया था माँ ने उसको
फैलाया था आंगन में
हम खेल रहे थे छुपाछुपी
उसके ही मस्त गगन में
असीम प्रेम था उसका
वह भी थी माँ की साड़ी
जी हाँ, माँ की साड़ी, जो
सीमाहीन बेचारी ।

हो गयी थी बहुत पुरानी
पर फेंकी नहीं गयी थी
उससे बना बिछौना
सोयेगा नन्हा छौना
जो गद्दी बनी पड़ी थी
वह भी थी माँ की साड़ी
जी हाँ, माँ की साड़ी
जो कल्पवृक्ष थी सारी ।

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, हैदराबाद केन्द्र
हैदराबाद-500 007

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरभाष : 61378 तार : "जय हिन्दी"

केरल ज्योति

पुष्प 23
दल 2
एक प्रति—1 रु० 50 पै०
सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका वार्षिक—15 रु०
मई 1988

संपादकीय

हिन्दी अध्यापन में अनुसंधान एवं प्रसार

केरल हिन्दी प्रचार सभा के संस्थापक एवं प्रथम मंत्री स्व० के. वासुदेवन पिळै की 81 वीं जयन्ती के सिलसिले में सभा द्वारा आयोजित संगोष्ठी एवं सम्मेलन का संक्षिप्त विवरण और सम्मेलन के दो भाषणों का सारांश इस अंक में प्रकाशित हैं।

संगोष्ठी का विषय था — "भाषाध्यापन कॉलेजीय स्तर पर"। इस में मलयालम, तमिल और हिन्दी के विद्वानों के अलावा अरबी, रूसी, जर्मन और अंग्रेजी के विद्वानों ने भी भाग लिया। इस दृष्टि से यह संगोष्ठी अपने ढंग की निराली थी।

संगोष्ठी मे अभिभाषण देते हुए केरल विश्वविद्यालय के उपकुलपति एवं विख्यात शिक्षाविद डा० ए. सुकुमारन नायर ने भारतीय भाषाध्यापन के क्षेत्र में हो रहे अनुसन्धानों को अपर्याप्त बताया। उन्होंने कहा कि यूरोपीय विश्वविद्यालयों ने जिस अवैज्ञानिक प्रणाली को एक सौ वर्ष पूर्व वमन किया है उसी को हमने अपना लिया है। गत पचास वर्षों में भारतीय भाषाध्यापन के क्षेत्र में कोई गणनीय नवीनता नहीं आयी जब कि अंग्रेजी, रूसी, जर्मन जैसी भाषाओं के अध्यापन के क्षेत्र में अनेकों नयी प्रणालियाँ उभर आयी हैं। एक और मार्के की बात उन्होंने बतायी। उनका कहना है कि मातृ-भाषा, राष्ट्रभाषा, संपर्कभाषा और राजभाषा की अध्यापन प्रणालियाँ अलग अलग होनी चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में

शिक्षा में भाषा का बडा महत्वपूर्ण स्थान है 3
श्री. के. चन्द्रशेखरन

हिन्दी में त्याग का सौरभ्य भरा है 5
डॉ० के. अय्यप्प पणिक्कर

स्व० के. वासुदेवन पिल्लै की "81 वीं जयन्ती" 8

समाज के उन्नयन में कविता की भूमिका 14
श्री. टी के. रामकृष्णन

कवितारंगम पुरस्कार वितरण समारोह 17

परीक्षाओं के अतिरिक्त हिन्दी प्रचार संस्थाओं द्वारा हिन्दी के राष्ट्रभाषा और राजभाषा के रूप में अन्य कार्यक्रम 19
श्री. एम. के वेलायुधन नायर

हिन्दी प्रचार के नये आयाम 27
प्रो० रामलाल पारीख

प्रशासनिक भाषा के रूप में हिन्दी- तब और अब 31
डॉ० केशरीलाल वर्मा

हिन्दी ललित निबन्ध और डा० हज़ारी प्रसाद द्विवेदी 36
डॉ० कृष्ण चन्द्र गुप्त

हिन्दी अध्यापन की बात लें। यह कहना ठीक नहीं होगा कि इस विषय में अनुसन्धान होता ही नहीं। अनेकों भारतीय विश्वविद्यालयों के शिक्षा संकायों में एम. एड. और पी-एछ. डी. उपाधियों के शोध प्रबंध हिन्दी अध्यापन के विविध पहलुओं पर लिखे गये हैं। केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा में भी हिन्दी शिक्षण निष्णात के छात्रों द्वारा हिन्दी शिक्षण विषयक शोध प्रबंध लिखे जाते रहे हैं। इस के अलावा अनुसंधान की विविध प्रायोजनाओं के अन्तर्गत भी शोध कार्य हुए हैं। इन सब के बावजूद हिन्दी भाषाध्यापन की प्रणाली में कोई नवीनता नहीं आती तो समस्या का मूल कहाँ है ? दो प्रकार से इस समस्या को सुलझाने का प्रयत्न करें। एक है अनुसंधान के विषयों का चुनाव। जिन विषयों पर संस्थाओं में अनुसंधान हो चुका है उसका पता शीघ्र ही अन्य संस्थाओं को लग सके ताकि उसी विषय पर उसी ढंग का अनुसंधान दुहराने की गुंजाइश न रहे। विषयों को चुनते समय सामाजिक आवश्यकताओं को प्राथमिकता दी जाये। हिन्दी को आज भारतीय समाज में चार तरह की भूमिकायें निभानी है — हिन्दी

(शेष पृष्ठ 40 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा में भाषा का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है

श्री. के. चन्द्रशेखरन
शिक्षा मंत्री, केरल सरकार

[8-4-1988 को केरल हिन्दी प्रचार सभा में दिये गये उद्घाटन भाषण का सारांश]

स्वागत भाषण में केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री श्री. एम. के. वेलायुधन नायर ने बताया कि हिन्दी के तपोनिष्ठ सेवक स्व० के. वासुदेवन पिल्लै जी का स्मरण उनके देहान्त होने के वर्षों बाद भी आज किया जाता है जबकि बड़े बड़े राजनीतिक नेता विस्मृत हो गये हैं। स्व० पिल्लैजी अपने किये कार्यों के लिए आज स्मरण किये जाते हैं। केरल भर में उन्होंने निस्वार्थता, तत्परता और सत्य-सन्धता के साथ वर्षों कार्य किया। पता नहीं ये तीनों गुण राजनीतिक कार्यकर्ताओं में कहाँ तक पाये जाते हैं। 26 वर्ष पूर्व पिल्लै जी का देहान्त हो गया। उस समय वे 55 वर्ष के

केरल भर में उन्होंने निस्वार्थता, तत्परता और सत्यसन्धता के साथ वर्षों कार्य किया। पता नहीं ये तीनों गुण राजनीतिक कार्यकर्ताओं में कहाँ तक पाये जाते है।

थे। आज भी हम उनका आदर करते हैं। उनका स्मरण करते समय हिन्दी प्रचार अभियान में उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो महत्वपूर्ण भूमिका निभायी उसका स्मरण करते हैं।

स्व० वासुदेवन पिल्लै की सब से बडी देन यह केरल हिन्दी प्रचार सभा ही है। इस संस्था को बनाये रखने और उसको विकास के पथ पर अग्रसर करने के लिए श्री. वेलायुधन नायर जैसे कर्मठ कार्यकर्ता को भी वे प्रदान कर गये। पिल्लै जी के देहान्त के बाद इस संस्था की उन्नति ही होती रही है, अवनति नहीं। उनकी आत्मा इस पर संतुष्ट होती होगी।

केरल के युवकों केलिए इस सभा को महती सेवा करनी है। इस सम्मेलन के पूर्व जो संगोष्ठी आयोजित हुई वह इस दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। देशी और विदेशी भाषाओं के अध्यापन की प्रणालियों पर विशेषज्ञों ने भाषण दिये जिससे प्रतिभागी अपना तद्विषयक ज्ञान बढा सके।

शिक्षा के उद्देश्यों पर हम चर्चा किया करते हैं। शिक्षा का उद्देश्य केवल जीविकोपार्जन ही नहीं, ज्ञानार्जन भी होना चाहिए। सामाजिक जीवन का वांछित परिवर्तन और सांस्कृतिक उन्नयन भी शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। इसमें

जीवन का वांछित परिवर्तन और सांस्कृतिक उन्नयन भी शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। इसमें भाषाओं का बडा महत्वपूर्ण स्थान है।

भाषाओं का बडा महत्वपूर्ण स्थान है। हमें अधिक से अधिक भाषायें सीखनी हैं। भाषा के द्वारा ज्ञान ही नहीं उत्तम मनोवृत्तियाँ भी हमें मिलती हैं।

स्व० पिल्लै जी ने हिन्दी भाषा के द्वारा स्वतंत्रता संग्राम का आवेश और विविध विषयों का ज्ञान जनता को दिया। केरल हिन्दी प्रचार सभा इस महान कार्य की प्रगति के लिए सफल प्रयास कर रही है। हम सब को चाहिए कि इस संस्था को सब प्रकार का सहयोग दें।

स्व० के. वासुदेवन पिल्लैजी की पुण्य स्मृति में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए मैं इस सम्मेलन का उद्घाटन करता हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी में त्याग का सौरभ्य भरा है

डा० के. अय्यप्प पणिक्कर
अध्यक्ष, अंग्रेज़ी विभाग
केरल विश्वविद्यालय

[8-4-1988 को केरल हिन्दी प्रचार सभा भवन, तिरुवनन्तपुरम में दिये गये अध्यक्षीय भाषण का सारांश]

स्व० के. वासुदेवन पिल्लै जी के इस जयन्ती समारोह में भाग लेते समय मुझे अपने गाँव के उस हिन्दी प्रचारक का स्मरण होता है जिन से मैं ने बचपन में हिन्दी सीखी थी। दुबला पतला शरीर। खादी का वेष। सौम्य वार्तालाप। अपने लिए कुछ नहीं कमाया। अब नब्बे वर्ष के वयोवृद्ध हो गये होंगे।

इस प्रकार के कितने ही हिन्दी प्रचारकों ने गांवों और शहरों में त्यागसुरभिल जीवन बिताया है! चंदन में भी सौरभ्य है। त्याग में भी सौरभ्य है। त्यागी मनुष्यों के समीप रहने पर उनकी आतमा के सौरभ्य का अनुभव कर सकते हैं। जो त्यागी नहीं हैं उन के समीप रहने पर दुर्गन्ध का भी अनुभव हो सकता है। हम ने कई बार यह अनुभव किया है। मनुष्यत्व की पावनता तभी बनी रहती है जब हम स्वार्थ लाभों के पीछे न पड कर, निस्वार्थ भाव से काम करते हैं और मरणोपरान्त अपरिचित जनों का भी आदर पा लेते हैं।

वासुदेवन पिल्लै जी का स्मरण मेरे मन में है। मैं 1948 में तिरुवनन्तपुरम में आ गया। कई बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्यागी मनुष्यों के समीप रहने पर उनकी आत्मा के सौरभ्य का अनुभव कर सकते हैं।

उन्हें देखा है। जैसे स्वागत भाषण में श्री. एम के. वेलायुधन नायर ने बताया, हिन्दी प्रचार राष्ट्र-निर्माण का ही एक अंग था। भारत के नवोत्थान का एक प्रमुख प्रतीक था हिन्दी प्रचार। विदेशी शासन के उस जमाने में ग्रंथशाला अभियान, हिन्दी प्रचार अभियान आदि का विकास ग्रामीण जनता के सक्रिय सहयोग से हुआ था। आज भी इन अभियानों की स्थिति वैसी ही है। वर्षों बाद इन सेवाओं का स्मरण किया जायेगा। पर जीवित रहते समय स्वार्थपूर्ति इस प्रकार की सेवाओं से नहीं हो सकेगी।

इस सम्मेलन के श्रोताओं में बैठे हुए हिन्दी प्रचारकों के चेहरे देखिए।

इस सम्मेलन के श्रोताओं में बैठे हुए हिन्दी प्रचारकों के चेहरे देखिए। एक सविशेष सौम्यता इन चेहरों पर मिलती है।

एक सविशेष सौम्यता इन चेहरों पर मिलती है। पता नहीं यह सौम्य भाव कहाँ से आता है। हिन्दी भाषा के अध्ययन से? निस्वार्थ सेवा से? या उन्हीं के स्वभाव से? अनेक हिन्दी अध्यापकों से मेरा व्यक्तिगत परिचय है। उन सब में यह सौम्यता पायी जाती है। दूसरी ओर अंग्रेजी भाषा के वे विद्वान हैं जो दूसरों को अपने पास आने नहीं देते। माननीय शिक्षा मंत्री ने यहाँ अपने अंग्रेजी

राष्ट्रभाषा के अध्यापकों में त्याग का सौरभ्य स्वतंत्रता संग्राम के उस स्वार्थ हीन युग के स्मरण के समान बना हुआ है।

अध्यापक का जिक्र किया जिन से बातचित करने का साहस उन के शिष्यों को नहीं मिलता था। क्या यह विशेषता भी भाषा विशेष के अध्ययन से आती है? पता नहीं। लेकिन राष्ट्रभाषा के अध्यापकों में त्याग का सौरभ्य स्वतंत्रता संग्राम के उस स्वार्थहीन युग के स्मरण के समान बना हुआ है।

पांडवों में धर्मपुत्र का जो स्थान था वही स्थान भारतीय भाषाओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में हिन्दी का है, होना चाहिये। एक प्रकार की जिम्मेदारी। इतर भाषाओं के प्रति एक प्रकार का वात्सल्य।

आधुनिक हिन्दी साहित्य की महान उपलब्धियों से हिन्दी का सामान्य ज्ञान पानेवाले मलयाली अनभिज्ञ हैं। मलयालम के ऐसे लेखक जो हिन्दी नहीं जानते, हिन्दी के संबन्ध में कई प्रकार की भ्रामक धारणाओं के शिकार हैं।

मलयालम के ऐसे लेखक जो हिन्दी नहीं जानते, हिन्दी के संबन्ध में कई प्रकार की भ्रामक धारणाओं के शिकार हैं।

हिन्दी के विज्ञान साहित्य में और सर्गात्मक साहित्य में जो बडी उपलब्धियाँ हुई हैं उनका परिचय इतर भारतीय भाषा भाषी जनता को देने का दायित्व भी हिन्दी प्रचारकों को अपने ऊपर ले लेना है। वियतनामी भाषा के अध्यापकों का जो धर्म है उस में और स्वतंत्र भारत के हिन्दी अध्यापकों के धर्म में बडा अंतर है। हिन्दी अध्यापक का दायित्व स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ बढ गया है। आज के हिन्दी अध्यापक में वही त्याग वृत्ति और स्वाध्याय-प्रवचन की अभिलाषा होनी चाहिए जो स्वतंत्रता संग्राम के युग में होती थी। इस दृष्टि से देखें तो हिन्दी अध्यापक को हिन्दी भाषा की ही नहीं, हिन्दी साहित्य की भी व्याख्या करने का दायित्व निभाना है। इस बात में मुझे सन्देह है कि हिन्दी के संबन्ध में जो गलत धारणायें फैल गयी थीं उन से हम मुक्त हो चुके हैं कि नहीं।

मेरे कुछ मित्रों ने हिन्दी कवितायें सीधे मलयालम में अनूदित करने की योजना बनायी है। हमें हिन्दी संबन्धी प्रामाणिक ग्रन्थ रचने हैं। कुछ अनुवाद निकले हैं। हम ने नया पाठ्यक्रम ऐसा बनाया है कि अंग्रेज़ी एम. ए. करनेवाले छात्र तुलसीदास की रचनाओं का भी अध्ययन करें। एक भाषा का अध्ययन करना हो तो सभी संबन्ध भाषाओं के भी साहित्य का अध्ययन करना है। हमें ऐसा वातावरण उत्पन्न करना है कि मलयालम में बी. ए., एम. ए. करने वाले विद्यार्थी हिन्दी साहित्यकारों की कृतियाँ अवश्य पढें।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्व० के. वासुदेवन पिल्लै का '81 वीं जयन्ती'

दक्षिण के प्रमुख हिन्दी प्रचारक एवं केरल हिन्दी प्रचार सभा के संस्थापक-मंत्री स्व० के वासुदेवन पिल्लैजी की 81 वीं जयन्ती 8-4-1988 को केरल के विविध केन्द्रों में मनायी गयी। स्व० पिल्लैजी की जयन्ती केरल हिन्दी प्रचार सभा के तत्वावधान में प्रतिवर्ष मनायी जाती है।

सभा के तिरुवनन्तपुरम परिसर के कार्यक्रमों का शुभारभ प्रात: नौ बजे इस्कोण (अन्तर्देशीय हरे कृष्ण अभियान) की तिरुवनन्तपुरम भजन मंडली के हिन्दी भजन से हुआ।

पूर्वाह्न में "भाषाध्यापन कॉलेज स्तर पर" विषय पर एक संगोष्ठी आयोजित हुई। केरल विश्वविद्यालय के प्राच्य भाषा संकाय के भूतपूर्व अध्यक्ष, केरल हिन्दी प्रचार सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष एवं कालटि संस्कृत विश्वविद्यालय के भूतपूर्व विशेष अधिकारी डा० पी. के. नारायण पिल्लै ने संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए बताया कि भाषा ही मानसिक, बौद्धिक तथा भावनात्मक जीवन को उन्मेष और उत्तेजना प्रदान कर सकती है और इस कारण शिक्षा-पद्धति में भाषाध्यापन को प्रमुख स्थान दिया जाना चाहिए।

अपने विद्वत्तापूर्ण अभिभाषण में विख्यात शिक्षाविद एवं केरल विश्व

भाषा ही मानसिक, बौद्धिक तथा भावनात्मक जीवन को उन्मेष और उत्तेजना प्रदान कर सकती है और इस कारण शिक्षापद्धति में भाषाध्यापन को प्रमुख स्थान दिया जाना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यालय के उपकुलपति डा० ए. सुकुमारन नायर ने विदेशी भाषाओं के अध्यापन के क्षत्रे में किये गये अनुसंधानों की तुलना में भारतीय भाषाध्यापन के क्षेत्र में किये गये अनुसंधानों की तुलना करते हुए बताया कि गत पचास वर्षों में भारतीय भाषाध्यापन में कोई गणनीय नवीनता नहीं आयी जब कि अंग्रेजी जर्मन जैसी विदेशी भाषाध्यापन के क्षेत्र में अनेकों नयी प्रणालियाँ उभर आयी हैं। भारतीय भाषाध्यापन में वही अव्यवस्थित

गत पचास वर्षों में भारतीय भाषाध्यापन में कोई गणनीय नवीनता नहीं आयी जब कि अंग्रेजी जर्मन जैसी विदेशी भाषाध्यापन के क्षेत्र में अनेकों नयी प्रणालियाँ उभर आयी हैं।

प्रणाली किंचित परिवर्तन के साथ अपनायी जा रही है जो करीब दो सौ वर्ष पूर्व यूरप के विश्वविद्यालयों में प्रचलित लिबरल एजूकेशन का अंग था। करीब एक शताब्दी के पूर्व ही पश्चिमी देशों ने इस प्रणाली को छोड दिया है। डा० नायर ने बताया कि साहित्य पर अवलंबित

साहित्य पर अवलंबित वर्त्तमान भारतीय भाषाध्यापन प्रणाली सर्वथा अवैज्ञानिक है।

वर्तमान भारतीय भाषाध्यापन प्रणाली सर्वथा अवैज्ञानिक है। इस बात पर डा० नायर ने जोर दिया कि मातृभाषा, संपर्कभाषा, राज-भाषा और ग्रंथालय भाषा की अध्यापन प्रणालियाँ अलग अलग होनी चाहिए।

अपने अध्यक्षीय भाषण में केरल के विख्यात प्रगतिशील विचारक, लेखक एवं सामाजिक कार्यकर्ता श्री पी. टी भास्कर पणिक्कर ने भाषा और चिंतन के अटूट संबंध को स्पष्ट करते हुए कहा कि भाषा-ध्यापन को इस कदर बदलना है कि वह छात्रों की चिंतनशक्ति को विकसित करने का प्रभावी साधन बने। उन्होंने सुझाया कि विश्व-विद्यालयों में विविध भाषाओं के अध्यापकों को विविध भाषाओं और साहित्या पर विचार विनिमय का अवसर प्रदान करने केलिए स्कूल ऑफ लंगवेजस स्थापित हो। उन्होंने यह भी सुझाव रखा कि राष्ट्रभाषा हिन्दी विश्वभाषाओं के समन्वय की कडी बन जाये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषाध्यापन को इस कदर बदलना है कि वह छात्रों की चिंता शक्ति को विकसित करने का प्रभावी साधन बने।

मलयालम भाषाध्यापन की प्रणालियों पर प्रकाश डालते हुए केरल विश्वविद्यालय के मलयालम विभाग के प्रोफेसर डा० पी. वी. वेलायुधन पिल्लै ने प्रशासनिक कार्यों के कुशल निर्वहण केलिए आशयों को सुव्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत करने की जो क्षमता अपेक्षित है उसका विकास कॉलेज स्तर के भाषाध्यापन द्वारा किया जाना चाहिए।

तमिल अध्यापन पर अपने विचार प्रकट करते हुए केरल विश्वविद्यालय के तमिल विभाग के अध्यक्ष डा० के. सुब्रह्मण्यम ने तमिल के प्राचीन ग्रंथ तिरुकुरल से उद्धरण दे कर साबित किया कि उत्तम आदर्शों पर आधारित साहित्यांश पढाने से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में उत्तम गुणों का विकास किया जा सकता है। हिन्दी के व्यंग्य कहानीकार डा० वी. गोविन्दशेणाय ने हिन्दी अध्यापन पर अपने विचार प्रकट किये और आग्रह किया कि समय की मांग के अनुरूप हिन्दी अध्यापन प्रणालियाँ सुधारी जायें। अरबी अध्यापन पर बोलते हुए यूनिवेर्सिटी कॉलेज, तिरुवनन्तपुरम के अरबी विभागाध्यक्ष प्रो. सी. उम्मर ने विश्व की विकासोन्मुख भाषाओं में अरबी का स्थान निर्धारित किया और कहा कि आज भारत में अरबी सिखाने का

प्रशासनिक कार्यों के कुशल निर्द्धारण केलिए आशयों को सुव्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत करने की जो क्षमता अपेक्षित है उसका विकास कॉलेज स्तर के भाषाध्यापन द्वारा किया जाना चाहिए।

ढंग इसलिये त्रुटिपूर्ण है कि अरबी यहाँ आधुनिक व्यवहार की भाषा के रूप में नहीं, अपितु धर्मविशेष की भाषा के रूप में सिखायी जाती है। उन्होंने अरबी के पाठ्यक्रम में उचित परिवर्तन करने की मांग की। अंग्रेजी अध्यापन पर बोलते हुए सरकारी आर्टस कॉलेज, तिरुवनन्तपुरम की भूतपूर्व प्राचार्या एवं अंग्रेजी की विख्यात अध्यापिका प्रो० एस. शान्तकुमारी ने इस बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय की मांग के अनुरूप हिन्दी अध्यापन प्रणालियाँ सुधारी जायें ।

पर खेद प्रकट किया कि अंग्रेजी अध्यापन का ही नहीं भारतीय भाषाओं का स्तर भी दिनों दिन गिरता जा रहा है। विद्यार्थी न शुद्ध अंग्रेजी का व्यवहार कर पाते हैं न शुद्ध भारतीय भाषाओं का। रूसी और जर्मन की अध्यापन प्रणालियों की नवीनता पर यथाक्रम केरल विश्वविद्यालय के रूसी विभाग के अध्यक्ष डा० के. गोविन्दन नायर तथा सरकारी विमेन्स कॉलेज, तिरुवनन्तपुरम के जर्मन विभाग की अध्यक्षा प्रो० वी. एस. वत्सला ने पर्याप्त प्रकाश डाला।

केरल ज्योति के संपादक श्री. के. जी. बालकृष्ण पिल्ल ने स्वागत

आज भारत में अरबी सिखाने का ढंग इसलिए त्रुटिपूर्ण है कि अरबी यहाँ आधुनिक व्यवहार की भाषा के रूप में नहीं, अपितु धर्म विशेष की भाषा के रूप में सिखायी जाती है।

भाषण दिया और साहित्याचार्य महाविद्यालय के प्रधानाचार्य श्री. वी.के.एस. नंपूतिरी ने कृतज्ञता प्रकट की।

अपराह्न को आयोजित सार्वजनिक सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए केरल सरकार के शिक्षा मंत्री श्री. के. चन्द्रशेखरन ने शिक्षा के लक्ष्यों का विवेचन किया और बताया केवल जीविकोपार्जन ही नहीं बल्कि सामाजिक जीवन का वांछित परिवर्तन भी शिक्षा का लक्ष्य हो। सांस्कृतिक जीवन

विद्यार्थी न शुद्ध अंग्रेजी का व्यवहार कर पाते हैं न शुद्ध भारतीय भाषाओं का।

के उन्नयन में भाषा की महत्पूर्ण भूमिका है उस पर जोर देते हुए आप ने कहा कि हिन्दी के द्वारा स्वतंत्रता संग्राम के आवेश के साथ साथ ज्ञान विज्ञान की शिक्षा देने में केरल हिन्दी प्रचार सभा जो सेवा करती आ रही है वह अत्यंत सराहनीय है।

सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए केरल विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग के अध्यक्ष एवं मलयालम के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी के द्वारा स्वतंत्रता संग्राम के आवेश के साथ साथ ज्ञान विज्ञान की शिक्षा देने में केरल हिन्दी प्रचार सभा जो सेवा करती आ रही है वह अत्यन्त सराहनीय है।

शीर्षस्थ कवि डा० के. अय्यप्प पणिक्कर ने कहा कि ग्रामीण जनता के नस्वार्थ सहयोग के आधार पर भारतीय नवोत्थान के एक प्रमुख प्रतीक के रूप में हिन्दी प्रचार अभियान विकसित हुआ था। उन्होंने इस बात पर सन्तोष प्रकट किया कि हिन्दी अध्ययन से व्यक्तित्व में त्याग का सौरभ्य आ जाता है। उन्होंने भारतीय भाषाओं की तुलना पाण्डवों से की और हिन्दी की तुलना धर्मपुत्र से की। उन्होंने आग्रह किया कि हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं में हो रहे नये विकासों का बोध इतर भारतीय भाषा भाषियों को कराने का कार्य भी हिन्दी प्रचार का अंग बने। हिन्दी साहित्य संबंधी प्रामाणिक ग्रंथ मलयालम जैसी इतर भाषाओं में भी रचे जायें। उन्होंने हिन्दी प्रचार को राष्ट्र निर्माण का कार्य मानने का आग्रह किया।

केरल ग्रन्थशाला संघ के भूतपूर्व मंत्री तथा केरल अनौपचारिक शिक्षा एवं विकास समिति (कानफेट) के मंत्री श्री. पी. एन. पणिक्कर ने कहा—भारत की राष्ट्रभाषा विकसित करनी है। अधिकांश जनता द्वारा बोली व समझी जानेवाली हिन्दी ही भारत की राष्ट्र भाषा हो सकती है। राष्ट्र भाषा का आदर राष्ट्र का ही आदर है

हिन्दी अध्ययन से व्यक्तित्व में त्याग का सौरभ्य आ जाता है।

तिरुवनन्तपुरम नगर निगम के काउंसिलर अधिवक्ता श्री. आर. नरेन्द्रन नायर ने इस बात पर खेद प्रकट किया कि कभी उन्हों ने यौवन के आवेश में हिन्दी विरोधी आन्दोलन में भी गलती से भाग लिया था। उन्होंने केरल के युवकों से आह्वान किया कि बड़े उत्साह से हिन्दी का अध्ययन करें।

स्व० के. वासुदेवन पिल्लै जयन्ती के सिलसिले में आयोजित राज्य स्तरीय भाषण प्रतियोगिता के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा का आदर राष्ट्र का ही आदर है।

विजेताओं को डा० अय्यप्प पणिक्कर ने पुरस्कार वितरित किया।

पुरस्कार विजेता हैं:—

कनिष्ठ

प्रथम स्थान :

श्री. एम. एस. अरुण कुमार
सरकारी हाई स्कूल
करकुलम

द्वितीय स्थान :

श्री. टी. के. हरीष
सेन्ट जोसफ्स हाई स्कूल
तिरुवनन्तपुरम

तृतीय स्थान :

कुमारी पी. आशा
कोट्टणहिल गर्ल्स हाई स्कूल
तिरुवनन्तपुरम

वरिष्ठ

प्रथम स्थान :

श्री. बी. अनिल
स्नातकोत्तर केन्द्र
केरल हिन्दी प्रचार सभा

द्वितीय स्थान :

श्री. आर. हरीद्रनाथ
स्नातकोत्तर केन्द्र
केरल हिन्दी प्रचार सभा

तृतीय स्थान :

श्री बी. जयकुमार
स्नातकोत्तर केन्द्र
केरल हिन्दी प्रचार सभा

केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री श्री एम. के. वेलायुधन नायर ने स्वागत भाषण दिया और सभा की निर्वाहक समिति के सदस्य श्री. के. एन. सी. कुरुप ने कृतज्ञता प्रकट की। ❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाज के उन्नयन में कविता की भूमिका

श्री. टी. के. रामकृष्णन्
सांस्कृतिक कार्य मंत्री, केरल सरकार

[मलयालम के महाकवि श्री. पाला नारायणन नायर और प्रो० रमाकान्तन को पुरस्कृत करने केलिए 'कविता रंगम्' के तत्वावधान में 25-2-1988 को केरल **हिन्दी प्रचार सभा** भवन में आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए दिये गये भाषण का सारांश]

केरल में कई साहित्यिक संस्थायें हैं, लेकिन मेरी जानकारी में 'कवितारंगम' ही एक ऐसी संस्था है जो गत तीस वर्षों से कविता को प्रोत्साहित करने और कविता का प्रचार करने की दिशा में क्रियाशील रही है।

बताया जाता है कि कविता को उचित प्रोत्साहन नहीं मिलता। यह भी बताया जाता है कि कविता का अंकुर सूख गया है। लेकिन यह बात सत्य नहीं। कविता की प्रधानता बढती जा रही है।

एक ज़माना था जब कविता केलिए छंद अनिवार्य माना जाता है। फिर स्वच्छन्द छन्दों का भी प्रचलन हुआ है। यह संतोष की बात है कि आज पुरस्कृत होने वाले दोनों कवि छन्दोबद्ध कविता ही लिखा करते हैं। मेरी धारणा यही रही है कि छन्दोबद्धता कविता केलिए अत्यन्त आवश्यक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री. पाला नारायणन नायर ने केरल को प्रकृति का सौंदर्य और सौरस्य अपनी कविता में भर दिया है।

श्री. पाला नारायणन नायर ने केरल की प्रकृति का सौंदर्य और सौरभ्य अपनी कविता में भर दिया है। 'केरल बढता जाता है' शीर्षक कविता में केरल की गरिमा दर्शायी गयी है। श्री. रमाकान्तन ने जनता के सुख, दुख का हृदयस्पन्दन अपनी कविता में प्रस्तुत किया है। दोनों हमारे अभिनन्दन के पात्र हैं।

हमारे स्वतंत्रता संग्राम आदि अभियानों का आदर करने में और उनसे स्वीकार्य सबक प्रस्तुत करने में हमारे कवियों को, सहित्यकारों को अपना दायित्व निभाना है। श्री. पाला नारायणन नायर की 'माता का पुत्र', शीर्षक कविता ने मुझे बहुत आकृष्ट किया है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान पुलीस से मारे गये युवा कार्यकर्ता

श्री. रमाकान्तन ने जनता के सुख, दुख का हृदयस्पन्दन अपनी कविता में प्रस्तुत किया है।

'कोट्टात्तला सुरेन्द्रन' की स्मृति में यह कविता लिखी गयी थी। कविता की प्रारंभिक पंक्तियाँ पढते समय मुझे लगा कि पुत्र की मृत्यु पर माता को जो दुख हुआ होगा वही वर्णित किया गया होगा। लेकिन कविता के अन्त में माता उस अभियान को दुख या प्रतिहिंसा की भावना से नहीं देखती जो उसके पुत्र की मृत्यु का कारण बना

हमारे स्वतंत्रता संग्राम आदि अभियानों का आदर करने में और उनसे स्वीकार्य सबक प्रस्तुत करने में हमारे कवियों को, सहित्यकारों को अपना दायित्व निभाना है।

था। उलटे वह शपथ लेती है कि उस अभियान में उसके पुत्र ने जो कर्तव्य अधूरा छोडा था उसको वह पूरा करेगी। इस प्रकार केरल की पृष्ठ भूमि में श्री. पाला नारायणन नायर ने समकालीन सार्वदेशीय समस्यायें भी प्रभावी ढंग से प्रस्तुत की हैं। उनकी रचना शैली अत्यन्त आकर्षक है।

'कविता रंगम' ने इन दोनों कवियों को पुरस्कृत करने का जो निर्णय लिया वह अत्यन्त उचित है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार केरल की पृष्ठभूमि में श्री. पाला नारायणन नायर ने समकालीन सार्वदेशिक समस्यायें भी प्रभावी ढग से प्रस्तुत की हैं।

केरल में कविता की लोकप्रियता बढने लगी है। कविता की रचना मात्र से जनता पर वाँछित प्रभाव नहीं डाल सकते। भरी सभाओं में आकर्षक ढंग से कविता सुनानी भी है। महान विप्लवकारियों ने इस रीति से विप्लव को आगे बढाने में अपनी कला चातुरी दिखायी है। चिली के बडे श्रेष्ठ कवि हैं पाल्लो नरूदा। विप्लवकारियों की भरी सभाओं में अपनी कवितायें सुनाकर वे उन में आवेश भर देते हैं। मलयालम के कवि श्री. कडम्मनिट्टा रामकृष्णन अपनी कविता आकर्षक ढंग से सुनाने में विख्यात हैं। मलयालम के और भी अनेक कवि हैं जो इस प्रकार अपनी कविता सुनाते हैं।

कविताओं को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करके उन पर खुली चर्चायें

विप्लवकारियों की भरी सभाओं में अपनी कवितायें सुनाकर वे उन में आवेश भर देते हैं।

करके कविता के बढते हुए आयामों का बोध कराने में 'कविता रंगम' जैसे मंच अत्यन्त सहायक हैं। यह बडे गर्व की बात है कि गत तीस वर्षों से कविता रंगम की ओर से यह कार्य चल रहा है।

> हिन्दी के विरोध का कोई भी आन्दोलन राष्ट्र की प्रगति में बाधक है।
>
> —नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवितारंगम पुरस्कार वितरण समारोह

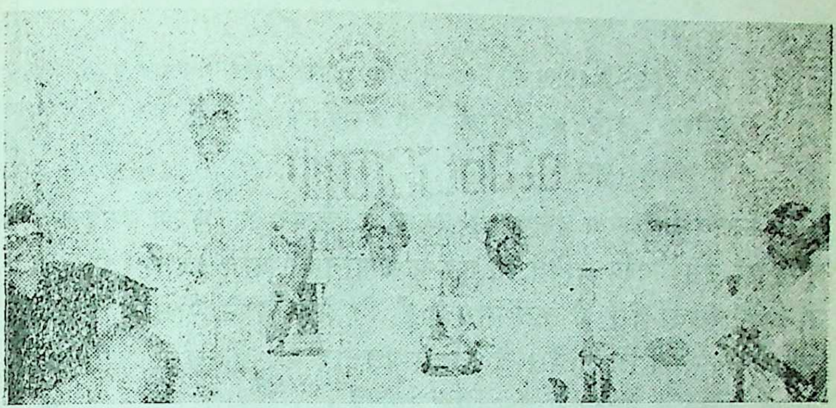

उदघाटन भाषण दे रहे हैं केरल के सांस्कृतिक कार्य मंत्री श्री. टी. के. रामकृष्णन। बैठे हैं (बायें से) पद्मश्री तिक्कुरिशि सुकुमारन नायर, महाकवि श्री पी सी. देवस्या, महाकवि श्री. पाला नारायणन नायर; महाकवि श्री. एम. पी. अप्पन और प्रो० श्री. किलिमानूर रमाकांतन।

25-2-1988 को केरल की मुख्य कविता अध्ययन समिति 'कवितारंगम' के तत्वावधान में केरल हिन्दी प्रचार सभा के तिरुवनन्तपुरम परिसर में आयोजित समारोह में मलयालम के महाकवि श्री. पाला नारायणन नायर को उन के काव्य संग्रह 'अमरज्योति' के लिए 1986 का कवितारंगम पुरस्कार प्रदान किया गया। मलयालम के विख्यात कवि प्रो० किलिमानूर रमाकान्तन को विशेष पुरस्कार भी दिया गया।

समारोह का उद्घाटन और पुरस्कार वितरण केरल के सांस्कृतिक

श्री. विलफ्रेड तोमस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो कुछ है सो तोर

श्री. पाला नारायणन नायर

[25-2-1988 को कवितारंगम द्वारा प्रदत्त पुरस्कार स्वीकार करते हुए केरल हिन्दी प्रचार सभा में दिये गये भाषण का अंश]

मानव का चरण पकडने से अच्छा है ईश्वर का चरण पकडना। अपने को उस अदृश्य शक्ति का एक कण मानकर आगे बढना। मैं यही मानकर चलता हूँ। मैं नहीं मानता हूँ कि मेरे अपने सामर्थ्य से ये उपलब्धियाँ मुझे मिली हैं। ये पद, ये प्रशंसायें मेरे महत्व से नहीं, उस अदृश्य शक्ति के महत्व से मुझे मिल रही हैं। ✯

कार्य मंत्री श्री. टी. के. रामकृष्णन ने किया। संस्कृत के महाकवि श्री. पी. सी देवस्या अध्यक्ष रहे। मलयालम के महाकवि श्री. एम. पी. अप्पन, मलयालम के विख्यात कहानीकार एवं उपन्यासकार प्रो० जी. एन. पणिक्कर, केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री श्री. एस. के. वेलायुधन नायर और हिन्दी-मलयालम साहित्यकार श्री. कुन्नुकु.षी कृष्णनकुट्टी ने अभिनन्दन भाषण दिया। विख्यात फिल्मी अभिनेता पद्मश्री तिक्कुरिशि सुकुमारन नायर ने कवितारंगम द्वारा आयोजित कविता रचना कार्यशाला के प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किये।

कवितारंगम के मंत्री श्री. विलफ्रड तोमस ने स्वागत भाषण दिया। श्री. पाला नारायणन नायर और श्री. रमाकान्तन ने पुरस्कार स्वीकृति भाषण दिया।

समारोह का समापन श्री. पाला नारायणन नायर और श्री. किलिमानूर रमाकान्तन की कुछ कविताओं के पाठ के साथ हुआ। ❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवितारंगम पुरस्कार (1986)

महाकवि श्री. पाला नारायणन नायर (बीच में) और प्रो० श्री. किलिमानूर रमाकांतन (दायें) केरल के सांस्कृतिक कार्य मंत्री श्री. टी. के. रामकृष्णन से पुरस्कार स्वीकार कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरस्कार वितरण

स्व० के. वासुदेवन पिल्लै स्मारक वक्तृता प्रतियोगिता (1988) के विजेता, विख्यात मलयालम कवि डा० के. अय्यप्प पणिक्कर के करकमलों से पुरस्कार पा रहे हैं:— (बायें से) श्री. एम. एस. अरुण कुमार, श्री. टी. के. हरीष, कुमारी पी. आशा, श्री. बी. अनिल, श्री. आर. हरीन्द्रनाथ और श्री. बी. जयकुमार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षाओं के अतिरिक्त हिन्दी प्रचार संस्थाओं द्वारा हिन्दी के राष्ट्रभाषा और राजभाषा के रूप में अन्य कार्यक्रम

श्री. एम. के. वेलायुधन नायर
मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा
तिरुवनन्तपुरम

[12-13 मार्च 1988 को हिमाचल भवन, नई दिल्ली में अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ द्वारा आयोजित सम्मेलन में प्रस्तुत प्रबंध]

श्री एम. के. वेलायुधन नायर

अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ की सदस्य संस्थाओं की इस संगोष्ठी में इस विषय पर विचार करना अत्यन्त समीचीन और उपयोगी है कि परीक्षा संचालन के अतिरिक्त राष्ट्रभाषा और राजभाषा के रूप में हिन्दी के कुछ अन्य कार्य भी किये जाते है कि नहीं।

स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं का प्रादुर्भाव महात्मा गांधी और अन्य राष्ट्रीय नेताओं के इस संकल्प का परिणाम है कि देश की एकता और स्वतंत्रता को बनाये रखने के लिए एक आम भाषा की ज़रूरत है जिसके माध्यम से विविध भाषा भाषी भारतीय जनता का आपसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि मात्र परीक्षा संचालन के द्वारा हम लक्ष्य प्राप्त कर सकते तो तमिलनाडु में जहाँ दक्षिण के हिन्दी प्रचार के आरम्भ का सूत्रपात स्वयं राष्ट्रपिता के नेतृत्व में और राजाजी, अनिबेसेंट, डा० सी. पी. रामस्वामी अय्यर जैसे कर्मठ कार्यकर्ताओं के सक्रिय सहयोग से हुआ हिन्दी की यह दुर्दशा नहीं हुई होती।

वैचारिक एवं सांस्कृतिक सम्पर्क सुगम और सुसाध्य हो सके। हिन्दी को इस पद के लिए इसलिए चुना गया कि इसका प्रचार कई प्रांतों में हो चुका है और शेष प्रांतों में आसानी से इसका प्रचार किया जा सकेगा। उस समय शायद इसकी कल्पना नहीं की गई थी कि हिन्दी जब राजभाषा बनेगी और जब अंग्रेजी का स्थान उसको दिया जाएगा तब हिन्दीतर भाषा भाषियों की स्थिति हिन्दी भाषियों की तुलना में अधिक असुविधाजनक हो जायेगी और परिणामस्वरूप उनके किसी किसी विभाग द्वारा हिन्दी को थोपने का आरोप लगा कर उसका विरोध किया जाएगा। सम्भवत: यह कारण था कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन और उस मातृ वृक्ष के बीजों से उत्पन्न प्राय: सभी संस्थाएँ परीक्षा संचालन को अपना मुख्य कार्य मानती आ रही हैं।

आज जब हम गतकाल के अपने अनुभवों पर दृष्टिपात करते हैं तो स्पष्ट हो जाता है कि केवल परीक्षा संचालन से हिन्दी का उस मात्रा में और शीघ्रता के साथ प्रचार करना असाध्य है जिस मात्रा में और जिस शीघ्रता के साथ करना हमारा ध्येय है। यदि मात्र परीक्षा संचालन के द्वारा हम लक्ष्य प्राप्त कर सकते तो तमिलनाड में जहाँ दक्षिण के हिन्दी प्रचार के आरम्भ का सूत्रपात स्वयं राष्ट्रपिता के नेतृत्व में और राजाजी, अनिबेसेंट, डा० सी. पी. रामस्वामी अय्यर जैसे कर्मठ कार्यकर्ताओं के सक्रिय सहयोग से हुआ हिन्दी की यह दुर्दशा नहीं हुई होती। वहाँ का विरोधाभास यह है कि एक ओर दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की परीक्षाओं में प्रतिवर्ष लाखों विद्यार्थी बैठते हैं और दूसरी ओर उसे स्कूली पाठ्यक्रम से और सामाजिक जीवन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से बहिष्कृत किया जाता है। इतिहास की इस घटना से हमें नए सबक सीखने हैं और तदनुसार अपनी कार्यशैली को परिवर्तित करना है।

हिन्दी का प्रचार और हिन्दी का शिक्षण दोनों एक सिक्के के दो पहलू हैं, एक पहलू नहीं। दोनों परस्पर आश्रित है। प्रचार द्वारा जब तक खेत तैयार नहीं किया जाएगा तब तक शिक्षण का बीज ठीक तरह से उग नहीं पाएगा। हिन्दी के प्रचार का उद्देश्य हिन्दी से अनभिज्ञ जनता के हृदय में हिन्दी के प्रति प्रेम और श्रद्धा का

प्रचार के सभी तरह के समाज मनोवैज्ञानिक तत्वों का उपयोग हमें हिन्दी प्रचार में भी करना होगा।

भाव उत्पन्न करना है ताकि वे स्वयं पढने के लिए प्रेरित हो जाएँ और अपने बच्चों के जीवन की सफलता के लिए हिन्दी ज्ञान को अपेक्षित मानकर उन्हें हिन्दी अध्ययन के लिए प्ररित करें। यह कार्य परीक्षा संचालन से नहीं हो सकता।

प्रचार के सभी तरह के समाज मनोवैज्ञानिक तत्वों का उपयोग हमें हिन्दी प्रचार में भी करना होगा। जनता के हृदय में राजभाषा हिन्दी के प्रभुत्व की जो आशंका बनी हुई है उसको तर्क संगत रीति में निर्मूल साबित करके उसका निराकरण करना है और वर्तमान परिस्थिति में राष्ट्रीय जीवन की मुख्य धारा में आगे बढ़ने में हिन्दी ज्ञान का अनिवायता का बोध कराना है। यह सब कार्य केवल हिन्दी प्रचारकों द्वारा नहीं हो सकता। राजनीतिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक नेताओं को साथ लेकर चलना होगा। उनकी बातों की जितनी धाक जन हृदय पर जम सकती है उतनी साधारण हिन्दी प्रचारकों की नहीं जम पाती। इसलिए छोटे-मोटे सम्मेलनों, संगोष्ठियों, परिचर्चाओं आदि का आयोजन इस तरह किया जाए कि उनमें हिन्दीतर भाषाभाषी जन नेता हिन्दी के प्रयोजनों के सम्बन्ध में जनता को समझाएँ। उनके उद्बोधनों का व्यापक प्रचार समाचार पत्रों, रेडियो, टेलीविजन जैसे जन संचार माध्यमों से करें तो प्रचार में शीघ्रता आ जाएगी।

हिन्दीतर प्रान्तों की जनता में हिन्दी के प्रति अपनत्व की भावना उत्पन्न करने के लिए यह आवश्यक है कि हिन्दी में प्रांतीय संस्कृतियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीतर प्रांतों की जनता में हिन्दी के प्रति अपनत्व की भावना उत्पन्न करने के लिए यह आवश्यक है कि हिन्दी में प्रांतीय संस्कृतियों के अंशों को भी समाविष्ट किया जाए ।

के अंशों को भी समाविष्ट किया जाए । यह दो प्रकार से सम्भव है । एक है प्रान्तीय भाषाओं की उत्तम रचनाओं क हिन्दी अनुवाद । दूसरा है हिन्दीतर भाषा भाषी हिन्दी लेखकों द्वारा हिन्दी में मौलिक साहित्य सृजन । इन दोनों उपायों से हिन्दी में एक ओर प्रांतीय संस्कृतियों की विशेषताएँ प्रस्तुत की जा सकती हैं और दूसरी ओर प्रांतीय भाषाओं के शब्द मुहावरे आदि भी आ सकते हैं । इस तरीके से हिन्दी को भारत की सामासिक संस्कृति का प्रतिबिम्ब बनाया जा सकेगा और हिन्दी केवल हिन्दी भाषी प्रदेशों की भाषा न मानी जाएगी, सारे राष्ट्र की भाषा मानी जाएगी। हिन्दी को राष्ट्रभाषा के अर्थ के अनुकूल बनाने में और हिन्दी के प्रति जनमानस में ममत्व उत्पन्न करने में यह काय अत्यंत आवश्यक है। स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाएँ इस दिशा में भी कदम बढ़ा सकती हैं । उनके पास इसके लिए आवश्यक मानव संसाधन उपलब्ध है । अब तक के प्रयत्नों से संस्थाएँ अनेक अनुवादक और लेखक तैयार कर सकी हैं । पर प्रकाशन और बिक्री के लिए आवश्यक अन्य संसाधनों का अभाव संस्थाओं को इस कार्यभार को अपने ऊपर उठाने का साहस नहीं देता । यदि भारत सरकार का प्रकाशन विभाग और हिन्दी के प्रतिष्ठित प्रकाशक इस बात में संस्थाओं को सहयोग दे सकें तो संस्थाएँ यह कार्य सुगमता पूर्वक कर सकेंगी ।

हिन्दी भाषा के प्रति प्रेम उत्पन्न करने में कला का भी सहारा लिया जा सकता है । फिल्मों से इसमें बहुत कम सहायता मिलती है। तमिलनाडु में हिन्दी फिल्मों की लोकप्रियता और हिन्दी विरोध दोनों एक ही पटरी पर चल रहे हैं। हमें हिन्दी के कला रूपों को हिन्दीतर भाषा भाषी जनता के अधिक निकट लाना है । विविध अवसरों पर विद्यार्थियों की हिन्दी कला प्रतियोगिताएँ आयोजित कर सकते हैं जिनमें हिन्दी नाटक, नृत्य, गान आदि को स्थान दिया जा सकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है । कुछ विशेष अवसरों पर भारतीय कला मेला भी आयोजित हो सकती है जिसमें विविध भाषायी प्रांतों से आकर बसे हुए परिवारों के सदस्यों के कार्यक्रम विविध भाषाओं में प्रस्तुत किये जा सकते हैं। इससे विभिन्न भाषा भाषी परिवारों में सम्पर्क जुड़ेगा और भावात्मक एकता को बल मिलेगा।

कुछ विशेष अवसरों पर भारतीय कला मेला भी आयोजित हो सकती है जिसमें विविध भाषायी प्रांतों से आकर बसे हुए परिवारों के सदस्यों के कार्यक्रम विविध भाषाओं में प्रस्तुत किये जा सकते हैं।

राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार के गृह-मंत्रालय का राजभाषा विभाग जो वार्षिक कार्यक्रम बनाता है उसके प्रभावी क्रियान्वयन का भार केन्द्र सरकार के कर्मचारियों पर छोड़ना उचित नहीं होगा। इसमें भी स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं को महत्वपूर्ण भूमिका अदा करनी है। हिन्दी दिवस या हिन्दी सप्ताह की बात ही लें। कार्यक्रम में केवल इतना बताया जाता था कि साल में एक बार केन्द्र सरकार के सभी कार्यालयों में हिन्दी दिवस या हिन्दी सप्ताह मनाया जाए। पर न कोई निश्चित तिथि थी, न कार्यक्रम की कोई निश्चित रूपरेखा। केरल हिन्दी प्रचार सभा ने यह सुझाव रखा कि जिस प्रकार स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस जैसे राष्ट्रीय दिवस किसी एक निश्चित तिथि को मनाये जाते हैं वैसे ही हिन्दी दिवस भी एक निश्चित तिथि को मनाया जाए और यह 14 सितम्बर को ही मनाया जाए जिस दिन संविधान सभा द्वारा हिन्दी को राजभाषा का पद दिया गया था।

अधिकारियों को हमारी बात पसन्द आई और अब कार्यक्रम में तदनुकूल परिवर्तन किया गया है। 14 सितम्बर से सात दिनों तक प्रान्तीय स्तर पर हिन्दी सप्ताह मनाने में केन्द्र सरकारी कार्यालयों, उपक्रमों, निगमों और राष्ट्रीयकृत बैंकों का नेतृत्व स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाएँ करें तो दोनों ओर लाभ ही होगा। केरल हिन्दी प्रचार सभा गत कुछ वर्षों से यह प्रयोग करती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल स्थित केन्द्र सरकारी कार्यालयों, निगमों आदि द्वारा आयोजित कार्यशालाओं में केरल हिन्दी प्रचार सभा के कार्यकर्ताओं और अध्यापकों का सक्रिय सहयोग रहता है।

आ रही है। इससे कर्मचारियो में ही नहीं साधारण जनता में भी हिन्दी की उपयोगिता का बोध बढ़ेगा।

राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए यह भी आवश्यक है कि केन्द्र सरकारी कर्मचारियों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान विकसित किया जाए। इसके लिए केन्द्र सरकार के गृह मंत्रासय द्वारा प्रशिक्षण योजनाएँ जो कार्यान्वित हो रही हैं वे काफी उपयोगी हैं। स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाएँ इस दिशा में केन्द्र सरकारी कार्यालयों की सहायता कर सकती हैं। गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा तैयार किये जाने वाले वार्षिक कार्यक्रमों में तिमाही कार्यशालाओं का भी समावेश है जिनका उद्देश्य उन सभी कर्मचारियों को हिन्दी में टिप्पण, आलेखन आदि में प्रशिक्षित करना है जिन्हें हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है और जिन्हें कभी प्रशिक्षण नहीं दिया गया है। इन कार्यशालाओं के संचालन में स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं के अध्यापकों एवं विशेषज्ञों का सहयोग अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकता है। केरल स्थित केन्द्र सरकारी कार्यालयों निगमों आदि द्वारा आयोजित कार्यशालाओं में केरल हिन्दी प्रचार सभा के कार्यकर्ताओं और अध्यापकों का सक्रिय सहयोग रहता है।

केन्द्र सरकारी कर्मचारियों के लिए हिन्दी टंकण और आशुलिपि के प्रशिक्षण की सुविधा उपलब्ध कराने में स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं, का सहयोग अपेक्षित है। ऐसे शहरों में जहाँ केन्द्र सरकारी कार्यालय अधिक संख्या में स्थित हैं, स्वेच्छिक हिन्दी संस्थाएँ हिन्दी टंकण और आशुलिपि विद्यालय चलाएँ तो केन्द्र सरकारी कर्मचारी अपनो सुविधा के अनुसार इनमें प्रशिक्षण पा सकते हैं।

गृह मंत्रालय के राजाभाषा विभाग ने हिन्दी में काम करने के लिए आवश्यक पदों का जो मापदंड विभिन्न कार्यालयों के कुल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्मचारियों के अनुपात में निर्धारित किया है उसके अनुसार सृजित पदों पर नियुक्ति के लिए सुयोग्य आवेदकों को तैयार करने का काय भी स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएँ कर सकती हैं । राजभाषा नीति सम्बन्धी नियमों का ज्ञान हिन्दी से अंग्रेजी और अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद करने का कौशल, हिन्दी में पत्राचार करने की क्षमता आदि विकसित करने के लिए हिन्दी के स्नातकों के लिए एक वर्षीय गहन प्रशिक्षण दिया जाए । इस प्रशिक्षण के पाठ्यक्रम में हिन्दी पत्रकारिता के भी तत्व शामिल किये जा सकते हैं । चूँकि हिन्दी एम. ए. तक का पाठ्यक्रम केवल भाषा और साहित्य पर केन्द्रित है जिसका सम्बन्ध दफ्तरी काम काज की भाषा से नहीं है इसलिए ऐसे एक पाठ्यक्रम की बड़ी उपयोगिता है। केरल हिन्दी प्रचार सभा कुछ वर्षों से ऐसा एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चला रही है और इसमे प्रशिक्षित अनेक युवक आज केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में हिन्दी अधिकारी, सम्पादक, हिन्दी अनुवादक आदि पदों पर नियुक्ति पा गए हैं ।

हिन्दी संस्थाएँ हिन्दी टंकण और आशुलिपि के विद्यालय विभिन्न केन्द्रों में चलाकर पर्याप्त मात्रा में हिन्दी टंककों और आशुलिपिकों को तैयार कर सकती हैं ।

अब तक तो हमने हिन्दीतर प्रांतों में कार्य करने वाली संस्थाओं की बात कही । अब हिन्दी भाषी क्षेत्रों में कार्यरत संस्थाओं की भी भूमिका पर थोड़ा विचार करेंगे ।

दो क्षेत्रों में ये संस्थाएँ मुख्य रूप से काम कर सकती हैं । एक है हिन्दी भाषी क्षेत्रों में अनौपचारिक शिक्षा के द्वारा हिन्दी भाषी जनता की साक्षरता में वृद्धि करना। आंकड़ों से पता चलता है कि भारत की बढ़ती हुई निरक्षरता का अधिकांश हिन्दी भाषी क्षेत्रों में ही है। उत्तर प्रदेश, राजस्थान, बिहार, मध्य प्रदेश जैसे प्रांतों की साक्षरता का प्रतिशत देश के औसत प्रतिशत से कहीं नीचे है। इसको उपर उठाये बिना हिन्दी का वांछित विकास न राष्ट्रभाषा के रूप में हो सकता है और न राजभाषा के रूप मे। इसलिए हिन्दी भाषा क्षेत्रों में स्थित स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाएँ स्कूली आयु के उन बच्चों के लिए जो स्कूल नहीं जा पाते और उन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रौढ़ों के लिए जो निरक्षर हैं, व्यावहारिक साक्षरता के अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र गांव-गांव में खोल सकें तो हिन्दी का बड़ा हित होगा। इससे जनतांत्रिक व्यवस्था का भी सुचारु रूप से विकास सम्भव होसकेगा।

हिन्दी भाषी क्षेत्रों में स्थित स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाएँ स्कूली आयु के उन बच्चों के लिए जो स्कूल नहीं जा पाते और उन प्रौढ़ों के लिए जो निरक्षर हैं व्यावहारिक साक्षरता के अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र गांव-गांव में खोल सकें तो हिन्दी का बड़ा हित होगा।

हिन्दीतर प्रदेशों में प्रायः यह फरियाद सुनने को मिलती है कि जिस प्रेम से हिन्दीतर प्रांतों में हिन्दी सीखी जाती है उस प्रेम से हिन्दीतर भाषाएँ हिन्दी प्रांतों में सीखी नहीं जातीं। हमारे त्रिभाषा सूत्र का संकल्प पंगु रह गया है। इस स्थिति को दूर करने का कार्य हिन्दी की संस्थाएँ पारस्परिक सहयोग से कर सकती हैं। हिन्दीतर

हिन्दीतर प्रांतों में स्थित संस्थाएँ अपने अपने प्रांत के ऐसे अध्यापक तैयार करें जो हिन्दी प्रांतों में हिन्दी के माध्यम से अपनी मातृभाषा सिखा सकें।

प्रांतों में स्थित संस्थाएँ अपने अपने प्रांत के ऐसे अध्यापक तैयार करें जो हिन्दी प्रांतों में हिन्दी के माध्यम से अपनी मातृभाषा सिखा सकें। हिन्दी प्रांतों में स्थित संस्थाएँ ऐसे पाठ्यक्रम बनाएँ जिनके द्वारा उक्त अध्यापकों के सहयोग से अपने अपने क्षेत्र में उत्सुक छात्रों और प्रौढों को विविध हिन्दीतर भाषाएँ सिखा सकें।

मैं ने केवल उन मुद्दों की ओर आपका ध्यान आकृष्ट किया है जो समय की मांग के अनुकूल हैं और व्यावहारिक दृष्टि से स्वीकार्य हैं। आशा है आप इन मुद्दों पर विचार करेंगे और अपनी कार्यशैली यथासाध्य परिवर्तित करेंगे।

जय हिन्द—जय हिन्दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रचार के नये आयाम

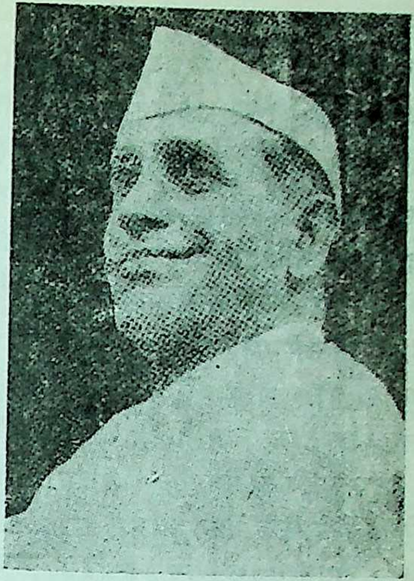

प्रो० रामलाल पारीख
कुलपति, गुजरात विद्यापीठ

[16-12-1987 को कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति के पदवीदान समारोह में दिये गये दीक्षान्त भाषण का अंश]

जिस प्रकार प्रादेशिक भाषाएँ अपने प्रदेश की सीमाओं से बाहर अध्ययन-अध्यापन का विषय बनी हैं, बन रही हैं, उसी प्रकार राष्ट्र-भाषा हिन्दी-हिन्दुस्तानी भी राष्ट्र की सीमा पार करके सुदूर विदेशों में अध्ययन-अनुसंधान का विषय बन गई है। तीन विश्व हिन्दी सम्मेलनों ने यह साबित कर दिया है कि विदेशी हिन्दी साफ बोलने और लिखने में सक्षम हैं और वे सृजनशील साहित्य का भी निर्माण करने में समर्थ हैं। इस त्वरित आदान-प्रदान से हिन्दी भाषा और साहित्य के अध्ययन क्षेत्र में आशातीत नये नये आयाम खुलते जा रहे हैं। एक

देश में अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्व-विद्यालय की स्थापना अब फौरन करनी चाहिये।

विराट जनसमुदाय की राष्ट्रभाषा के नाते हिन्दी-हिन्दुस्तानी राष्ट्रसंघ की भाषा मानी जाने की हकदार भी हुई है। देश में अतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना अब फौरन करनी चाहिये। इस विश्वविद्यालय की स्थापना से विदेशों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार कार्य को बल मिलेगा और राष्ट्रसंघ की एक भाषा के रूप में हिन्दी को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वकृत कराने में विश्व का जनमत तैयार करना आसान होगा।

देश की भाषाई समस्याओं पर तटस्थ होकर विचार करनेवाले विद्वानों ने इस विराट देश को प्रकृति की एक भाषा-प्रयोगशाला माना है। प्रकृति ने इसमें अनेक बोलियों, उपभाषाओं और भाषाओं के बोलने वालों को एक करके मानो यह देखने का प्रयास किया है कि अनेक बोलियाँ मिलकर एक भाषा का, अनेक उपभाषाएँ मिलकर एक प्रदेश भाषा का और अनेक प्रदेश भाषाएँ मिलकर एक राष्ट्रभाषा का निर्माण कैसे कर सकती हैं। यह प्रयोग हजारों वर्षों से चलता चला आया है और आगे भी चलता रहेगा।

यह स्वतंत्र भारत के सच्चे हितैषियों का आशावादी दृष्टिकोण है जिसे अपनाने से प्रदेश-प्रदेश के बीच ही नहीं, देश-देश के बीच भी परस्पर-समभाव बढ़ेगा, भारत देश सुरक्षित बनेगा और विश्व में शान्ति के कायम होने में अनुकूल वातावरण तैयार करेगा।

यह एक महान राष्ट्रीय सेवाकार्य है जो सबके सहयोग से सफल हो सकता है। सबका सहयोग तभी मिल सकता है जब हर कोई आश्वस्त हो जाय कि हमने खोया कुछ नहीं, पाया ही बहुत है। दूसरी भाषा की जीवनीशक्ति से अपनी भाषा को हृष्टपुष्ट बना लेना ही बहुत कुछ पाना है। मन के दुराग्रह युक्त होने पर ही यह प्रवृत्ति जागृत हो सकती है। राष्ट्रपिता गांधीजी ने राष्ट्रभाषा के स्वरूप के बारे में बड़ा सन्तुलित विचार रखा था। 1920 में बापू ने गुजरात विद्यापीठ की स्थापना की और स्नातक कक्षा तक वहाँ हिन्दी का शिक्षण अनिवार्य बनाया। हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने, उसका प्रचार प्रसार करने तथा उसका स्वरूप स्पष्ट करने के लिए बारम्बार प्रयत्न किया। राष्ट्रभाषा-प्रेमियों के लिए गुजरात विद्यापीठ एक मुख्य केन्द्र बना। बापू कभी राष्ट्रभाषा के लिए 'हिन्दी', कभी 'हिन्दी-हिन्दुस्तानी' और कभी केवल हिन्दुस्तानी शब्द का प्रयोग करते थे। वे हिन्दी-उर्दू के मिले-जुले रूप को ही हिन्दुस्तानी कहते थे। स्वतंत्रता मिलने के बाद उनकी राष्ट्रभाषा-संबंधी कल्पना साकार हुई। उन्होंने 1918 में ही कहा था—"हिन्दुस्तानी, हिन्दी, उर्दू नाम अलग अलग हैं, भाषा एक ही है। नागरी लिपि में लिखी जाने पर वह हिन्दी कहलाती है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज की माँग है कि हम सब संविधान के 343 से 351 तक के अनुच्छेदों के निर्देशों के अनुरूप हिन्दुस्तानी को साधन मानकर हिन्दी के स्वरूप को समृद्ध करें और हिन्दी के साथ साथ अपनी अपनी प्रादेशिक भाषाओं को संपन्न बनाएँ ।

फारसी लिपि में लिखने पर उर्दू ।" आज़ादी मिलने के बाद हिन्दुस्तानी की ये दोनों शैलियाँ दो स्वतंत्र देशों की राजभाषाएँ स्वीकृत हुई हैं, हिन्दुस्तान में हिन्दी और पाकिस्तान में उर्दू ।

भारतीय संविधान के निर्माताओं ने गांधीजी की दूरदर्शिता को पहचाना और "संविधान में राजभाषा का नाम हिन्दी रखा, लिपि देवनागरी रखी, अंक अंतर्राष्ट्रीय रखे और स्वरूप हिन्दुस्तानी ।" "आज की माँग है कि हम सब संविधान के 343 से 351 तक के अनुच्छेदों के निर्देशों के अनुरूप हिन्दुस्तानी को साधन मानकर हिन्दी के स्वरूप को समृद्ध करें और हिन्दी के साथ साथ अपनी अपनी प्रादेशिक भाषाओं को संपन्न बनाएँ ।

समस्त राष्ट्रभाषा प्रेमियों और हिन्दी सेवियों को राजभाषा के स्वरूप के संबंध में सजग और सावधान करते हुए आपके जनानुरागी मुख्य-मंत्री श्री. रामकृष्ण हेगडे ने 21-27 दिसम्बर 1986 की इलस्ट्रटेड वीकली में जो निम्न वक्तव्य दिया वह बहुत मसहनीय है।

'दक्षिण में हिन्दी का विरोध नहीं है। होगा भी नहीं। वहाँ अगर आन्दोलन हुआ तो राजभाषा स्वरूप के बारे मे होगा। मैं संस्कृत का जानकार हूँ, फिर भी हम लोग चाहते हैं कि भाषा सीधी-सरल हिन्दुस्तानी हो ।"

हिन्दी की प्रचार परीक्षाएँ लेने वाली संस्थाओं के लिए परीक्षा के माध्यम से हिन्दी के देशव्यापी प्रसार का कार्य अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ की 20 संस्थायें कर

दक्षिण में हिन्दी का विरोध नहीं है। होगा भी नहीं। वहाँ अगर आन्दोलन हुआ तो राजभाषा-स्वरूप के बारे में होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही हैं। स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं की परीक्षाओं के ज़रिये करीब पाँच करोड़ परीक्षार्थी हिन्दी सीख चुके हैं। इन प्रचार-संस्थाओं के कार्य की सफलता सिद्ध हो चुकी है। परंतु हिन्दी का प्रशासनीय उपयोग बढाने के लिए अभी काफी प्रयास जरूरी है। हिन्दी प्रचार संस्थाओं ने इसलिए अब भारत सरकार के राजभाषा विभाग से सहयोग शुरू किया है।

टेकनोलोजी के क्षेत्र में हिन्दी का उपयोग बढ़ाना ज़रूरी है। टाइपराइटरों और कोम्प्युटरों में अब हिन्दी का उपयोग सफलता से हो रहा है। यह उपयोग बढ़े इसलिए इसकी जानकारी फैलाने और इसका प्रशिक्षण बढ़ाने की जिम्मेदारी हिन्दी प्रचार संस्थाओं को हल करनी है। साहित्य के क्षेत्र में हिन्दोतर-प्रदेशों के श्रेष्ठ साहित्य को तेजी से हिन्दी में प्रसारित करने की बहुत आवश्यकता है। हिन्दी का लोक नाट्यमंच बनाने की भी काफ़ी आवश्यकता है।

हिन्दोतर-प्रदेशों के श्रेष्ठ साहित्य को तेजी से हिन्दी में प्रसारित करने की बहुत आवश्यकता है।

डिस्टंस एज्यूकेशन पद्धतियाँ भी अपनानी होगी। हिन्दी और प्रादेशिक भारतीय भाषाओं के बीच निरंतर आदान-प्रदान बढ़ाते रहना चाहिए। तभी हिन्दी समृद्ध हो सकती है। हिन्दी के प्रसार से स्वैच्छिक प्रयासों को विशेष गति देने से ही हिन्दी के राजभाषा और लोकभाषा के दोनों स्वरूपों में जो अन्तर है वह कम होता जायगा। विश्व के अनेक देशों में अब हिन्दी सीखने की सुविधायें बढ़ रही हैं। यू. एन. ओ. में हिन्दी का स्वीकार अब जल्द ही कराना चाहिये। भारत सरकार को इसलिये ठोस कदम अविलम्ब उठाने चाहिये। हिन्दी प्रचार के इन विविध क्षेत्रों को देखते हुए हिन्दी-प्रचार संस्थाओं की जिम्मेदारी अब परीक्षा लेने तक सीमित नहीं रह सकती। हिन्दी प्रचार संस्थाओं को अब परीक्षाओं के सिवा भी हिन्दी के स्वैच्छिक जनशिक्षण कार्य को व्यापक करना होगा। इस कार्य में कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति को बहुत बड़ा योगदान देना होगा। मुझे श्रद्धा है कि यह संस्था हिन्दी के प्रचार के नये क्षेत्रों में अपना योगदान देने में पहली होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रशासनिक भाषा के रूप में हिन्दी—तब और अब

डॉ0 केशरीलाल वर्मा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी को भारत संघ की राजभाषा घोषित किया गया है। इस का तात्पर्य यह नहीं है कि इस से पूर्व प्रशासनिक भाषा के रूप में हिन्दी का अस्तित्व नहीं था। वास्तविकता यह है कि राजकाज में हिन्दी का प्रयोग राजपूत, मुसलमान, मराठा एवं अंग्रेज़ों के शासन में अनवरत रूप से होता रहा है।

राजकाज में हिन्दी का प्रयोग राजपूत, मुसलमान, मराठा एव अंगरेज़ों के शासन में अनवरत रूप से होता रहा है।

राजभाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग विगत सैकड़ों वर्षों से राजपूत नरेशों एवं सुल्तान बादशाहों के प्रशासनिक कार्यों में होता आ रहा है, परंतु इसके व्यापक प्रयोग का स्वरूप मुगलों के राजकाज-संबंधी प्राचीन दस्तावेजों में ही देखने को मिलता है। मुगल शासन में हिन्दी सह राजभाषा के रूप में थी। मुगल सम्राटों के प्रशासन का अधिकतर कामकाज हिन्दी भाषा के माध्यम से होता था। जब मोहम्मद कासिम ने सिंधु प्रदेश जीता, गजनवी ने पंजाब को और गोरी ने दिल्ली को, तो सब ने अपना-अपना शासन-प्रबंध हिन्दी के ही माध्यम से किया था। उपलब्ध सिक्के तथा इतिहास के पन्ने इस बात के प्रमाण हैं। सिकंदर लोदी ने फ़ारसी भाषा चलानी चाही पर न चल सकी। इस के बाद के सभी बादशाह हिन्दी के द्वारा शासन-सूत्र चलाते रहे। मुहम्मद गौरी ने अपने शासन का कामकाज देवनागरी लिपि और हिन्दी भाषा के माध्यम से करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहम्मद गोरी ने अपने शासन का कामकाज देवनागरी लिपि और हिन्दी भाषा के माध्यम से करने का आदेश दिया।

का आदेश दिया। इन विदेशी राजाओं को यहाँ की राजसत्ता हाथ में लेते ही यह सोचने के लिए बाध्य होना पड़ा कि भारत में शासन स्थापित करने और अपनी जड़ें मज़बूत करने के लिए इस देश की केन्द्रीय भाषा हिन्दी को राजकाज में स्थान देना होगा। संपूर्ण भारत में केन्द्रीय स्तर पर शासन चलाने के लिए किसी विदेशी शासक द्वारा हिन्दी को स्वीकार करने से संबंधित यह तथ्य इस बात का परिचायक है कि हिन्दी को राजभाषा और संपर्क भाषा के रूप में मुसलमानों के आगमन पर ही मान्यता मिली। किन्तु यह तथ्य भी ध्यातव्य है कि अकबर जैसे जनप्रिय शासक को छोड़कर अन्य मुसलमान राजाओं में केवल उन्हीं कामों के लिए हिन्दी का प्रगोग करने की अनुमति दी, जिन का संबंध जनता से होता था। अन्य मामलों के लिए वे फ़ारसी का ही प्रयोग करते रहे। उन के लिए हिन्दी एक ऐसी सशक्त साधन रही है, जिस के माध्यम से उन्हे प्रशासन में दृढता, स्थिरता, समन्वय और एकता स्थापित करने में पर्याप्त सहायता हुई थी। वास्तव में फ़ारसी का प्रयोग तो आवश्यकतानुसार विशेष परिस्थितियों में सम्राट के कतिपय संबंधियों तथा उच्चतर मुससमान अधिकारियों के साथ ही किया जाता था। प्राचीन प्रलेखों के अध्ययन से पता चलता है कि मुगल शासक प्रशासनिक कार्यों में ठेठ हिन्दी के समर्थक थे।

प्राचीन प्रलेखों के अध्ययन से पता चलता है कि मुगल शासक प्रशासनिक कार्यों में ठेठ हिन्दी के समर्थक थे।

मराठा शासकों की राजभाषा भी हिन्दी ही थी। मराठों के काल में हिन्दी का प्रयोग हिन्दी और अहिन्दी भाषी राजाओं के बीच राजकाज संबंधी व्यवहार के लिए भी किया जाने लगा। प्रशासन को सुचारु रूप से चलाने के लिए मराठा राजाओं, पेशवाओं और सरदारों को हिन्दी को अपने राजकाज की भाषा बनाना पड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मराठा प्रशासन में अनुवाद की भी व्यवस्था थी। इतना ही नहीं हिन्दी के माध्यम से पारस्परिक संपर्क की सुगमता का ज्ञान भी तत्कालीन राजाओं को था। मराठा प्रशासन में राजकाज चलाने के लिए जिन हिन्दी वाक्यांशो, उपवाक्यों एवं वाक्यों का प्रयोग होता था, व तत्कालीन सरल, सुलभ, लोक-प्रचलित, संक्षिप्त तथा अर्थपूर्ण भाषा में होते थे।

अंग्रेज़ों ने भी अपना राजकाज हिन्दी भाषा के माध्यम से प्रारंभ किया। यद्यपि अँग्रेज़ों के प्रशासन मे हिन्दी का प्रयोग भी होने लगा था, तथापि वे अंदर-ही-अंदर हिन्दी भाषा एवं अन्य भारतीय भाषाओं के महत्व को स्वीकार करते रहे थे। अंग्रेज़ों के शासन काल में हिन्दी का प्रयोग केवल ऐसे फ़ार्मों

मराठा प्रशासन में राजकाज चलाने के लिए जिन हिन्दी वाक्यांशों, उपवाक्यों, एव वाक्यों का प्रयोग होता था, वे तत्कालीन सरल, सुलभ, लोक-प्रचलित, संक्षिप्त, तथा अर्थपूर्ण भाषा में होते थे।

के लिए किया जाता था, जिस का संबंध जनता से होता था। इस प्रकार अंग्रेज़ों ने जनभाषा के रूप में हिन्दी को अधिक महत्व दिया, किन्तु राजभाषा के रूप में नहीं। उन्होंन 'होम' विभाग के अंतर्गत एक तर्जुमा महकमा की स्थापना की थी जो जनसाधारण संबंधी सूचना तथा सरकारी आदेशों का हिन्दी भाषा में अनुवाद करता था। भारत को अंग्रेज़ों की सत्ता के प्रतीक के रूप में अंग्रेज़ी मिली थी। भारत में अंग्रेज़ी का प्रयोग प्रारंभ करने वालों में लार्ड वैन्टिक. मैकाले, तथा डा० डफ का नाम प्रमुख रूप से लिया जा सकता है। पूरे डेढ़ सौ साल तक वह राजभाषा के रूप में रही और स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद भी वर्तमान में सह राजभाषा के रूप में विद्यमान है।

संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 के दिन मुंशी-आयंगर फार्मूले के आधार पर हिन्दी को भारत संघ की राजभाषा के रूप में समादृत किया और इस से संबंधित अन्य धाराएँ भी स्वीकृत की गई। अनुच्छेद 343 के अनुसार भारतीय संविधान में संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी स्वीकार की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई है, लेकिन अनुच्छेद 343 (2) के अनुसार संविधान के लागू होने के 15 वर्ष की अवधि तक, अर्थात् 26 जनवरी, 1965 तक संघ सरकार के कार्यों के लिए अंग्रेज़ी का प्रयोग जारी रखने की व्यवस्था की गई थी। अनुच्छेद 343 (3) में संसद को अधिकार दिया गया है कि वह अधिनियम पास कर के 26 जनवरी 1965 के बाद भी सरकारी कामकाज में अंग्रेज़ी का प्रयोग जारी रखने के बारे में व्यवस्था कर सकती है। इस शक्ति का प्रयोग करते हुए 1963 (1967 में संशोधित) में राजभाषा अधिनियम पारित किया गया, जिस में यह व्यवस्था की गई कि 26 जनवरी, 1965 के बाद भी पहले की तरह संघ के सभी सरकारी प्रयोजनों के लिए तथा संसद में व्यवहार के लिए हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी का प्रयोग चलता रहेगा।

राजभाषा-संबंधी व्यवस्थाओं में अंतिम अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा की प्रसार-वृद्धि के संबंध में विशेष निर्देश दिया गया है, जो इस प्रकार है—"हिन्दी भाषा की प्रसार-वृद्धि करना, उस का विकास करना ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सब तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम हो सके तथा उस की आत्मीयता में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी और अष्टम अनुसूची में उल्लिखित अन्य भारतीय भाषाओं के रूप, शैली, और शब्दावली को आत्मसात करते हुए तथा जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उस के शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से, गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए समृद्धि सुनिश्चित करना संघ का कर्तव्य होगा।"

उपर्युक्त अनुसार से राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार और विकास का दायित्व केन्द्रीय सरकार को सौंपा गया है। इस दायित्व के निर्वाह के लिए केन्द्रीय सरकार द्वारा विभिन्न कदम उठाए गए हैं। भारत सरकार विभिन्न सरकारी आदेशों के अंतर्गत अपने कर्मचारियों को हिन्दी में पत्र-व्यवहार करने तथा टिप्पणी आदि लिखने की अनुमति दे चुकी है। सरकारी कार्यालयों के कर्मचारियों पर यह जिम्मेदारी आ जाती है कि वे सरकार के दैनंदिन कामों में हिन्दी का प्रयोग करें जिस से हिन्दी की प्रशासनिक भाषा के रूप में सामर्थ्य बढे। हिन्दी का प्रयोग बढाने के लिए संघ सरकार एवं राज्य सरकारों ने समय–समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकारी कार्यालयों के कर्मचारियों पर यह जिम्मेदारी आ जाती है कि वे सरकार के दैनंदिन कामों में हिन्दी का प्रयोग करें जिस से हिन्दी की प्रशासनिक भाषा के रूप में सामर्थ्य बढ़े।

पर नियम-विनियम बनाए हैं, जिन के परिणामस्वरूप हिन्दी का प्रयोग उत्तरोत्तर बढ़ रहा है, परंतु हिन्दी का अपेक्षित प्रयोग और विकास अभी नहीं हो सका है।

आभार

मैं डॉ० रमेश चन्द्र महरोत्रा, प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, भाषाविज्ञान विभाग, रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर का आभारी हूँ, जिन्होंने प्रस्तुत लेख को तैयार करने में प्रोत्साहन एवं अमूल्य सुझाव दिए।

सहायक पुस्तकें

1. डॉ० कैलाशचन्द्र भाटिया
   भारतीय भाषाएँ, प्रभात प्रकाशन दिल्ली।
2. वही
   हिन्दी में अंग्रेज़ी के आगत शब्दों का भाषातात्त्विक अध्ययन, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद।
3. डॉ० भोलानाथ तिवारी
   राजभाषा हिन्दी, प्रभात प्रकाशन दिल्ली।
4. डॉ० एम. मलिक मोहम्मद
   राजभाषा हिन्दी: विकास के विविध आयाम, राजपाल एंड सन्ज़ दिल्ली।
5. डॉ० एम. मोहनलाल तिवारी
   हिन्दी भाषा पर फ़ारसी और अंग्रेज़ी का प्रभाव, प्रचारिणी सभा वाराणसी।
6. रामबाबू शर्मा
   बारहवीं सदी से राजकाज में हिन्दी: केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा।
7. डॉ० सत्य व्रत
   भारतीय राजभाषा: सीमाएँ और समस्याएँ, पंचशील प्रकाशन, जयपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी ललित निबन्ध और डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी

डा० कृष्ण चन्द्र गु
हिन्दी विभागाध्यक्ष, सनातनधर्म क
मुसक्कर

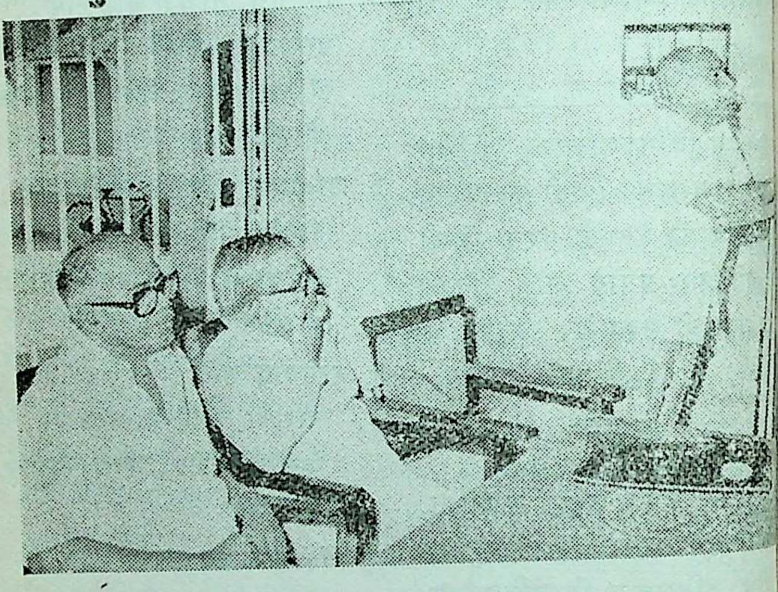

[17-4-1988 को केरल हिन्दी प्रचार सभा के स्नातकोत्तर हिन्दी केन्द्र में दिये गये भाषण से]

निबन्ध दो ही प्रकार के होते हैं वस्तु निबन्ध, एस्से जिनमें प्रधानता वस्तु की होती है और लेखक का व्यक्तित्व गौण रहता है, प्रमुख नहीं हो पाता। ऐसे निबन्ध समीक्षात्मक निबन्ध, सा विषयों के निबन्ध लिये जा हैं। दूसरा प्रकार निबन्धों व्यक्ति निबन्ध है जिनमें प्रध वस्तु की नहीं होती. प्रधानता व्यक्ति अर्थात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की होती हैं। लेखक का व्यक्तित्व, उसकी रुचि, उसकी इच्छायें, उसके संस्कार, उसके विचार, भावात्मक स्तर पर उनकी परिणति जो होती है वह व्यक्ति निबन्ध का एक सुदीर्घ स्तंभ है। मूलरूप से व्यक्ति निबन्ध में लेखक का व्यक्तित्व केन्द्र में होता है। वस्तु निबन्ध में जो विषय वस्तु है उसकी प्रधानता होती है। हालांकि उसमें लेखक का व्यक्तित्व भी रहता है लेकिन वह प्रमुख रूप से नहीं रहता, वह गौण रूप से रहता है।

व्यक्ति निबन्ध लिखे जा रहे थे। तभी एक चमत्कार प्रकट हुआ व्यक्ति निबन्धों के क्षेत्र में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा।

हिन्दी में व्यक्ति निबन्धों की बडी समृद्ध परंपरा है भारतेन्द बाबू हरिश्चन्द्र के समय से ही। और आज भी लोग उसे लिख रहे हैं। व्यक्ति निबन्ध लिखे जा रहे थे। तभी एक चमत्कार प्रकट हुआ व्यक्ति निबन्धों के क्षेत्र में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा। हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का सबसे पहला निबन्ध "अशोक के फूल" के रूप में सामने आया जिसने अब तक के सारे जो सांचे या ढांचे थे उन सबको तोड दिया। उपन्यास के क्षेत्र में उन्होंने "बाणभट्ट की आत्मकथा" लिखी। उसमें उपन्यास की जितनी भी पूर्व धारणाएँ थीं वह सब टूट फूट गयीं। आलोचना के क्षेत्र में उन्होंने 'सूर साहित्य' लिखा। "मेघदूत एक पुरानी कहानी" लिखी। उससे आलोचना की धारणाएँ अस्त व्यस्त हो गईं। हिन्दी साहित्य के इतिहास में शुक्लजी जैसे प्रतिष्ठित इतिहासकार की धारणाओं से अलग अपनी मान्यता को प्रस्तुत किया तो इतिहास बहुत ही अलग विकसित हुआ। वैसे ही द्विवेदी जी ने जब 'अशोक के फूल' निबन्ध का प्रकाशन कराया तब निश्चित रूप से लगा कि यह व्यक्ति निबन्ध नहीं है यह भावात्मक निबन्ध नहीं है, यह भावगीत भी नहीं है, गद्य गीत भी नहीं है। अनेक रूप उस में चल रहे थे। इसके बाद आम फिर दौरा गये, शिरीष के फूल, कुटज, देवदारु ये निबन्ध बिलकुल अलग तरीके से लिखे गये। अशोक के फूल से ही समीक्षकों के लिए यह चुनौती आयी कि इसे किस कोटि में रखेंगे। निबन्ध लगातार निकलते चले गये। द्विवेदी जी के इस प्रकार के निबन्धों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्विवेदी जी ने जब 'अशोक के फूल' निबन्ध का प्रकाशन कराया तब निश्चित रूप से लगा कि यह व्यक्ति निबन्ध नहीं है, यह भावात्मक निबन्ध नहीं है, यह भावगीत भी नहीं है, गद्य गीत भी नहीं है, अनेक रूप उस में चल रहे थे।

केलिए ही हिन्दी के समीक्षाशास्त्र में ललित निबन्ध संज्ञा का अस्तित्व आया। 'अशोक के फूल', 'कुटज', 'देवदारू' 'आम फिर बौरा गए हैं, 'गतिशील चिंतन' इस तरह के निबन्ध हैं। 'कुटज' के वारे में जो उनका अंतिम ललित निबन्ध है, थोडा सा मतभेद है। द्विवेदी जी का व्यक्तित्व सांस्कृतिक व्यक्तित्व था। वे बडे ही कल्पनाशील सृजनात्मक व्यक्तित्व के धनी थे। पांडित्य अपार था लेकिन पांडित्य उन पर सवार नहीं था। पंडिताई का बोझ उन पर नहीं था। पंडिताई को दबाकर वह बैठे हुए थे। जो बात उन्होंने कबीर के बारे में कही थी कि कबीर ज्ञान के हाथी पर चमडा डाल कर बैठे हुए थे वही बात हम द्विवेदी जी के बारे में कह सकते हैं कि द्विवेदी जी का पांडित्य उन पर सवार नहीं था बल्कि वे पाण्डित्य पर सवार थे। ऐसा सहज व्यक्तित्व जिस क्षेत्र में प्रवेश करता है, बनी बनाई भावनाओं को तोड देता है। हिन्दी में ललित निबन्ध का उद्भव हजारी प्रसाद द्विवेदी जी से मानना चाहिए।

द्विवेदी जी बडी विलक्षण प्रतिभा के व्यक्ति थे। उन्होंने अनेक प्रकार के निबन्ध लिखे। सांस्कृतिक निबन्ध लिखे, व्यक्ति निबन्ध लिखे। नाखून क्यों बढते हैं, व्यक्ति निबन्ध है। 'दीपावली आलोक पर' सांस्कृतिक निबन्ध है। समीक्षात्मक निबन्ध उनके बढिया हैं। लेकिन सांस्कृतिक निबंध, व्यक्ति निबन्ध, समीक्षात्मक निबन्ध के अतिरिक्त, जो निबन्ध मैं ने आपको बताए है निश्चित रूप से इन निबन्धों में अलग वैशिष्ट्य होता है। इसलिए इनको हम ललित निबन्ध ही कहते हैं।

द्विवेदीजी ने ललित निबन्ध का सूत्रपात किया और इसके बाद उनसे प्रेम प्रभावित होकर एक प्रकार से इस तरह का लेखन बहुत चला। अध्यापक पूर्णसिंह का "मजदूरी और प्रेम" बडा प्रसिद्ध निबन्ध है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह भावात्मक निबन्ध की कोटि में आता है। लेकिन उस में भावात्मकता इतनी जटिल होगयी है, भावुकता इतनी बढ गयी है कि कहीं कहीं वह अस्पष्ट हो गया है, दुरूह हो गया है। लक्षणा व्यंजना के चमत्कार से उसका अर्थ समझने में दिक्कत पडती है।

अध्यापक पूर्णसिंह और माखनलाल चतुर्वेदी के निबन्धों को हम ललित निबन्ध नहीं कहते।

माखनलाल चतुर्वेदी बडे भावुक निबन्धकार थे। उनके निबन्ध भी भावात्मक निबन्ध हैं। अध्यापक पूर्णसिंह और माखनलाल चतुर्वेदी के निबन्धों को हम ललित निबन्ध नही कहते। ललित निबन्ध द्विवेदीजी के हैं जिनके केन्द्र में द्विवेदीजी का ललित व्यक्तित्व है। ललित शब्द सामान्यतया सौन्दर्य, माधुर्य के अर्थ में प्रयुक्त होता है। फाइन-आर्टस का अनुवाद हम करते हैं 'ललितकलायें'। द्विवेदीजी ने लालित्य शब्द की विवेचना भी की है। जो सौन्दर्य ईश्वरकृत, प्राकृतिक या मानवीय है, वह उससे अलग है जो मनुष्यकृत सौन्दर्य है। मूलरूप से सौन्दर्य को तीन भागों में बाँट सकते हैं। एक प्राकृतिक सौन्दर्य, जिसमें आपका यह केरल प्रान्त सब से आगे है। दूसरा मानवीय सौन्दर्य है जिसको हम ईश्वरकृत कह सकते हैं। तीसरा सौन्दर्य है कलाकृतियों का। द्विवेदी जी ने प्राकृतिक सौन्दर्य और मानवीय सौन्दर्य से अलग किया है कलाकृतियों के सौन्दर्य को और उन्होंने इसका नाम दिया है लालित्य। लालित्य वह सौन्दर्य है जो मनुष्यकृत है, जो मनुष्य ललित कलाओं के माध्यम से प्रकट करता है। वह लालित्य द्विवेदी जी के व्यक्तित्व में है। वह लालित्य उनके निबन्धों के केन्द्र में जब आया तब ललित निबन्ध की विधा हिन्दी में विकसित हुई।

लालित्य वह सौन्दर्य है जो मनुष्यकृत है, जो मनुष्य ललित-कलाओं के माध्यम से प्रकट करता है। वह लालित्य द्विवेदी जी के व्यक्तित्व में है।

द्विवेदी जी के ये ललित निबन्ध माखनलाल चतुर्वेदी, अध्यापक पूर्णसिंह और डा० रघुवीरसिंह [जिनके 'शेष स्मृतियाँ' शीर्षक निबन्ध की बडी प्रशंसा शुक्लजी ने अपने इतिहास में की है] के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निबन्धों से बिलकुल अलग हैं। इसका विभाजक तत्व क्या है? इस में प्रधानता हृदय का है, बुद्धि गौण है। ललितनिबन्ध में बुद्धि जागरूक रहती है। भावना को भटकने नहीं देती है। दुरूहता नहीं आती है। भाव की गहराई तक पाठक पहुँच सकता है। यह काम बुद्धि का है। ललित निबन्ध का केन्द्र है लेखक का लालित्य पूर्ण व्यक्तित्व, जिस में उसका सौन्दर्यबोध, माधुर्यभाव, उसकी सहृदयता, उसकी भावुकता सब इस रूप में समाहित हैं। अस्पष्टता नहीं आ पाती।

रवीन्द्र नाथ ठाकुर की गीतांजली से प्रभावित होकर हिन्दी में गद्य गीत लिखे गये। लेकिन उसमें आध्यात्मिकता लाक्षणिकता दुरूहता और अस्पष्टता आ गयी द्विवेदी जी ने उसकी प्रतिक्रिया ... जो बुद्धि तत्व गौण होता गया ... भावात्मक निबन्ध में या गद्य ग... में उस बुद्धि तत्व को उन्होंने ल... निबन्ध में उचित अनुपात में स... दिया।

(पृष्ठ 2 से आगे)

भाषी प्रान्तों में मातृभाषा का और समस्त भारत में राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा और राजभाषा का। इन चार प्रयोजनों को दृष्टि में रख कर प्रान्त-प्रान्त के भाषागत और संस्कृतिगत विशेषताओं का ख्याल कर के हिन्दी अध्यापन को अधिक सरल प्रभावी और आकर्षक बनाने के तरीके निकाले जायें।

अनुसंधान के परिणाम यदि शोध-ग्रंथों तक सीमित रहें तो इस से समाज का वांछित हित नहीं होगा। शोध के परिणामों का प्रसार भी प्रमुख है। शोध के जो निष्कर्ष निकलते उनको हिन्दी अध्यापन व प्रचार संबंधी पत्रिकाओं के माध्यम से हिन्दी अध्यापकों व प्रचारकों तक यथाशीघ्र पहुँचाते रहने की ... संचार व्यवस्था भी होनी चा... अखिल भारतीय हिन्दी संस... से संबद्ध जो बीस हिन्दी ... संस्थायें हैं उन में ... संस्थाओं की अपनी पत्रिका ... हिन्दी अध्यापकों और ... प्रचारकों के पास पहुँचती ... पत्रिकाओं में देश के विवि... विद्यालयों और संस्थानों ... हिन्दी शिक्षण विषयक ... निष्कर्ष नियमित ढंग से ... करने की एक योजना ... हिन्दी संस्थान के प्रसार विभाग ओर से कार्यान्वित की जा सके अनुसंधान और अध्यापन में ज... खाई रह जाती है उसे एक सीम... तक पाट सकेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरभाष : 61378 तार : "जय हिन्दी"

केरलज्योति

पुष्प 23
दल 4

एक प्रति—1 रु० 50 पै०
सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका वार्षिक—15 रु०
जुलाई 1988

21/8/88
गु० कां० विश्वविद्यालय हरिद्वार

संपादकीय

केरल सरकार की नयी भाषा नीति

FREE

शिक्षा के क्षेत्र में केरल सरकार की भाषानीति इतर प्रान्तों की अपेक्षा श्रेष्ठ रही है। स्कूल पाठ्यक्रम में त्रिभाषा सूत्र को प्रभावी ढंग से क्रियान्वित करनेवाला एकमात्र राज्य शायद केरल है। प्रान्तीय भाषा मलयालम, राष्ट्रभाषा हिन्दी और विश्वसंपर्क की भाषा अंग्रेज़ी अनिवार्य रूप से सिखायी जाती हैं। तीनों भाषाओं में उत्तीर्णता के लिये न्यूनतम अंक भी निर्धारित है।

प्रान्तीय भाषा मलयालम को प्रथम स्थान, अंग्रेज़ी को द्वितीय स्थान और हिन्दी को तृतीय स्थान दिया गया है। अंग्रेज़ माध्यम स्कूलों को छोड कर अन्य सभी स्कूलों में शिक्षा का माध्यम प्रान्तीय भाषा ही है। अंग्रेज़ी और हिन्दी की पढाई कक्षा 5 से प्रारंभ होती है। हाई स्कूल स्तर पर प्रति सप्ताह मलयालम और अंग्रेज़ी केलिए 6 और हिन्दी के लिए 3 कालांतर नियत हैं। मेट्रिक की परीक्षा में मलयालम और अंग्रेज़ी के प्रश्न-पत्र सौ सौ अंक के रहते हैं और हिन्दी का प्रश्न-पत्र 50 अंक का रहता है।

जब से हिन्दी भारत की राजभाषा स्वीकृत हुई तब से यह आवश्यकता महसूस होने लगी है कि हिन्दी को अधिक प्रधानता दी जाती है। केरल हिन्दी प्रचार सभा की तरफ से और अन्य अनेकों शैक्षिक संस्थाओं की तरफ से इस संबंध में सरकार के सम्मुख मांग पेश की गयी है। पहली मांग उठी है कि अंग्रेज़ी माध्यम स्कूलों की संख्या में वृद्धि नहीं की जाये।

(इस अंक में प्रकाशित श्री. ए. पी. उदयभानु का भाषण पढियेगा।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में

केरल में हिन्दी माध्यम कक्षायें चल सकती हैं 3
श्री. के. चन्द्रशेखरन

हिन्दी प्रान्तों की जनता को साक्षर बनायें 6
श्री. वर्कला राधाकृष्णन

हिन्दी सेवियों का आदर करें 8
श्री. ए. पी. उदयभानु

सत्ता और सेवा को मिला सकें 11
श्री. विष्णु प्रभाकर

एक तरफ मलयालम हो और दूसरी तरफ हिन्दी हो 12
डा० रत्नाकर पाण्डेय

हिन्दी के प्रवाह को कोई रोक नहीं पायेगा 17
श्री. पन्नालाल शर्मा

दक्खिनी संस्कृति—इतिहास के आइने में 19
डा० इकबाल अहमद

केरल के वर्तमान शिक्षा मं[त्री] श्री. के. चन्द्रशेखरन ने स्पष्ट शब्[दों] में घोषणा की है कि केरल [के] वर्तमान सरकार की नीति मलयाल[म] को प्रथम, हिन्दी को द्वितीय औ[र] अंग्रेज़ी को तृतीय स्थान देने की है[।] उन्होंने यह भी बताया कि अंग्रे[ज़ी] माध्यम की नयी समान्तर कक्षा[यें] प्रारंभ करने की अनुमति नहीं [दी] जायेगी और यदि माँग हो तो हिन्[दी] माध्यम की समान्तर कक्षायें आरं[भ] करने की अनुमति दी जायेगी[।] [भाषण इसी अंक में प्रकाशित है।]

निश्चय ही श्री. चन्द्रशेखरन की य[ह] घोषणा भारतीय भाषा प्रेमि[यों] केलिए आह्लादकारी है, केरल [की] नयी पीढी केलिए हितकारी है औ[र] इतर राज्यों केलिए प्रेरणाप्रद है।

आशा करें कि शीघ्र ही केरल [का] शिक्षा विभाग माननीय मंत्री द्वा[रा] उद्घोषित भाषानीति के अनुकू[ल] आवश्यक परिवर्तन स्कूली पाठ्यक्[रम] एवं परीक्षा प्रणाली में करेगा।

अब हिन्दी प्रचारकों पर एक न[या] दायित्व आ गया है। उन्हें चाहि[ए] कि वे अपने अपने क्षेत्र में ऐसा जनम[त] तैयार करें जिससे स्थानीय नेता[ओं] और स्कूलों की तरफ से हि[न्दी] माध्यम समानान्तर कक्षायें आ[रंभ] करने की मांग उठे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल में हिन्दी माध्यम कक्षायें चल सकती हैं

श्री. के. चन्द्रशेखरन
शिक्षा मंत्री केरल

श्री. एम. के वेलायुधन नायर ने बताया कि इस सम्मेलन में कुछ ऐसे नैष्ठिक हिन्दी सेवियों को पुरस्कृत किया जा रहा है जो आर्थिक संकट से ग्रस्त हैं। यह खेद की बात है कि इन्हें आर्थिक संकट भोगना पड रहा है। उनका ऐसी स्थिति नहीं होनी चाहिए। उन्होंने हिन्दी प्रचार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

हिन्दी प्रचार महात्मा गांधी द्वारा स्वतंत्रता संग्राम को दिया गया एक सशक्त शस्त्र था। हिन्दी प्रचारकों को उस शस्त्र का प्रयोग करने में अनेकों कठिनाइयों का सामना करना पडा था।

हिन्दी प्रचार महात्मा गांधी द्वारा स्वतंत्रता संग्राम को दिया गया एक सशक्त शस्त्र था। हिन्दी प्रचारकों को उस शस्त्र का प्रयोग करने में अनेकों कठिनाइयों का सामना करना पडा था। उन दिनों हिन्दी प्रचारक भाषाध्यापक ही नहीं, स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी ही माने जाते थे जिन पर सरकार की निगरानी रहती थी। हिन्दी प्रचारक केवल भाषा का प्रचार ही नहीं, स्वतंत्रता संग्राम का प्रचार भी करते थे। इस दृष्टि से हमें उनका अत्यधिक आदर करना है। आशा है केन्द्र सरकार की सहायता से आज उनको दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानेवाला आर्थिक पुरस्कार उनको थोडा सा आश्वासन देगा।

श्री. वेलायुधन नायर ने अपने स्वागत भाषण में बाबू पुरुषोत्तम दास टण्डन जैसे दो तीन सज्जनों का जिक्र किया जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के समय हिन्दी के प्रचार में महत्व-पूर्ण भूमिका निभायी थी। मुझे टण्डन का एक भाषण याद आ रहा है। उन दिनों मैं विद्यार्थी था। स्वतंत्रता संग्राम के नेता जेल से मुक्त किये गये थे। 2-8-1942 का आन्दो-लन जहाँ से शुरू हुआ था बंबई के उसी गुवालिया मैदान में अखिल भारतीय कांग्रेस समिति का एक त्रि-दिवसीय सम्मेलन आयोजित हुआ। मद्रास से विद्यार्थियों का एक दल उसमें भाग लेने गया था। एक विद्यार्थी प्रतिनिधि के रूप में, मैं भी उस में भाग ले सका। उस में पुरुषोत्तमदास टण्डन ने भाषण दिया शुद्ध हिन्दी में। ऐसी हिन्दी जो संस्कृत का थोडा सा परिचय रखने वाले मलयाली थोडा बहुत समझ सकते हैं। बडी वाग्मिता के साथ उन्होंने करीब एक घण्टे तक भाषण दिया। किसी को नहीं लगा कि उनका भाषण अधिक लंबा हो गया। जुलाई अगस्त का समय था। पन्तल की ज़मीन बरसात से भीग गयी थी। करीब दस हज़ार लोग वहाँ बैठे भाषण सुन रहे थे।

फिर दो तीन भाषणों के बाद आचार्य नरेन्द्र देव का भाषण था। उन्होंने कहा "मैं ने सोचा था कि मैं हिन्दी में भाषण दूँ।" हम बहुत खुश हुए। हम ने सोचा कि अब वे अंग्रेज़ी में बोलेंगे और हम भली-भाँति समझ सकेंगे। पर उन्होंने कहा "श्री टण्डन ने हिन्दी में एक उज्ज्वल भाषण दिया है। इसलिए मैं ने सोचा था कि हिन्दुस्तानी में बोलूँ। लेकिन अब मैं उर्दू में बोलूँगा।" उन का उर्दू भाषण भी करीब एक घण्टे तक चला। पास बैठे लोगों की सहा-यता से मैं ने कुछ समझने की कोशिश की। पंजाब मेल की शीघ्रता से वे बोलते जा रहे थे। उसी दिन हम

हिन्दी चैतन्ययुक्त भाषा है। राष्ट्रभाषा के रूप में, आम भाषा के रूप में, उसे प्रतिष्ठित करना है। राजभाषा के रूप में उसका पतन नहीं होना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस सरकार की दृष्टि में भाषाओं में प्रथम स्थान प्रान्तीय भाषा मलयालम को दिया जाना है। द्वितीय स्थान हिन्दी का है। तृतीय स्थान अंग्रेज़ी को दिया जाना है।

समझ सके कि उर्दू जबान के लफ्ज कितने ज़ोरदार हैं।

हिन्दी चैतन्ययुक्त भाषा है। राष्ट्रभाषा के रूप में, आम भाषा के रूप में, उसे प्रतिष्ठित करना है। राजभाषा के रूप में उसका पतन नहीं होना चाहिए।

श्री. वेलायुधन नायर ने सरकार के विचारार्थ कुछ ऐसी बातें सुझायी हैं जो हिन्दी के प्रचार को प्रगति देने केलिए आवश्यक हैं। वे सब अच्छी बातें हैं। निश्चय ही हमें हिन्दी के प्रचार में प्रगति लानी है। कुछ परीक्षाओं को मान्यता नहीं दी गयी थी। उन में कुछ परीक्षाओं को इस सरकार ने मान्यता दी है। और भी कई बातें हैं जिन पर विचार करना है।

इस सरकार की दृष्टि में भाषाओं में प्रथम स्थान प्रान्तीय भाषा मलयालम को दिया जाना है। द्वितीय स्थान हिन्दी का है। तृतीय स्थान अंग्रेज़ी को दिया जाना है। यद्यपि सरकार मलयालम और हिन्दी को प्रधानता देना चाहती है तो भी जनता ऐसा नहीं चाहती। यही कठिनाई है। आज सभी मलयालम माध्यम स्कूलों से यही माँग आ रही है कि अंग्रेज़ी माध्यम समान्तर कक्षायें आरंभ करने की अनुमति दी जाए। मैं ने निर्णय लिया है कि प्राथमिक विद्यालयों में अंग्रेजी कक्षायें आरंभ नहीं करनी चाहिए। मलयालम माध्यम में पढने से कोई हानि नहीं होगी। मलयालम माध्यम स्कूलों में पढकर मेट्रिक उत्तीर्ण करने वाले छात्र अंग्रेज़ी माध्यम कालेजों में पढने जाते हैं। कुछ ही महीनों में वे अंग्रेज़ी माध्यम की पढाई के अभ्यस्त हो जाते हैं। क्योंकि मलयालम

कहीं से भी हिन्दी माध्यम समान्तर कक्षायें आरंभ करने की माँग नहीं आ रही है। यदि ऐसी माँग कहीं से आये तो सरकार उसकी अनुमति देने केलिए तैयार है।

(शेष पृष्ठ 10 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रान्तों की जनता को साक्षर बनायें

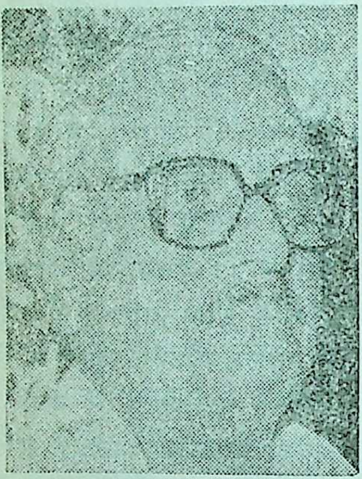

श्री. वर्कला राधाकृष्णन

अध्यक्ष, विधान सभा, केरल

[28-5-1988 को केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा आयोजित सम्मान समर्पण समारोह में दिये गये भाषण का सारांश]

हिन्दी प्रचार का आरंभ हमारे स्वतंत्रता संग्राम के समय हुआ था। उस समय का एक मुख्य नारा था हिन्दी प्रचार। वह स्वतंत्रता संग्राम का एक अभिन्न अंग था। जब मैं हाई स्कूल का विद्यार्थी था तब आज का त्रि-भाषा सूत्र नहीं था। तो भी मैं ने हिन्दी का थोडा सा अध्ययन किया। देश-प्रेम से प्रेरित होकर मैंने हिन्दी का अध्ययन किया था। स्वतंत्रता प्राप्ति के चालीस वर्ष बाद हमें इस बात का अवलोकन करना है कि हिन्दी प्रचार की वर्तमान स्थिति क्या है।

देश की एकता और भावात्मक उद्ग्रथन के सामने आज बडी चुनौतियाँ हैं। देशीय उद्ग्रथन का सबसे अच्छा उपकरण है हिन्दी। देश की अधिकांश जनता द्वारा बोली जानेवाली भाषा हिन्दी है।

आज विश्व की स्थिति की पृष्ठ-भूमि में देखें तो लगता है कि हिन्दी भाषी जनता की निरक्षरता को मिटाना आज की प्रमुख समस्या है। उत्तर भारत में विशेष कर उत्तर-प्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, बिहार जैसे प्रान्तों में हिन्दी ही बोली जाती है। इन प्रान्तों की निरक्षरता जब तक मिटायी नहीं जाएगी तब तक हम अपनी प्रगति पर गर्व नहीं कर सकते। हिन्दी भाषी प्रान्तों के अपने मित्रों से मैं कहा करता हूँ—मित्रो, हम हिन्दीतर प्रान्तों में हिन्दी प्रचार की समस्या किसी न किसी प्रकार सुलझा लेंगे। कृपया आप अपने प्रान्तों के गरीब भाई बहनों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी भाषी जनता की निरक्षरता को मिटाना आज की प्रमुख समस्या है ।

आँखें खोल दें। वे लिखना पढना नहीं जानते। वे केवल हिन्दी बोलना जानते हैं। इसलिए देश की गति-विधियों से वे अनभिज्ञ रहते हैं। उनको बहुधा भटकाया जाता है। राजस्थान में स्त्रियों की साक्षरता का प्रतिशत बीस से कम है । यही कारण होगा कि वहाँ आज भी सती की प्रथा प्रतिष्ठित है। समाचार पत्रों में खबर आयी कि सती की महिमा गाने के लिए आयोजित एक सम्मेलन में सत्तर हजार लोगों ने भाग लिया। ऐसी कुरीतियों के पीछे निरक्षरता का प्रभाव है।

इसीलिए मैं कहता हूँ कि हिन्दी प्रान्तों की निरक्षरता का निवारण किए बिना हम स्वतंत्रता की सुरक्षा नहीं कर पायेंगे। देश को विपत्ति में डालनेवाली अनैक्य की क्षुद्र शक्तियों का पोषण करनेवाली मुख्य प्रेरक शक्ति अज्ञान है, निरक्षरता है। 'तमस' नामक कार्यक्रम के विरुद्ध

वे केवल हिन्दी बोलना जानते हैं। इसलिए देश की गति-विधियों से वे अनभिज्ञ रहते हैं।

दूरदर्शन केन्द्र पर जो आक्रमण हुआ उसकी खबर हमने पढी। ऐसी अनेकों घटनायें हो रही हैं। इन सबका कारण यही है कि हमारे करोडों गरीब भाई स्वयं पढकर सही स्थिति समझ नहीं पाते।

इसीलिए हिन्दी प्रचार में लगे हुए मित्रों से मेरी प्रार्थना है कि देश भर में, विशेष कर हिन्दी क्षेत्र में गरीब

हम इलक्ट्रौनिक युग में जी रहे हैं। यदि हमारे भाइयों को बीसवीं सदी के नागरिक बनाना है तो उन्हें साक्षर बनाना है।

जनता में व्यापी निरक्षरता को दूर करने का प्रयत्न करें। नहीं तो सहस्रों वर्ष की अपनी महान सांस्कृतिक परंपरा पर हम गर्व नहीं कर पायेंगे।

हम इलक्ट्रौनिक युग में जी रहे हैं। यदि हमारे भाइयों को बीसवीं सदी के नागरिक बनाना है तो उन्हें साक्षर बनाना है। हमारे हिन्दी प्रचारक और देशीय नेता इस ओर अवश्य ध्यान देते हैं। लेकिन इस पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पावन स्मृति में अपने देश की लाज रखने केलिए निरक्षरता का निवारण करने में हम लोग अपना योगदान दें। ❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

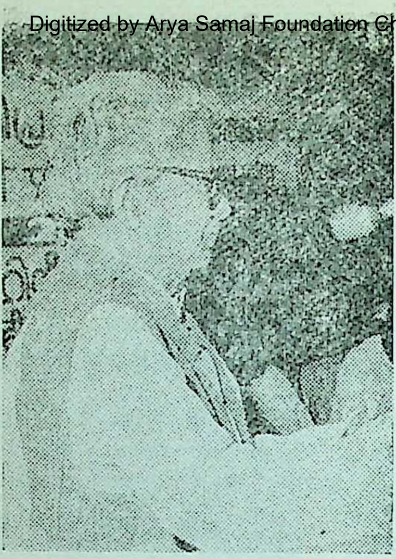

हिन्दी सेवि
का आदर व

श्री. ए. पी. उदय

आज जब यहाँ दस वयोवृद्ध छोटी सी गुरुदक्षिणा स्वीकार कर रहे थे तब मैं उनके पूर्वकर्मों का स्मरण कर रहा था। हिन्दी पढाना उनके लिए डिवाइन मिशन था। दैवी चेतना से प्रेरित होकर वे हिन्दी का प्रचार कर रहे थे। अक्सर प्रतिफल स्वरूप उन्हें दरिद्रता ही मिलती थी। पर जो लोग हृदय में संपन्न हैं उन्हें भौतिक दरिद्रता का सामना करने की शक्ति मिलती है।

जिस प्रकार आज इनका आदर किया गया है वैसे हीऐसी सेवाओं में रत रहे सज्जनों का आजीवन आदर करना हमारा धर्म है।

जिस प्रकार आज इनका आदर किया गया है वैसे ही ऐसी सेवाओं में रत रहे सज्जनों का आजीवन आ
करना हमारा धर्म है।

हिन्दी का प्रचार कोई नाट कार्य नहीं था एक मूक सेवा क था। इसलिए संभव है कि उसका अगाध अर्थ और व्या नहीं समझते हैं। यही दुखद आज दिखाई देता है। हिन्दी प्रचार आज बहुत धीमी गति आगे बढ रहा है। कैसे हम उ गति में तीव्रता लायें ?

एक बार पालघाट जिले अध्यापक शिक्षण केलिए आवेद का चयन हो रहा था। उस स तमिलनाडु से आनेवाले आवेद को वहाँ प्राथमिकता मिलती क्योंकि हिन्दीतर विषयों में प्र अंक ही योग्यता का आधार म जाता था। तब मैं ने कहा- तमिल पसंद है। पर ऐसे आवे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्यापक बनने योग्य नहीं हैं जिन्हें न्दी नहीं आती। क्योंकि कभी भी हिन्दी अध्यापकों की अनुपस्थिति में दूसरे अध्यापकों को हिन्दी ध्यापन का कार्य सौंपना पडता । ऐसी स्थिति में हिन्दी जानने-लों को भी अध्यापक नियुक्त रना उचित होगा।

अठारह वर्ष की अवस्था में मैं न्दी से अनुरक्त हो गया था। कई र मैं ने हिन्दी पढने का प्रयत्न या। अब मेरी आयु तिहत्तर वर्ष हो रही है। तो भी थोडी थोडी न्दी ही सीख पायी है। मैं उदयपुर ांग्रेस में भाग लेने गया था। उस मय इस थोडी हिन्दी के सहारे ही काम चला सका।

एक बार मैं बस में यात्रा कर हा था। तब मैं ने देखा कि उस में त्रा कर रहे कुछ हिन्दी भाषी त्रियों से कण्डक्टर बहुत बुरा वहार कर रहा है। यह देखकर े बडा दुख हुआ। जब हम न्याकुमारी पहुँचे तब कुछ निरक्षर डकियों ने यात्रियों को घेर या। वे कन्याकुमारी की मिट्टी र छोटी-छोटी मालायें बेचने ली थीं। उन्होंने अनायास न्दी में वार्तालाप किया। इससे

आवश्यकता पडे तो दक्षिण की जनता हिन्दी सीखेगी। यदि हिन्दी सीखने से उत्तर भारत में नौकरी मिल सकती है तो लोग स्वयं हिन्दी सीखेंगे।

यही समझना है कि आवश्यकता पडे तो दक्षिण की जनता हिन्दी सीखेगी। यदि हिन्दी सीखने से उत्तर भारत में नौकरी मिल सकती है तो लोग स्वयं हिन्दी सीखेंगे।

आज अंग्रेज़ी माध्यम स्कूलों को बहुत प्रधानता दी जाती है। यह हमारी मानसिक अधस्थिति का लक्षण है। अंग्रेज़ी माध्यम में सीखने वाले बच्चे केवल कुछ शब्द रट लेते हैं, अर्थ तो ग्रहण नहीं कर पाते। मलयालम माध्यम में सीखनेवाले बच्चे अर्थ भी ग्रहण करते हैं। इस लिए आदरणीय शिक्षा मंत्री से मेरा निवेदन है कि अंग्रेज़ी माध्यम स्कूल

अंग्रेजी माध्यम में सीखने वाले बच्चे केवल कुछ शब्द रट लेते हैं, अर्थ तो ग्रहण नहीं कर पाते। मलयालम माध्यम में सीखनेवाले बच्चे अर्थ भी ग्रहण करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खोलने की अनुमति न दें । अथवा दें तो उन स्कूलों में भारी फीस वसूल की जाये ।

हमें एक संपर्क लिपि की भी बहुत बडी आवश्यकता है । सारे भारत केलिए नागरी लिपि अपनाये जाये तो अच्छा होगा । एक आम लिपि हो तो निरक्षरता निवारण में सुगमता आएगी, भाषाओं में समन्वय बढेगा । एक प्रान्त के निवासी इतर प्रान्त के निवासियों को निकटत समझ सकेंगे ।

हिन्दी के प्रचार को अपना जी व्रत माननेवाले इन पुरस्कृत हि सेवियों का आदर करता हूँ । उन प्रशंसा करता हूँ । ऐसे कार्यक्रमों आयोजित करनेवाले श्री वेलायु नायर जी का मैं अभिन करता हूँ ।

(पृष्ठ 5 का शेष)

माध्यम स्कूलों में भी अंग्रेजी बहुत कुछ सिखायी जाती है । कॉलेज में अंग्रेजी माध्यम में अध्ययन जारी रखने केलिए अंग्रेजी का यह ज्ञान पर्याप्त है । कहीं से भी हिन्दी माध्यम समान्तर कक्षायें आरंभ करने की माँग नहीं आ रही है । यदि ऐसी माँग कहीं से आये तो सरकार उसकी अनुमति देने के तैयार है ।

श्री. वेलायुधन नायर द्वारा गये बहुमूल्य सुझावों पर सर अवश्य विचार करेगी और उ कार्रवाई करने का परिश्रम करे

इन शब्दों के साथ इस सम्मे का उद्घाटन करता हूँ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्ता और सेवा को मिला सकें

श्री. विष्णु प्रभाकर

[केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा 28-5-1988 को श्रेष्ठ हिन्दी प्रचारकों का सम्मान समर्पण करने के लिए आयोजित सम्मेलन में दिया गया आशीर्वाद भाषण]

आपने दस सेवकों का सम्मान किया। ये दस व्यक्ति नहीं हैं। बल्कि ये प्रतीक हैं उस युग के जो स्वाधीनता के पूर्व का युग था और जिसका उद्देश्य देश को स्वतंत्र कराने का था। केवल राजनीतिक स्वतंत्रता लेना नहीं था। हमारे

हमारे नेताओं ने यह समझ लिया था कि केवल अंग्रेजों को बाहर निकाल देने से देश स्वाधीन नहीं हो सकता। देश की असली स्वाधीनता आर्थिक मुक्ति में है, सांस्कृतिक मुक्ति में है, सामाजिक मुक्ति में है।

नेताओं ने यह समझ लिया था कि केवल अंग्रेज़ों को बाहर निकाल देने से देश स्वाधीन नहीं हो सकता। देश की असली स्वाधीनता आर्थिक मुक्ति में है, सांस्कृतिक मुक्ति में है, सामाजिक मुक्ति में है। इसलिए गांधीजी ने जो रचनात्मक कार्यक्रम रखे हमारे सामने उनमें नारी-मुक्ति, अछूतोद्धार, हिन्दी, चरखा इन सबको मुख्य कार्यक्रम बनाया। इन सबके समग्र रूप से जो मुक्ति मिलेगी वह देश की मुक्ति होगी। और वह सब काम उन्होंने किया, या उनके कहने पर उस समय के, उस युग के व्यक्तियों ने किया। वह काम सेवा-भाव से किया था।

(शेष पृष्ठ 35 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक तरफ मलयालम हो और दूसरी तरफ हिन्दी हो

डा० रत्नाकर पांडेय
सदस्य, संसदीय राजभाषा समिति

[केरल हिन्दी प्रचार सभा के तत्वावधान में "राजभाषा हिन्दी हिन्दीतर प्रान्तों में" विषय पर 9-6-1988 और 10-6-1988 में आयोजित द्विदिवसीय संगोष्ठी में दिये गये उद्‌घाटन भाषण का सारांश]

संगोष्ठी का उद्‌घाटन करते हुए बोल रहे हैं सांसद डा० रत्नाकर पांडेय। श्री. एम. के. वेलायुधन नायर (मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा) एवं डा० सी. पी. राजगोपालन नायर पास बैठे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल दक्षिण भारत के उन प्रान्तों में है जहाँ हिन्दी के साथ कोई अन्याय नहीं किया जा रहा है ।

केरल दक्षिण भारत के उन प्रान्तो में है जहाँ हिन्दी के साथ कोई अन्याय नहीं किया जा रहा है। आन्ध्र में और कर्नाटक में पहले पाँचवीं कक्षा से हिन्दी अनिवार्य रूप से पढायी जाती थी। लेकिन आज वहाँ आठवीं कक्षा के बाद हिन्दी पढायी जाती है ! यह ऐसा षडयन्त्र है हिन्दी और राष्ट्रीयता के प्रति जिसका हमें प्रतिकार करना होगा। केरल मे शुरू से ही पाँचवीं कक्षा से हिन्दी की अनिवार्यता बनी हुई है, और यही कारण है कि केरल में राजभाषा, संपर्क भाषा और राष्ट्र-भाषा हिन्दी का अस्तित्व और प्रान्तों की अपेक्षा अधिक सुरक्षित और आनेवाली पीढियो केलिए अधिक जनहितकारी रूप में प्रयोग में आ रहा है।

किसी देश में यदि भाषा, संस्कृति, राष्ट्रीयता या जो अपने जातिगत मूल्य हैं उनके साथ क्षणिक सामयिक अपनी तृष्णा पूर्ति केलिए, अपने स्वार्थों की सिद्धि केलिए, अगर खिलवाड किया जाता है, उन में क्षेत्रीय विचार भरने के भाव से कुछ इस तरह का परिवर्तन किया जाता है जिससे राष्ट्रीयता और पूरा राष्ट्र प्रभावित हो, तो इसे मैं अपराध मानता हूँ। चाहे कोई हिन्दी भाषा भाषी प्रान्त ऐसा करे या कोई हिन्दीतर भाषा भाषी प्रान्त करे, इस संबन्ध में

किसी देश में यदि भाषा, संस्कृति, राष्ट्रीयता या जो अपने जातिगत मूल्य हैं उनके साथ क्षणिक सामयिक अपनी तृष्णा पूर्ति केलिए, अपने स्वार्थों की सिद्धि केलिए, अगर खिलवाड किया जाता है, उन में क्षेत्रीय विचार भरने के भाव से कुछ इस तरह का परिवर्तन किया जाता है जिससे राष्ट्रीयता और पूरा राष्ट्र प्रभावित हो, तो इसे मैं अपराध मानता हूँ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी को कोई छूट नहीं दी जानी चाहिए।

जिस प्रकार स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं द्वारा हिन्दी में टंकण और आशु लिपि में प्रशिक्षण किया जा रहा है उसी प्रकार नागरी लिपि की अन्य यान्त्रिक सुविधाओं में भी प्रशिक्षण का प्रावधान बने।

आज देश में चारों ओर प्रगति का शंखनाद हो रहा है। ऐसी स्थिति में कहीं क्षेत्रीयता के नाम पर, कहीं भाषा के नाम पर, कहीं संप्रदाय के नाम पर, कहीं जाति के नाम पर, कहीं धर्म के नाम पर, अलग अलग दीवारें खडी करने की कोशिश की जा रही है और बडी तेजी से विघटन कारी शक्तियाँ, चाहे वे देश की हो, चाहे बाहरी ताकतों से सहायता प्राप्त और प्रेरित हों, इस देश को खण्डित करने का सपना देख रही है। लेकिन यह देश इतना बडा है कि इसका जो "एकोहं बहुस्यामि" का दर्शन है वह इसे राष्ट्रीयता के इतने मजबूत सूत्र में जोडे हुए हैं जिसको हजारों वर्षों से हिलाने की कोशिश की गयी तो भी कुछ होगा नहीं।

हम अपने भावों को, अपने विचारों को, अपनी अभिव्यक्ति को, जिस माध्यम से प्रकट कर सकते हैं वह भाषा होती है। भाषा जबरदस्ती नहीं सीखी जाती है। भाषा सरकार के दबाव में लोग पढ लेंगे—यह दिवास्वप्न है।

राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को सुनिश्चित करने केलिए भारत सरकार के गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा जो वार्षिक कार्यक्रम बनाया जाता है उसके कार्यान्वयन का निरीक्षण संसदीय राजभाषा समिति करती है। दक्षिण

भाषा जबरदस्ती नहीं सीखी जाती है। भाषा सरकार के दबाव में लोग पढ लेंगे-यह दिवास्वप्न है।

भारत के केन्द्र सरकारी कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी का जितना अच्छा काम हो रहा है उतना अच्छा काम हिन्दी प्रदेशों में नहीं हो रहा है। इसलिए नहीं हो रहा है कि सैकडों वर्षों से अंग्रेज़ी की दासता की जो मनोवृत्ति हमारी रही है उसकी जकड में हिन्दी भाषा भाषी लोग पूरी तरह ग्रसित है। और आज भी सोचते हैं कि अंग्रेज़ी में काम करेंगे तो हम ऊँचे समझे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे लोग हिन्दी के ही नहीं राष्ट्रीयता के ही द्रोही हैं जिन्हें माफ करने केलिए देश तैयार नहीं है।

जाएँगे। ऐसे लोग हिन्दी के ही नहीं राष्ट्रीयता के ही द्रोही हैं जिन्हें माफ करने केलिए देश तैयार नहीं है।

कोई भी देश तब तक विकास नहीं करता जब तक उसकी अपनी भाषा न हो। जापान को लीजिए, जर्मनी को लीजिए, रूस को लीजिए, सबने अपनी भाषा के माध्यम से मूल चिन्तन किया है। जब तक अंग्रेजी में चिन्तन करेंगे और हमारे सोचने का तरीका उधार लिया हुआ रहेगा तब तक देश का जो लक्ष्य है उस लक्ष्य के साथ हम विश्वासघात करते हैं। इसलिए अपनी भाषा में काम होना चाहिए। क्या विडंबना है कि एक तरफ अंग्रेजी और एक तरफ हिन्दी रखकर हम हिन्दी लाना चाहते हैं ! अगर हम केरल में काम करते हैं तो एक तरफ मलयालम होनी चाहिए और दूसरी तरफ हिन्दी होनी चाहिए। तब जा करके हमारा लक्ष्य पूरा होगा।

अन्तर्देशीय स्तर पर अंग्रेजी संपर्क भाषा हो सकती है। लेकिन राष्ट्रीय परिवेश में अगर हम सफल होना चाहते हैं तो हमें राष्ट्रभाषा को प्रश्रय देना होगा। आप ने शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, वल्लभाचार्य जैसे जिन आचार्यों को उत्पन्न किया है उन आचार्यों ने दर्शन दिया है और सिद्धान्त दिया है। उन के सूत्रों का गान हिन्दी के कवियों ने किया है। उनके सिद्धान्तों का राष्ट्रव्यापी और

जब तक अंग्रेजी में चिन्तन करेंगे और हमारे सोचने का तरीका उधार लिया हुआ रहेगा तब तक देश का जो लक्ष्य है उस लक्ष्य के साथ हम विश्वासघात करते हैं।

विश्वव्यापी प्रचार करने का काम हिन्दी ने किया है। हिन्दी हमारे सन्तों की भाषा है। वह हिन्दी अपने ही देश में राजभाषा और संपर्क भाषा होने का संघर्ष करे, इससे बड़े दुख की बात किसी भी नागरिक को हो नहीं सकती।

हिन्दी का भारतीय भाषाओं से कोई संघर्ष नहीं है। भारतीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह हिन्दी अपने ही देश में आज राजभाषा और संपर्क भाषा होने का संघर्ष करे, इससे बडे दुख की बात किसी भी नागरिक को हो नहीं सकती ।

भाषायें जब बढेंगी तभी हिन्दी का महत्व होगा। हिन्दी भाषा भाषी प्रान्तों में भारतीय भाषाओं की मान्यता स्थिर होनी चाहिए। आनेवाले दिनों में राजभाषा के ह में हिन्दी की मान्यता बढेगी।

केरल हिन्दी प्रचार सभा हिन्दी का एक तीर्थस्थल है। हिन्दी औ हिन्दीतर, दक्षिण भारत और उत्त भारत के भेद को मिटाने में केरल हिन्दी प्रचार सभा नेतृत्व करे इ देश का।

इन शब्दों के साथ मैं इस संगोष्ठ का उद्घाटन करता हूँ।

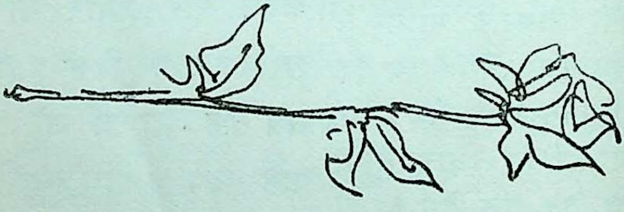

मुझे खेद तो यह हैं कि जिन प्रान्तों में मातृभाषा हिन्दी हैं, वहाँ भी उस भाषा की उन्नति करने उस भाषा का उत्साह नहीं दिखाई देता हैं !

—महात्मा गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी के प्रवाह को कोई रोक नहीं पायेगा

श्री. पन्नालाल शर्मा

(सदस्य, हिन्दी सलाहकार समिति, विज्ञान और तकनीकी मंत्रालय, भारत सरकार)

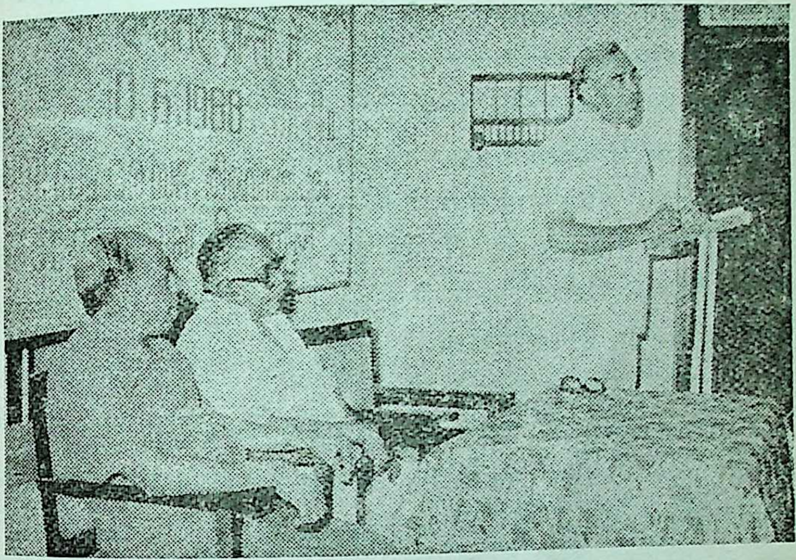

श्री. पन्नालाल शर्मा (सदस्य, हिन्दी सलाहकार समिति, विज्ञान और तकनीकी मंत्रालय, भारत सरकार) भाषण दे रहे हैं। बैठे हैं (बायें से) श्री. आर. जी. जायसवाल (वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी, इलक्ट्रोनिकी विभाग, भारत सरकार) और श्री. एम. के. वेलायुधन नायर (मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा)

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद की स्थापना उन्नीस सौ साठ में हम लोगों ने की। संविधान में बताया गया है कि हिन्दी संघ की राजभाषा होगी। लेकिन यह संकल्प अब तक पूर्ण रूप से क्रियान्वित नहीं हो पाया है। हम ने यह सोचा कि जब तक हमारे साथियों को हिन्दी में काम करना नहीं आएगा तब तक हम उनसे हिन्दी में काम करने की अपेक्षा नहीं कर पायेंगे। यही व्रत लेकर हम कुछ साथियों ने बोट क्लब में केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद की स्थापना की बीस बन्धुवों के साथ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जितना दक्षिण भारत के लोग हिन्दी को आगे बढाने में प्रयास कर रहे हैं उतना हम उत्तर भारत के लोग नहीं कर रहे हैं।

आज इस संस्था की चार सौ से अधिक शाखाएँ देश में काम कर रही हैं। केन्द्र के चालीस पैंतालीस हज़ार जो कर्मचारी हैं उनको हम सदस्य बनाते हैं। यह संस्था अपने प्रकाशन निकालती है। हमने चार्ट बनवाये हैं जिन्हें हम सरकारी दफ्तरों में बाँटते हैं। कारखाना शब्दावली, विधि शब्दावली, बैंकिंग शब्दावली इस प्रकार से जिस विभाग में जो शब्दावली काम आती है उनका हम अलग अलग प्रकाशन करते हैं। छोटी छोटी पुस्तकें भी परिषद की ओर से प्रकाशित होती हैं जिन में बताया जाता है कि कैसे छोटे छोटे वाक्य लिखे जाते हैं।

हमारा ध्येय यह रहा है कि प्रेम भाव से हिन्दी आगे आए। जितना दक्षिण भारत के लोग हिन्दी को आगे बढाने में प्रयास कर रहे हैं उतना हम उत्तर भारत के लोग नहीं कर रहे हैं। केन्द्रीय सरकार के दफ्तर में हिन्दी में काम करने में आगे रहते हैं। आप लोग इनमें सबसे आगे हैं।

परिषद की ओर से हम प्रतियोगितायें चलाते हैं। निबन्ध प्रतियोगिता होती है, आशुलिपि की प्रतियोगिता होती है, टंकण की प्रतियोगिता होती है। इस बार अखिल भारतीय स्तर पर टंकण की गति सत्तानबे शब्द प्रति मिनट की आयी है। आशुलिपि की गति दो सौ पचास शब्द प्रति मिनट की आयी है। पुरस्कार वितरण करते हुए केन्द्र सरकार के गृह मंत्रालय

इस बार अखिल भारतीय स्तर पर टंकण की गति सत्तानबे शब्द प्रति मिनट की आयी है। आशुलिपि की गति दो सौ पचास शब्द प्रति मिनट की आयी है।

के राज्य मंत्री श्री. चिन्तामणि पाणिग्रही ने जब देखा कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक के लोग पुरस्कार ग्रहण करने आये हैं तब उन्हें ऐसा लगा कि हिन्दी अब देश में चलेगी, चल रही है और उसके प्रवाह को कोई रोक नहीं सकेगा।

आप लोगों की जो श्रद्धा हिन्दी के प्रति है और आप हिन्दी का जो काम कर रहे हैं उससे हम को प्रेरणा मिलती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्खिनी संस्कृति—इतिहास के आइने में

डा० इक़बाल अहमद डी. लिट्.

[जनवरी 1988 में तिरुवनन्तपुरम में आयोजित संगोष्ठी में प्रस्तुत प्रबंध]

'दक्खिनी' शब्द संस्कृत शब्द दक्षिण से बना है जिसका आरम्भिक अर्थ दाहिना हाथ है। जब आर्यों ने उत्तरी और पश्चिमी देशों को पार करके पंजाब में प्रवेश किया तो उन्हें दाहिने हाथ की ओर जो भूभाग दिखाई पडा उसे दक्षिण कहना शुरू किया और धीरे धीरे यही दिशा दक्षिण कहलायी। इस शब्द का आरम्भिक अर्थ "दान देनेवाली धनराशि था" और आज भी दक्षिणा शब्द का प्रयोग इसी अर्थ में किया गया है। प्राकृत में यह शब्द दखन या दखिन हो गया और धीरे धीरे देश के दो भाग माने जाने लगे। एक आर्यावर्त अर्थात् वह भाग जिस पर आर्यों का अधिकार था और दूसरा भाग जो उनसे परे था, दक्षिणापथ कहलाया। डा० हेमचन्द्रराय चौधरी का कथन है "शब्द 'दकन' का उस ऐतिहासिक भू-भागसे मतलब है जो सह्याद्रि पर्वत से दक्षिण की ओर फैला हुआ है। यह क्षेत्र दक्षिण में कृष्णा नदी और तुंगभद्रा तक चला गया है।" (Early History of Deccan—Edited by G. Yazdami Page 3) डा० पी. एम. जोशी ने इस सम्बन्ध में कहा है "दकन और उत्तरी भारत के बीच विन्ध्याचल और नर्मदा नदी हैं। लेकिन वास्तव में दकन का सिलसिला उत्तर में अजन्ता की पहाडियों और दक्षिण में नीलगिरि और पालघाट के दर्रे हैं।" (Historical Geography of Medieval Deccan) इससे 'दक्खिन' शब्द और क्षेत्र का अन्दाज़ा सरलता-पूर्वक लगाया जा सकता है।

'संस्कृति' शब्द संस्कृत भाषा का है जिसका उद्गम 'सम्' उपसर्ग के साथ सस्कृत की 'कृ' धातु के संयोग से हुआ है। संस्कृति का शाब्दिक अर्थ-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृति मानव को मनुष्यता की ओर प्रेरित करनेवाले आदर्शों, आचार-विचारों और कार्यों के अनुष्ठानों की समष्टि का नाम है।

शुद्धि, संस्कार, सुधार, परिष्कार, मानसिक विकास, सजावट, परिमार्जन आदि होते हैं। किन्तु शब्दार्थ की अपेक्षा भावार्थ अधिक विशद और व्यापक है क्योंकि इसमें परिमार्जन अथवा परिष्कार के अतिरिक्त शिष्टता एवं सौजन्य के भावों का भी समावेश है। इसमें लौकिक, पारलौकिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, आर्थिक, राजनैतिक आदि सभी के अभ्युदय, उन्नति के अनुकूल चेष्टाएँ आ जाती हैं। इसकी सीमाएँ एक ओर धर्म-क्षेत्र को स्पर्श करती हैं तो दूसरी ओर साहित्य पर भी अपना प्रभाव डालती हैं। अत हम कह सकते हैं कि संस्कृति मानव को मनुष्यता की ओर प्रेरित करनेवाले आदर्शों, आचार-विचारों और कार्यों के अनुष्ठानों की समष्टि का नाम है।

मनुष्य ही संस्कृति का जनक है। मनुष्य की विचारशीलता ने ही संस्कृति की खोज की है। पशु-सुलभ स्तर से मानवीय पूर्णता की सिद्धि की दिशा में उडने की मानव-साधना में ही संस्कृति का सार तत्व निहित है। मनुष्य की यह साधना जिन क्रियाशीलताओं के रूप में व्यक्त होती है, उन्हें ही संस्कृति के विविध आयाम कहा जाता है। उन आयामों में प्रमुख आध्यात्मिक साधना, धार्मिक क्रिया-कलाप, राज्यादर्श, साहित्य एवं अन्य ललितकलाओं की रचना, राष्ट्रीय भावना, दार्शनिक चिन्तन, वैज्ञानिक प्रगति, लोकाचार आदि हैं। इस दृष्टि से साहित्य स्वयं एक सांस्कृतिक क्रियाशीलता है।

अपने अभिव्यंग्य पक्ष और अभिव्यक्ति पक्ष दोनों की समवेत श्रेष्ठता के आधार पर साहित्य उत्कृष्टता प्राप्त करता है। दोनों का परस्पर स्पर्धी चारुत्व ही साहित्य को रमणीयता प्रदान करता है। फ़िर भी अभिव्यंजना-पक्ष की प्रधानता इस दृष्टि से मान्य है कि साहित्य को जीवनोन्नयनशाली बनाने की सामर्थ्य जिन मूल्यों, मानों और आदर्शों में निहित रहता है, वे अभिव्यंग्य पक्ष के ही अंग होते हैं। वस्तुत: संस्कृति के मूल्य, मान और आदर्श ही साहित्यिक मूल्य, मान और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदर्श होते हैं। अतः संस्कृति का साहित्य में अभिव्यंग्य पक्ष से घनिष्ठ सम्बन्ध है। अभिव्यक्ति पक्ष, अभिव्यंग्य पक्ष को प्रेषणीय और संवेद्य बनाता है।

दक्खिनी साहित्य उदात्त सांस्कृतिक मूल्यों और आदर्शों को समाहित किए हुए है। सास्कृतिकता ही साहित्य की शक्ति है।

दक्खिनी साहित्य उदात्त सांस्कृतिक मूल्यों और आदर्शों को समाहित किए हुए है।

इस्लाम से पूर्व ही दक्षिण भारत के निवासियों का सम्बन्ध अरबों से रहा है और इससे केवल समुद्री तट के निवासी ही प्रभावित हुए। किन्तु दक्षिण भारत के भीतरी भाग के निवासियों को उस समम एक भिन्न नस्ल, भिन्न धर्म और भिन्न संस्कृति के लोगों से सामना पड़ा जब अलाउद्दीन खिलजी ने 1294 ई० में भीलसा और देवगिरि पर आक्रमण किया। किन्तु वह स्वयं आँधी की तरह आया और चला भी गया। लेकिन जब उसने अपने सिंहासनारूढ होने के बाद अपने सेनानायक मलिक काफूर को दक्षिण विजय के लिए भेजा और उसके बहुत बड श्रेय पर अधिकार कर लिया तो उस समय उसकी भाषा और संस्कृति का प्रभाव वहाँ के निवासियों पर पड़ा। इसके पश्चात् दिल्ली के शासकों का प्रभाव धीरे धीरे बढता ही गया और मुहम्मद तुगळक ने जब अपनी शासन-व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के उद्देश्य से दौलताबाद को राजधानी बनाने का निश्चय किया और दिल्ली के निवासियों सहित दौलताबाद के लिए कूच किया तो उनकी भाषा-संस्कृति ने दक्षिण पर विशेष प्रभाव डाला और यहीं से दक्खिनी भाषा और संस्कृति का विकास सुचारु रूप से होने लगा।

तुगळक वंश के शिथिल हो जाने के पश्चात् अलाउद्दीन हसन बहमन ने दक्षिण में स्वतंत्र राज्य की स्थापना की और गुलबर्गा को अपनी राजधानी बनाया। अब गुलबर्गा उत्तर और दक्षिण की संस्कृतियों का संगम बन गया। अलाउद्दीन हसन बहमन एक दूरदर्शी शासक था। अतः उसने अपनी

अब गुलबर्गा उत्तर और दक्षिण की संस्कृतियों का संगम बन गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रजा को शिक्षित करने के उद्देश्य से स्थान-स्थान पर पाठशालाएँ स्थापित कीं और सुयोग्य शिक्षकों की नियुक्तियां कीं । उसने अपनी प्रजा की सुख-शाँति के लिए भरसक प्रयास किए । उसकी मृत्यु के बाद उसका पुत्र मुहम्मद शाह सिंहासनारूढ हुआ और उसने अपने सुयोग्य प्रधान मंत्री सैफुद्दीन गौरी की सहायता से राज्य को हर दृष्टि से सँवारा एवं व्यवस्थित बनाया। उसने अपने राज्य से असन्मार्गिक तत्वों का सफाया कर दिया तथा परस्पर सद्व्यवहार के लिए मद्य-पान निषेध कर दिया । उसके राज्य में किसी भी प्रकार का पक्षपात अथवा भेद-भाव नहीं था । जब हसन बहमन का पोता मुहम्मद शाह (द्वितीय) शासक बना तो उसने विद्या और कला के प्रोत्साहन के लिए विशेष प्रयत्न किए । वह स्वयं विद्वान था और विद्वानों का सम्मान व आदर करता था तथा एक न्याय-प्रिय राजा के रूप में विख्यात हुआ । इतिहासकारों ने उसके न्याय की भूरि भूरि प्रशंसा की है। उसने अपनी प्रजा को विभिन्न प्रकार की विद्याओं से लाभान्वित कराने के लिए पाठशालाओं में सुयोग्य शिक्षकों की नियुक्तियाँ कीं और उनके उचित वेतन भी निर्धारित किए। पाठशालाओं के छात्रों को निःशुल्क शिक्षा दी जाती थी और विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियाँ भी दी जाती थीं। सुलतान मुजाहिद शाह अपनी प्रजा में इतना लोकप्रिय था कि प्रजा उसे बलवंत के नाम से स्मरण किया करती थी। बहमनी वंश का एक विद्याप्रेमी, संस्कृति-प्रेमी, और प्रजा-प्रेमी शासक फीरोज शाह हुआ । वह स्वयं विद्वान एवं कवि था। वह विद्वानों से स्वयं मिलता था तथा सप्ताह में तीन दिन—मंगलवार, बुधवार और शनिवार—विद्यार्थियों को पढाने पाठशाला जाया करता था। उसने अपने शासन-काल में जो सबसे बडा काम किया वह यह था कि तेलुगु, कन्नड और मराठी भाषी जो अपनी खिचडी अलग अलग पकाया करते थे उन्हें एक स्थान पर एकत्रित किया और समस्त समाज की भलाई के लिए तीनों क्षेत्रों के योग्य व्यक्तियों की नियुक्तियाँ कीं। यहाँ तक कि उसने हिन्दुओं के सामाजिक रीति-रिवाज व रहन-सहन के ढंग को स्वयं अपनाया। यही कारण है कि उसे मिश्रित दक्खिनी संस्कृति का संस्थापक कहा जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुलतान अहमद शाह वली को उसके राज्य की विभिन्न धर्मावलम्बी प्रजा समान रूप से सम्मान देती थी। आज भी उसके उर्स में हिन्दू और मुसलमान दोनों केवल सम्मिलित ही नहीं होते बल्कि उर्स को इस्लामी सन् हिजरी और हिन्दू सन् विक्रमी संवत के मेल से ही मनाया जाता है एवं उसका आरम्भ हिन्दू ब्राह्मण करता है वह नारियल फोडता है और कब्र पर फूल चढाता है। जब हिन्दू रीति रिवाज द्वारा उसकी उपासना समाप्त हो जाती है उसके बाद ही मुसलमानों को अन्दर जाने की आज्ञा दी जाती है।

जब हिन्दू रीति रिवाज द्वारा उसकी उपासना समाप्त हो जाती है उसके बाद ही मुसलमानों को अन्दर जाने की आज्ञा दी जाती है।

यों तो लगभग सभी सूफी संतों की समाधियों पर हिन्दू और मुसलमान दोनों इकट्ठा होते हैं और श्रद्धा के फूल अर्पित करते हैं किन्तु दक्षिण के प्रसिद्ध सूफी साधक और दक्खिनी के साहित्य के अगुआ ख्वाजा बन्द नवाज़ गेसूदराज का उर्स एक निराले ढंग से ही शुरू होता है। उनका उसे एक बड़े गुलदस्ते से शुरू होता है जिसे एक एक हिन्दू और एक मुसलमान रस्सी की सीढ़ी से

उनका उसे एक बडे गुलदस्ते से शुरू होता है जिसे एक हिन्दू और एक मुसलमान रस्सी की सीढ़ी से चढ़कर गुम्बद के कलश पर लगाते हैं।

चढकर गुम्बद के कलश पर लगाते हैं। (हारून खां शेरवानी-दकनी कल्चर, पृ० 30)

बहमनी काल के लगभग सभी सुलतानों ने विभिन्न प्रकार की कलाओं और विद्याओं को प्रोत्साहन दिया। जैसा कि हम पहले कह चुके हैं कि तत्कालीन समाज में मराठी, तेलुगु और कन्नड-भाषी आपस में भाषा को लेकर झगडते थे। इस अन्तर्निषेध के कारण किसी भी भारतीय भाषा को राजभाषा बनाना कठिन था। लेकिन इन दूरदर्शी शासकों ने अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय दिया तथा जन साधारण के लिए सुलभ भाषा 'दक्खिनी' को राजभाषा बनाया।

बहमनी शासकों की विशेषता यह रही है कि वे धार्मिक मामलों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन दूरदर्शी शासकों ने अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय दिया तथा जन-साधारण के लिए सुलभ भाषा 'दक्खिनी' को राजभाषा बनाया।

राजनीति में नहीं घसीटते थे। उनकी सेनाओं में हिन्दू सैनिकों की बहुत बड़ी संख्या हुआ करती थी। बहमनी राज्य में स्थान स्थान हिन्दुओं के तीर्थ तथा मठ स्थापित हुए और उनका अपना विशेष स्थान बन गया। यह कहा जाता है कि महाराष्ट्र के नगर नासिक में श्रीराम ने वनवास जाते समय पडाव किया था। यह पवित्र स्थान बहमनी शासन-काल में हिन्दू यात्रियों का प्रमुख केन्द्र रहा है। नासिक और तिरम्बक हिन्दुओं के बडे बडे तीर्थ थे। पंडरपुर तो भक्ति आन्दोलन का बहुत बडा केन्द्र था। यह भी कहा जाता है कि भारत में बारह बड़े बड़े 'ज्योतिर लिंग' है जिनमें से पाँच बहमनी राज्य में स्थित थे। बलजापुर के भवानी मंदिर में आज भी फीरोज शाह बहमनी के शासन काल का 'कतबा' मौजूद है। (H. K. Serwari & P. M. Joshi—Medieval Deccan History)

विजयनगर का शासक हिन्दू था। 1442 ई० में विजयनगर के शासक देवराय ने एक दिन अपने सभासदों और प्रतिष्ठित व्यक्तियों को बुलाया और उनसे कहा कि हमारे राज्य की सीमा में बहमनी राज्य की सीमा से कहीं अधिक बड़ी है और जन-संख्या भी अधिक है। फ़िर भी जब कभी युद्ध होता है तो हमें पराजय का मुख देखना पड़ता है तथा हमें युद्ध-व्यय और देना पड़ता है। इसका कारण क्या है? सभासदों और प्रतिष्ठित व्यक्तियों में मतभेद हो गया। एक वर्ग का मत था कि अभी हिन्दुओं पर ईश्वरीय प्रकोप है और यह अभी तीस वर्ष तक रहेगा। दूसरे वर्ग का मत था कि केवल सुनी सुनाई बातों पर विश्वास नहीं करना चाहिए प्रत्युत समय का सावधानी से मूल्यांकन करना चाहिए। इसी वर्ग का यह भी मत था कि मुसलमान घुडसवारी और तीरदाजी में अधिक निपुण होते हैं। यदि हमें युद्ध में विजय पानी है तो आवश्यक है कि सेना में मुसलमानों को भर्ती किया जाये। राजा को यह मत स्वीकार हो गया और उसने अपनी सेना में मुसलमान सिपाहियों और अफसरों की नियुक्ति का आदेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया। इसके साथ ही राजा ने यह भी आदेश दिया कि मुसलमान सिपाहियों और अफसरों के लिए मस्जिदों का निर्माण किया जाये तथा नमाज, रोजा और अन्य इस्लामी कार्यों में किसी प्रकार की अडचन न डाली जाये। राजा ने मुसलमानों के अनुराध पर राजगद्दी से मिली हुई एक और गद्दी बनवायी और उस

राजा ने मुसलमानों के अनुरोध पर राजगद्दी से मिली हुई एक और गद्दी बनवायी और उसपर कुरआन शरीफ रखवाया, जिससे मुसलमान अधिकारी और सिपाही कुरआन के सामने झुकें न कि राजा के अर्थात् किंचितमात्र भी शिर्क (धर्मविरुद्ध कार्य) का मिश्रण न हो।

पर कुरआन शरीफ रखवाया, जिससे मुसलमान अधिकारी और सिपाही कुरआन के सामने झुकें न कि राजा के अर्थात् किंचितमात्र भी शिर्क (धर्मविरुद्ध कार्य) का मिश्रण न हो। (कासिम फरिश्ता (अनुवादक आबुज हुई ख्वाजा) तारीख-ए-फरिश्ता, भाग-2 पृ० 513)

इस काल के प्रमुख कवि —ख्वाजा बन्दा नवाज़ गेसूदराज़, निज़ामी, मीराँ जो 'शम्सुत्रउश्शाक' फीरोज, अशरफ, जानम आदि थे। ख्वाजा बन्दा नवाज़ सूफी साधक थे और उन्होंने जो कविताएँ लिखीं उनमें तसव्वुफ प्रमुख रूप से है। उन्होंने मानवता को विशेष महत्त्व प्रदान किया है। निज़ामी ही दक्खिनी के प्रथम प्रेमाख्यानक काव्य का रचयिता माना जाता है। उसके प्रेमाख्यानक काव्य कदमराव व पदमराव में प्रेम के महत्त्व को दर्शाया गया है। कहने का तात्पर्य यह है कि इस काल में सैंकडों कवि हुए हैं जिन्होंने साहित्य को समृद्ध किया है।

बहमनी शासन काल के अन्तिम दिनों में दक्षिण में पाँच नये राज्यों की स्थापना हुई। वे इस प्रकार हैं - बीजापुर में आदिलशाही, बीदर में बरीदशाही, अहमदनगर में निज़ामशाही, गोलकुण्डा में कुतुबशाही और बरार में अमादशाही।

बीजापुर की सलतनत को स्थापित करने वाला युसुफ आदिल शाह था और बीजापुर मध्य काल में महान सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में विख्यात था और उसकी चमक-दमक, साहित्य के प्रति अनुराग, भवन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यद्यपि उसकी मातृभाषा तुर्की थी और वह स्वयं तुर्की और फारसी का एक महान कवि था, किन्तु उसने जन साधारण की भाषा दक्खिनी के महत्व को समझा एवं अपने दरबार में उसे उचित स्थान दिया।

निर्माण, जनता का आपसी मेलजोल और भाई चारा-ये सब दूसरों केलिए एक सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

सुलतान युसुफ आदिलशाह ने फारसी और दक्खिनी की बडी सेवा की। यद्यपि उसकी मातृभाषा तुर्की थी और वह स्वयं तुर्की और फारसी का एक महान कवि था, किन्तु उसने जनसाधारण की भाषा दक्खिनी के महत्व को समझा एवं अपने दरबार में उसे उचित स्थान दिया। पिता के समान ही पुत्र इस्माइल भी था। मौलाना शहीद कम्मी दक्खिनी के महान साहित्यकार भी थे। उन्होंने एक बार सुलतान इब्राहीम से पूछा, तुम तो इसी देश में जन्मे और बड़े हुए, फिर भी आप 'हिन्दवी' में नहीं लिखते। उसने उत्तर दिया कि बचपन से मेरे गुरु ईरानी थे और मेरी दोनों दाइयाँ तुर्की थी। इसलिए मुझे बचपन से ही तुर्की और फारसी का वातावरण मिला और मुझे इन्हीं भाषाओं पर अधिकार है. 'हिन्दवी' मेरी तीसरी भाषा है। जिस भाषा में मीरां जी 'शम्सुलउश्शाक' और उनके शिष्य बुरहानुद्दीन जानम ने तसव्वुफ की कठिन समस्याओं को लिखकर समझाने का प्रयास किया था उसी भाषा यानी दक्खिनी ने इब्राहीम आदिल शाह (द्वितीय) के काल तक फारसी का स्थान ले लिया और दक्खिनी सरकारी भाषा के उच्च पद पर आसीन हुई।

अली आदिल शाह (प्रथम) अपने दरबार में न केवल हिन्दू और

जिस भाषा में मीरां की 'शम्सुलउश्शाक' और उनके शिष्य बुरहानुद्दीन जानम ने तसव्वुफ की कठिन समस्याओं को लिखकर समझाने का प्रयास किया था उसी भाषा यानी दक्खिनी ने इब्राहीम आदिलशाह (द्वितीय) के काल तक फारसी का स्थान ले लिया और दक्खिनी सरकारी भाषा के उच्च पद पर आसीन हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसलमान आलिमों की दार्शनिक ज्ञान—वर्द्धक बहस करवाता था बल्कि गोवा के कैथोलिक विद्वानों को भी बुलवाता था और उन्हें अपने सामने ही अपने विचार व्यक्त करने की स्वतंत्रता दे रखी थी। वह पुस्तक-प्रेमी था। वह हर समय पुस्तकों के बीच में रहता था और अध्ययन मनन में लीन रहता था। यदि कहीं यात्रा पर जाता था तो भी उसके साथ चार सौ संदूक पुस्तकें अवश्य रहती थी। उसके पुस्तकालय के प्रबन्धकों में एक सस्कृत भाषा का विद्वान वामन पंडित भी था एवं उसके राजकीय पुस्तकालय में सस्कृत भाषा की पुस्तकों की संख्या बहुत बड़ी थी। वह वास्तु कला का भी प्रेमी था। अतः उसने सुन्दर सुन्दर भवनों का निर्माण कराया। ईरानी, भारतीय और तुर्की कला का सुन्दर समन्वय इन भवनों में मिलता है। बीजापुर को सुन्दर बनाने के लिए उसने बाग लगवाये तथा लहरें बनवायीं। इसके शासन—काल में दक्खिनी के स्थान पर फारसी को राजभाषा घोषित किया किन्तु दक्खिनी की नींव इतनी दृढ हो चुकी थी कि वह दिन दूनी रात चौगुनी विकास के पथ पर चलती रही।

इब्राहीम आदिल शाह (द्वितीय) ने विद्या और कला में विशेष रुचि दिखायी एवं उसके शासन-काल में विद्या, कला, साहित्य और संगीत की बड़ी उन्नति हुई। सुलतान इब्राहीम शाह ने विद्या और कला की उन्नति के लिए जो कार्य किए दक्खिनी संस्कृति के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखे जायँगे। इतना नहीं, वह स्वयं विद्या और संगीत में निपुण था और इतिहासकारों ने उसकी विद्वत्ता और विद्या-व्यसन की प्रशंसा की है। इब्राहीम शाह की अपनी एक विशेषता यह भी थी कि वह जनता से बहुत मिलता था और बीजापुर की जनता उसे अबाबली अर्थात् 'महाफिज़ गुर्बा' के नाम से स्मरण करती थी। उसने अपने एक सिक्के 'हन नौरस' पर अपने नाम के साथ 'जगत गुरु' की उपाधि भी खुदवायी थी। सुलतान इब्राहीम आदिल शाह (द्वितीय) की रचना 'नौ रस' इस काल-विशेष की मिली जुली संस्कृति का प्रकाशवान दीपक है। यह हिन्दी गीतों की पुस्तक कही जा सकती है। इसके सम्बन्ध में जो बात विशेष उल्लेखनीय है वह यह है कि हिन्दुओं की विद्यादेवी सरस्वती के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्मरण से आरम्भ होती है। उसके दरबार में सभी भाषाओं के विद्वान नियुक्त थे। यही कारण है कि इसके शासन काल में दौलत, सनअती और मुकीमी ऐसे प्रसिद्ध कवि दक्खिनी में हुए हैं।

अली आदिल शाह (द्वितीय) साहित्यकारों, विद्वानों और कलाकारों को समय समय पर बुलवाता था तथा उन्हें सम्मान और पुरस्कार दिया करता था। सुलतान स्वयं दक्खिनी का अच्छा कवि था और उसका काव्य नाम 'शाही' था। काज़ी नूरुल्लाह ने तारीख ए-आदिल शाही' की रचना इसी काल में की। आलमगीरी इतिहासकार खाफी खान ने भी अली आदिल शाह की साहित्यिक रुचि की भूरि भूरि प्रशंसा की है। इसके शासन-काल में दक्खिनी के बहुत से कवि हुए हैं। मुल्ला नुसरती ने अली आदिल शाह की प्रशंसा इन शब्दों में की है—

खसूसन अली शाह आदिल अली,
तेरा नाँव कारीजो है अतिबली।
ओ मुंज मन कूँ पर्बदां बेहतर किया,
मुवा साँसों सब जग मुअत्तर किया।

बीजापुर के शासकों को सदैव इस बात का एहसास था कि उनकी सलतनत में विभिन्न धर्मावलम्बी व

बीजापुर के शासकों को सदैव इस बात का एहसास था कि उनको सलतनत में विभिन्न धर्मावलम्बी व विभिन्न नस्लों के लोग रहते हैं जिनमें हिन्दू, मुसलमान, मराठे, दक्खिनी, ईरानी, हब्शी आदि कौमें निवास करती हैं।

विभिन्न नस्लों के लोग रहते हैं जिनमें हिन्दू, मुसलमान, मराठे, दक्खिनी, ईरानी, हब्शी आदि कौमें निवास करती हैं।

बीजापुर सल्तनत में मराठों की वही हैसियत थी जो राजपूतों की मुगलों के शासन काल में थी। जिस तरह अकबर और उसकी संतान के लिए राजपूत अपना खून बहाने के लिए तैयार थे उसी तरह मराठे सरदार भी थे। बीजापुर की मिलीजुली संस्कृति का एक प्रमाण यह भी है कि जब शिवाजी के दादा मालाजी निःसन्तान थे तब वे अपने पीर हज़रत शाह शरीफ़ के पास गये और उनसे प्रार्थना की कि उन्हें सन्तान हो जाये। कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब शिवाजी के दादा मालो जी निःसन्तान थे तब वे अपने पीर हज़रत शाह शरीफ़ के पास गये और उनसे प्रार्थना की कि उन्हें सन्तान हो जाये। कुछ दिनों बाद एक सन्तान की कौन कहे—दो पुत्रों ने जन्म लिया।

दिनों बाद एक सन्तान की कौन कहे—दो पुत्रोंने जन्म लिया। उन्होंने एक का नाम शाह जी और दूसरे का नाम शरीफ जी रखा। इसी शाह जी के पुत्र शिवाजी थे। सुलतान आली आदिल शाह ने मसूर और बंगलौर का गवर्नर शाह जी को नियुक्त किया। उसके दरबार में किसी भी प्रकार का भेदभाव अथवा पक्षपात नहीं था। हिन्दुओं को भी वही सम्मान और आदर मिलता था जो मुसलमानों को।

कुतुब शाही राज्य की स्थापना सुलतान कुली कुतुब शाह ने सन् 1518 ई० में की और गोलकुंडा को राजधानी बनाया। कुली कुतुब शाह का शासन-काल सांस्कृतिक एकता की दृष्टि से आदिल शाही सलतनत से कहीं अधिक श्रेष्ठ था। कुली कुतुब शाह को साहित्य से अधिक प्रेम था। फरिश्ता के अनुसार कुली कुतुब शाह ने गोलकुंडा में 'ऐशनामा' नामक भवन का निर्माण किया था जिसमें कवि एकत्रित होते थे और कवि सम्मेलन किया जाता था। सुलतान उसमें स्वयं कविताएँ सुनाता था। कुली कुतुब शाह फारसी, तुर्की और दक्खिनी - तीनों में कविताएँ करता था। उसके काव्य नाम–फारसी में कुतुब शाह' तुर्की में 'तुर्कमान' और दक्खिनी में 'मआनो'—हैं। सुलतान साहित्य के साथ साथ संगीत का प्रेमी भी था।

कुली कुतुब शाह ने गोलकुंडा में 'ऐशनाम' नामक भवन का निर्माण किया था जिसमें कवि एकत्रित होते थे और कवि सम्मेलन किया जाता था। सुलतान उसमें स्वयं कविताएँ सुनाता था।

जमशेद कुली कुतुब शाह भी शेर व शायरी से प्रेम रखता था और उसने अपने दरबार में मुल्ला मुहम्मद शरीफ़ बकोई को राजकवि नियुक्त किया था। उसके शासन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काल में जगदेव राय का बहुत प्रभाव था क्योंकि वह गोलकुंडा का वफ़ादार सरदार था। जमशेद की मृत्यु के पश्चात् उसने (जगदेव राव) ही इब्राहीम को, जो बारह वर्ष की आयु में ही विजयनगर भाग गया था, बीस वर्ष की आयु में गद्दी पर बैठाया। उसे तेलुगु भाषा और संस्कृति का अच्छा ज्ञान था। उसने विजयनगर में ही एक हिन्दू स्त्री

> **'हे प्रभु! अगर तुझे किसी को अपने पास बुलाना ही था तो तुझे सैकडों अनुपकारी शासक मिल जाते, लेकिन तू ने क्या प्रकोप ढाया कि एक ऐसे व्यक्ति को संसार से उठा लिया, जिसका सानी (द्वितीय) तू स्वयं पैदा नहीं कर सकता।'**

भागीरथी से विवाह भी कर लिया था। उसे तेलुगु भाषा के साथ एक विशेष लगाव था। उसका दरबार तेलुगु भाषा के कवियों और साहित्यकारों से भरा रहता था। उसने तेलुगु कवि पूनागन्टी तलंगे नारया को सलतनत का तेलुगु राजकवि नियुक्त किया। वह प्रजा में इतना लोक प्रिय था कि उसे प्रजा मुल्की भराम (मुल्क इब्राहीम) नाम स्मरण करती थी। उसकी मृत्यु पर एक तेलुगु कवि शोकातुर होकर कह उठा—'हे प्रभु! अगर तुझे किसी को अपने पास बुलाना ही था तो तुझे सैकडों अनुपकारी शासक मिल जाते, लेकिन तू ने क्या प्रकोप ढाया कि एक ऐसे व्यक्ति को संसार से उठा लिया, जिसका सानी (द्वतीय) तू स्वयं पैदा नहीं कर सकता'! (दक्खिनी व लूचर, पृ॰ 45)

इब्राहिम शाह का पुत्र मुहम्मद कुतुब शाह दक्खिनी, तेलुगु और फारसी का अच्छा विद्वान था। उसने दक्खिनी साहित्य की बड़ी सेवा की। मुहिउद्दीन कादरी ज़ोर ने 'कुल्लियात कुली कुतुब शाह' शीर्षक से उसकी कविताओं का संकलन प्रकाशित किया है जो 1800 पृष्ठों का है। उसकी अधिकांश रचनाएँ मौलिक और नवीन हैं। इसमें हज़ारों हिन्दी शब्द ऐसे लगते हैं जैसे मानो अरबी-फारसी शब्दों के साथ हीरे-मोती के समान जड़ दिए गए हों एवं कहीं कहीं तेलुगु शब्द सौंदर्य में और अधिक सौंदर्य बढाते हैं। इससे दक्खिनी भाषा की सरसता और मधुरता को चार चाँद लगा दिये हैं। उसने फारसी में अपना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी कविताओं में मुसलमानों के त्योहारों–ईद, बकरीद, ईद-मिलाद, मुहर्रम आदि के साथ साथ हिन्दू त्योहारों–होली, दीवाली, दशहरा आदि-का उल्लेख मिलता है ।

काव्य नाम 'जिलुल्ला' और दक्खिनी में 'कुतुब शाह' रखा था । मुहम्मद कुली कुतुब शाह के काव्य संग्रह से स्पष्ट होता है कि वह हिन्दुओं के पर्वों, त्योहारों, खुशियों और कठिनाइयों में गहरी दिलचस्पी रखता था । उसकी कविताओं में मुसलमानों के त्योहारों–ईद, बक्रीद, ईद-मिलाद, मुहर्रम आदि के साथ साथ हिन्दू त्योहारों होली, दीवाली, दशहरा आदि-का उल्लेख मिलता है। इन कविताओं से यह भी स्पष्ट होता है कि सोलहवीं शताब्दी में गोलकुंडा-हैदराबाद की जनता में जो विभिन्न धर्मावलंबी विभिन्न नस्ल और विभिन्न भाषाओं को बोलने वाले थे कितना मेलमिलाप और प्रेम था । उसने भी अपने पिता की ही भाँति एक तेलुगु कवि को राजकवि नियुक्त किया । उसके शासन-काल में कुछ हिन्दू कवियों ने जो धार्मिक कविताएँ लिखी हैं उनसे स्पष्ट होता है कि सरकारी सेवारत व्यक्तियों को कितनी धार्मिक स्वतंत्रता थी । उन्हें अपने विचारों को व्यक्त करने की पूरी स्वतंत्रता थी (Haroon Khan Sherwani-Cultural Aspects of the reign of Muhammad Quli Kutb Shah, Medieval India, Quarterly, Aligarh 1958) इस काल के प्रसिद्ध कवि मुल्ला वजही ने कुतुब मुश्तरी नामक प्रेम-काव्य लिखा और 'सबरस' नामक ग्रंथ की रचना की । इसके शासन-काल के अन्य प्रमुख कवि मुल्ला गवासी, कुतुबी आदि हैं जिन्होंने दक्खिनी संस्कृति की समृद्धि में विशेष योग दिया है ।

मुहम्मद कुली कुतुब शाह के बाद अब्दुल्लाह कुली कुतुब शाह छोटी उम्र में सिंहासनारूढ हुआ । वह भी दक्खिनी का कवि था । उसके शासन काल में तेलुगु, फारसी और दक्खिनी की उन्नति हुई । इसके शासन-काल में दक्खिनी के बहुत बडे बडे कवि हुए जिनमें इब्न निशातो, गुनैदी, तबई और अमोन का विशेष रूप से उल्लेख किया जाता है । हिन्दू-मुसलमान में इतना सौहार्द था कि हिन्दुओं के रीति रिवाज मुसलमानों ने भी अपनाये और हिन्दुओं ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दू-मुसलमान में इतना सौहार्द था कि हिन्दुओं के रीति रिवाज मुसलमानों ने भी अपनाये और हिन्दुओं ने मुसलमानों के रीति रिवाजों को अपनाया ।

मुसलमानों के रीति-रिवाजों को अपनाया । इमाम हसन और इमाम हुसेन की शहादत, कर्बला की घटनाएँ, स्वर्ग के दृश्य आदि क्षेत्रीय प्रभाव के साथ तेलुगु गीतों में भी आ गए और आज भी रायलसीमा और आन्ध्र प्रदेश के दूसरे क्षेत्रों में किसान, कुम्हार, मज़दूर, जुलाहे आदि अपना काम करते हुए गाते हैं । (Rama Rao—Muharram Folk Songs in Telugu)

कुतुबशाही वंश का अन्तिम शासक अबुल हसन तानाशाह था । तानाशाह ने भी अपने पिता के पद-चिह्नों को अपनाया । उसने सिंहासनारूढ होने के कुछ दिनों पश्चात् ही वारंगल के एक ब्राह्मण मादना को प्रधान मंत्री नियुक्त किया और उसके बडे भाई 'अकना' को सल्तनत का सेनापति जैसे महत्वपूर्ण पद पर नियुक्त किया । मादना ने देश पर पूर्ण नियंत्रण रखने केलिए प्रमुख पदों पर अपने सगे-संबन्धियों को नियुक्त किया । मादना ने अपने भतीजे गोपना को खम्मम की तहसील भद्राचलम का शासक नियुक्त किया और गोपना को श्रीरामचन्द्र जी में विशेष विश्वास था । अत: उसने तहसील की आमदनी को सल्तनत के कोश में जमा करने के बजाय रामचन्द्र जी के नाम का एक मन्दिर बनवाने में खर्च कर दिया । अबुल हसन तानाशाह ने उसके विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की । उसके शासन-काल में दक्खिनी संस्कृति का चौमुखी विकास हुआ । उसके शासन-काल में दक्खिनी के अनेक कवि हुए हैं जिनमें फायज़, लतीफ़, नूरी, मिर्ज़ा, गुलाम अली, सेवक आदि का उल्लेख विशेष रूप से किया जा सकता है ।

1684 में बीजापुर ओर 1685 में गोलकुंडा पर मुगलों का अधिकार हो गया । इससे दक्खिनी संस्कृति में काफी परिवर्तन आया और दक्खिनी वेशभूषा, भाषा, काल, रहन-सहन, नक्काशी, कला, संगीत आदि पर उत्तरी भारत का विशेष प्रभाव पड़ा और अब औरंगाबाद दक्खिनी का केन्द्र बन गया । अब दक्खिनी और उत्तर के साहित्यकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलाकार, संगीतकार आदि पहले की अपेक्षा अधिक स्वतंत्रता से मिलने लगे। जब उत्तर और दक्षिण का आदान-प्रदान सरलतापूर्वक होने लगा तो दक्खिनी संस्कृति इससे अछूती न रह सकी। निज़ामुल मुल्क आसफ़ जाह (प्रथम) स्वयं दिल्ली की संस्कृति में रंगा हुआ था। यद्यपि दिल्ली की संस्कृति न तो इस्लामी संस्कृति थी और न ही मुगल बल्कि इस पर चार पुश्तों से

अब दक्खिन और उत्तर के साहित्यकार, कलाकार, संगीतकार आदि पहले की अपेक्षा अधिक स्वतंत्रता से मिलने लगे।

राजपूती संस्कृति का पूरा प्रभाव था। उसने मुगलों और दक्खिनी शासकों की नीति को अपनाते हुए मराठों से भी अच्छे सम्बन्ध स्थापित किये तथा मराठों को सेना के उच्च पदों पर आसीन किया। यही कारण है कि जब पेशवा बाजी राव ने उसके विरुद्ध युद्ध करने की घोषणा की तो उसने राव रम्भा निम्बालकर को उसका सामना करने के लिए भेजा और 1724 में

दक्खिनी के कवियों में सांस्कृतिक एकता के साथ राष्ट्र प्रेम की भावना बहुत ही दृढ थी।

मुबारिज खाँ के विरुद्ध युद्ध में सेना के कमांडरों में सम्भाजी, चन्दर गुप्त राव और राव रम्भा भी थे। आसफ शाह (प्रथम) ने देश की शासन-व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने हेतु और हिन्दू-मुस्लिम में सौहार्द बढाने के लिए अपने शासन में दोनों को समान अधिकार दिए थे। उसने लाला मंसा राय को अपना पेशकार नियुक्त किया। कहने का तात्पर्य यह है कि दक्खिन के शासकों ने धर्मनिरपेक्षता के उसूल को अपनाया। कोई भी व्यक्ति अपनी योग्यता के अनुसार उच्च से उच्च पद को प्राप्त कर सकता था।

दक्खिनी के कवियों में सांस्कृतिक एकता के साथ राष्ट्र-प्रेम की भावना बहुत ही दृढ थी। कविवर तबई के शब्दों में राष्ट्र प्रेम :—

जो कोई याद करता न अपना
वतन,
ओ मर्द है पैरन असल का कफन।

x x x

वतन सब कूँ दुनियाँ में प्यारा अहै,
सफर है सो जो वादे वाराँ अहै।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्खिनी साहित्य में भारतीय दर्शन और इस्लामी दर्शन का कई स्थानों पर समन्वय मिलता है। इस्लामी मान्यताओं का कई स्थानों पर प्रति-बिम्बवाद से साम्य भी प्रस्तुत किया गया है। कहने का तात्पर्य यह है कि दक्खिनी के कवि और शासक दोनों विशाल दृष्टिकोण के थे और उन्होंने राष्ट्रीय और सांस्कृतिक एकता पर विशेष बल दिया एवं सफल भी हुए हैं। आज बीसवीं शताब्दी में भी दक्खिनी संस्कृति एक अनुपम मिसाल प्रस्तुत कर रही है। आज हमारे विशाल देश भारत को मजबूत और सुदृढ धागे में बांधने का काम केवल समन्वित संस्कृति कर सकती है। अब हम भारतवासियों का परम कर्तव्य बन जाता है कि हम एक दूसरे की संस्कृति का आदर करें और जहाँ तक सम्भव हो उसे अपनायें भी। यह जननी जन्म भूमि की एक महान सेवा होगी।

राष्ट्रीय एकता के लिए हिन्दी का विकास ज़रूरी है। राष्ट्रीय एकता और हिन्दी का उन्नति दोनों एक दूसरे में जुड़े हैं। एकता हिन्दी के बिना नहीं रह सकती और हिन्दी एकता के बिना नहीं रह सकती।

—ज्ञानी जैलसिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पृष्ठ 11 का शेष)

वह युग सेवा का था और संयोग से या दुर्भाग्य से आज का युग जो है वह सत्ता का युग है।

जो बात मैं कहना चाहता हूँ वह यह है कि तब हमारा लक्ष्य सेवा था। कुछ पाना नहीं था देना था। आपने कभी झरने को देखा है? झरना क्या कहता है अपनी भाषा में? कि

बूँद-बूँद उमडा था एक दिन
धारा हूँ
आज न बूँद मेरी है न धारा
दूसरों का हूँ समूचा सारा।

जो कुछ भी मैं हूँ जैसा कुछ भी मैं हूँ वह दूसरों का हूँ अपना नहीं हूँ। उसीतरह से कवि ने फर कहा 'वही व्यक्ति जो सकता है जो सूरज की तरह से दूसरों के लिए ही जीता रहता है और तपता रहता है, दूसरों को प्रकाश देता रहता है।' वह युग सेवा का था और संयोग से या दुर्भाग्य से आज का युग जो है वह सत्ता का युग है।

सेवा और सत्ता दो शब्द हैं। दोनों की राशि एक है, स से सेवा, स से सत्ता। लेकिन दोनों के अर्थ में कितना अन्तर है! सेवा का अर्थ है to give its joy, to serve its joy और सत्ता का अर्थ है to get its joy, to grab its joy. सेवा देती है, सेवा करती है, सत्ता पाती है, यही नहीं, छीनती है, ग्राब करती है। इन दो शब्दों का अर्थ समझाने की बहुत ज़रूरत है।

आज हमने सम्मान किया। सम्मान क्या होता है? छ हज़ार रुपये। उसका क्या अर्थ है? लेकिन मेरेलिए उसका अर्थ यही था कि आपने उनको याद तो किया। आज के युग में जब हम उन सब सेवा करने वालों को भूलते जा रहे हैं। आपने कम से कम कुछ व्यक्तियों को याद तो किया। मैं होता तो यहीं कहता उनसे 'रहने दो वंदन अभिनंदन, आपने मुझको याद किया यही बहुत है'। तो यह याद करना जो है वह महत्वपूर्ण चीज़ है। गले में पाटंबर डालना या चेक देना कोई महत्वपूर्ण चीज नहीं है। महत्वपूर्ण चीज़ यही है कि हमने उनको याद किया और याद करने के बहाने हमने उन मूल्यों को याद किया जिन मूल्यों के लिए हमारे महान नेता जिये और अपने प्राण दिये।

मैं यह भी कहूँगा कि सेवा और सत्ता दो विरोधी भावनायें ज़रूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। लेकिन असली स्वतंत्रता देश की तभी हो सकती है जब सेवा और सत्ता इन दोनों के अंदर मेल हो जाये। कैसे मेल हो सकता है ?

मैं आपको एक बहुत पुराना उदाहरण दूँगा। एक कहानी सच्ची। जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर के बहुत से पुत्र थे। उनके बाद गद्दी पर बैठनेवाले उनके युवराज थे भरत और दूसरे पुत्रों में एक बाहुबलि थे। भरत ने सोचा कि मैं चक्रवर्ती राजा बनना चाहता हूँ और चक्रवर्ती राजा बनने के लिए सारे संसार को जीतना मेरा पहला कर्तव्य है। वह विजययात्रा पर निकले और सारे संसार को जीत कर लौटे। उनके आगे-आगे उनका चक्र चल रहा था। लेकिन जैसे ही वह नगर के दरवाज़े पर पहुँचे, चक्र रुक गया। चक्र ने नगर में प्रवेश नहीं किया। अब भरत परेशान हो गये कि मैं सारी दुनिया को जीत कर आ रहा हूँ और यह चक्र यहाँ रुक गया है। क्या अर्थ है इसका? तो राजगुरु ने आकर बताया कि राजन, अभी आपने सब पर विजय कहाँ पायी है ? आपके अपने सगे भाई, निन्यानबे भाई, अभी तक आपने नहीं जीते हैं और आपका जो सौतेला भाई बाहुबली है उसको भी आपने नहीं जीता है। भरत बहुत परेशान हो गये। क्या मुझे अपने भाइयों से भी लडना पडेगा? तो सत्ता का रूप तो है ही यह। तो राजगुरु ने कहा कि चक्रवर्ती बनना चाहते हो तो लडना ही पडेगा। उनको पराजित करना ही पडेगा। भरत ने संदेशा भेजा अपने भाइयों के पास। उनके निन्यानबे भाइयों ने संदेशा सुना और बडे दुःखी हुए। कहने लगे—"यह कैसी चीज है सत्ता? यह अपने आदमियों को भी लडाती है? इस सत्ता को हमें नहीं चाहिए" और गद्दी छोड कर के वे साधू बन गये।

महत्वपूर्ण चीज़ यही है कि हमने उनको याद किया और याद करने के बहाने हमने उन मूल्यों को याद किया जिन मूल्यों के लिए हमारे महान नेता जिये और अपने प्राण दिये

लेकिन बाहुबली ने कहा—तुम चक्रवर्ती बनना चाहते हो तो मैं बचा हूँ अभी। मुझे भी पराजित करो। तब चक्रवर्ती बन सकोगे। अब भरत के सामने समस्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि भाई से युद्ध करना पडेगा। लेकिन अब चक्रवर्ती बनना था। तो सेना लेकर उसने भाई पर चढाई की और जब वह वहाँ पहुँचे तो जन सभा बैठा। उस समय भी जन सभायें होती थीं। यह डेमोक्रसी आज की चीज़ नहीं है। तब भी जनतंत्र था। राजा होते तब भी जनतंत्र होता। सभा बैठी। उन्होंने कहा—कितना बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णय! सभा ने कहा कि आपको लडना है; यह निर्णय करना है कि आप में कौन शक्तिशाली है। तो फौज को क्यों लडाते हो? सेना को क्यों लडाते हो? दोनों भाई आपस में लडो। तीन युद्ध होते हैं हमारे यहाँ, वह युद्ध करो। चक्षु युद्ध, मल्ल युद्ध और जल युद्ध। तीनों में जो जीत जायेगा वह चक्रवर्ती बनेगा। युद्ध हुआ। और इतिहास बताता है, पुराण बताती है, कि तीनों में विजय बाहुबली की हुई।

अब भरत चक्रवर्ती नहीं बन सकते। लेकिन सत्ता इतनी भयानक चीज़ होती है कि भरत ने तुरन्त अपना चक्र उठाया और बाहुबली पर चला दिया, बाहुबली का सिर काटने केलिए। लेकिन चक्र का यह नियम होता है वह

यह सत्ता इतनी भयानक चीज़ है? क्या अपने भाई को भी मारने केलिए तैयार हो गया सत्ता केलिए यह? और अन्याय से, न्याय से नहीं।

अपने जनों पर, अपने रिस्तेदारों पर, अपने रक्त के जो रिस्तेदार हैं उन पर, नहीं चल सकता। जब चक्र को चलता हुआ देखा बाहुबली ने तो उसके मन में ज्ञान पैदा हुआ। कहने लगे यह सत्ता इतनी भयानक चीज है? क्या अपने भाई को भी मारने केलिए तैयार हो गया सत्ता केलिए यह? और अन्याय से, न्याय से नहीं। क्योंकि चक्र तो चल ही नहीं सकता। उसी वक्त उसने सत्ता छोड दी और कहा कि तुम चक्रवर्ती बनना चाहते हो, बनो। मैं वन को जाता हूँ, चलता हूँ। भरत चक्रवर्ती बन गये। बाहुबली तप करने लगे। लेकिन दोनों के मन शांत नहीं थे। कथा आती है कि दोनों बडे अशांत थे। भरत अशांत थे कि मैं चक्रवर्ती बना, लेकिन किसी की कृपा से बना। अपने बाहुबल से मैं ने राज्य नहीं जीता। किसी ने कृपा की और कृपा के फलस्वरूप मैं राजा बन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया, चक्रवर्ती बन गया। यह तो अच्छी बात नहीं है। और उधर बाहुबली तपस्या करते हुए सोच रहे थे कि मैं जहाँ खडा हूँ वह पृथ्वी तो भरत की है। मैं भरत के राज्य से बाहर कहाँ जाऊँ?

दोनों के मन में यह संशय था। दोनों को मुक्ति नहीं मिल रही थी। तो बाहुबली की बहन अपने पिता के पास गयी, प्रथम तीर्थंकर के पास, और यह समस्या उनके सामने रखी। तो उन्होंने कहा कि दोनों के मन में शूल चुभा हुआ है। वह जब तक नहीं निकलता तबतक दोनों मुक्त नहीं हो सकते। यह स्थिति आज भी है। तो इसका क्या उपाय था? भरत सोचते रहे और फिर उन्होंने अपना सारा राजपाट और सारा चक्रवर्तित्व ले जाकर के बाहुबली के चरणों पर रख दिया और कहा कि यह तुम्हारा है मेरा नहीं है। और बाहुबली के मन में जो शूल था भाई के प्रति वह निकल गया। बाहुवली मुक्त हो गये और भरत चक्रवर्ती हो गये। यहाँ क्या हुआ? शक्ति और प्रज्ञा सत्ता और सेवा, दोनों एक हो गये, मिल गये तो चक्रवर्तित्व धन्य हो गया और भरत पहले चक्रवर्ती कहलाये। आज सत्ता और प्रजा बहुत अलग हैं, बहुत दूर हैं। सत्ता सिर्फ ग्रहण करने में लगी है और सेवा की भावना नष्ट हो गई है।

आज सत्ता और प्रजा बहुत अलग हैं, बहुत दूर हैं। सत्ता सिर्फ ग्रहण करने में लगी है और सेवा की भावना नष्ट हो गयी है।

आपके ही प्रान्त से संबंधित एक कहानी और मैं आपको सुना देता हूँ। ओणम का त्योहार आप मनाते हैं न? बलि आते हैं अपनी प्रजा को देखने के लिए। लेकिन उस कहानी का सही अर्थ क्या है? हमारी सारी पौराणिक कहानियाँ प्रतीक हैं, सिंबल हैं। उनके सीधे अर्थ नहीं हैं। वह किसी दूसरे अर्थ को बताती हैं। एक बहुत सुन्दर अर्थ इस कथा का लगाया है एक विद्वान ने। उसने कहा कि बली प्रतीक है मानव मूल्यों का। बली जो राजा है वह धर्मात्मा है। ईश्वर का भक्त है। मानव मूल्यों की कदर करता है। लेकिन देवता जो बडे माने जाते हैं उनके मन में ईर्ष्या पैदा होती है। ये मानव मूल्यों की कदर करनेवाला आदमी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी सारी पौराणिक कहानियाँ प्रतीक हैं, सिंबल हैं। उनके सीधे अर्थ नहीं हैं। वह किसी दूसरे अर्थ को बताती हैं।

तो हम से ऊपर उठ जायेगा। तो वे छल करते हैं और भगवान भी छल में उनका साथ देते हैं। और छल करके वह वामन का रूप धर के आते हैं बली मानव मूल्यों के उपासक थे। कहा-क्या चाहिए तुम को वही दूँगा। तो वामन कहते हैं मुझको दान चाहिए तुम से। मैं केवल तीन पग धरती माँगता हूँ। "तीन पग धरती! यह क्या चीज होती है! ले लीजिए आप जैसे चाहें।" तो वामन छल करने आये थे न? वह सत्ता के प्रतीक हैं। विज्ञान के प्रतीक हैं। विज्ञान भी एक बहुत बडी सत्ता है। सत्ता धन की होती है, सत्ता रूप की होती है, सत्ता शरीर की होती है और सत्ता विज्ञान की होती है। वह विज्ञान के बल पर अपने दो पैरों में सारी पृथ्वी को नाप लेते हैं और गर्व से कहते हैं—अब बता तीसरा पैर कहाँ रखूं? तो यहाँ ही उत्तर है उसका। मानव मूल्यों का उपासक बली परेशान नहीं होता। कहता है—मैं ने वचन दिया था तीन पग का, अभी तो मैं मौजूद हूँ। आपने पृथ्वी नाप ली सारी, मुझको तो नहीं नापा आपने। मेरे सिर पर अपना पैर रखो। और यहीं पर वामन अपनी पराजय स्वीकार कर लेते हैं और बली को अपने सबसे सुन्दर लोक सुतल का राजा बना देते हैं। सुतल क्या है? आज का जो अमरिका है। उसका उसको राजा बना देते हैं और राजा नहीं

सत्ता धन की होती है, सत्ता रूप की होती है, सत्ता शरीर की होती है और सत्ता विज्ञान की होती है।

बना देते बल्कि यह कहते हैं कि मैं तेरे द्वारपाल बनूँगा, तेरी रक्षा करता रहूँगा। इसका अर्थ यह है कि जब विज्ञान और सत्ता मानव मूल्यों के प्रहरी बन जायेंगे मानव मूल्यों के रक्षक बन जायेंगे तब जाकर सचमुच देश को स्वतंत्रता मिलेगी। तो आज जो आपने काम किया है यह मैं विश्वास करता हूँ कि यही नहीं रुकेगा बल्कि हम जो सत्ताधारी लोग हैं जो सत्ता में बैठे हुए हैं उन सब का, जो सेवाभावी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब विज्ञान और सत्ता मानव मूल्यों के प्रहरी बन जायेंगे, मूल्यों के रक्षक बन जायेंगे तब मानव जरूर सचमुच देश को स्वतंत्रता मिलेगी ।

लोग थे, जो प्रज्ञावान लोग थे, जो बुद्धिमान लोग थे उनका इसी तरह समादर करेंगे अपनी सत्ता में साथ रखेंगे तो उसमें देश का कल्याण होगा। नहीं तो देश का कल्याण नहीं हो पायेगा । यही महात्मा गांधी का सारा उद्देश्य था और यही हमारे सारे मानव मूल्यों का उद्देश्य है । यही आज की सभा का मैं मूल्य समझता हूँ । वर्ना जैसा मैं ने शुरू में कहा था प्रतीक चिह्न रूप में एक चैक दे देना कोई बडी चीज नहीं है। उनको याद करना उनका सम्मान करना और उनके पीछे जो भावना है उसका सम्मान करना, उनके विचार का सम्मान करना, यही महत्वपूर्ण चीज है ।

महत्वपूर्ण व्यक्ति नहीं होता । व्यक्ति का बाहरी रूप नहीं होता । बल्कि व्यक्ति के विचार, व्यक्ति की भावना होती है ।

अभी टी वी. पर मैं ने एक फि देखी छोटी सी । लेनिन पर बहु सुन्दर फिल्म आयी थी । पहला वाक्य मुझको उसमें चकित क दिया । प्रोड्यूसर कहता है कि इस लेनिन का जो अभिनय करनेवाल व्यक्ति है उसकी शकल लेनिन से नहीं मिलती । लेकिन उसके विचा मिलते हैं । उस प्रोड्यूसर ने य बात साधारण सी कही थी । उसक

सत्ता और सेवा को अगर मिल सकेंगे, एक कर सकेंगे, उस दि सचमुच देश मुक्त हो जायेगा।

अर्थ महत्वपूर्ण है । महत्वपूर्ण व्यक्ति नहीं होता । व्यक्ति का बाहरी रूप नहीं होता बल्कि व्यक्ति के विचार व्यक्ति की भावना होती है । तो यह जो भावना है. उस भावना का हम आदर करेंगे तो सचमुच हम आदर करेंगे । अन्यथा ऐसे समारोह होते ही रहेंगे । सत्ता और सेवा को अगर मिला सकेंगे, एक कर सकेंगे, उस दिन सचमुच देश मुक्त हो जायेगा । इन शब्दों के साथ मैं आप सबका अभिनन्दन करता हूँ और धन्यवाद देता हूँ ।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरभाष : 61378 तार : "जय हिन्दी"

केरल ज्योति

पुष्प 23
दल 5

एक प्रति—1 रु० 50 पै०
वार्षिक—15 रु०

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका
अगस्त 1988

संपादकीय

हिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दोतर भाषाओं का अध्यापन

दक्षिणवालों के लिए यह बडी प्रसन्नता की बात है कि केरल हिन्दी प्रचार सभा के तिरुवनन्तपुरम परिसर में 30-7-1988 को आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह का उद्घाटन करते हुए केन्द्र मानव संसाधन विकास मंत्रालय के राज्य मंत्री श्री. ललितेश्वर प्रसाद शाही ने बताया कि हिन्दी भाषी क्षेत्रों के स्कूलों में त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत दक्षिण की कोई भाषा भी सिखाने के संबंध में विचार किया जा रहा है। [भाषण का पूर्ण रूप अगले अंक में पढ़ें।] यदि इस दिशा में शीघ्र ही कुछ ठोस कदम उठाये जायें तो निश्चय ही हिन्दी और दक्षिण की भाषाओं में जो थोडा बहुत मनमुटाव रह गया है वह दूर हो जायेगा. द्रविड कुल की भाषाओं और आर्यकुल की भाषाओं के बीच जो लकीर खिंच गयी है वह मिटने लगेगी और उत्तर दक्षिण की संस्कृतियों के समन्वय से एक नयी भारतीय संस्कृति उभर आयेगी, जिसमें दोनों संस्कृतियों के सर्वोत्तम अंश निहित होंगे। देश की भावात्मक एकता को सुदृढ करने में ऐसे ही ठोस कार्य किये जाने हैं।

यदि इस संकल्प को क्रियान्वित करना है तो इस के लिए कई प्रकार की तैयारियाँ करनी होंगी। दक्षिण की भाषायें हिन्दी माध्यम से स्कूलों में सिखाने के लिए उचित पाठचक्रम और पाठचपुस्तकें तैयार करनी होंगी। आवश्यक मात्रा में ऐसे हिन्दीतर भाषाभाषी अध्यापकों को प्रशिक्षित करना होगा जो द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी माध्यम से अपनी मातृभाषायें स्कूली स्तर पर सिखा सकें। उचित मात्रा में ऐसे इलक्ट्रोणिकी उपकरणों का भी निर्माण करना होगा जो हर भाषा के अध्यापन के लिए सहायक हों।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में

नयी कविता पर नयी दृष्टि 3
डा० देवराज

एक झलक 11
प्रो० टी. के. भास्कर वर्मा

देश की भाषाओं को शासन और शिक्षा में प्राथमिकता दें 13

स्वाति तिरुनाल के हिन्दी गीतों में दक्खिनी 17
डा० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर

दक्खिनी हिन्दी का व्याकरण 22
डा० वी. पी. मुहम्मद कुंज मेत्तर

सैफुल मुलूक व बदीउल जमाल : एक विश्लेषण 33
डा० एस. तंकमणी अम्मा

पाठ्य पुस्तकों एवं अन्य अध्याप सामग्रियों का निर्माण राष्ट्रीय शिक्षा अनु संधान प्रशिक्षण परिषद केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा और अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ, नई दिल्ली के सम्मिलि प्रयास से किया जा सकता है। अध्याप प्रशिक्षण का कार्य अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ की सदस्य संस्थाओं को सौंप जा सकता है। इसमें भी पाठ्यक्रम निर्मा प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण आदि में राष्ट्री शिक्षा अनुसंधान परिषद और केन्द्रीय हिन्दी संस्थान का तकनीकी सहयोग इन संस्था को उपलब्ध कराया जाये।

उक्त तैयारियों के साथ हिन्दी प्रान्तों विद्यार्थियों में हिन्दीतर भाषायें सीखने की प्रेरणा उत्पन्न करने केलिए हिन्दीतर भाषा भाषी हिन्दी विद्वानों की भाषणमाला आयोजित की जाये। इन विद्वानों के भाषणों से हिन्दी भाषी छात्रों में भारत की विराट गरिमा का और विविधताओं में एकता का बोध उत्प होगा। साथ ही हिन्दीतर भाषा-भाषी विद्वानों को हिन्दी भाषी प्रान्तों से रागात्मक सबंध जोडने का अवसर मिलेगा।

आशा है उक्त सुझावों पर भारत सरकार तथा हिन्दी भाषी क्षेत्र के राज्य सरकारें अभी से उचित कार्रवाई करेंगी और श्रद्धेय केन्द्र मंत्री श्री. ललितेश्वरप्रसाद शाही द्वारा अभिव्यक्त आग्रह जो कि सारे भारत का आग्रह है— शीघ्र ही सफल हो सकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी कविता पर नयी दृष्टि

डा० देवराज
हिन्दी विभाग
मणिपुर विश्वविद्यालय

[जूलाई 1988 में केरल हिन्दी प्रचार सभा के हिन्दी स्नातकोत्तर केन्द्र में दिया गया भाषण]

नयी कविता के बारे में जब भी कुछ समीक्षा की जाती है तब एक प्रचलित धारणा हमारे सामने समीक्षक रख देते हैं और उसकी परिभाषा करने के क्रम में सबसे पहले यह कहा जाता है कि ऐसा नहीं है कि नयी कविता नामवाली कविता मे पहले जो कविता हम

विषय वस्तु और अभिव्यक्ति के क्षेत्र में कुछ ऐसी नयी बातें हैं जिनके प्रभाव से हमने एक विशेष रूपवाली कविता को नया नाम दिया जिसे हम नयी कविता कहते हैं।

पढते थे वह पुरानी कविता थी। बल्कि कुछ और कारण हैं। अर्थात् विषय वस्तु और अभिव्यक्ति के क्षेत्र में कुछ ऐसी नयी बातें हैं जिनके प्रभाव से हमने एक विशेष रूपवाली कविता को नया नाम दिया जिसे हम नयी कविता कहते हैं।

नयी कविता दो अलग-अलग विकसित होनेवाली प्रगतिशील चेतनाओं का परिणाम है। एक प्रगतिशील चेतना हमारी शुद्ध भारतीय प्रगतिशील चेतना है और एक प्रगतिशील चेतना वह है जिसे हमने पश्चिम या भारत से दूसरे जो अलग देश हैं उनके साहित्य में विकसित होनवाली चेतना के प्रभाव के रूप में ग्रहण किया है। मैं पहले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुलसीदास

भारतीय चेतना की बात करना चाहूँगा, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि किस प्रकार से नयी कविता आकाश से नहीं टपक पड़ी है बल्कि हमने अपने विचारों के विकास के क्रम में उसे धीरे-धीरे प्राप्त किया है और वह बड़ी स्वाभाविक परिणति है।

मैं बात शुरू करना चाहूँगा भक्ति-काल से और संक्षेप में आगे बढ़ूँगा। भक्तिकाल में हम दो कवि पढते हैं। विशेष रूप से एक तुलसी और दूसरे कबीर। हम जानते हैं कि तुलसीदास ने राम कथा के माध्यम से हमारे सामने धर्म और समाज के संबंध में कुछ आदर्श रखे। लेकिन इससे अलग हट कर थोडा आप सोचें कि तुलसी ने धर्म और समाज तथा संस्कृति के संबंध में आदर्श रखते समय हमें एक प्रगतिशील चेतना दी थी। उस प्रगतिशील चेतना का सीधा तात्पर्य यह है कि हम समय और उस समय के साथ लगनेवाली जो परिस्थितियाँ होती हैं उन दोनों को जोडकर उनके प्रभाव से प्रभावित होकर जीवन के सच की ओर बढ़ने की कोशिश करते हैं।

हम तुलसी को समन्वयवादी कवि के रूप में जानते हैं। लेकिन तुलसी के साहित्य में एक संघर्ष का रूप है। हम उसे आदर्श और अनादर्श का संघर्ष कह सकते हैं। हम उसे धर्म के अंदर जो विभिन्न धारायें हैं उनका संघर्ष कह सकते हैं। हम एक दूसरा संघर्ष तुलसी में देख सकते हैं जो जीवन के भौतिक मूल्यों का संघर्ष है और इसी के साथ-साथ जीवन के आध्यात्मिक मूल्यों का संदर्भ है। मैं ऐसा सोचता हूँ कि तुलसी जीवन का एक ऐसा रास्ता खोजना चाहते थे जो सच के निकट हो। इसीलिए वे लगातार बढते चले गये। उन्होंने द्वन्द्व के बीच में एक रास्ता खोजने की कोशिश की और वह चाहते थे कि हम एक ऐसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम और रावण के रास्ते के बीच जो संघर्ष था वह संघर्ष हमें जीवन के सच की ओर ले जानेवाला संघर्ष था और तुलसी ने उस संघर्ष को अपने साहित्य में रखा ।

रास्ता खोजें जो हमें इस पृथ्वी पर रहना सिखाये । आप जानते हैं कि जब भी तुलसी के राम भगवान होने की सीमा की ओर बढते हैं तब तब तुलसी उनमें सायास, माननीय और साधारण मानवीय गुणों की प्रतिष्ठा कर देते हैं । फिर राम या लक्ष्मण या सीता मानवोत्तर चरित्र की ओर बढ़ते हैं, थोडा-सा ऊपर बढने की कोशिश करते हैं. तुलसी उन्हें फिर नीचे ले आते हैं । इसलिए तुलसी के रावण को मारने में राम को बडा लबा प्रयास करना पडता है । एक ओर राम और रावण के बीच की लडाई है दूसरी ओर जीवन मूल्यों के बीच की लडाई है । हम आज शत-प्रतिशत यह नहीं कह सकते कि राम का रास्ता सही था या रावण का रास्ता सही था । लेकिन इतना हम जरूर कह सकते हैं कि राम और रावण के रास्ते के बीच जो संघर्ष था वह संघर्ष हमें जीवन के सच की ओर ले जाने-वाला संघर्ष था और तुलसी ने उस संघर्ष को अपने साहित्य में रखा । हमें इस दृष्टि से भी तुलसी के साहित्य का मूल्यांकन करना चाहिए । लेकिन एक खास बात तुलसी में हुई कि अंत तक आते-आते वे किसी निश्चित रास्ते की खोज नहीं कर सके । इसीलिए बहुत सारे देवताओं की प्रतिष्ठापना उनके साहित्य में हुई, बहुत प्रकार के समन्वय उनके साहित्य में मिले । लेकिन वे समन्वय बहुत आगे नहीं बढ सके और तुलसी को विराम मिल गया । इसकी प्रतिक्रिया हम रीतिकाल में आगे जाकर के देखेंगे ।

तुलसी के समान्तर एक कवि हुए जिन्हें हम कबीर के नाम से जानते हैं । हम जानते हैं कि कबीर ने प्रत्येक प्रकार के पाखंड पर आक्रमण किया । कबीर ने मनुष्य को मनुष्य के रूप में प्रतिष्ठित किया । इन बातों के साथ आप एक दूसरी बात की ओर ध्यान दें कि तुलसी में मनुष्य को सच के निकट पहुँचाने केलिए जो संघर्ष कुछ आदर्श प्रधान या स्वच्छन्द कथाओं के माध्यम से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चला कबीर के यहाँ वह संघर्ष अधिक मोटे रूप में उभरा। कबीर के यहाँ उस संघर्ष का रूप हम अपने जीवन में साक्षात् देख सकते हैं। मनुष्य और मनुष्य के बीच में प्रेम का अभाव जो कबीर के ज़माने में था उसकी प्रतिक्रिया के रूप में उन्होंने प्रेम की प्रतिष्ठा की और सबसे बडी बात कबीर ने हमें सिखाया कि हम मनुष्य को केवल मनुष्य की दृष्टि से देखें। यह थी

कबीरदास

भक्तिकाल की प्रगतिशील चेतना और यह चेतना आगे बढी।

एक दूसरा काल हमारे सामने आता है जिसे हम रीतिकाल के नाम से जानते हैं। रीतिकाल में तुलसी के साहित्य की प्रतिक्रिया या भक्तिकालीन साहित्य की प्रतिक्रिया होती है और वहाँ हम स्वच्छन्ता-वादी साहित्य के दर्शन करते हैं। इसके प्रतिनिधि के रूप में हम घनानन्द को लेंगे। उनके प्रेम का स्वरूप उन्मुक्त प्रेम का स्वरूप है और बडा सीधा सरल मार्ग है। घनानन्द एक छन्द में कह देते हैं इन की पंक्तियों में आप देखेंगे कि वह जो प्रेम का सहज मार्ग है वह हमारे एकान्तिक प्रेम का सहज मार्ग मात्र नहीं है। वह सहज मार्ग हमारे जीवन का सहज मार्ग है। अर्थात् हम जीवन में सहजता को प्राप्त करें। जीवन में अगर हम सहजता को प्राप्त करेंगे और प्रत्येक प्रकार की कटुता से बचेंगे तब हम जीवन के निकट पहुँचेंगे, जिसे हम सच्चे अर्थ में जीवन कहते हैं उस जीवन को प्राप्त करने की कोशिश करेंगे। यह धारा हमें रीतिकाल से मिलती है। शेष साहित्य जो भौतिकता में रम जाता है, जिसे हम शृंगारिक और आलंकारिक कह कर के छोड देते हैं उसकी परंपरा आगे नहीं चलती। लेकिन जिस परंपरा को घनानन्द स्थापित करते हैं वह परंपरा बहुत दिनों बाद तक चलता है और आगे जाकर के पूरे साहित्य को प्रभावित कर देती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कबीर और तुलसी में एक विशेष प्रकार की प्रगतिशीलता भारतीय साहित्य में पैदा हुई। इस प्रगतिशीलता के साथ प्रेम जैसे सहज तत्व को घनानन्द नाम के कवि ने मिलाया और यह जो सम्मेलित धारा थी, इस धारा ने भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को भी प्रभावित किया। एक ओर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र में वह तमाम प्रगतिशील चेतना है जिसे तुलसी और कबीर ने

लेकिन यह मुक्ति केवल राजनैतिक मुक्ति के रूप में अगर हमें मिलेगी तो हमारी स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं रह जायेगा। इसलिए यह मुक्ति सच्चे अर्थों में मानव मुक्ति होनी चाहिए। मनुष्य का रूढियों से मुक्ति होनी चाहिए।

पैदा किया था और एक और प्रेम है जिसे घनानन्द ने पैदा किया। भारतेन्दु हरिचन्द्र ने खडीबोली में जो कुछ गद्य लिखा या थोडी बहुत जो कवितायें लिखीं उनमें आप समूची राष्ट्रीयता या मनुष्य और आधुनिक जीवन के संयोग से पैदा होनेवाले तत्व देख सकते हैं और उनकी जो चन्द्रावली नाटिका है या राधा और कृष्ण के प्रति जो काव्य भारतेन्दु हरिचन्द्र ने लिखा है उसमें प्रेम का वही सहज स्वरूप है जो रीतिकाल में हमें घनानन्द में प्राप्त होता है। लेकिन यहाँ एक विशेष परिवर्तन हो रहा है और वह परिवर्तन यह है कि हमारे देश में राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने के प्रति आग्रह बढने लगता है और हम यह समझने लगते हैं कि अगर हमें उन्नति करनी है तो अपने देश को अंग्रेजों से मुक्त करना होगा। लेकिन यह मुक्ति केवल राजनैतिक मुक्ति के रूप में अगर हमें मिलेगी तो हमारी स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं रह जायेगा। इसलिए यह मुक्ति सच्चे अर्थों में मानव मुक्ति होनी चाहिए। मनुष्य की, रूढियों से मुक्ति होनी चाहिए। यह प्रयास भारतेन्दु और उनके समकालीन लोगों ने किया। इस प्रकार से परंपरा जो दो सौ, तीन सौ वर्ष पहले से चली आ रही थी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के काल में आ करके एक नया रूप ग्रहण कर लेती है और हम कविता में विद्रोह के दर्शन करने लगते हैं। मूल रूप से यह विद्रोह राजनैतिक विद्रोह ही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन इसी विरोध से आगे चल करके मार्ग बनता है।

साहित्य की यह धारा फिर जिसे हम द्विवेदी युग कहते हैं उसमें प्रविष्ट

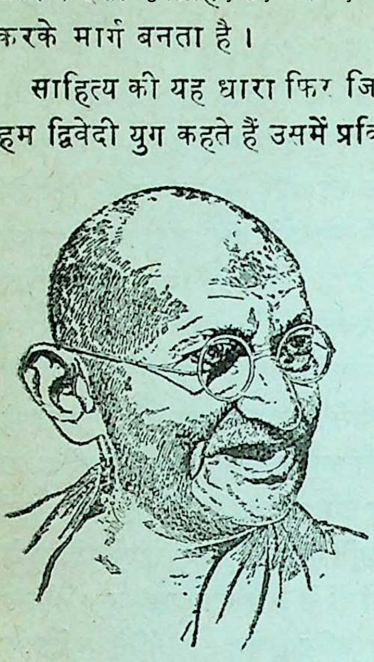

महात्मा गान्धी

होती है। इस द्विवेदी युग को यदि हम मैथिलीशरण गुप्त युग भी कहें तो बहुत अच्छा है या हम ऐसा कह सकते हैं। मैथिलीशरण गुप्त जिस समय काव्य क्षेत्र में आते हैं उस समय एक ओर भारतेन्दु की दी हुई प्रगतिशील परंपरायें हमारे साहित्य में हैं और दूसरी ओर गाँधीजी का प्रभाव साहित्य में है। महात्मा गाँधी ने एक विशेष प्रकार के आदर्श को हमारे सामने रखा। यह हम सामान्य रूप से जानते हैं। महात्मा गाँधी को भी थोडा-सा अलग से विश्लेषित करने

महात्मा गाँधी ने हमें जो दिया वह था जीवन को प्रयोग के स्तर पर देखना। महात्मा गाँधी का अपना जीवन बहुत बडे प्रयोग का उदाहरण था।

की कोशिश करें। महात्मा गाँधी ने जिस आदर्श को हमारे सामने रखा, वह एक अलग चीज है। लेकिन महात्मा गाँधी ने एक और चीज हमें दी। महात्मा गाँधी ने हमें जो दिया वह था जीवन को प्रयोग के स्तर पर देखना। महात्मा गाँधी का अपना जीवन बहुत बडे प्रयोग का उदाहरण था। उन्होंने बहुत सारे प्रयोग अपने जीवन में किये और जो विचारधारा उन्होंने हमें दी वह विचारधारा यह थी कि सच का अंतिम रूप किसी ने प्राप्त कर लिया है, यह दावा नहीं किया जा सकता। सच के अंतिम रूप को प्राप्त करने के लिए हमें लगातार आगे बढना है। "चरैवती" का जो सूत्र है उस पर हमें लगातार आगे चलना है और सच के जिस रूप को हम अपने जीवन के अंतिम काल में प्राप्त करेंगे इस को भी हम अन्तिम नहीं कह सकते। लेकिन कुछ शर्तें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

उन्होंने रखीं । उन शर्तों में मुख्य शर्त यह थी कि हम अपने उन सारे मूल्यों को बदलें जिन मूल्यों में बंद रहकर हम तालाब के पानी की तरह से हो गये हैं । अर्थात् जिन मूल्यों ने

जिन मूल्यों ने हमारे जीवन को बांध दिया है या बंधनों में जकड दिया है उन मूल्यों को हम बदलें, साथ-साथ हम सामाजिक परिष्कार को अपनायें ।

हमारे जीवन को बांध दिया है या बंधनों में जकड दिया है उन मूल्यों को हम बदलें, साथ-साथ हम सामाजिक परिष्कार को अपनायें । तो महात्मा गाँधी ने सामाजिक परिष्कार की बात कही । महात्मा गांधी ने जीवन को प्रयोग के आधार पर व्याख्यायित और विश्लेषित करने की बात कही और उन दोनों माध्यमों से जब हम सफल हो जायें तब उन्होंने यह माना कि हमें जब राजनैतिक स्वतंत्रता मिलेगी, हम उसकी रक्षा कर सकेंगे । महात्मा गाँधी के जितने सुधार आन्दोलन हैं हमें उन्हें उसी दृष्टि से देखना चाहिए ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये सारी बातें हमें द्विवेदी युगीन गद्य में, द्विवेदी युगीन नाटकों में और द्विवेदी युगीन कविताओं में देखने को मिलेंगी । लेकिन उसके साथ-साथ उस प्रगतिशील साहित्य की उपेक्षा किसी ने नहीं की जो प्रगतिशील धारा तुलसी से शुरू हुई थी या कबीर से शुरू हुई थी । इसलिए राम के चरित्र पर जो प्रश्न चिह्न थे वे द्विवेदी युग में आपको मिलेंगे । कैकेयी के चरित्र को अच्छी तरह से महिमा मंडित कर के प्रस्तुत करने की भावना भी आपको द्विवेदी युग में मिलेगी । ये ऐसी प्रगतिशील चेतना है जो हमारे व्यापक अध्ययन को दर्शाती है । केवल इतना ही नहीं बल्कि यह दिखाती है कि हम अपनी मान्यताओं में परिवर्तन करने को तैयार हैं । जो मान्यतायें किसी कारण से हम ने पहले स्वीकार कर ली थी और जिन मान्यताओं पर धर्म की चादर हमने उढा दी थी और जिनके विषय में हमने बहस करना या विचार विमर्श करना ही बंद कर दिया था उन मान्यताओं के विरोध में साहित्य लिखा गया जिसे हम द्विवेदी युगीन साहित्य कहते हैं या द्विवेदी युगीन कविता कहते हैं । मैथिली शरण गुप्त उसके प्रतिनिधि हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैथिली शरण गुप्त

एक और चीज़ यहाँ विकसित होती है वह है प्रकृति प्रेम सम्बन्धी कविता। आप इस प्रकृति प्रेम की कविता को देखें और घनानन्द की कविता को देखें तो आपको एक अद्भुत सामंजस्य देखने को मिलेगा। मैं ने कहा था घनानन्द सहज प्रेम और सहज जीवन के व्यक्ति थे। यही सहज प्रेम और सहज जीवन आपको द्विवेदी कालीन प्रकृति संबंधी कविताओं में देखने को मिलेगी।

अर्थात् यह बात लगातार चलती रही कि हम जीवन को अधिक सहज बनायें और जीवन के सच के अधिक से अधिक निकट पहुँचने की कोशिश करें। यहीं से वह युग शुरु होता है जिसे हम किन्हीं कारणों से छायावाद नाम से जानते हैं। यह जो छायावाद नाम का युग है इसे हम कई बार स्वच्छन्दतावादी युग भी कहा करते हैं। ★

(क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक झलक

प्रो० टी. के. भास्कर वर्मा

[केरल हिन्दी प्रचार सभा के संस्थापक एवं प्रथम मंत्री स्व० के. वासुदेवन पिल्लै जी पर, जिनकी 26 वीं पुण्य तिथि 25-7-1988 को मनायी गयी ।]

बरसों पहले,
धूल भरी एक शाम में
चहल पहल से भरी
सड़क पार कर

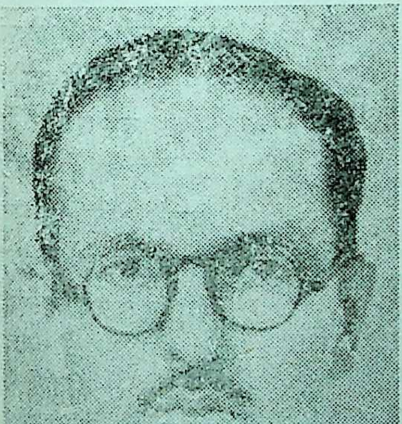

स्व० के. वासुदेवन पिल्लै

खड़ा मैं
खपरैल तने
खडे उस छोटे,
पुराने,
भूरे, मटमैले
मकान के आगे ।
देखा बॉर्ड
'हिन्दी प्रचार सभा' का,
हुआ कुतूहल,
चढ़ गया सीढ़ियाँ;
घुस गया
एक तंग कोठरी में ।
देखा मैं ने
एक अनोखा दृश्य,
आँखों ने निज जन्म
मानों सफल पाया ।
वहाँ,
हिन्दी की कितनी ही
किताबों के बीच,
छोटी सी मेज़ के पीछे,
एक पुरानी कुर्सी पर
सिमटे बैठे थे,
एक प्रौढ़ सज्जन ।
मुख का तेज
आकृष्ट करता रहा
मुझे;
अनजाने ही
उठे मेरे हाथ
प्रणाम में ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इशारा किया सज्जन ने
एक स्टूल की ओर,
झिझकता हुआ बैठा मैं ।
अपना परिचय दिया मैं ने ।
लगी बहने,
उस श्रीमुख से
हिन्दी प्रेम में सराबोर,
उमंग भरी
दृढ़ संकल्प-भरी
बातों की लड़ी ।
अवाक् बैठा मैं
मानों
किसी स्वप्नलोक में
पहुँचा हो ।
थोडी ही देर में
बना मैं उस मनीषी का
बेमोल गुलाम ।
जागा,
हिन्दी के प्रति
दिल में प्रबल अनुराग ।
अब उस पुण्यात्मा,
वासुदेवन पिल्लै की
यादगार में
खड़ी,
'सभा' की
आलीशान इमारत
जब जब देखता
तब तब दिल के
किसी अनजाने कोने में
उठती एक टीस,
निकलती एक आह ।
उस दिन उस छोटे कमरे में
जो भावावेश प्रकट हुआ
वह बढ कर
इतना विराट होगा,
कैसे मैं
अनुमान लगा सकता था
उस दिन?
पिल्लैजी एक व्यक्ति-मात्र नहीं थे,
वे सचमुच एक तपस्वी थे,
जिसने साक्षात् किया
अपने तपोबल से
देवी भारती को,
और
पाया आशीष
आनेवाली पीढ़ियों में
हिन्दी-प्रेम कीं बढती का ।
दूर अम्बर के
किसी कोने में बैठे
देखते होंगे वे ज़रूर
'केरल हिन्दी प्रचार सभा' की
निरंतर प्रगति को,
जैसे कोई स्नेही पिता
कौतुक से
देखता प्रिय पुत्र का बढना
और बार बार खुश होता
देखकर उसकी तरक्की ।

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
सरकारी वनिता कॉलेज, तिरुवनन्तपुरम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश की भाषाओं को शासन और शिक्षा में प्राथमिकता दें

25-7-1988 को केरल हिन्दी प्रचार सभा के संस्थापक एवं तपोनिष्ठ हिन्दी सेवी स्व० के. वासुदेवन पिल्लै के 26 वें पुण्य दिवस पर सभा द्वारा आयोजित सम्मेलन और परिचर्चा में भाग लेते हुए केरल के प्रमुख नेताओं और शिक्षाविदों ने एक स्वर में बताया कि देश के शासन और शिक्षा में जनता की भाषाओं को प्रमुखता देनी है।

अनुस्मरण सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए केरल के खेल एवं युवाकार्य मंत्री श्री. ए. नीललोहितदासन नाटार ने आह्वान किया कि शासन के माध्यम के रूप में देश की भाषाओं को प्रमुखता देनी है। जनता की भाषा को शासन की भाषा बनाने में नौकरशाही हमेशा रोडा अडकाती रही है। यदि स्वतंत्रता प्राप्ति के प्रथम दिवस ही हिन्दी को संघ की राजभाषा स्वीकार की गयी होती तो इस विषय में कोई समस्या नहीं हुई होती। स्व० पिल्लै जी निर्भीक समाज-सेवक एवं पत्रकार थे, कुशल अध्यापक, वाग्मी, अभिनेता एवं संगठक थे। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के समय गांधीजी का आह्वान मानकर राष्ट्रीय नवोत्थान के अंग के रूप में हिन्दी प्रचार को अपना जीवन व्रत बनाया था। हमें नयी पीढी में उनका जैसा देश प्रेम और धीरता उत्पन्न करनी है। केन्द्र सरकारी कर्मचारियों को हिन्दी में काम करने में सहायता पहुँचाने के उद्देश्य से कोचिन विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष डा० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर द्वारा रचित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी ग्रंथ - "प्रशासनिक पत्र व्यवहार" का प्रमोचन केरल परिमंडल के पोस्ट मास्टर जनरल एवं तिरुवनन्तपुरम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री. सी. जे. मात्यु को एक प्रति देते हुए श्री. नाटार ने किया।

सांसद श्री. ए. चार्ल्स ने बताया- भारत राष्ट्र की महान परिकल्पना का आधार ही राष्ट्रभाषा हिन्दी है और इस कारण संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी का अधिकाधिक प्रचार करना है। उन्होंने दाक्षिणात्यों के इस तर्क को निर्मूल साबित किया कि चूंकि दाक्षिणात्यों को मातृभाषा के अतिरिक्त दो भाषायें – हिन्दी और अंग्रेज़ी—सीखनी पड़ती है महज़ इसलिए औत्तराहों को भी मातृभाषा हिन्दी के अतिरिक्त दो भाषायें सीखने को बाध्य किया जाये।

केरल परिमंडल के पोस्टमास्टर जनरल श्री. सी. जे. मात्यु ने बताया कि जन गणना के अनुसार केरल स्थित केन्द्र सरकारी कार्यालयों में कार्यरत कुल 18,000 कर्मचारियों में अस्सी प्रतिशत को हिन्दी में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है। पर इन में दो प्रतिशत भी ऐसे नहीं होंगे जो हिन्दी में प्रशासनिक पत्र व्यवहार ठीक तरह से कर सकते हों। श्री. के वासुदेवन पिल्लै दिवस के सिलसिले में सभा द्वारा विद्यार्थियों केलिए आयोजित भाषण प्रतियोगिता और निबन्ध प्रतियोगिता के विजेताओं को श्री. सी. जे. मात्यु ने पुरस्कार वितरण किये।

स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख सेनानी श्री. जूबा रामकृष्ण पिल्लै ने बताया कि स्वतंत्रता संग्राम के समय केरल के स्वयं सेवकों में जोश उत्पन्न करने केलिए हिन्दी के देशभक्ति गीतों के आधार पर मलयालम में देशभक्ति गीत लिखे जाते थे और स्वयं-सेवक "एक-दो", "एक-दो" कह कर कदम बढाते हुए सत्याग्रह केलिए जाते थे। उन दिनों देश प्रेम से प्रेरित होकर केरल की जनता हिन्दी पढती थी।

स्कूली पाठ्यक्रम में द्वितीय भाषा हिन्दी हो या अंग्रेज़ी? इस विषय पर एक परिचर्चा भी आयोजित की गयी। उद्घाटन भाषण में केरल विधान सभा की उपाध्यक्षा एवं भूतपूर्व सांसद श्रीमती भार्गवी तंकप्पन ने स्पष्ट शब्दों में बताया कि केरल के स्कूली पाठ्यक्रमों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय भाषा के रूप में अंग्रेज़ी के बदले हिन्दी शीघ्र ही स्वीकार की जाये। उत्तर भारत की ग्रामीण जनता से संपर्क करने केलिए, उत्तर भारतमें नौकरी करने केलिए और लोकसभा की चर्चाओं का ठीक-ठीक आस्वादन करने केलिए हिन्दी का ज्ञान अपेक्षित है। इसलिए दक्षिण के छात्रों को हिन्दी सीखने का पर्याप्त अवसर प्रदान करना केन्द्र सरकार का कर्तव्य है। यह मानना ठीक नहीं होगा कि किसी समय किसी कोने में हिन्दी का जो विरोध हुआ वह हर समय हर कोने में होगा। उन्होंने केरल सरकार से आह्वान किया कि केन्द्र सरकार से पत्र व्यवहार करने में अंग्रेज़ी के स्थान पर हिन्दी का उपयोग करना प्रारंभ करें और कार्यालयों के नाम-पट्टों में मलयालम और अंग्रेज़ी के साथ हिन्दी का भी उपयोग करें। अपने नामपट्ट में हिन्दी को स्थान देकर वे इस का शुभारंभ करेंगी। उन्होंने सुझाया कि केरल की विधान सभा के सदस्यों को हिन्दी सिखाने का प्रबन्ध किया जाये।

अध्यक्षीय भाषण में केरल विश्वविद्यालय के उपकुलपति एवं पाठ्यक्रम विशेषज्ञ डॉ० ए. सुकुमारन नायर ने कहा—राष्ट्रीय स्तर पर यह निर्णय किया जाये कि स्कूली पाठ्यक्रम में किन-किन भाषाओं को कौन-कौन-सा स्थान दिया जाये। हमारी शिक्षा-नीति में इस का स्पष्ट उल्लेख नहीं हो पाया है।

इस बात में कोई संदेह नहीं हो सकता कि हिन्दीतर प्रान्तों में मातृभाषा के बाद द्वितीय स्थान राष्ट्रभाषा को ही मिले। हिन्दी को करीब उतना ही स्थान देना है जितना मातृभाषा को दिया जाता हो। इस बात पर पुनर्विचार करना है कि स्कूली स्तर पर अंग्रेज़ी अनिवार्य रूप से सिखाने की आवश्यकता अब रह गयी है कि नहीं। उच्च शिक्षा केलिए जानेवाले छात्रों को ऐच्छिक विषय के रूप में अंग्रेज़ी सिखायी जा सकती है।

केरल के प्रमुख शैक्षिक कार्यकर्ता एवं लेखक श्री. पी. टी. भास्कर पणिक्कर ने सुझाया कि हिन्दीतर प्रान्तों में हिन्दी के अध्यापन का उद्देश्य विद्यार्थियों में हिन्दी बोलने की क्षमता उत्पन्न करना हो और इस उद्देश्य को सफल बनाने केलिए आवश्यक प्रशिक्षण हिन्दी अध्यापकों को दिया जाये। सहज रूप से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी द्वितीय भाषा के रूप में विकसित हो सके।

अंग्रेज़ी के प्राध्यापक एवं मलयालम के कवि श्री. विष्णुनारायणन नंपूतिरी ने कहा कि हिन्दी भारत की अभिव्यक्ति की भाषा है, इसलिए स्कूली स्तर पर हिन्दी को उचित स्थान दिया जाये। मलयालम की प्राचार्या श्रीमती श्रीदेवी ने मातृभाषा, हिन्दी और अंग्रेज़ी को समान स्थान दिलाने के पक्ष में अप दलीलें दो।

केरल हिन्दी प्रचार सभा के मं श्री. एम. के. वेलायुधन नायर स्वागत भाषण में स्व० के. वासुदे पिल्लै की निस्वार्थ एवं त्यागोज्व हिन्दी सेवा पर प्रकाश डालते हु युवा पोढी से आह्वान किया कि स्व० पिल्लै जी से प्रेरणा पाकर दे सेवा में जुट जाये।

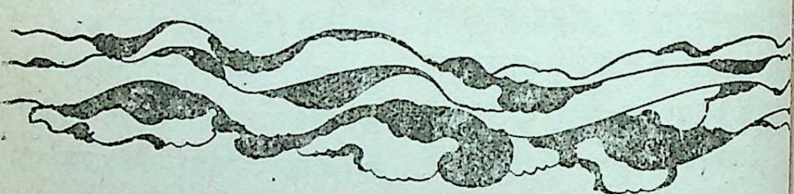

अंग्रेज़ी का ज्ञान भारतवासियों के लिए बहुत आवश्यक है। लेकिन इस भाषा को उसका उचित स्थान देना एक बात हैं, उसकी जड़ पूजा करना दूसरी बात हैं।

महात्मा गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाति तिरुनाल के हिन्दी गीतों में दक्खिनी

डॉ० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर

"दक्खिनी और द्राविड भाषाएँ" शीर्षक की गोष्ठी में हम दक्खिनी के विभिन्न पहलुओं पर विचार करते हैं। इस प्रसंग पर मैं एक छोटे बिन्दु पर संक्षिप्त विचार प्रस्तुत करना चाहता हूँ। सन् 1813 ई० में भूजात और 1847 ई० में स्वर्गस्थ होनेवाले स्वाति तिरुनाल रामवर्माजी के हिन्दी गीतों में भी दक्खिनी का जो पुट मिलता है उसपर कुछ विचार करना ही मेरा ध्येय है।

जो सज्जन केरलीय हैं उनके लिए श्री. स्वाति तिरुनाल परिचित होंगे। दूसरों के लिए वे कम परिचित हैं। अतएव उनके विषय में कुछ परिचय दूँ। ट्रावंकोर रियासत भारत की स्वतंत्रता-प्राप्ति तक अपनी सत्ता रखती थी और रियासत के राजा ही शासन करते थे। इस राजवंश के राजाओं में महाराजा स्वाति तिरुनाल रामवर्मा विशेष यशस्वी हुए। ट्रावंकोर के राजाओं का उल्लेख उनके जन्म के नक्षत्र के आधार पर किया जाता है। स्वाति नक्षत्र में जन्म लेने से रामवर्मा स्वाति तिरुनाल कहलाए। तिरु=पवित्र, नाल=दिन (नक्षत्र)। वे प्रतिभाशील थे। उन्होंने छोटी ही अवस्था में बडी विद्वत्ता प्राप्त की। उनके अल्पकालीन शासन के दौरान आधुनिक युग के अनुकूल कई नई संस्थाएँ – खास कर शैक्षणिक सस्थाएँ स्थापित हुईं। प्रथम सार्वजनिक ग्रन्थालय, नक्षत्र निरीक्षणालय आदि उनका योगदान रहे हैं। साहित्य और संगीत के क्षेत्र में उनकी उपलब्धियाँ बडी मार्के की रही है, विशेष कर संगीत में। वे अपने समकालीन त्यागराज, मुत्तुस्वामी-दीक्षितर और श्यामशास्त्री—(तीन मूर्ति) के ही समकक्ष वाग्गेयकार प्रसिद्ध हुए। उन्होंने संस्कृत व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे अपने समकालीन त्यागराज, मुत्तुस्वामी दीक्षितर और श्याम शास्त्री—(तीन मूर्ति) के ही समकक्ष वाग्गेयकार प्रसिद्ध हुए।

मलयालम दोनों भाषाओं में समान अधिकार से गीत लिखे। यही नहीं, अन्य भाषाओं में भी उनके गीत मिलते हैं। यह देखकर आश्चर्य होता है कि करीब डेढ सौ वर्ष पहले अर्थात् भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के जीवन-काल में सुदूर दक्षिण के इस महानगर में एक मलयालम-भाषी शासक ने हिन्दी में गीत रचे और वे गाये गये।

स्वाति तिरुनाल के हिन्दी गीतों की संख्या चालीस से कम है। वे भी छोटे-छोटे हैं। इसलिए उनमें दक्खिनी के योगदान पर विचार अपने में बडा गंभीर विषय तो नहीं है। मगर यह ज़रूर रोचक तथ्य है कि उन गीतों में दक्खिनी का पुट है और दक्खिनी का प्रभाव है।

ट्रावंकोर और दक्खिनी के संबंध पर ऐतिहासिक विचार यहाँ संगत है। इसपर दूसरे लोग अपने विचार प्रस्तुत करेंगे ही। मैं केवल रियासती दृष्टि की बात प्रस्तुत करना चाहता हूँ। ट्रावंकोर केरल की सबसे बडी रियासत थी। पर मैसूर व हैदराबाद ट्रावंकोर से भी बडी थी। ईस्ट इंडिया कंपनी की सत्ता स्थापित होने के पहले आर्काट भी प्रभावशाली रहा। अतएव ट्रावंकोर नरेशों का आर्काट, मैसूर व हैदराबाद के नरेशों से पत्र-व्यवहार रहा था। वहाँ अपने

ट्रावंकोर नरेशों का आर्काट, मैसूर व हैदराबाद के नरेशों से पत्र-व्यवहार रहा था। वहाँ अपने दूतों को भी भेजते थे। इनका परस्पर संबंध जोडनेवाली भाषा दक्खिनी थी।

दूतों को भी भेजते थे। इनका परस्पर संबंध जोडनेवाली भाषा दक्खिनी थी। हैदराबाद और आसपास तुगलक के दिनों में जो दक्खिनी बनी वह उन प्रदेशों में आगे फली फूली। वह दक्षिण की अन्य रियासतों में भी फैली। ट्रावंकोर में भी दक्खिनी बोलनेवाले आये। राजमहल में दुभाषिया तो थे ही। घुडसवारों की फौज प्रायः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पठानियों की थी । दक्खिनी मुसलमानों को ही मलयालम में पठानी पुकारते थे । तिरुवनन्तपुरम में किले के पूर्वी फाटक पर रोज़ सवेरे-शाम को नगाडा बजाने का नियम था । यह काम एक दक्खिनी मुसलमान परिवार का था । मणक्काड नामक मुहल्ले में दक्खिनी भाषी मुसलमान बसे थे ।

स्वाति तिरुनाल की बात ही यहाँ प्रासंगिक है । स्वाति तिरुनाल का हिन्दुस्तानी और फारसी से परिचय कैसे हुआ ? इसका उल्लेख उनकी जीवनी में मिलता है । उस जीवनी से ली हुई बातों के आधार पर मैं ने अपनी पुस्तक "केरल के प्रथम हिन्दी गीतकार" नामक ग्रंथ की भूमिका में जो शब्द लिखे हैं, उन्हें यहाँ दुहरा रहा हूँ ।

"ट्रावंकोर के शासकों का राजनैतिक संबंध उन दिनों आर्काट के नवाब, मैसूर के शासक, तंजौर के राजा, दिल्ली के बादशाह आदि से रहा था । इस व्यवहार के लिए "फारसी" और "हिन्दुस्तानी" में बातचीत करने एवं लिखने-पढने का ज्ञान अनिवार्य था । राजकुमार रामवर्मा को फारसी सिखाने केलिए मद्रास के सैयद मोहियुद्दीन साहब और मोहम्मद अली साहब राजमहल के उस्ताद बनाये गये थे । संभवत: मद्रास के ये दोनों सज्जन दक्खिनी भी रहे । इनकी बोलचाल की भाषा दक्खिन की हिन्दुस्तानी रही हो, यही संभव है । राजमहल के वजीरों और रियासत की घुडसवार सेना के सिपाहियों में कुछ लोग हिन्दुस्तानी बोलनेवाले थे । दुभाषिये भी महल में नियुक्त थे । सभवत: इन सबके संपर्क के कारण राजकुमार हिन्दुस्तानी भी सीख सके थे । यह बात तो कहीं स्पष्ट उल्लिखित नहीं है कि राजकुमार ने किस सज्जन से हिन्दुस्तानी सीखी ।"

महाराजा के हिन्दी सीखने और हिन्दीगीत लिखने की स्पष्ट प्रेरणा देनेवाले अनंतपद्मनाभ गोस्वामी महाराजा के दरबार में 1836 ई० में आये । इन्हें मेरुस्वामी भी पुकारा जाता था । महाराजा ने इनके रहने के लिए श्रीपद्मनाभ मन्दिर के पश्चिमी द्वार के बाहर की गली में एक घर भी बनवा दिया था । उसी गायक कलाकार के प्रभाव व प्रेरणा से महाराजा ने हिन्दी में गीत लिखे ।

स्वाति तिरुनाल के गीतों की संक्षिप्त चर्चा मैंने पहले ही की है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहाँ उन[illegible] कुछ शब्द खडीबोली के बताना है। इन गीतों की चर्चा में इनकी तुलना सूर, तुलसी आदि के गीतों से नहीं करनी चाहिए। ये गीत भाषा श्रवण से सीखी भाषा में गढे हुए स्तोत्र हैं। स्तोत्रों का विषय सीमित होता है। इनके शब्द बहुधा तत्सम भी होते हैं। हाँ व्रज, दक्खिनी, खडीबोली तीनों के अंश इनमें कितने हैं, कैसे हैं इनपर विस्तृत विचार नया प्रकाश डालेगा।

व्रज, दक्खिनी, खडीबोली तीनों के अंश इनमें कितने हैं, कैसे हैं इनपर विस्तृत विचार नया प्रकाश डालेगा।

मैंने तो केवल सरसरी दृष्टि से इस पर विचार किया है। उसमें मुझे जो लगा वही बात पेश कर रहा हूँ। अन्य विद्वान जो प्रामाणिक व्याख्या दें उसे स्वीकार करने तैयार भी हूँ। इसमें व्रजभाषा के शब्द हैं, खडीबोली के और दक्खिनी के भी।

व्रजभाषा :

गाँव गाँव जन मंगल गावत देवन
बजायो।
राम रावण मारे, असुर सब मारे,
राज विभीषण पायो।

पद्मनाभ तुम्हारी लीला
क्या कहूँ मैं साँवरो
ताप संकट शरण आया
सो हमारो तुम हरो।

इन गीतों में प्रयुक्त शब्दों का गहरा अध्ययन विवेचन करने पर यह स्पष्ट होगा कि इनमें दक्खिनी का कितना अंश है। मेरा ध्यान बरबस आकृष्ट करनेवाला प्रयोग विभक्ति प्रत्ययों का है। इनका उद्धरण नीचे दिया जा रहा है।

गीत 5

प्रेम कटारी से मोकू नहि मारो
कबहु नहि मोकू नाथ बिसारो।

गीत 6

रयन समय प्रभु छलबल करिके
कौन तिया कू विरमाये

गीत 7

जब श्याम सुन्दर सू भेंट भई

गीत 8

जाकी महिमा पुकारे वेद
जाकू नहि लोक लोक विभेद।

गीत 24

सोहत श्री पद्मनाभ भाव सू तुम्हारे

गीत 30

औरन कूँ कछू और भरोसा
हमें भरोसा तेरी॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसकी चर्चा से मैं सिर्फ यह दिखाना चाहता हूँ दक्खिनी करीब डेढ सदी पहले केरल में प्रचलित थी और केरल के हिन्दी गीतकार स्वाति तिरुनाल को भी प्रभावित किया था ।

इन प्रत्ययों के अलावा दो चार शब्द भी मिले हैं जो दक्खिनी से जुडे लगते हैं—

गीत 5

आन मिलो महबूब हमारो

गीत 10

गाफ़िल भई लो रे मियाँ ।
मेरे बालमुरे ।

गीत 18

जाओ तुम मत परदेस
बालम मेरे प्यारे ।
बतर लगाऊँ सुगंध लगाऊँ
और गुलाब अबीर ।

जैसा कि मैं ने प्रारंभ में कहा है स्वाति तिरुनाल के हिन्दी गीतों की सामग्री अत्यंत सीमित है । इसकी चर्चा से मैं सिर्फ यह दिखाना चाहता हूँ दक्खिनी करीब डेढ सदी पहले केरल में प्रचलित थी और केरल के हिन्दी गीतकार स्वाति तिरुनाल को भी प्रभावित किया था ।

भाषा की दृष्टि से विद्वानों के अधिक विचार इसपर आमंत्रित हैं ।

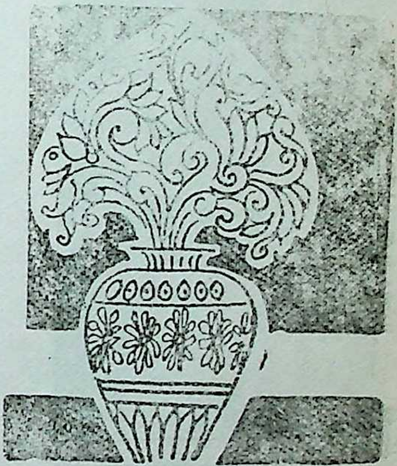

आज असहमति और अनास्था के संक्रमण युग में भावात्मक एकता की दृष्टि से हिन्दी के योगदान को सही रूप में समझने और मान्यता देने की आवश्यकता है ।

—श्री वसन्त साठे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्खिनी हिन्दी का व्याकरण

डॉ० वी. पी. मुहम्मद कुंज मेत्तर

[22-24 जनवरी 1988 को केरल विश्वविद्यालय में आयोजित विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की संगोष्ठी में प्रस्तुत किया गया प्रपत्र]

डा० वी. पी मुहम्मद कुज मत्तर

दक्षिण भारत में हिन्दी का प्रवेश सर्वप्रथम गुजरात में हुआ था। सन् 1000 ई० में ही गुजरात में निर्मित अरबी-फारसी ग्रन्थों में प्रयुक्त हिन्दी शब्दों को प्रमाण रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

दक्षिण भारत में हिन्दी का प्रवेश सर्वप्रथम गुजरात में हुआ था। सन् 1000 ई० में ही गुजरात में निर्मित अरवी-फारसी ग्रन्थों में प्रयुक्त हिन्दी शब्दों को प्रमाण रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। ऐतिहासिक कारणों से हिन्दी को यहाँ पनपने और विकसित होने का मौका मिला। अलाउद्दीन खिल्जी के काल से लेकर मुहम्मद बिन - तुग्लक के काल तक हिन्दी दक्खिन में साहित्य की वाहिका हो चुकी थी। दक्खिन के सुलतानों के यहाँ हिन्दी को आश्रय मिला। सूफ़ियों का उदार दृष्टिकोण भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सहायक हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्खिनी [illegible] है जो दिल्ली और समीपवर्ती प्रदेशों में व्यवहृत की जाती थीं। मगर क्षेत्र विशेष का प्रभाव उस पर पड़े बिना नहीं रहा। ये क्षेत्रीय रंग अब दक्खिनी की पहिचान के चिन्ह से हो गए हैं।

उपलब्ध साहित्य ग्रन्थों के आधार पर दक्षिण में विकसित हिन्दी के इस रूप की व्याकरणिक विशिष्टताएँ जानी जा सकती हैं।

दक्खिनी की पहिचान के चिन्ह :

1. हिन्दी के अवधारण बोधक शब्द 'ही'' के अर्थ में दक्खिनी में मराठी के ''च'' का प्रयोग किया जाता है।

2 विरोध दर्शाने के लिए "नहीं" के साथ मराठी और गुजराती से प्राप्त "नक्को" शब्द का प्रयोग किया जाता है।

3. समुच्चय बोधक अव्यय "और" के अतिरिक्त "होर" का प्रयोग किया जाता है।

4. कर्तृवाचक शब्द "वाला" के बदले 'हारा'' (हारी, हारे) का प्रयोग पाया जाता है।

5. लिंग निर्णय में कोई व्यवस्था न होने पर भी आकारान्त पुल्लिग शब्दों में "आं" लगाकर बहुवचन बनाने की प्रवृत्ति दक्खिनी में देखी जा सकती है।

शब्दावली :

साहित्यिक तथा बोलचाल की दक्खिनी में प्रयुक्त शब्द निम्न स्रोतों से आए हुए हैं :

1. मध्य भारतीय आर्यभाषा तथा नव्य भारतीय आर्यभाषा से प्राप्त शब्द।

2. हिन्दी की उपभाषाओं से प्राप्त देशज शब्द।

3. संस्कृत से प्राप्त तत्सम शब्द।

4. अरबी-फारसी से प्राप्त तत्सम तथा तद्भव शब्द।

5. हिन्दीतर आर्यभाषाओं—विशेष रूप से पंजाबी, गुजराती और मराठी से प्राप्त शब्द।

6. द्रविड़ भाषाओं से प्राप्त शब्द।

7. देशज शब्द।

संज्ञा :-

नव्य भारतीय आर्यभाषाओं की भाँति दक्खिनी के अनेक शब्द मध्य भारतीय आर्यभाषा तथा आरंभिक नव्य भारतीय आर्यभाषा से प्राप्त हुए हैं :

अक्षि — आंक, अंक
चक्षु — चक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पान, पात, पुहुप, कूप, फूल, फुल
अछरी, अछड़ी, बाज (अवधी के शब्द)
खोड़ = राजस्थानी खोड (कलंक)
घूड = पूरबी हिन्दी घूरा (कचरे का ढेर)
चुनरी = राज, चूनडी
डूंगर = राज, डूंगर (मराठी, गुजराती, डूंगर)
धनी = राज धणी (स्वामी, पति)
रूक = राज. रूख — वृक्ष
बिनोला = हरियाणी बन (कपास) + ला
लूतरी = मेवाती — लूतरी (निन्दा)

गुजराती शब्द : जे, सहदेसना, परदेसना, अने, बापड़ा, (निर्धन, बेचारा), बीझू (दूसरी बार), पोंगडा (लडका), अंजु (अश्रु आदि ।

मराठी शब्द : अभाल (आकाश, बादल), भुई (भूमि) रावाँ (रावा = तोता), सेंसार (संसार) आदि ।

पंजाबी : आनना (लाना), दीसना (दिखाई देना), लोडना (चाहना, तलाश-करना) न्होसी (न होगी), आखना (कहना), सूं (तुम), बदल (बादल) आदि ।

•

दक्खिनी में वचन व्यवस्था अत्यंत सरल है । अरबी-फारसी शब्दों का वचन परिवर्तन प्रायः दक्खिनी अपनी प्रकृति के अनुसार करती है ।

उपसर्ग और प्रत्ययों के योग से बने अनेक शब्द पाये जाते हैं।

वचन और लिंग :

भिन्न कुल की भाषाओं के बीच विकसित हुई भाषा होने के कारण दक्खिनी में वचन-लिंग संबन्धी नियम अत्यधिक शिथिल दिखाई देते हैं। जहाँ तक वचन का संबन्ध है, दक्खिनी में पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग के रूपों में खडीबोली की भांति विशेष अतर नहीं पडता । खडीबोली की भाँति दक्खिनी में पुल्लिगवाची शब्दों का अविकृत रूप अपरिवर्तित नहीं रहता । आकारान्त शब्दों को छोडकर अन्य शब्दों में अन्तिम स्वरों के आधार पर बहुवचन बनाते समय विशेष अन्तर नहीं पडता। पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग के कारण भी शब्दों के बहुवचन में अधिक परिवर्तन नहीं होता । इन सब कारणों से दक्खिनी में वचन व्यवस्था अत्यंत सरल है । अरबी-फारसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्दों का वचन परिवर्तन प्रायः दक्खिनी अपनी प्रकृति के अनुसार करती है।

गत सात सौ वर्षों में लिंग-वचन संबन्धी व्यवस्था में अनेक परिवर्तन हुए। हिन्दी से संबन्धित विविध बोलियों की लिंग व्यवस्था तथा वचन-प्रणाली का प्रभाव उस पर पड़ा है।

पुल्लिग अविकृत रूप :

बम्मां गिरा गिरा को तोपां चला चला को।

पयम्बर — पयम्बरां
सितारा — सितारे, सितार्यां
फरिश्ता — फरिशत्यां
बिच्छू — बिच्छुवां
बात — बातां
(मेघ, धार — धारां

पुल्लिग विकृत रूप :

पांच अनासिरां का।
मेरे दोस्तां कूं।
कमल हातां में ले सकियां।
दो जनन के चित।
बेटीं के (बेटों के)
आदम्यां में

स्त्रीलिंग सविभक्ति बहुवचन :

बातां का

सौतन में (सौत में) (एकवचन)
सौतन में (बहुवचन)
पुरिन में (पुरी में — पुरिन में)

दक्खिनी में कुछ शब्द मूलतः स्त्रीलिंगवाची अथवा पुल्लिगवाची हैं। अधिकांश शब्दों में प्रत्यय लगाकर अथवा वर्ण-परिवर्तन के द्वारा लिंग परिवर्तन किया जाता है। उदा :—(अन, नी प्रत्यय)

माली — मालन
दूला — दुलन
बन्दर — बन्दरनी

कुछ स्त्रीलिंगवाची शब्दों से पुल्लिगवाची शब्द बनाये जाते हैं। ऐसा करते समय अकारान्त तथा ईकारान्त शब्दों को आकारान्त बनाते हैं :

आवाज़ — आवाज़ा
परी — परा
बिल्ली — बिल्ला
चाल — चाला

लिंग संबन्धी अव्यवस्था : हिन्दी में पुल्लिग एवं दक्खिनी में स्त्रीलिंग:
आंच, धूल, शकर
हिन्दी में स्त्रीलिंग एवं दक्खिनी में पुल्लिग : अंगार, आंक

कुछ संस्कृत तत्सम विपरीत लिंग में प्रयुक्त होते हैं :
विलास, चित्र (स्त्रीलिंग)
उपमा (पुल्लिग)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यिक दक्खिनी में कुछ स्थलों पर "ने" का प्रयोग मिलता है किन्तु सामान्यतया विभक्ति रहित संज्ञा का ही प्रयोग किया जाता है। "ने" के प्रयोग में कोई व्यवस्था नहीं है।

अरबी-फारसी शब्दावली में लिंग अव्यवस्था।

याद (पु.) फलक (स्त्री.)
सज़ा (पु.) तारीफ़ (पु.) राह (पु.)
अक्ल (पु.) रूह (पु.) सल्तनत (पु.)
मारिफत (पु.)

दक्खिनी में कुछ हिन्दी शब्दों का लिंग परिवर्तन होता है:

सोगन्द, ठाट, सुद, फूट, दाडी, मूँछ्यां, खान, समझ आदि दक्खिनी में पुंल्लिग रूप में प्रयुक्त होते हैं।

विभक्ति:

1. कर्ताकारक (प्रथमा)

साहित्यिक दक्खिनी में कुछ स्थलों पर "ने" का प्रयोग मिलता है किन्तु सामान्यतया विभक्ति रहित संज्ञा का ही प्रयोग किया जाता है। "ने" के प्रयोग में कोई व्यवस्था नहीं है। उदा :–

[illegible] देता।

[illegible] फरमाये हैं।

2. कर्मकारक (द्वितीया) –
कूं, कू – एं – ओं। उदा:-

खालिक में ते खलक कूं।
घाट कूँ जाती हूँ मैं।
कोई चक हजें तुरतें जाय।
एक छोड जे भूतों लागे।

3. करणकारक (तृतीया) –
ते, तें, थें, सात, सेती, से, सूं, आ, ओ, ओं

दक्खिनी में तृतीया के लि[ए] मुख्यतया "सूँ" का उपयोग होता है। परवर्ती दक्खिनी में "से" का प्रयो[ग] भी होने लगा। उदा :–

आंक सूँ गैर न देखना।

ओ, ओं।

किस मुखों करूँ उचार।

4. सम्प्रदानकारक (चतुर्थी)–
तई, ताई, कूँ, को, काज, खातिर, बदल, वास्ते।
5. अपादानकारक (पंचमी)–
ते, तैं, थें; थे, सती, सेती, सूँ, से, सें।
6. सम्बन्धकारक (षष्ठी)–
का, की, कियां, के, केरा, केरी, केरे, कर, ए।

खडीबोली में स्त्रीलिंग के बहुवचन में "की" में कोई परिवर्तन नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता किन्तु दक्खिनी में स्त्रीलिंग पर भी वचन का प्रभाव पडता है।

उदा :-

अर्पे मेराज कियां निशान्यां

7. अधिकरणकारक (सप्तमी)—
   पे, पैं, पो, पर, उपर, उपरार, उपराल, मने, माने, म्याने, मंह, मॉंह, मांही, मंझार।
8. संबोधन कारक—
   हे, अरे।

सर्वनाम :

खड़ीबोली में प्रयुक्त सभी मूल सर्वनाम तथा उनके विकारी रूप दक्खिनी में आरंभिक काल से प्रयुक्त होते रहे हैं, साथ ही दक्खिनी में कुछ ऐसे रूप भी प्रचलित हैं जो खड़ीबोली में प्रयुक्त नहीं होते, किन्तु हिन्दी से सम्बधित अन्य बोलियों में, विशेषकर पूरबी बोलियों में प्रयुक्त होते हैं। दक्खिनी के सर्वनाम निम्नलिखित हैं :

1. पुरुषवाचक —मैं, हौं, तू, तूं, आप।
   (आदरवाचक) आप, अपन, अपस (निजवाचक), अपन (प्रथम मध्यमपुरुषवाचक)
2. निश्चयवाचक — यह, ए, यू, वह, वो, ओ, ऊ, सो।
3. अनिश्चयवाचक — कोई, कुछ, कुच, कूच।

खड़ीबोली में प्रयुक्त सभी मूल सर्वनाम तथा उनके विकारी रूप दक्खिनो में आरंभिक काल से प्रयुक्त होते रहे हैं, साथ ही दक्खिनी में कुछ ऐसे रूप भी प्रचलित हैं जो खड़ीबोली में प्रयुक्त नहीं होते।

4. सम्बन्धवाचक — जो, सो।
5. प्रश्नवाचक — कवन, कौन, क्या, की।

"मुझ" (मुज) तथा "मेरा" का प्रयोग खडीबोली की भांति षष्ठी विभक्ति में सीमित न रहकर पूरबी बोलियों की भांति अन्य कारकों में भी किया जाता है।

कर्म तथा सम्प्रदान में "हमना" के साथ कोई विभक्ति नहीं लगाई जाती। 'हमारा" का प्रयोग भो विविध कारकों में किया जाता है।

तेरा बहुवचन तेरे

तेरी ,, तेरियां

तुम्ह, तुमन : दक्खिनी में विकारी बहुवचन में सामान्यतया "तुम" का प्रयोग होता है किन्तु खडीबोली की भांति "तुम्ह" का उपयोग भी होता है। "तुम" के साथ "न" लगाकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुमन" बनाया जाता है। यह रूप ब्रज में प्रचलित है। अविभक्तिक कर्ताकारक में आदरार्थ "तुमें" का प्रयोग होता है। "तुमना" का प्रयोग षष्ठी में होता है।

आदरवाचक तथा निजवाचक—

आप (अपै), अपन, अपस।

निजवाचक तथा उत्तम-मध्यम पुरुषवाचक — अपन

निजवाचक "अपना" का प्रयोग सभी कारकों में किया जाता है।

विकारी एकवचन में "यह" "इस" बनता है। इन, इनन, इनो विकारी बहुवचन में "इन" का उपयोग होता है ब्रज की तरह कहीं-कहीं बहुवचन सूचक "न" जोडकर "इनन" के साथ विभक्ति लगाई जाती है। "इनो" "इनन" का परिवर्तित रूप है। अविभक्तिक कर्ताकारक के बहुवचन में भी "इनो" अथवा "इनों" का प्रयोग होता है। उस, उन, उनन, उनो, उनों आदि का भी इसी प्रकार विकास हुआ है। निश्चयवाचक तथा सम्वध सूचक—से

कुछ स्थलों पर "जो" के साथ इसका प्रयोग संवंध सूचक सर्वनाम के रूप में होता है। "वह" तथा "सो" का प्रयोग प्राय: एक ही अर्थ में होता है।

दक्खिनी तथा हिन्दी से संबंधित अन्य बोलियों में अविकारी एकवचन और बहुवचन में "सो" का तथा विकारी एकवचन "तिस" का प्रयोग होता है। दक्खिनी में "सो" के विकृत बहुवचन "के स्थान पर "उन" का प्रयोग होता है।

सम्बन्धवाचक जो — जे

दक्खिनी हिन्दी में पश्चिमी हिन्दी का "जो" तथा पूर्वी हिन्दी का "जे" दोनों प्रयुक्त हुए हैं। मैथिली और गुजराती में भी "जे" का प्रचलन है। अविकारी बहुवचन में भी "जो" तथा "जे" ज्यों के त्यों रहते हैं। विकारी एकवचन "जिस" और बहुवचन "जिन" का प्रयोग भी होता है। (जिन)

अनिश्चयवाचक — कोई

अविकारी एकवचन और बहुवचन में कोई अंतर नहीं रहता। विकारी एकवचन में "किसी" का प्रयोग होता है। विकारी बहुवचन में "किन" अथवा "किनी" का प्रयोग होता है। कहीं-कहीं कोई के स्थान पर अविकारी रूप "को" का प्रयोग होता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनिश्चयवाचक "कुछ" के स्थान पर "कुच" का प्रयोग होता है।

"कौन" — कवन

विकारी एकवचन में "किस" और बहुवचन में "किन" का प्रयोग होता है।

प्रश्नवाचक — क्या : दक्खिनी में "क्या" तथा "क्यों" केलिए मागधी के "कि" से मिलता-जुलता रूप "की" का प्रयोग होता है। पुरानी दक्खिनी में "क्या" के स्थान पर "की" के प्रयोग की प्रवृत्ति अधिक रही।

अरब-फारसी के सर्वनाम "बाज़" (कुछ) का प्रयोग दक्खिनी में होता है।

विशेषण : दक्खिनी के विशेषणवाची शब्दों को निम्न प्रकार से विभक्त किया जा सकता है :

1. संस्कृत से प्राप्त तत्सम विशेषण
2. अरबी तथा फारसी से प्राप्त तत्सम विशेषण
3. मध्य भारतीय आर्यभाषा से प्राप्त तद्भव विशेषण
4. संज्ञा, सर्वनाम, अव्यय तथा क्रिया से बनाये गये विशेषण
5. मराठी से प्राप्त विशेषण
6. क्षेत्रीय बोलियों से प्राप्त विशेषण

उदा : निराला (निराल, निरवाल) नवा (नव), सीतल, सपूरा, गुनी, परघट, सुलक्खन, थीर, विचित्तर नीठूर, झूटा, खारा, मीठा, सचा, सुका, खोटा।

दक्खिनी के निजी विशेषण :

जम, जमन (स्थायी), गदड (गर्द), पलिष्ट (अपवित्र), निबत्तर (निकृष्टतर), आदि।

इता, यता, इती, यती, तथी आदि निकटवर्ती निश्चयवाचक सर्वनाम हैं। खडीबोली के "इतना" का दक्खिनी में कम प्रयोग हुआ है।

दूरवर्ती निश्चयवाचक :

उत्ता, ऊता, वते, जिते...विते।

संबंधवाचक :

जिता, जेता, जिते...जो, जेते-जेते।

प्रश्नवाचक :

कित्ता, कित्ते, केती, केतक।

दक्खिनी में सम्बन्धवाचक सर्वनाम से उद्भूत "तैसा" का प्रयोग नहीं होता। निश्चयवाचक निकटवर्ती सर्वनाम "यह" से ऐसा, ऐसे, ऐसी (एकवचन तथा बहुवचन), ऐसां तथा अन्य रूप।

संख्यावाचक विशेषण :

एक, येक, यक, यकी, यक्की, इक, दो, दोय, तीन, चार, चहार, नव्बद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्खिनी धातु की दृष्टि से बहुत समृद्ध है। दक्खिनी के क्रियापदों में धातुओं का प्रयोग काफी हुआ है।

(नव्वे), सौ, सहस, हज़ार, हज़ारां, लक, लाक, लाख।

आधा, पौन, सवाया, साडे, ढाई।

पहला (पैला), दूसरा (दूजा), तिसरी।

दोनों, दोन्हों, दुन्ह, बीस के बीस।

सारा, कइ, कुल, भोत, भोतेरा, घना, चंद।

क्रिया :

दक्खिनी धातु की दृष्टि से बहुत समृद्ध है। दक्खिनी के क्रियापदों में धातुओं का प्रयोग काफी हुआ है। दक्खिनी में प्रयुक्त विशेष धातुएँ :

न्हाट (भाग), लिडना, ढंप—ढांपना, पलाना (चिल्लाना)।

पंजाबी धातुएँ :

सटना, (डालना, छोडना), लोडना (चाहना), अंपडना (पहुँचना), आखना (कहना) आदि।

मराठी तथा गुजराती धातुएँ :

दिसना, दाट (गाड़ना), कंचव (असंतुष्ट करना) आदि।

काल रचना :

काल रचना में जो विशिष्टताएँ पायी जाती हैं उनका संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है।

1. सामान्य भविष्य के लिए धातु के साथ "गा" तथा "स" जोड़कर पुरुष-वचन सूचक चिह्न लगाए जाते हैं। उदा:

   चल — चलूँगा
   दे — द्यौंगा
   अछ — अछेगा
   होना — होएगा
   मार — मारसूँ, मारसी, मारसे
   कह — कहसे
   ला — लासी

2. संभाव्य भविष्य देख — देखूं
3. विधि और प्रार्थना : उदा: अछ, देव, करें, देखो, कहो, दौडाइए आदि।
4. सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्त स्वतंत्र संज्ञा के रूप में — बहते में बाहर ल्याव
   विशेष के रूप में — कर्ता जानता भोक्ता है।

दक्खिनी में बिना सहायक क्रिया के सामान्य संकेतार्थ का वर्तमान काल में अधिक प्रयोग किया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदा :

गगन होर धरत कू देता तू हस्ती।

सामान्य वर्तमान के रूप बनतौं (बनता हूँ), पड्त्युं (पड़ती हूँ), खिलात्युं (खिलाती हूँ) आदि भी पाये जाते हैं।

5. अपूर्ण वर्तमान : बाज़े शराब प्याले बेकैफ़ हो रहे हैं।

लिबास पेन को हल्लू हल्लू आ री ये (आ री ये = आ रही है।)

6. सामान्य भूत : प्रायः क्रिया के साधारण रूप का "ना" गिराकर "या" लगाया जाता है। जैसे —

लोर — लोर्या
लोप — लोप्या
बूज — बूज्या
आख — आख्या
कह — कह्या

खड़ीबोली की तरह के रूप भी कम नहीं है। यथा—

फ़ूट — फ़ूटा
दीठ — दीठा
देख — देखा

"कर" क्रिया के तीन भूतकालिक रूप पाये जाते हैं। वे हैं करा, किया और कीता। "कीता" पंजाबी का प्रभाव है। "देना" का "दीता" रूप भी मिलता है।

7. आसन्न भूत : उदा :–
जान्या हूँ मैं।
मैं भोत खुश हुयौं।

(हुयौं = हुआ हूँ)

8. पूर्ण भूत : उदा :–
के सूरत अजायब वह चितर्या अथा।

9. अपूर्ण भूत : उदा :–
दिल धडक राय था।

संयुक्त क्रिया :

दक्खिनी में मुख्य रूप से निम्न लिखित धातुएँ अन्य धातुओं से मिलकर संयुक्त क्रिया का निर्माण करती हैं :

कर, जा, दे, पड़, लग, ला, ले, सक।

उदा :– परगट करना, जीव देना, जीव लगना।

अव्यय :

दक्खिनी में प्रयुक्त अधिकांश अव्यय खड़ीबोली में भी प्रयुक्त होते हैं। कुछ अन्य भाषाओं से गृहीत जान पडते हैं। कतिपय अव्यय द्रष्टव्य है :

वले, वलेकिन, गर, अजनूँ (आज ही), पिच्छे (पीछे), होर (और), नको, नक्को (नहीं), बाज (बिना), ऐलाड़ (इस ओर), पैलाड़ (उस ओर,) तल्हार, नीडे, कन, पास, सम्मुख, अताल (अब), अद (अब), कद्र,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कदी, कधीं, कधी, जकद, जद, जदि थें—तद, अब, अब के, कभी, कभीं, कभू, कब्बो, जब, जब लग, जभी, तब लग, जमजम, जमारे, तल, तलें, तलार, तक, तलक, तलग, अपराल, यूँ, जूं, ज्यूं, त्यूं, तो, तऊ, भी, बी, च, जे, भोत, भोतीच, न, ना, नई, नै, नैं कि, सो, पर, पन इत्यादि।

मुहावरे और लोकोक्तियाँ :

मुहावरों और लोकोक्तियों के उदाहरण काफी संख्या में दिए जा सकते हैं। उदा :–

उतारा जाना (मारा जाना), उजाला पाडना (रोशनी करना), जीवँ मारना (जान से मारना), चित धरना (ध्यान देना) आदि।

लोकोक्तियाँ :

छुरी सोने की होने पर भी अपने कोई पेट में नहीं मार लेता—

छुरी अत कुंदन की कि जे होण

असंगत न तिस घाल ले पेट कोए।

दूध का जला छाछ को भी फूंक मार मार कर पीता है।

बडे साच कह कर गए बोल अनूप

दधा दुद का छाचहा पीवे फूक।

सभी ठाँव सांप टेढ़ा चलता है लेकिन

अपने ठाँव पर वह भी सीधा चलता है।

समी ठांव जे सांप कूडा चले।

अपस ठांव वह भी सू सीधा चले।

पत्राचार पाठ्यक्रम संस्थान

केरल विश्वविद्यालय

कार्यवट्टम, त्रिवेन्द्रम

> *हिन्दी के माध्यम से इस विशाल देश के लोग दूसरे को समझ सकेंगे और मिलकर काम कर सकेंगे।*
>
> श्री. बी. डी जत्ती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सैफ़ुल मुलूक व बदीउल जमाल : एक विश्लेषण

डा० एस. तंकमणि अम्मा

[22-24 जनवरी 1988 को केरल विश्व-विद्यालय में आयोजित संगोष्ठी में प्रस्तुत किया गया प्रपत्र]

हिन्दी का जो रूप, तीर्थयात्रियों व व्यापारियों के द्वारा पहले से ही, तथा तदनंतर दक्षिण भारत विजेता दिल्ली के मुस्लिम सुल्तानों, शासकों, उनके सैनिकों व सेवकों के द्वारा उत्तर से दक्षिण आ पहुँचा और यहाँ की देशी भाषाओं से मिल-जुलकर व्यवहृत होने लगा तथा जिसमें आगे चलकर साहित्य-सृजन भी होने लगा, वही सामान्यतया "दक्खिनी हिन्दी" नाम से अभिहित है। दक्खिन या दक्षिण में व्यवहृत हिन्दी के रूप या शैली होने कारण इसका "दक्खिनी" नाम जड़ पकड़ गया। हिन्दी के इस दक्खिनी रूप में साहित्य-सृजन मुख्यतया बहमन-शाही, आदिलशाही, कुतुबशाही तथा बरीदशाही शासन-काल में (अर्थात् लगभग चौदह सौ ई० से सोलह सौ ई० तक) हुआ है। उत्तर में भक्तिकाल के दौरान प्रेममार्गी या सूफियों की जो काव्य परंपरा चली वही दक्खिनी में भी प्रचलित हुई। लगभग दो सौ सालों तक इसकी

उत्तर में भक्तिकाल के दौरान प्रेममार्गी या सूफियों की जो काव्य परंपरा चली वही दक्खिनी में भी प्रचलित हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आजकल दक्षिण में जिस साहित्यिक हिन्दी का प्रचलन है वह भाषा सौष्ठव या भाषा संरचना की दृष्टि से उत्तर भारत की हिन्दी से कभी भी कम स्तर की नहीं। यही नहीं दक्षिण के हिन्दी साहित्यकार इस बात पर विशेष ध्यान भी देते हैं कि उनकी हिन्दी शुद्ध एवं परिनिष्ठित हिन्दी ही रहे।

परंपरा चली और इस के पश्चात् अथवा सूफ़ी प्रेमाख्यानक कवियों व कतिपय गद्यकारों के साथ दक्खिनी साहित्य-परम्परा की इति भी नज़र आती है यद्यपि दक्खिनी के एकाधिक कवि व साहित्यकार बाद में भी हुए।

उन्नीसवीं शती में आकर अंग्रेज़ी-शासन अंग्रेज़ी-भाषा व साहित्य का प्रभाव, भारतीय नव-जागरण, स्वतंत्रता-संग्राम के विविध यत्न, राष्ट्रभाषा हिन्दी की लहरों का समूचे भारत वर्ष में उभार आदि के कारण भारत-भर में जो परिवर्तन आया, उसमें दक्खिनी ओझल हो गयी और खड़ीबोली हिन्दी का यत्र-तत्र-सर्वत्र स्वीकार हुआ। तदनंतर साहित्य क्षेत्र से दक्खिनी अपदस्थ हुई। फिर तो दक्षिण में बोली या लिखी जाने-वाली हिन्दी कदापि दक्खिनी न रही, खड़ीबोली हिन्दी ही रही। उन्नीसवीं शती से लेकर अद्यावधि दक्षिण में हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं का प्रणयन जो हो रहा है, वह आजकल दक्खिनी नाम से अभिहित नहीं होती, हो भी नहीं सकती। क्योंकि आजकल दक्षिण में जिस साहित्यिक हिन्दी का प्रचलन है वह भाषासौष्ठव या भाषा-संरचना की दृष्टि से उत्तर भारत की हिन्दी से कभी भी कम स्तर की नहीं। यही नहीं, दक्षिण के हिन्दी साहित्यकार इस बात पर विशेष-ध्यान भी देते हैं कि उनकी हिन्दी शुद्ध एवं परिनिष्ठित हिन्दी ही रहे उसमें देशी भाषा का प्रभाव न आ जाये, जिससे कि उत्तरवाले उसपर यह आरोप न लगाये कि अमुक लेखक की हिन्दी में मलयालम का पुट है कन्नड़पन है या तेलुगुपन है। किन्तु जहाँ तक भाषा के विकास की बात है, देशी भाषाओं से शब्दों, मुहावरों आदि को स्वीकारने में कोई दोष दिखाई नहीं पड़ता, उससे हिन्दी भाषा का विकास ही संभव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है तथा उससे उसके राष्ट्रभाषा-पद के भी और सार्थक निकलने की ही संभावना है । स्पष्ट है, दक्खिनी हिन्दी दक्खिन में मुसलमान शासकों के शासनकाल में प्रचलित हिन्दी का रूप रहा जिस में मुस्लिम संस्कृति की स्पष्ट छाप रही है । राष्ट्रभाषा के तौर पर खड़ीबोली हिन्दी के विकास के साथ-साथ उसका प्रचलन समाप्त होता गया तथा दक्षिण में भी उत्तर की ही भाँति साहित्य-सृजन के लिए परिनिष्ठित खड़ीबोली हिन्दी अपनायी गयी । यद्यपि साहित्य क्षेत्र मे हिन्दी का यह दक्खिनी रूप अब प्रचलित नहीं है तथापि इसका ऐतिहासिक व भाषावैज्ञानिक महत्व है । हिन्दी के प्रारंभिक रूपों तथा उसके ऐतिहासिक विकास के अध्ययन केलिए उसके अन्यान्य रूपों के समानान्तर दक्खिनी साहित्य का अनुशीलन भी नितांत आवश्यक हो जाता है ।

दक्खिनी के अधिकांश साहित्य के फ़ारसी लिपि में निश्चित होने फारसी शैली के अनुसरण करने, अरबी-फारसी शब्दों की भरमार होने तथा सर्वोपरि मुस्लिम संस्कृति की अभिव्यंजना करनेवाले होने के कारण दक्खिनी आगे चलकर उर्दू की सुदृढ़ बुनियाद कायम कर सकी । यही कारण है कि उर्दू साहित्य के इतिहास में पूरा का पूरा दक्खिनी साहित्य समाहित है ।

यहाँ हिन्दी के प्रेमाख्यानक काव्यों के विशेष सन्दर्भ में दक्खिनी हिन्दी में विरचित एक प्रेमाख्यानक काव्य "सैफुल मुलूक व बदीउल जमाल" का विश्लेषण किया जा रहा है । फारसी लिपि में रचित इस कृति का नागरी लिप्यंतरण "दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति, हैदराबाद" ने किया है । इसके संपादक है राजकिशोर पाण्डेय तथा अकबरुद्दीन सिद्दिकी ।

फारस निवासी सुलतान कुली द्वारा गोलकुण्डा में संस्थापित कुतुबशाही शासन के सभी शासक कला एवं साहित्य पर विशेष रूचि रखनेवाले थे । इसमें से अधिकांश सुल्तानों के शासन-काल में राज्य भाषा दक्खिनी थी । वजही, गवासी, जैसे दक्खिनी के प्रमुख कवि कुतुबशाही शासकों के आश्रय में रहनेवाले थे । दक्खिनी के प्रख्यात कवि गवासी के जीवनवृत्त सम्बन्धी पूरी जानकारी अभी उपलब्ध नहीं है । ये अब्दुल्ला कुतुबशाह (1625–1672) के समकालीन समझे जाते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैना सतवन्ती", सैफुल मुलूक व बदीउल जमाल" "तूतीनामा" आदि आपके प्रमुख काव्य ग्रंथ हैं। सैफुल मुलूक व बदीउल जमाल नामक मसनवी में कवि ने

"बरस एक हज़ार पंजतीस में*
किया खतम यू नजा दिन तीस में"

लिखा है इस से प्रकट होता है कि गवासी ने इस रचना की पूर्ति 1035 हिजरी अर्थात् सन् 1626 में की है। ग्रंथ के प्रारंभ में मसनवी शैली के मुताबिक आपने तत्कालीन शासक अब्दुल्ला कुतुबशाह की जो तारीफ की है उससे साफ मालूम होता है कि उन्हीं के काल में काव्य की रचना हुई है।

"सैफुल मुलूक व बदीउल जमाल" एक प्रेमाख्यानक काव्य है। मसनवी शैली के मुताबिक हम्द अर्थात् खुदा की स्तुति के साथ काव्य की शुरुआत होती है :—

"इलाही जगत का इलाही सो तूँ
करनहार जम बादशाही सो तूँ।

फिर यथाविधि पैगंबर की तारीफ खैलीफा की प्रशंसा, तत्कालीन सुल्तान अब्दुल्ला कुतुबशाह का विवरण व तारीफ आदि वर्णित है।

* सैफुल मुलूक व बदीउल जमाल पृ. 219

कुछ अपने बारे में भी कह कर कवि फिर कथा का समारंभ करते हैं।

"सैफुल मुलूक व बदीउल जमाल" काव्य एक सुखांत प्रेमकथा का आख्यान करनेवाला है। कथा बड़ी लम्बी है, घटना-बहुत भी। अत्यंत संक्षेप में काव्य की कथा वस्तु यों है।

एक दिन शाहजादा सैफुल मुलूक एक जरीन कपडे पर अंकित किसी सुन्दरी राजकुमारी का चित्र देखकर अकस्मात् मुग्ध हो जाता है। बादशाह से उसे पता चलता है कि गुलिस्ताने-एरम के बादशाह की बेटी बदीउल जमाल का वह चित्र है।

मिस्र देश के बादशाह आसिम नवल को यवन देश की राजकुमारी में एक पुत्र उत्पन्न हो जाता है - सैफुल मुलूक। जिस दिन बादशाह के पुत्र हुआ संयोगवश उसी दिन उनके वजीर के भी एक पुत्र पैदा होता है साअद। दोनों का लालन-पालन बादशाह के यहाँ होता है। एक दिन शाहजादा सैफुल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुलूक एक जरीन कपड़े पर अंकित किसी सुन्दरी राजकुमारी का चित्र देखकर अकस्मात् मुग्ध हो जाता है। बादशाह से उसे पता चलता है कि गुलिस्ताने-एरम के बादशाह की बेटी बदीउल जमाल का वह चित्र है।

साअद तथा अन्य साथियों के साथ सैफुल मुलूक राजकुमारी की खोज में निकल पडता है। गुलिस्ताने-एरम किस देश में है, उसका पता कहीं से भी नहीं चला। चीन देश पहुँचने पर एक सौ सत्तर वर्ष के एक बूढे से कुछ पता चला और वे सब उस ओर रवाना हुए। रास्ते में भीषण तूफान में पडकर उनकी नौकायें तितर-बितर हो गयीं।

सैफुल मुलूक साअद भी अलग-अलग हो गये। शाहजादा हब्शियों के किसी द्वीप में पहुँच जाता है और हब्शिय का बादशाह उसे अपनी बेटी के लिए योजन के रूप में भेज देता है। किन्तु हब्शियों की शाहजादी सैफुल मुलूक के सौन्दर्य पर मुग्ध हा जाती है और उससे शादी का प्रस्ताव करती है। इनकार करने पर शाहजादा कैदी हो जाता है। कैद से किसी न किसी

वहीं एक बगीचे में बदीउलजमाल व सैफुल मुलूक का आपस में मिलन होता है। दोनों प्रणयबद्ध हो जाते हैं।

प्रकार बचकर वह कई नगरों में घूमता-फिरता है। आखिर इसफंद द्वीप में वह पहुँचता है और वहीं सिंहल द्वीप की राजकुमारी को किसी दैत्य की कैद से मुक्त करने का उसे मौका मिल जाता है। उस राजकुमारी से उसे बदीउल जमाल का पता चलता है।

राजकुमारी के साथ सैफुल मुलूक सिंहल द्वीप पहुँचता है वहीं बिछुड़े हुए अपने मित्र साअद से उसका पुन: मिलन होता है। एक दिन बन्धनमुक्त अपनी सखी से मिलने के लिए बदीउल जमाल सिंहल द्वीप आती है। वहीं एक बगीचे में बदी उल जमाल व सैफुल मुलूक का आपस में मिलन होती है। दोनों प्रणयबद्ध हो जाते हैं। बदीउल जमाल की दादी शाहबानू दोनों की शादी करा देने का आश्वासन देती है। फिर भी कई बाधायें आती हैं और उन सब को हटा कर सैफुल मुलूक व बदीउलजमाल की शादी संपन्न हो जाती है। सिंहल द्वीप की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महमूद गज़नवी के लिए उनका वजीर दमिश्क के बादशाह के दरबार से दिलचस्प कहानियों का जो संकलन लाया उसमें सैफुल मुलूक व बदीउलजमाल की कहानी भी शामिल रही।

राजकुमारी से साअद की भी शादी हो जाती है। दोनों दूल्हा-दुल्हिन कुछ दिन तक गुलिस्ताने-एरम में रहने के बाद, दहेज में प्राप्त अपार धन-संपत्ति तथा दास-दासियो के साथ अपने देश लौट आते हैं।

प्रस्तुत प्रेमाख्यानक काव्य की कथावस्तु मौलिक तो नहीं है। कवि ने स्वयं अपने काव्य में कहा है कि सैफुल मुलूक व बदीउलजमाल की प्रसिद्ध प्रेम कहानी को काव्य रूप में वर्णित करके अमर हो जाने का उपक्रम ही वे कर रहे हैं। स्पष्ट है सैफुल मुलूक व बदीउलजमाल की कहानी पहले से ही प्रचलित थी। "अलिफ लैला" की यह एक मशहूर प्रेम कहानी है। पचतंत्र, हितोपदेश आदि की कहानियों की भांति "अलिफ़-लैला" अथवा "अरेब्यन नैट्स" की कहानियाँ भी लोक-कथाओं के रूप में विभिन्न देशों में प्रचलित थीं। "सैफुल-मुलूक नामक एक फ़ारसी-गद्य-ग्रंथ भी उपलब्ध होता है, जिसकी भूमिका में यह बताया गया है कि कहानियों के बड़े शौकीन महमूद गज़नवी के लिए उनका वजीर दमिश्क के बादशाह के दरबार से दिलचस्प कहानियों का जो संकलन लाया उसमें सैफुल मुलूक व बदीउल जमाल की कहानी भी शामिल रही। संभव है गवासी ने भी इस प्रकार के किसी मूलस्रोत से अपने काव्य का प्रणयन किया हो। किसी-किसी पण्डित के अनुसार गवासी ने अपने काव्य का कथानक उक्त फ़ारसी गद्य-ग्रन्थ से लिया है। किसी किसी के अनुसार गवासी कृत यह मसनवी किसी फारसी ग्रन्थ का अनुवाद मात्र है। किन्तु प्रस्पष्ट प्रमाणों के अभाव में इस बात पर अभी तक कोई निर्णय नहीं लिया गया है। जो भी हो, गवासी ने अपने काव्य में तद्विषयक कोई सूचना नहीं दी है। इस परिस्थिति में यह मानना समीचीन होगा कि गवासी ने सैफुल मुलूक व बदीउल जमाल की प्रसिद्ध लोककथा के आधार पर अपनी मसनवी का प्रणयन किया है।

हिन्दी के प्रेमाख्यानक काव्यों की परम्परा बेहद लम्बी रही है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार्य शुक्लजी ने "मृगावती" के प्रणेता कुतबन को प्रेमाख्यानक परंपरा का प्रथम कवि माना है तो आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदीजी ने ईश्वरदत्त कृत सत्यवती कथा को, डा० रामकुमारवर्मा ने मुल्ला दाऊद कृत "चन्दायन" (13797) की तथा डा० गणपतिचन्द्र गुप्त ने नवीनतम शोधों के आधार पर हँसावली (सन् तेरह सौ सत्तर में रचित) को हिन्दी की प्रेमाख्यानक परंपरा का सर्वप्रथम काव्य माना है। स्पष्ट है दक्खिनी हिन्दी में इन के पश्चात् ही प्रेमाख्यानक काव्यों की रचना हुई है। निजामी कृत मसनवी "कदमराव पदमराव" जिसे दक्खिनी का प्रथम काव्य होने का श्रेय प्राप्त है, उसका रचनाकाल चौदह सौ बीस से पैंतीस के बीच का माना जाता है। वस्तुत: इन हिन्दी काव्यों का प्रभाव भी पडा है।"

हिन्दी के "हंसावली" "चंदायन" "मृगावती", "पद्मावत्", "चित्रावली" जैसे प्रेमाख्यानक काव्यों के विशेष सन्दर्भ में दक्खिनी के प्रेमाख्यानक काव्य "सैफुल मुलूक व वदीउलजमाल" को परखने पर यह स्पष्ट ज्ञात होगा कि हिन्दी के

इस काव्य की कथावस्तु मूलत: अभारतीय है। चीन, मिश्रदेश, वहाँ के जिन्न, हब्शी, दैत्य आदि के वर्णनों से यह काव्य भरा पडा है।

प्रेमाख्यान काव्यों में जहाँ भारतीय साहित्य परंपरा का ही अधिक अनुसरण हुआ है वहाँ प्रस्तुत काव्य में फारसी मसनवी के अनुसरण की प्रवृत्ति ही मुख्यतया दृष्टिगोचर होती है। हिन्दी के अधिकांश सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों में परोक्ष-सत्ता, अलौकिक प्रेम आदि का बीच-बीच में संकेत मिलता है। "सैफुल मुलूक व बदी उल जमाल" इससे मुक्त है। उसमें प्रेमकथा का स्वच्छन्द आख्यान ही मिलता है। सूफी-सिद्धान्त विवेचन प्रकट रूप से इसमें कम ही मिलता है। हिन्दी के सूफी कवियों ने मख्यतया भारतीय कहानियों को अपने काव्य का आधार बनाया है। (उसमान की "चित्रावली" जानकवि का "लैलामजुनु जैसे काव्य इसके अपवाद स्वभाव अवश्य पेश किये जा सकते हैं।) किन्तु इस काव्य की कथावस्तु मूलत: अभारतीय है। चीन, मिश्रदेश, वहाँ के जिन्न, हब्शी, दैत्य आदि के वर्णनों से यह काव्य भरा पडा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्खिनी हिन्दी की भाषिक संरचना के अध्ययन में यह काव्य काफी सहायक है। फारसी लिपि में रचित तथा अरबी-फारसी शब्दों की भरमार के कारण उर्दू साहित्य के अन्तर्गत भी इस कृति की गणना होती है।

अन्यान्य प्रेमाख्यानक काव्यों की भांति इस काव्य में भी चित्र दर्शन से नायक-नायिका की खोज में नायक का प्रस्थान, विभिन्न जगहों में घूमना-फिरना, तूफान में पडकर नौका का डूबना, अनेक कठिनाइयों को झेलने के उपरान्त अन्त में नायक-नायिका का मिलन आदि कथानक-रूढियों का प्रयोग इसमें भी हुआ है जो कि भारतीय प्रेमाख्यानक परंपरा के अनुकूल है। 'पद्मावत्'' 'मृगावती'' आदि काव्य जहाँ दुखान्त हैं वहाँ ''चित्रावली'' ''हंसावली'' जैस काव्यों की भांति ''सैफुल मुलूक'' व वदीउलजमाल सुखांत काव्य हैं।

फ़ारसी की मसनवी शैली पर यह काव्य विरचित है। मसनवी शैली के अनुकूल इसमें विभिन्न शीर्षकों के अन्तर्गत कथा का आख्यान हुआ है। तत्सम, तद्भव व देशी शब्दों के साथ-साथ इसमें अरबी, फ़ारसी शब्दों की भी अधिकता है। साढ़े तीन सौ वर्ष पुरानी दक्खिनी हिन्दी की भाषिक-संरचना के अध्ययन में यह काव्य काफ़ी सहायक है। फ़ारसी लिपि में रचित तथा अरबी-फ़ारसी शब्दों की भरमार के कारण उर्दु साहित्य के अन्तर्गत भी इस कृति की गणना होती है।

रीडर (हिन्दी विभाग)
पत्राचार पाठक्रम-संस्थान
केरल विश्वविद्यालय, तिरुवनन्तपुरम

है राष्ट्रभाषा भी अभी तक देश में कोई नहीं,
हम निज विचार जना सके जिससे परस्पर नब कहीं।
इस योग्य हिन्दी है तदपि अब तक न निज पद पा सकी,
भाषा बिना भावैकता अब तक न हममें आ सकी।।

राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी के प्रबल स्तंभ एवं मार्गदीप

डा० गंगाशरण सिंह

[1905—1988]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरभाष । 61378 तार । "जय हिन्दी"

केरलज्योति

पुष्प 23
दल 6

एक प्रति—1 रु० 50 पै०
वार्षिक—15 रु०

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका
सितंबर 1988

संपादकीय

समाज सेतु स्व० गंगा बाबू को श्रद्धांजलि

"लो उतर गयी हल्दी के रंग की सांझ एक
लो फूल जवा का एक और झर गया आज"

श्री. शंकर दयाल सिंह द्वारा संपादित ग्रंथ 'बाबू गंगाशरण सिंह—व्यक्ति या संस्था' में श्री. गुलाब खंडेलवाल ने अपनी एक कविता का उल्लेख किया है जिसे पढ़ने पर गंगा बाबू ने कंठस्थ करके मित्रों में वितरित किया था। उस कविता की आदिम पंक्तियाँ जो ऊपर उद्धृत की गयी हैं अब स्वयं गंगा बाबू के जीवन पर ही सार्थक हो गयीं।

समाज की सेवा केलिए समर्पित उनके त्यागोज्ज्वल जीवन की ज्योति 19-8-1988 को एकाएक बुझ गयी।

बिहार की तपोभूमि में उनका जन्म हुआ। विद्यार्थी जीवन से ही वे सामाजिक कार्यों में रुचि लेते रहे। 1920-21 में गांधीजी के आह्वान पर वे पढाई छोडकर राष्ट्र सेवा में जुट गये। बिहार प्रदेश कांग्रेस कमेटी के मंत्री के पद पर रह कर, कांग्रेस के समाजवादी दल के नेता रह कर, अखिल भारतीय समाजवादी दल के अध्यक्ष रह कर, करीब बीस वर्षों तक राज्य सभा के सदस्य रह कर और अनेकों शैक्षिक, सामाजिक व सांस्कृतिक संस्थाओं से जुडे रह कर आपने देश की बहुमूल्य सेवा की। राजेन्द्र बाबू और जयप्रकाश नारायण के अंतरंग मित्र रहे।

उनके निधन से सबसे अधिक क्षति राष्ट्र भाषा प्रचार अभियान के क्षेत्र में हुई है। बिहार हिन्दी विद्यापीठ के तो वे कुलाधिपति रहे। भारत की विविध स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं को अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के माध्यम से एक सूत्र में पिरोने का महत्वपूर्ण कार्य गंगा बाबू ने किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में

पचास वर्षों की हिन्दी सेवा 3
श्री. एम. के. वेलायुधन नायर

राष्ट्रभाषा को हृदय से अपनायें 11
श्री. ललितेश्वर प्रसाद शाही

हिन्दी भाषी राज्यों में दक्षिण की भाषायें भी पढायें 16

पं० हृषीकेश शर्मा 19
डॉ० वी. गोविन्द शेनाय

आन्ध्र प्रान्त में दक्खिनी हिन्दी का साहित्य और उसमें भाषा का स्वरूप 23
डॉ० वै. वेंकटरमण राव

अपनापन का अभिमान और सम्मान 37
क्र कु

पाठकों के पत्र 40

केन्द्र मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा संस्थापित उक्त संघ की बीस सदस्य संस्थायें हैं जिन में केरल हिन्दी प्रचार सभा भी है । संस्था संघ की स्थापना सन 1964 में हुई । तब से मृत्युपर्यन्त गंगा बाबू उसके अध्यक्ष रहे । संघ की सदस्य संस्थाओं की परीक्षाओं का स्तर सुधारने में पाठ्यक्रमों में एकरूपता लाने में और परीक्षाओं को उचित मान्यता दिलाने में संघ को जो सफलता मिली है उसका प्रमुख कारण गंगा बाबू का प्रभावी व्यक्तित्व ही था जिस का निर्माण देश के प्रति अटूट प्रेम, सहधर्मियों के प्रति अपार स्नेह, विरोधियों को भी जीत लेनेवाली अजातशत्रुता, कटुता को मधुरता में बदल देनेवाला नर्म, 'पेन मेकर' को 'पीस मेकर' मानकर अस्पताल से अवकाश लेकर राष्ट्र सेवा में लगने का स्थिरोत्साह और कष्टसहिष्णुता आदि से हुआ था । वे हिन्दी प्रचारकों के प्रेरणास्त्रोत थे, मार्गदीप थे । हिन्दीतर भाषा भाषियों और हिन्दी भाषियों के बीच हिन्दी के माध्यम से मैत्री स्थापित करनेवाले समाज सेतु थे स्व० गंगा बाबू।

केरल हिन्दी प्रचार सभा के प्रति उनका अतुल स्नेह रहा । कई बार वे केरल हिन्दी प्रचार सभा में पधारे। सभा के कार्यकर्ताओं के साथ रहे । उनको प्रेरणा दी । उनका उत्साह बढाया। उन्हें दिशा दर्शन दिया । सन 1981 में

(शेष पृष्ठ 22 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पचास वर्षों की हिन्दी सेवा

श्री. एम. के. वेलायुधन नायर
मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा

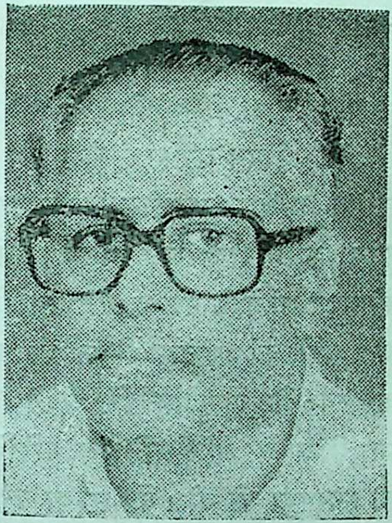

[30-7-1988 को केरल हिन्दी प्रचार सभा में आयोजित पुरस्कार वितरण सम्मेलन में दिया गया स्वागत भाषण ।]

परम श्रद्धेय केन्द्र मानव संसाधन विकास मंत्रालय के राज्य मंत्री श्री. ललितेश्वर प्रसाद शाही जी, केरल के माननीय विधान सभाध्यक्ष श्री वर्कला राधाकृष्णन जी, केरल विश्वविद्यालय के संपूज्य कुलपति डा० जी. बालमोहन तंपी जी, तिरुवनन्तपुरम संसदीय निर्वाचन क्षेत्र के आदरणीय सांसद श्री. ए. चार्ल्स जी, आज पुरस्कृत होनेवाले कर्मठ हिन्दी प्रचारक बन्धुओ, समर्थ छात्र-छात्राओ और अन्य सभी सज्जनो,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल हिन्दी प्रचार सभा का परम सौभाग्य है कि इस पुरस्कार वितरण सम्मेलन का उद्घाटन करने केलिए भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के राज्य मंत्री एवं हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के अनन्य प्रेमी श्री. ललितेश्वर प्रसाद शाही जी हमारे बीच पधारे हुए हैं। अध्यक्षता करने केलिए विधान सभा के अध्यक्ष श्री. वर्कला राधाकृष्णन जी और आशीर्वाद भाषण देने केलिए केरल विश्वविद्यालय के कुलपति तथा हिन्दी के प्रकांड पंडित डा० जी. बालमोहन तंपी जी तथा हमारे प्रिय नेता एवं सांसद श्री. ए. चार्ल्स जी हमारे बीच पधारे हुए हैं।

केरल हिन्दी प्रचार सभा देश की उन बीस स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं में एक है जो भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा संस्थापित अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ से संबद्ध है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जब महात्मा गांधी ने देश की भावात्मक एकता को सुदृढ करने के महान उद्देश्य को लेकर हिन्दीतर प्रान्तों में हिन्दी प्रचार करने का आह्वान किया था तब उस आह्वान को शिरोधार्य मानकर स्व० के. वासुदेवन पिल्लै ने हिन्दी प्रचार को अपना जीवन व्रत बना लिया था और प्रतिकूल परिस्थिति से जूझकर उन्होंने इस संस्था की स्थापना की थी। यह संस्था पचास वर्षों से केरल भर में हिन्दी को लोकप्रिय बनाने के अपने लक्ष्य की सिद्धि केलिए निरंतर प्रयत्न शील रही है। केरल के राज नेताओं, साहित्यकारों और शिक्षाविदों के सहयोग से यह संस्था अपना कार्य सफलता पूर्वक करती आ रही है। केरल में हिन्दी का वातावरण उत्पन्न करने में सभा एक सीमा तक सफल हुई है। इसके परिणाम स्वरूप आज केरल में हिन्दी सहज रूप से अपनायी जा रही है। स्कूली स्तर पर पाँचवीं कक्षा से दसवीं कक्षा तक हिन्दी अनिवार्य रूप से पढाई जाती है। कॉलेजों में द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी सीखने वाले विद्यार्थियों की संख्या मलयालम सीखनेवालों की अपेक्षा दिनों दिन बढ़ती जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही है। केरल स्थित केन्द्र सरकारी कार्यालयों के कुल 18000 कर्मचारियों में अस्सी प्रतिशत कर्मचारी हिन्दी जानते हैं। राजभाषा के रूप में हिन्दी का प्रगामी प्रयोग करने में केरल की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियाँ आगे हैं। केरल की प्रान्तीय सरकार स्कूली पाठ्यक्रम में हिन्दी को अंग्रेजी से अधिक प्रमुखता देने के पक्ष में है। केरल विश्वविद्यालय अभी शीघ्र ही हिन्दी विभाग आरंभ करने जा रहा है। केरल विश्वविद्यालय के नये कुलपति हिन्दी जाननेवालों की सभाओं में हिन्दी में भाषण देते हैं। केरल से हिन्दी की उच्चस्तरीय लघु पत्रिकायें निकल रही हैं। केरल के अनेक लेखक हिन्दी को अनूदित एवं मौलिक रचनाओं से संपुष्ट कर रहे हैं। कुल मिलाकर कह सकते हैं कि केरल का वातावरण हिन्दी का प्रचार, प्रयोग एवं विकास केलिए अत्यंत अनुकूल बन गया है।

अब आवश्यकता इस बात की है कि केरल में हिन्दी प्रचार को अधिक वैज्ञानिक ढंग से सुसंगठित किया जाये और हिन्दी अध्यापन के स्तर में वांछित सुधार लाथी जाये। अब विद्यार्थियों में हिन्दी सुन कर और पढ कर समझने की क्षमता उत्पन्न की जा रही है। यदि हिन्दी को संपर्क का माध्यम बनाना है तो विद्यार्थियों में हिन्दी बोलने की क्षमता भी उत्पन्न करनी होगी। इस केलिए हिन्दी अध्यापकों और प्रचारकों को अधिक प्रशिक्षण देना होगा। इस उद्देश्य से सभा एक हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान आरंभ करना चाहती है। इस संस्थान में ऐसे अध्यापकों को भी तैयार किया जायेगा जो हिन्दी प्रान्तों में त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत मलयालम भाषा और साहित्य हिन्दी माध्यम में सिखा सकें।

एक और क्षेत्र भी है जिस ओर हमें पर्याप्त ध्यान देना होगा। केरल में अनेकों ऐसे युवक हैं जो हिन्दी एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण होकर नौकरी की तलाश करते करते हताश हो गये हैं। राजभाषा नियम के अनुसार राजभाषा के रूप में हिन्दी का उपयोग बढाने केलिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यद्यपि केरल स्थित केन्द्र सरकारी कार्यालयों, निगमों आदि में भी हिन्दी अधिकारियों और अनुवादकों आदि के पदों का सृजन हो रहा है तो भी इन पदों में प्राय: उत्तर भारत के हिन्दी भाषा भाषी नियुक्त होते हैं। केरल के युवकों को इन पदों केलिए सक्षम बनाने केलिए सभा हिन्दी पत्राचार, अनुवाद एवं पत्रकारिता में एक वर्षीय स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम चलाती है। इसे और भी गहन बनाने का उद्देश्य है।

सभा के कुछ केन्द्रों में हिन्दी टंकण एवं आशुलिपि विद्यालय चल रहे हैं। इनकी संख्या बढाने की मांग जनता से आ रही है।

केरल में हिन्दी प्रकाशन की सुविधाएँ अत्यंत सीमित हैं। इस कमी को दूर करने केलिए केरल हिन्दी प्रचार सभा ने राष्ट्रवाणी मुद्रणालय स्थापित किया है। उसका भी समयानुकूल विकास अपेक्षित है।

केरल में हिन्दी ग्रन्थालयों की कमी है। इसलिए हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं का व्यापक प्रचार नहीं हो पा रहा है। इस कमी को दूर करने केलिए सभा ने अपने विद्यालयों में हिन्दी ग्रन्थालयों का आरंभ किया है। सभा के तिरुवनन्तपुरम परिसर में स्थापित स्व० के. वासुदेवन पिल्लै ग्रन्थालय में संप्रति 12500 से अधिक हिन्दी ग्रन्थ हैं। केरल विश्वविद्यालय ने अपने शोध छात्रों के उपयोगार्थ इसे उचित मान्यता दी है। स्थानाभाव के कारण सभा की ये सब योजनाएँ अवरुद्ध पड़ी हुई हैं। आशा है कि केन्द्र सरकार की उदार सहायता से हम निकट भविष्य में ही अपना एक विशाल भवन बना पायेंगे जिस में सभा के केन्द्र कार्यालय, प्रकाशन विभाग, केन्द्रीय हिन्दी महाविद्यालय, साहित्याचार्य महाविद्यालय, हिन्दी टंकण एवं आशुलिपि विद्यालय, हिन्दी अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान, स्नातकोत्तर हिन्दी केन्द्र, शोधकेन्द्र, स्व० के. वासुदेवन पिल्लै स्मारक हिन्दी ग्रन्थालय आदि के लिए पर्याप्त सुविधायें मिलेंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज के इस सम्मेलन में सभा द्वारा 1987-88 में संचालित 'हिन्दी प्रथम' से 'साहित्याचार्य' तक की परीक्षाओं में राज्य स्तर पर प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त विद्यार्थियों को पुरस्कार दिये जायेंगे। उक्त परीक्षाओं में सर्वाधिक विद्यार्थियों को प्रस्तुत करनेवाले प्रमुख प्रचारकों को नकद पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे और सर्वोत्तम प्रचारक को सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष स्व० एस. वी. कुक्किल्लाया के नाम पर 'एस. वी. कुक्किल्लाया स्मारक स्वर्ण पदक' दिया जायेगा। साथ ही सभा के हिन्दी स्नातकोत्तर केन्द्र से 1987 में केरल विश्वविद्यालय की हिन्दी एम. ए. की परीक्षा में सम्मिलित विद्यार्थियों में सर्वप्रथम निकली छात्रा को पुरस्कार प्रदान किया जायेगा। मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार की सहायता से आयोजित इस समारोह में दस हिन्दी विद्यालयों के ग्रन्थालयों को हिन्दी ग्रन्थ भी प्रदान किये जायेंगे।

इस सम्मेलन में पधारे हुए विशिष्ट अतिथियों का स्वागत करना मेरा सुखद कर्तव्य है। सम्मेलन का उद्घाटन कर रहे हैं केन्द्र मानव संसाधन विकास मंत्रालय के राज्य मंत्री श्री. ललितेश्वर प्रसाद शाहीजी। आपका जन्म भगवान गौतम बुद्ध के चरणस्पर्श से परिपूत वैशाली में हुआ। वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण करके आपने 1942 के 'भारत छोडो आन्दोलन' में भाग लिया और तीन वर्ष तक जेल में रहे। बिहार की प्रदेश कांग्रेस कमेटी में कार्य करने के पश्चात आप 1957 से वर्षों तक बिहार सरकार के उद्योग, तकनीक शिक्षा, योजना और जन संपर्क आदि विभागों के मंत्री रहे। बिहार की तकनीकी शिक्षा बोर्ड, बिहार राज्य निर्माण निगम वैशाली शिक्षा प्रतिष्ठान, राष्ट्रीय किसान संगठन आदि के अध्यक्ष के रूप में तथा बिहार विश्वविद्यालय के सेनट तथा सिंडिकेट के सदस्य के रूप में आपने देश की अमूल्य सेवा की है। आपकी लोकप्रियता इतनी अधिक है कि बिहार विधान सभा में सन् 1952 से 1982 तक आप छ बार चुने गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्ष परंपरा की योग विद्या जैसे विषयों में आपकी बडी रुचि है। जब से आपने केन्द्र मानव संसाधन विकास संत्रालय में राज्य मंत्री का पद संभाला है तब से हिन्दी तथा इतर भारतीय भाषाओं के विकास में तीव्रता लाने में आप दत्तचित हैं। स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं पर सदा आपका वरद हस्त रहा है और केरल हिन्दी प्रचार सभा आपकी विशिष्ट कृपा का पात्र रही है। हमारे बीच पधार कर आपने हमारे प्रति अपना असीम स्नेह दर्शाया है। हमें पूरा विश्वास है कि आपके सफल नेतृत्व में हिन्दी प्रचार के मार्ग की सभी विघ्न-बाधायें दूर की जा सकेंगी। परम श्रद्धेय शाहीजी, हम आपका विनम्रता पूर्वक स्वागत करते हैं।

केरल विधान सभा के अध्यक्ष श्री वर्कला वी. राधाकृष्णनजी इस सम्मेलन में अध्यक्षता कर रहे हैं। आप अनुभवी राजनीतिक कार्यकर्ता हैं और देश की ज्वलंत समस्याओं के प्रति अतीव जागरूक हैं। देश की बढती हुई निरक्षरता की विभीषिका की ओर आप बार-बार जनता का ध्यान आकृष्ट करते रहे हैं और इस बात का आह्वान करते रहे हैं कि हिन्दी भाषी प्रान्तों की निरक्षरता को मिटाने में भी हिन्दी के कार्यकर्ता और स्वैच्छिक संस्थाएँ अपना योगदान दें। भारतीय संस्कृति के उदात्त मूल्यों पर आप गर्व करते हैं और इस बात पर अतीव चिंतित हैं कि आज की पीढी में हमारे पूर्वजों के देशप्रेम और धर्मनिष्ठा का लोप हो रहा है। केरल हिन्दी प्रचार सभा के आप बडे हितचिन्तक और निकट बन्धु हैं। सभा के अनेक सम्मेलनों में आप ससंतोष सक्रिय भाग लिया करते है और हिन्दी की बढती हुई प्रधानता और उपयोगिता के प्रति केरलीय जनता का ध्यान आकृष्ट किया करते हैं। आदरणीय श्री वर्कला राधाकृष्णन जी, हम आपका सादर स्वागत करते हैं।

आज आशीर्वाद भाषण देनेवाले डा० जी. बालमोहन तंपी जी यद्यपि जन्म से मलयाली हैं तो भी उनका कार्य क्षेत्र मुख्यतः हिन्दी भाषी क्षेत्र रहा है। केरल विश्वविद्यालय के कुलपति का पद ग्रहण

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने के पूर्व आप बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय में अंग्रेज़ी विभाग के अध्यक्ष थे। हमें इस बात का गर्व है कि आप केरल हिन्दी प्रचार सभा के प्राक्तन छात्र हैं और सभा की हिन्दी भूषण परीक्षा आपने उत्तीर्ण की है। उत्तर में रहकर आपने हिन्दी भाषा और साहित्य का उच्च अध्ययन किया। हाल ही में आपने केरल विश्वविद्यालय द्वारा दक्खिनी हिन्दी पर आयोजित संगोष्ठी में हिन्दी में जो विद्वत्तापूर्ण भाषण दिया, उससे हिन्दी के विद्वान श्रोता बहुत प्रभावित हुए। केरल विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग आरंभ करने केलिए आप भरसक प्रयत्न कर रहे हैं। पूजनीय डा० तंपी जी, हम आपका सस्नेह स्वागत करते हैं।

तिरुवनन्तपुरम संसदीय निर्वाचन क्षेत्र के सांसद एवं केरल के जनप्रिय राजनेता श्री. ए. चार्ल्स जी भी पुरस्कृत छात्रों एवं हिन्दी प्रचारकों को आशीर्वाद देने यहाँ पधारे हैं। आप प्रारंभ से ही धार्मिक और सामाजिक कार्यों में रुचि लेते रहे हैं। सर्वधर्म मैत्री की स्थापना केलिए आप निरन्तर प्रयत्नशील हैं। धर्म, भाषा आदि के आधार पर देश में जो विघटनकारी प्रवृत्तियाँ सिर उठा रही हैं उनसे श्री. चार्ल्स जी के हृदय में बडा दुख होता है और वे जनता से यह आह्वान किया करते हैं कि हम राष्ट्रभाषा के प्रचार के द्वारा राष्ट्र की भावात्मक एकता को सुदृढ बनायें। गांधीवादी मूल्यों के वे अनन्य उपासक हैं। आप केरल हिन्दी प्रचार सभा के परम मित्र हैं और समय समय पर सभा के सम्मेलनों में भाग लेकर हिन्दी प्रचारकों को मार्गदर्शन देते रहे हैं। आदरणीय श्री चार्ल्स जी, हम आपका सादर स्वागत करते हैं।

आज पुरस्कृत होनेवाले समर्थ छात्रों एवं त्यागनिष्ठ प्रचारकों का हम हार्दिक अभिनन्दन करते हैं। जैसे सांसद श्री. ए. चार्ल्स जी कहा करते हैं हमें हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन के द्वारा नयी पीढी में सत्य धर्म जैसे उन सभी मूल्यों का विकास करना है जिन्हें पुनः प्रतिष्ठित करने का स्वप्न स्वतंत्रता संग्राम में मर मिटे हमारे धीर पूर्वजों ने देखा था। साधारण शिक्षा से ये मूल्य प्राप्त करना अब असंभव सा हो गया है। यह बडे गर्व की बात है कि आज भी कई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रचारक स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों की अटूट कड़ी के रूप में देश प्रेम से प्रेरित होकर हिन्दी प्रचार के साथ साथ खादी-प्रचार, मद्य निषेध, हरिजनोद्धार, सर्वधर्ममैत्री, निरक्षरता उन्मूलन जैसे अन्य रचनात्मक कार्य में भी लगे हुए हैं। जैसे केरल के विधान सभाध्यक्ष श्री. वर्कला राधाकृष्णनजी कहा करते हैं, स्वतंत्रता संग्राम के एक सशक्त शस्त्र के रूप में हिन्दी प्रचार अभियान आरंभ हुआ था और इस शस्त्र के संचालन में हिन्दी प्रचारकों को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। इनमें अनेकों आज आर्थिक संकट में हैं। गांधीजी का आह्वान पाकर वे जेल गये बिना हिन्दी प्रचार करते रहे। वे जेल गये होते तो उन्हें स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों को दिया जानेवाला पेन्शन मिलता। गत वर्ष केन्द्र मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने केरल के दस ऐसे हिन्दी प्रचारकों को छः छः हजार रुपये पुरस्कार देने का अनुदान केरल हिन्दी प्रचार सभा को दिया। इस पुरस्कार योजना का स्वागत सर्वत्र हुआ है और देश भर की स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं ने इस योजना की प्रशंसा की है। आशा है इस वर्ष भी संकट ग्रस्त हिन्दी प्रचारकों को आश्वासन पहुँचाने में केन्द्र सरकार हमारी सहायता करेगी।

हम उन अभिभावकों का भी अभिनन्दन करते हैं जिन्होंने अपने बच्चों को राष्ट्रभाषा हिन्दी का अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया। हिन्दी अध्ययन की सुविधा प्रदान करने से हम बच्चों के लिए राष्ट्रीय जीवन की मुख्य धारा में जा मिलने का मार्ग खोल देते हैं। इससे उनका और देश का परमहित होगा।

यहाँ उपस्थित माननीय अतिथियों, पत्रकारों, प्रचारकों भाषा प्रेमियों तथा अन्य सभी सज्जनों का भी हम भव्य स्वागत करते हैं।

जय हिन्द ! जय हिन्दी !!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी सेवा का सम्मान

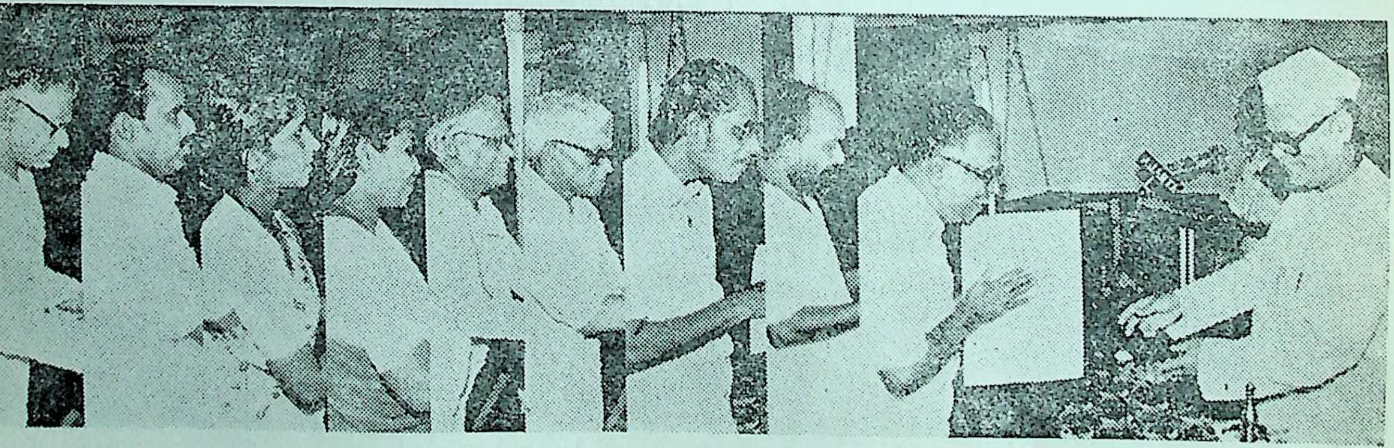

श्रेष्ठ प्रचारकों को पुरस्कार दे कर सम्मानित कर रहे हैं केन्द्र मानव संसाधन विकास मंत्रालय के राज्य मंत्री श्री ललितेश्वर प्रसाद शाही । (बायें से) श्री. के एस. कुमार श्री. वी वेलप्पन नायर, श्रीमती बी. कृष्णकुमारी, श्रीमती सी. शान्तम्मा, श्री के. पी. के. पिषारटी, श्री. के. कुञ्ञन पिल्लै, श्री. के. एम. सामुवेल, श्री. एन. एन. दामोदरन एवं श्री. के. केशवन नायर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजयाह्लाद

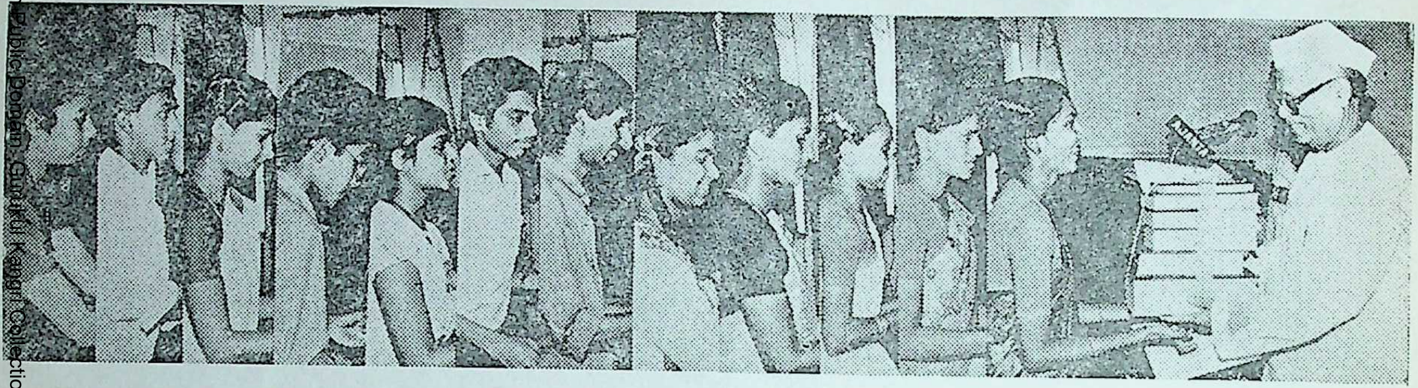

केन्द्र मानव संसाधन विकास मंत्रालय के राज्य मंत्री श्री. ललितेश्वर प्रसाद शाही के कर कमलों से पुरस्कार ग्रहण करते हुए समर्थ छात्र ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा को हृदय से अपनायें

श्री. ललितेश्वर प्रसाद शाही
राज्य मंत्री, केन्द्र मानव संसाधन
विकास मंत्रालय
भारत सरकार

[केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा 30-7-1988 के आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में दिया गया उद्घाटन भाषण]

मेरे लिए यह एक बहुत ही हर्ष का विषय है कि केरल हिन्दी प्रचार सभा ने अपने हिन्दी प्रचारकों को सम्मानित करने के लिए पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया है। इस अवसर पर मुझे आमंत्रित कर जो सम्मान दिया है उसके लिए मैं सभा को अपना हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ।

हमारा भारत एक रंग-बिरंगी संस्कृति की वह वाटिका है जिसमें हर प्रकार के भाषारूपी पुष्प फूलते और खिलते हैं। यह इस देश की प्राकृतिक देन है जो अन्यत्र संसार में कहीं देखने को नहीं मिलती है। किसी भी एक देश में इस प्रकार की विभिन्न संस्कृतियाँ एवं भाषाएँ साथ-साथ पलते, फूलते एवं फलते दिखाई नहीं पड़ती हैं। यह देश की सांस्कृतिक संपन्नता का द्योतक है। इसे और संपन्न, सुदृढ़ करना एवं आगे बढ़ाना हम प्रत्येक भारतवासी का कर्तव्य है। साथ ही साथ हमारा यह प्रयत्न हो कि क्षेत्रीय स्तर पर

हमारा भारत एक रंग-बिरगी संस्कृति की वह वाटिका है जिसमें हर प्रकार के भाषा-रूपी पुष्प फूलते और खिलते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा प्रयास है कि भारत में ऐसी स्थिति पैदा हो कि सभी भाषाई लोग अपनी भाषाओं के साथ-साथ राष्ट्रभाषा हिन्दी को हृदय से अपनाएँ और इसे अपनी भाषा समझ कर अपनाएँ।

भाषाई मजबूत स्तम्भ स्थापित हो जिससे संस्कृति के विकास को बल मिले।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और देश के अन्य महान नेताओं ने जिस स्वतंत्र भारत की परिकल्पना अपने दिल और दिमाग में की थी उसको अमली जामा पहनाना हमारा परम कर्तव्य व धर्म है। उन सब का एक स्वप्न था कि देश की एकता एवं अखंडता को और अधिक मजबूत बनाने वाली कड़ी "हिन्दी भाषा" को राष्ट्र की भाषा स्वीकार कर एक ऐसा भारत बने जिसकी संसार में अपनी एक छवि हो, उसकी अपनी एक भाषा हो और सामासिक संस्कृति को विश्व में ख्याति मिले। राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत, भारतीय संविधान में सभी भारतीय भाषाओं के विकास का प्रयोजन किया गया है। सरकारी स्तर पर सभी भाषाओं के विकास के लिए ठोस कदम उठाए गए हैं तथा आगे प्रयास भी जारी है कि राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं विकास के साथ साथ क्षेत्रीय भाषाओं का भी विकास हो।

हमारा प्रयास है कि भारत में ऐसी स्थिति पैदा हो कि सभी भाषाई लोग अपनी भाषाओं के साथ-साथ राष्ट्रभाषा हिन्दी को हृदय से अपनाएँ और इसे अपनी भाषा समझ कर अपनाएँ। हिन्दी भाषा के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना, भ्रातृभाव एवं सद्भाव बढ़े। लोगों के हृदयों और दिमागों में हिन्दी भाषा को स्थान मिले। इसी भावना से प्रभावित होकर राष्ट्रपिता बापू ने राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार को प्राथमिकता दी और उनके आह्वान पर उनके सभी सहयोगियों ने हिन्दी को न केवल अपनाया बल्कि बहुत सी स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं को स्थापित कर हिन्दी के प्रचार को धर्मरूप मानकर प्रचार किया। उस समय महसूस किया गया कि अंग्रेजी भाषा भारत के जन समूह की आम भाषा नहीं हो सकती और न ही उसके द्वारा देश की प्रगति हो सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस आह्वान से बहुत सी स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं का दक्षिणी भारत तथा दूसरे अहिन्दी भाषी प्रांतों में जन्म हुआ जिनमें मुख्यतः दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा और केरल हिन्दी प्रचार सभा हैं।

भाषा तब पनपती है जब इसमें जन साधारण का योगदान हो। भाषा को क्लिष्ट करने से उसकी उन्नति नहीं की जा सकती – ऐसा मेरा मत है। यदि हमारा ध्येय हिन्दी को सम्पर्क-भाषा बनाने का है तो उसे इस तरह से सरल करना पड़ेगा कि अन्य प्रदेशों की आम जनता उसे समझ सके और अपनी दैनिक जिन्दगी में उसे प्रयोग में ला सके। इसका यह तात्पर्य नहीं है कि हिन्दी मानक भाषा न हो। विज्ञान और टेक्नालाजी के विषय पढ़ाने के लिए तो यह जरूरी है कि टेक्निकल शब्द ऐसे हों जिनके माने हर प्रदेश में एक ही समझ जायें।

भारत आज एक नये युग के द्वार पर खड़ा है। प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी ने राष्ट्र को आह्वान किया है कि वह वर्तमान चुनौतियों का सामना करते हुए 21 वीं शताब्दी में प्रवेश करने के लिए अग्रसर हो। इसमें राष्ट्रीय एकता का सबसे ऊँचा

मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि केरल हिन्दी प्रचार सभा ने जो कार्य हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए किए हैं उनसे राज्य में एक ऐसा वातावरण पैदा हुआ है जो अनुकरणीय है और प्रशंसनीय है।

स्थान है। हरेक नागरिक को भारत के चमकते हुए एवं उज्ज्वल भविष्य की ओर कदम से कदम मिलाकर इस पथ पर अग्रसर होना है। हिन्दी राष्ट्रीय एकता की दिशा में महत्व-पूर्ण भूमिका निभाने का सामर्थ्य रखती है और युवा पीढ़ी ने कन्धे से कन्धा मिलाकर इस स्वप्न को साकार करने का समय-समय पर आश्वासन दिया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि वह अपने इस उत्तर-दायित्व को गौरव और शान से निभाएगी।

केरल हिन्दी प्रचार सभा का जन्म एक सुप्रसिद्ध हिन्दी प्रचारक स्वर्गीय के. वासुदेवन पिल्लै के द्वारा सन् 1934 में हुआ। तभी से यह संस्था हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं विकास के लिए केरल के जनमानस में हिन्दी के प्रति प्रेम और श्रद्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भावना को पैदा करना, विद्यार्थी और प्रौढ़ों के लिए हिन्दी की अनौपचारिक शिक्षा की सुविधाएँ प्रदान करना, हिन्दी प्रचारकों एवं अध्यापकों को तैयार करना एवं लेखकों और अनुवादकों को प्रशिक्षित करना आदि मुख्य कार्यक्रम बनाए जा रहे हैं। मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि केरल हिन्दी प्रचार सभा ने जो कार्य हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए किए हैं उनमे राज्य में एक ऐसा वातावरण पैदा हुआ है जो अनुकरणीय है और प्रशंसनीय है। सभा ने कई ऐसे अन्य कार्यक्रम भी चलाए हैं जिनसे विद्यार्थी वर्ग को बहुत ही लाभ हुआ है।

इन कार्यक्रमों में हिन्दी की कक्षाएँ, हिन्दी की परीक्षाएँ, हिन्दी के टंकण और आशुलिपि की परीक्षाएँ संचालित की गई हैं जिससे हज़ारों की संख्या में लोग प्रतिवर्ष हिन्दी भाषा की पदवियों से विभूषित होते हैं। मुझे बताया गया है कि सभा ने कुछ अन्य लाभदायक कार्यक्रमों को चलाने के लिए कदम उठाए हैं।

पुरस्कार वितरण समारोह वास्तव में बहुत ही प्रेरणादायक है। इसके माध्यम से अहिन्दी भाषी राज्य में हिन्दी-प्रेमियों की हिन्दी भाषा के प्रति प्रेम करने की भावनाओं को और बल मिलता है। विद्यार्थियों में प्रतियोगी भावना को सफल बनाने का मौका मिलता है। भाषा सीखने की इच्छा जागृत होती है और उनके सुषुप्त विचार प्रतियोगिता के माध्यम से स्फुटित होते हैं। इस कार्यक्रम के द्वारा अनेक छोटे-बड़े विद्यार्थी इस क्षेत्र में आगे आए हैं और कई प्रकार के कार्यक्रम सामने आये हैं। आशा है ये कार्यक्रम सभी संस्थाओं द्वारा अपनाए जाएँ और विद्यार्थियों को प्रोत्साहन दिया जाए।

केरल राज्य में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति जो सद्भावना का रूप देखा गया है उसके लिए राज्य सरकार और आम जनता तथा हिन्दी प्रेमी धन्यवाद के पात्र हैं। हिन्दी भाषा को सर्वग्राही रूप मानकर देश की एकता में जो सहयोग दिया जा रहा है उसके लिए हिन्दी भाषी लोग एक प्रकार से अपने को अनुगृहीत समझते हैं और आशा करते हैं कि हिन्दी भाषी राज्यों में भी दक्षिण की भाषाओं को पढ़ने-पढ़ाने एवं सीखने का पूर्ण अवसर प्रदान किया जाए। इसके लिए सरकार का प्रयत्न है कि अहिन्दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल राज्य में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति जो सद्भावना का रूप देखा गया है उसके लिए राज्य सरकार और आम जनता तथा हिन्दी प्रेमी धन्यवाद के पात्र हैं।

भाषी प्रान्तों की स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं एवं राज्य के सहयोग से इन प्रान्तों में इन क्षेत्रीय भाषाओं के सीखने की सुविधा प्राप्त हो सकेगी।

इस अवसर पर मैं केरल हिन्दी प्रचार सभा के पदाधिकारियों एवं व्यवस्थापकों को अपनी हार्दिक बधाई देना चाहूँगा और यह आशा करता हूँ कि सभा हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार से संबन्धित सभी कार्यक्रमों को सुचारु रूप से चलाएगी और अधिक कारगर एवं प्रभावी ढंग से आम जनता को हिन्दी का प्रेमी बनायेगी और उन्हें राष्ट्र की मुख्य धारा में शामिल कर देश की एकता को और मज़बूत बनाने में सहयोग प्रदान करेगी। मैं उपस्थित सभी विद्यार्थियों, प्रचारकों एवं शिक्षकों को भी धन्यवाद का पात्र समझता हूँ क्योंकि वे सभा के मुख्य स्रोत हैं और एक ऐसी कड़ी है जो जनता के साथ सम्पर्क स्थापित करते हैं, उन्हें हिन्दी प्रेमी बनाते हैं।

सरकार हिन्दी प्रचारकों और हिन्दी शिक्षकों की भलाई को ध्यान में रखते हुए सभी स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं को सहानुभूति से आर्थिक सहायता के रूप में और अधिक सहयोग देने के लिए सदैव तत्पर रही है। इन शब्दों के साथ मैं पुनः सबको धन्यवाद करता हूँ। ★

जयहिन्द

> जो अपनी राष्ट्रीयता और अपनी भाषा से प्यार करता है वह उस भाषा के हर संकट को समझ सकता है।
>
> — डा० धर्मवीर भारती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी भाषी राज्यों में दक्षिण की भाषायें भी पढायें

जब से भारतीय शिक्षा पद्धति में त्रिभाषा सूत्र को अपनाया गया है और तदनुसार हिन्दीतर प्रान्तों में हिन्दी का अध्यापन न्यूनाधिक मात्रा में आरंभ किया गया है तब से हिन्दीतर भाषा-भाषी जनसमूहों से यह मांग उठती रही है कि जिस प्रकार हिन्दीतर प्रान्तों में मातृभाषा और अंग्रेज़ी के अतिरिक्त तीसरी भाषा हिन्दी भी पढने का बोझ वहन किया जाता है उसी प्रकार हिन्दी भाषी प्रान्तों में मातृभाषा हिन्दी और अंग्रेज़ी के अतिरिक्त हिन्दीतर प्रान्तों की कोई भाषा भी सिखायी जाये ताकि भारत के सभी भाषाई समूहों पर भाषाई अध्ययन का बोझ समान रूप से पडे। संसद के दोनों सदनों द्वारा पारित राजभाषा संकल्प 1968 में भी बताया गया है कि त्रिभाषा सूत्र को पूर्णतः कार्यान्वित करने केलिए प्रभावी कदम उठाया जाना चाहिए तथा हिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी और अंग्रेज़ी के अतिरिक्त भारत की भाषाओं में से किसी एक को तरजीह देते हुए एक आधुनिक भारतीय-भाषा के अध्ययन केलिए प्रबंध किया जाना चाहिए।

30-7-1988 को केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा तिरुवनन्तपुरम में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह का उद्घाटन करते हुए केन्द्र मानव संसाधन विकास मंत्रालय के राज्य मंत्री श्री ललितेश्वरप्रसाद शाही ने हिन्दी भाषी लोगों की यह आशा व्यक्त की कि हिन्दी भाषी राज्यों में भी दक्षिण की भाषायें पढ़ने-पढ़ाने का पूर्ण अवसर प्राप्त हो। (भाषण अन्यत्र)

समारोह की अध्यक्षता करते हुए केरल के विधान सभाध्यक्ष श्री. वर्कला राधाकृष्णन ने बताया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि भाषा या प्रान्तीयता के नाम पर अलगाव उत्पन्न न हो । केरल को भाषाई पागलपन छू तक नहीं गया है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि हिन्दी हमें जोड़नेवाली सशक्त कड़ी बन जाये। हिन्दी लादने का प्रयत्न यदि किया जाये तो उस का परिणाम बुरा ही होगा। एकता के बोध से हिन्दी सीखने की प्रेरणा सहज ही उत्पन्न हो ।

आशीर्वाद भाषण में तिरुवनन्तपुरम निर्वाचक मंडल के सांसद

हिन्दी लादने का प्रयत्न यदि किया जाये तो उस का परिणाम बुरा ही होगा। एकता के बोध से हिन्दी सीखने की प्रेरणा सहज ही उत्पन्न हो ।

श्री. ए. चार्ल्स ने कहा कि केरल हिन्दी प्रचार सभा ने केरल की जनता में हिन्दी सीखने का पर्याप्त उत्साह जगाया है और यहाँ के कालेजों में पचास प्रतिशत से अधिक विद्यार्थी द्वितीय भाषा के रूप में मलयालम के बदले हिन्दी सीख रहे हैं। उन्होंने केन्द्र सरकार से अपील की कि केरल की इस अनुकूल परिस्थिति को ध्यान में रखकर केरल के हिन्दी प्रचार अभियान को अधिक प्रोत्साहन दिया जाये ।

केरल विश्वविद्यालय के कुलपति एवं हिन्दी के प्रकाण्ड विद्वान डा० जी. बालमोहन तंपी ने कहा: जनता के जीवन को शक्तिशाली बनाने केलिए जनता की भाषाओं को शक्तिशाली बनाना है और आधुनिक चिंतन उन में लाना है। साथ ही संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी सब लोग पढें जिस के माध्यम से देश की एकता दृढ़तर हो सके। अपनी भाषा पर गर्व हो, पर दूसरी भाषा की अवहेलना न करें। जितनी अधिक भाषायें पढें उतना अच्छा । किसी जन समूह को समझने का उत्तम माध्यम उस समूह की भाषा और साहित्य है।

किसी जन समूह को समझने का उत्तम माध्यम उस समूह की भाषा और साहित्य है। प्रेमचन्द के उपन्यास पढ़नेवाला हिन्दी भाषियों से प्यार करेगा। तकषि के उपन्यास पढ़नेवाला मलयालम भाषियों से प्यार करेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेमचन्द के उपन्यास पढ़नेवाला हिन्दी भाषियों से प्यार करेगा। तकषि के उपन्यास पढ़नेवाला मलयालम भाषियों से प्यार करेगा। जहाँ ज़रूरत हो वहाँ अंग्रेज़ी का प्रयोग करने में संकोच न हो।

केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा वर्ष 1987-88 में चलायी गयी "हिन्दी प्रथम" से लेकर "साहित्याचार्य" तक की परीक्षाओं में उन्नत स्थान प्राप्त विद्यार्थियों को तथा सभा के स्नातकोत्तर हिन्दी केन्द्र से केरल विश्वविद्यालय की एम. ए. (हिन्दी) परीक्षा में प्रस्तुत विद्यार्थियों में अधिकतम अंक प्राप्त विद्यार्थिनी को केन्द्र मन्त्री श्री ललितेश्वर प्रसाद शाही ने पुरस्कार वितरित किये। सर्वोत्तम हिन्दी प्रचारक को "स्व० एस. वी. कुक्किकल्ल या स्मारक स्वर्ण पदक" दिया गया और सर्वश्रेष्ठ हिन्दी प्रचारकों को नकद पुरस्कार दिये गये। केन्द्र मानव संसाधन विकास मंत्रालय की आर्थिक सहायता से यह समारोह आयोजित हुआ।

केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री श्री एम. के. वेलायुधन नायर ने स्वागत भाषण में बताया कि त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत हिन्दी प्रान्तों में हिन्दी माध्यम से मलयालम भाषा सिखाने केलिए सुयोग्य अध्यापक तैयार करने के उद्देश्य से सभा एक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान प्रारंभ करना चाहती है। समारोह का प्रारंभ विद्यार्थियों के देशभक्ति गान के साथ हुआ।

★

> अंग्रेज़ी भाषा के घूंघट में छिपी हुई विद्या स्वभाव से ही हमारे मन की सहवर्तिनी होकर नहीं चल सकती।
>
> रवीन्द्रनाथ टैगोर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्मरण

पं० हृषीकेश शर्मा

जिनका 97 वाँ जन्मदिवस 14-2-1988 को मनाया गया !

डा० वी गोविन्द शेनाय

जीवन की सार्थकता अर्थ या यश-संचय में आंकनेवाले अंत में झटका खा ही जाते हैं और अधिकांश तब भी नहीं चेतते और जो चेतते हैं वे व्यर्थता का ही अनुभव करते है; सोचते हैं अब जीने को रह ही क्या गया है। धन्य वे हैं जो अपने-लिए लक्ष्य कुछ और ही चुन लेते हैं और साधना में ही साध्य पा लेते हैं। वैयक्तिक हानि लाभ के विचार से मुक्त हो ये औरों के हित-साधन में जुट जाते हैं और उसी में जीवन की सार्थकता अनुभव करते हैं। स्वर्गीय हृषीकेश शर्माजी ऐसे ही एक व्यक्ति हैं जिन्होंने ठीक ही वक्त पर, जवानी में ही जीवन का लक्ष्य स्थिर किया था और अंत तक उसकी साधना में लगे रहे। लक्ष्य था हिन्दी प्रचार द्वारा भारत का ऐक्य और उसकेलिए प्रेरणा उन्हें गांधीजी से मिली थी। सन 1920 ई० में गांधीजी के द्वारा आयोजित असहयोग आन्दोलन के दिनों में ही हिन्दी प्रचार आन्दोलन भी शुरू

सन 19_0 ई० में गांधीजी के द्वारा आयोजित असहयोग आन्दोलन के दिनों में हो हिन्दो प्रचार-आन्दोलन भी शुरू हुआ था जिस के प्रमुख कार्य-क्षेत्र दक्षिण के अहिन्दी प्रांत थे।

हुआ था जिस के प्रमुख कार्य-क्षेत्र दक्षिण के अहिन्दी प्रांत थे। उन्होंने विद्यालयों में प्रचार कार्य किया, पुस्तकें लिखीं उनका संपादन किया, पत्रिकाओं का संपादन कार्य किया, संगठन कार्य किया और संस्थाओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

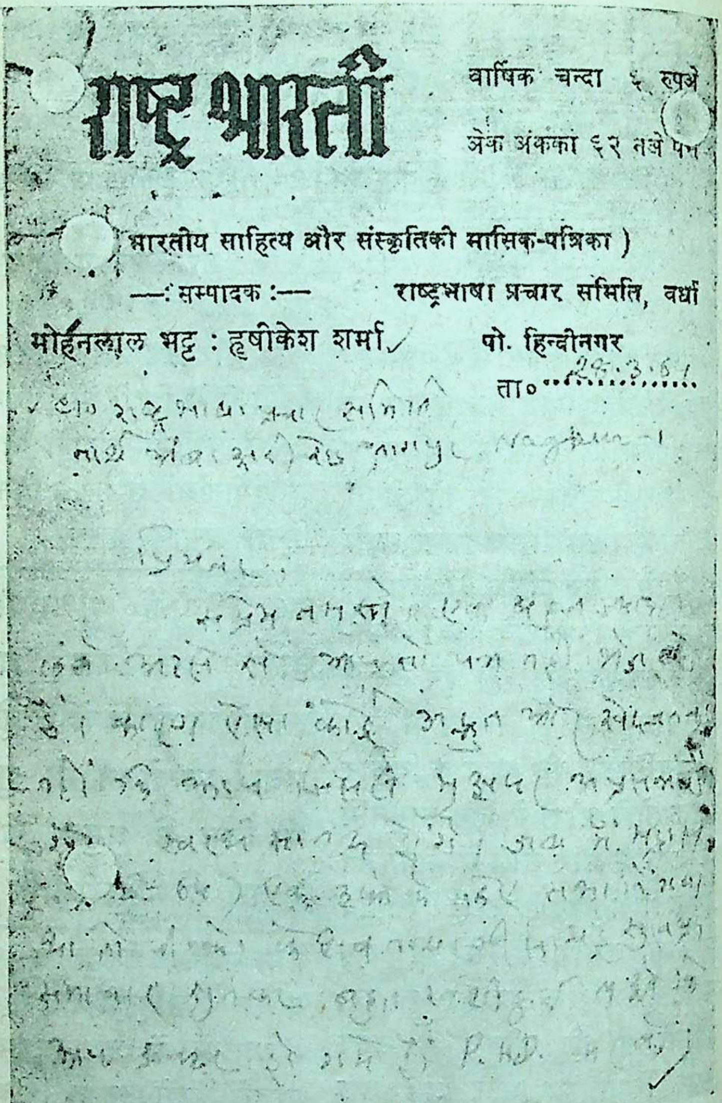
राष्ट्र भारती

वार्षिक चन्दा ६ रुपये
अेक अंकका ६२ नये पैसे

(भारतीय साहित्य और संस्कृतिकी मासिक-पत्रिका)

—: सम्पादक :—
मोहनलाल भट्ट : हृषीकेश शर्मा

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा
पो. हिन्दीनगर
ता० 25.3.61

प्रियवर,
सप्रेम नमस्कार

पं० हृषीकेश शर्मा का एक पत्र जो डा० वी. गोविन्द शेनाय को 1964 में भेजा गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

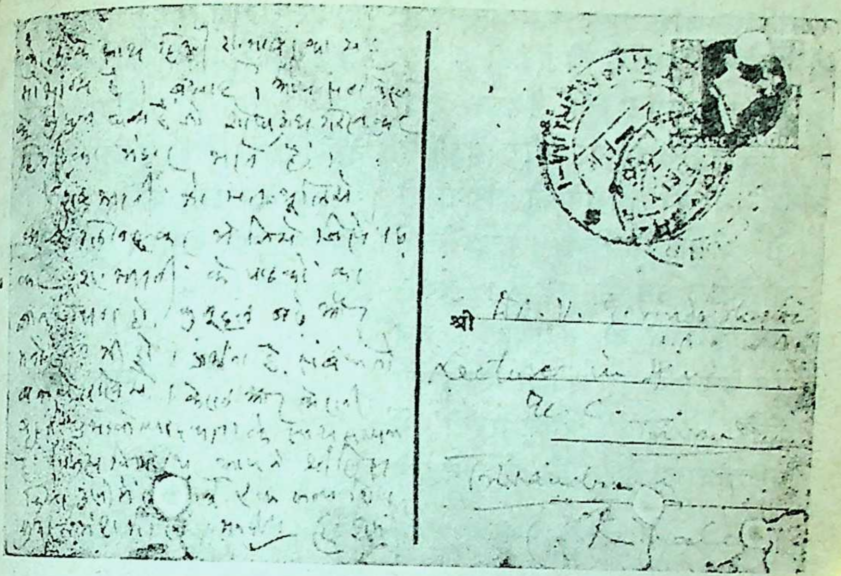

पं० हृषीकेश शर्मा के पोस्ट कार्ड का दूसरा पृष्ठ ।

का प्रशासन कार्य किया । दक्षिण के परवर्ती प्रशस्त प्रचारकों में अधिकांश उनके शिष्य हैं । दक्षिण

लक्ष्य उनका निर्दिष्ट और स्पष्ट था—हिन्दी के माध्यम से भारत की एकता ।

भारत हिन्दी प्रचार सभा के प्रचार कार्यों पर उनके व्यक्तित्व की छाप स्पष्ट लक्षित होती है । जो भी उनके सम्पर्क में आया उनके विराट व्यक्तित्व से प्रभावित हुआ । सन 1836 ई० में उत्तर के अहिन्दी प्रांतों में हिन्दी प्रचार का कार्य करने के उद्देश्य से वर्धा में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की स्थापना हुई । हृषीकेश शर्माजी तब समिति के कार्य-कलापों से जुट गये । समिति से संबद्ध उन के कार्यों में 'राष्ट्रभारती' पत्रिका का संपादन विशेष रूप से उल्लेखनीय है । भारत की विभिन्न भाषाओं की उत्कृष्ट रचनाओं के अनुवाद तथा समीक्षात्मक लेख उन्होंने 'राष्ट्र-भारती' में प्रकाशित किये और इस प्रकार भारत के सांस्कृतिक और साहित्यिक संग्राम केलिए उपयुक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ भूमि तैयार की। लक्ष्य उनका निर्दिष्ट और स्पष्ट था—हिन्दी के माध्यम से भारत की एकता। इस केलिए उन्होंने स्वयं लिखा और औरों से लिखवाया और बहुत से व्यक्तियों को लिखने की प्रेरणा दी और प्रोत्साहित किया। इन पंक्तियों का लेखक उन में एक है। लक्ष्य-भ्रष्ट वे कभी भी नहीं हुए। जब इस लेखक ने एक अंग्रेज़ी निबंध का हिन्दी अनुवाद 'राष्ट्रभारती' में प्रकाशनार्थ भेजा तो उन्होने उसे लौटाते हुए ममतापूर्ण शब्दों में आदेश दिया कि मैं अनुवाद कार्य से पहले अपनी भाषा की रचनाओं का सृजन करूँ। उस ओर थोड़ा श्रम लेखक ने किया भी; लेकिन जितना शर्माजी चाहते थे उतना क्या उसका दशांश भी नहीं कर पाया। काश! ऐसा कर पाता!

ओल्लूर, तृशूर, केरल

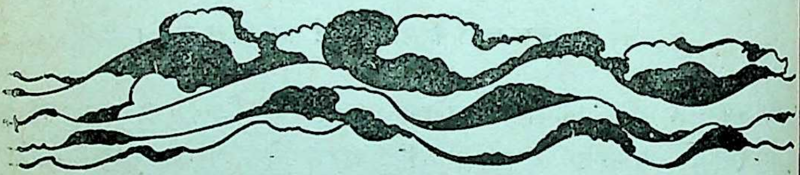

(पृष्ठ 4 का शेष)

अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ का जो कार्यकर्ता शिविर केरल हिन्दी प्रचार सभा के तिरुवनन्तपुरम परिसर में आयोजित हुआ उसमें उनके सान्निध्य ने प्रतिभागियों में नयी स्फूर्ति उत्पन्न की।

गूंगा बाबू के आकस्मिक निधन से राष्ट्रभाषा के कार्यकर्ताओं पर अधिक दायित्व आ गया है। बाबू जी ने अजातशत्रुता, देशप्रेम, स्नेह, माधुर्य, स्थिरोत्साह, कष्टसहिष्णुता आदि का जो मार्ग प्रशस्त किया है उससे हम आगे बढ़ें और हिन्दी तथा इतर भारतीय भाषाओं को प्राप्य स्थान पर पहुंचायें। यही उन के लिए अर्पित श्रद्धांजलि होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आन्ध्र प्रान्त में दक्खिनी हिन्दी का साहित्य और उसमें भाषा का स्वरूप

डॉ॰ वै. वेंकटरमण राव
प्रोफेसर,
हैदराबाद विश्वविद्यालय

[22—24 जनवरी 1988 को केरल विश्वविद्यालय की ओर से आयोजित विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की संगोष्ठी में प्रस्तुत प्रपत्र]

डा॰ वासुदेवशरण अग्रवाल ने प्रो॰ श्रीराम शर्मा द्वारा संगृहीत 'दक्खिनी का पद्य और गद्य' नामक पुस्तक की 'सम्मति' में स्पष्ट कहा है कि "जिस प्रकार अपभ्रंश साहित्य के प्रकाश में आने से हिन्दी की ऐतिहासिक परंपरा कई शताब्दी पीछे हट गई थी, उसी प्रकार दक्खिनी के गद्य और पद्य की नई सामग्री देश और काल में हिन्दी की गंभीरता का विस्तार करती है।" इस विस्तार का बहुत बड़ा श्रेय आन्ध्र प्रान्त को जाता है। इसका मतलब यह नहीं कि अन्य प्रान्तों में दक्खिनी के विकास का कम महत्व है. किन्तु जो राज्याश्रय आन्ध्र प्रान्त में ऐतिहासिक कारणों से दक्खिनी को प्राप्त हो सका है, उस प्रकार का अन्य किसी प्रान्त में नहीं मिल पाया है। साहित्य के विकास में राज्याश्रय की आवश्यकता और महत्ता का पुन: स्थापन यहाँ असमीचीन ही होगा। प्रस्तुत प्रपत्र में आन्ध्र प्रान्त में विकसित दक्खिनी साहित्य और उससे उभरी दक्खिनी भाषा के स्वरूप का विहंगम अवलोकन अभिप्रेत है।

1. भाषा के लिए दिशावाची अभिधान (संज्ञा) या विशेषण का प्रयोग कोई नया प्रयोग नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो राज्याश्रय आन्ध्र प्रान्त में ऐतिहासिक कारणों से दक्खिनी को प्राप्त हो सका है, उस प्रकार का अन्य किसी प्रान्त में नहीं मिल पाया है।

प्राकृतों में 'दाक्षिणात्या' नाम मिलता ही है। किंतु दक्खिनी के साथ एक विरल बात मिलती है। वह 'दक्खिनी हिन्दी' कहने के संबंध में है। इस विषय को लेकर अनेक चर्चाएँ उभरी हैं। जिस प्रकार 'हिन्दुस्तानी' हिन्दी और उर्दू रूपों में उभर कर आयी है, उसी प्रकार 'दक्खिनी' भी आज 'दक्खिनी हिन्दी' और 'दक्खिनी उर्दू' के नामों से अभिहित हो गयी है। यह कोई बुरी बात नहीं है। भाषा के विकास में दो भिन्न शैलियों के विकास की ओर यह संकेत करता है। उसी रूप में उसे स्वीकार करके उन शैलियों के विकास को स्फूर्ति प्रदान करना आज का ध्येय होना चाहिए। शायद इस प्रकार के विभाजन को मान्यता देने में सहमत न होने की मानसिकता के कारण हो सकता है, प्रो. श्रीराम शर्मा ने इस संबन्ध में एक वक्तव्य प्रस्तुत किया है—

'दक्खिनी के साथ हिन्दी शब्द का प्रयोग करते हैं किन्तु दक्खिनी का हिन्दी का विशेषण बनाना उचित नहीं। हम लोग यदि ब्रज हिन्दी या अवधी हिन्दी नहीं कहते हैं तो दक्खिनी हिन्दी कहने की क्या आवश्यकता है?' (दक्खिनी का पद्य और गद्य, निवेदन, पृष्ठ 33) प्रो० शर्मा के इस मत से हम इसलिए सहमत नहीं हो सकते कि दिशावाची विशेषण का प्रयोग भाषाओं के साथ कोई नयी

हम लोग यदि ब्रज हिन्दी या अवधी हिन्दी नहीं कहते हैं तो दक्खिनी हिन्दी कहने की क्या आवश्यकता है?

बात नहीं है। हिन्दी के साथ पूर्वी हिन्दी, पश्चिमी हिन्दी नाम बहुप्रचलित ही है। ग्रियर्सन, डा० धीरेन्द्र वर्मा आदि ने इन का प्रयोग किया है और इस प्रकार के प्रयोगों की परंपरा अब भी चल रही है। डा० हरदेव बाहरी ने तो पूर्वी हिन्दी, बिहारी हिन्दी, राजस्थानी हिन्दी, पहाडी हिन्दी कहकर दिशा-वाची विशेषणों के साथ साथ स्थान-वाची विशेषणों का भी प्रयोग किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है (हिन्दी : उद्‌भव । विकास और रूप, पृ० 72) । प्रो० प्रदीप चन्द्र जैन ने तो पश्चिमी हिन्दी के अन्तर्गत दक्खिनी को हिन्दी की बोली के रूप में स्वीकार किया है (हिन्दी और उसकी विविध बोलियाँ, पृ० 50) । स्वतंत्रता प्राप्ति के कुछ पहले से यह स्वीकार किया जा चुका है कि हिन्दी और उर्दू दोनों समानांतर में विकसित दो भिन्न साहित्यिक और बोलचाल की भाषाएँ हैं । उनका संरचनागत अन्तर चाहे कम रहा हो, शैलीगत अन्तर अवश्य उन्हें दो भिन्न भाषाओं के रूप में अवतरित कर चुका है। अब जहाँ तक भाषा का व्यावहारिक रूप है दक्षिण प्रान्तों में दक्खिनी उर्दू और दक्खिनी हिन्दी रूप चल रहे हैं । साहित्य के क्षेत्र में भी इस रूप को स्वीकार कर लेना कोई असमीचीन बात नहीं होगी । डा० सुनीतकुमार चटर्जिया ने दक्खिनी साहित्य के संबन्ध में जो मंतव्य दिया है, उसका उल्लेख यहाँ संदर्भोचित ही होगा । उन्होंने कहा है कि "हम दक्खिनी साहित्य को उर्दू तथा हिन्दी के खडीबोली से संबन्धित साहित्य का आदि रूप कह सकते हैं । यह साहित्यधारा वर्तमान हिन्दी और उर्दू साहित्य का उत्पत्ति चिह्न है ।" (दक्खिनी का गद्य और पद्य, अवतरणिका, पृ० 6) । ऐसी स्थिति में यह कहना कोई समस्या नहीं हो पाती कि दक्खिनी भाषा का रूप दक्षिणांचलीय प्रभावों से मुक्त होकर अपना अस्तित्व रख रहा है । उसने अपने विकास की गति में 'दक्खिनी हिन्दी' और 'दक्खिनी उर्दू' दो शैलियाँ प्राप्त की हैं ।

2. उत्पत्ति की दृष्टि से 'दक्खनी' शब्द 'दक्षिण' शब्द का तद्भव रूप है । दक्षिण > दक्खिन > दखन > दक्खन > दकन । इस का '–ई' प्रत्यय जो विशेषण बोधक बनाता है संबन्ध कारक का सूचक है । 'भूगोलतत्ववेत्ताओं' ने दक्खन शब्द का प्रयोग नर्मदा और कृष्णा नदियों के बीच के प्रदेश के लिए किया है । भौगोलिक दृष्टि से दक्खन के अन्तर्गत वर्तमान महाराष्ट्र, आन्ध्र, कर्णाटक, तमिलनाडु और केरल प्रान्त आते हैं । दक्खिनी हिन्दी और दक्खिनी उर्दू के भी ये ही प्रान्त हैं । इन में आन्ध्र प्रान्त साहित्य की दृष्टि से बहुत उर्वर प्रान्त रहा है, प्रमुखत: प्राचीन काल में । मुल्ला वजही ने 'कुतुब मुस्तरी' में इस संबन्ध में जो बात कही है उसका यहाँ उल्लेख करना समंजस ही होगा :—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"दक्खन सा नहीं ठार संसार में,
पंच फाजिला का है इस ठार में।
दक्खन मुल्क कूं धन अजब साज हैं,
के सब मुल्क सर होर दक्खन तांज है।
दक्खन मुल्क भौतीच खासा अहै,
तिलंगाना इसका खुलासा अहै।
(कुतुम मुस्तरी, पृ. 179)

स्थानवाची दक्खिनी का प्रयोग धीरे धीरे दक्षिण के मुसलमान और उत्तर भारत से आये हिन्दुओं की भाषा के लिए प्रयुक्त हुआ है। यह भाषा बहमनी राज्य, बीजपूर, गोलकोण्डा, अहमदनगर आदि से संबन्धित मुसलमान कवियों और हिन्दू दक्खिनी प्रेमी साहित्यकारों की साहित्यिक भाषा हो गयी।

3. दक्खिनी के कवियों और गद्यकारों ने अपनी साहित्यिक भाषा को अनेक नामों से अभिहित किया है; जैसे हिन्दी, हिन्दवी, दक्खिनी, दखनी, हिन्दुस्तानी आदि। कवियों के कुछ वक्तव्य देखिए :—

"दखन में जो दखिनी मीठी बात का,
अदा नई किया कोई इस घात का।"
— मुल्ला वजही, कुतुम मुश्तरी, पृ. 29

सनअती ने और कुछ आगे बढकर कहा है कि यह एक आसान भाषा भी है :—

जिसे फारसी का न कुछ ग्यान है
सो दखनी ज़बां उसकूं आसान है।
(दक्खिनी पद्य और गद्य, पृ. 230)

इसी प्रकार की और उक्तियां देखिए :—

(1) सफाई की सूरत की है आरसी,
दखनी का किया हूँ शेर फारसी।
(गुलशने इश्क, नुस्रती, दक्खिनी का पद्य और गद्य, पृ, 230)

(2) तेरे शेर का जग में दखनी है नाउं।
नको भौत कर दूसरी बोली मिलाउं।
(हाशमी, यूसुफ जुलेखा)

दक्खिनी हिन्दी की प्रसिद्ध गद्यकृति "सबरस" में मुल्ला वजही ने अपनी भाषा के संबन्ध में स्पष्ट कहा है कि

"हिन्दुस्तान में, हिन्दी ज़बान सूं
इस लताफत इस छन्दा सूं
नज़्म होर नसर मिलाकर,
गुलाकर यूं नई बोल्या।"
(सबरस, पृ. 10)

दखनी के साथ इस भाषा को 'हिन्दी' कहनेवालों में गोलकोण्डा के प्रसिद्ध लेखक मीरा याकूब (सन् 1667), मीराजा जी शम्सुल उश्शाक, बुरहानुद्दीन (इर्शादनामा में), शाह बहरी (अपनी कृति 'मनलगन' में) शाह तुराब (अपनी कृति 'मनसमझावन' में) आदि हैं। कुछ लेखकों ने इसे हिन्दवी, हिन्दूई भी माना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नज़्म लिखा रव मौजूं आन
यों सब हिन्दवी कर आसान ।

('नौसरहार' में शेख अशरफ)

ज़बां हिन्दीई मुझ सो हूँ देहलवी
न जानूं अरब हौर अज़म मसनवी ।

(अब्दुल की कृति, इब्राहीम नामा)

एक तेलुगु भाषी कवि-नाटककार श्री. पुरुषोत्तम ने अपनी भाषा हिन्दुस्तानी कही है—"केवल देशी भाषाओं के समान है तुर्की । संस्कृत पद बहुला देशी भाषाओं सी है हिन्दुस्तानी । हिन्दी, हिन्दुस्तानी वैसे पर्याय शब्द माने जा सकते हैं, पर व्यवहार में थोडा अन्तर है । संस्कृत के व्यस्त पदों का और सिंघासन, जत्तन, जन्न आदि तद्भव शब्दों का ही प्रयोग करते हुए बोली जानेवाली भाषा 'हिन्दी' है । मन—चाहे समासों को भरकर बोली जाने-वाली भाषा हिन्दुस्तानी है ।" (रामदास चरितम् नाटक की भूमिका में) । उक्त कथनों के साथ ध्यान देने की बात है कि प्राचीनों में किसी ने इस भाषा को 'उर्दू' संज्ञा से अभिहित नहीं किया । एक पुरुषोत्तम

दक्खिनी हिन्दी का विकास तेलुगु, मराठी और कन्नड भाषाओं के साथ जुडकर आन्ध्र प्रदेश में हुआ है ।

कवि ने, जो आधुनिक भी है, तुर्की शब्द का प्रयोग किया है । आन्ध्र प्रान्त में उर्दू को 'तुरकम' भी कहते हैं । यह 'तुरुष्क' शब्द से व्युत्पन्न है । इस दृष्टि से भी दक्खिनी को दक्खिनी हिन्दी कहना समीचीन ही होगा ।

4. दक्खिनी हिन्दी का विकास तेलुगु, मराठी और कन्नड भाषाओं के साथ जुडकर आन्ध्र प्रदेश में हुआ है । वैसे तो महाराष्ट्र कर्नाटक और तेलंगाणा प्रान्तों में इस का विस्तार हुआ है । जिन प्रान्तों में इस का विकास हुआ था, वे प्रान्त वैसे तो उस समय में एक राज्याधिकार में प्रायः रहे हैं । संघर्षों और समन्वयों की स्थितियों को भी वे देख चुके थे । शासन की दृष्टि से, प्रमुखतः साहित्य सृजन के आश्रय केन्द्रों की दृष्टि से प्रमुख केन्द्र इस प्रकार हैं—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शासन क्षेत्र	शासन	समय
गुलबर्गा तथा बीदर	बहमनी राज वंश	सन् 1350 से 1525
बीदर	बीदरशाही	सन् 1487 से 1619
अहमदनगर	निज़ामशाही	सन् 1460 से 1633
बीजापुर	आदिलशाही	सन् 1460 से 1686
गोलकोण्डा तथा हैदराबाद	कुतुबशाही	सन् 1512 से 1687

(उक्त सूची साहित्यिक दक्खिनी हिन्दी : भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डा० सी. एस. अन्सारी बाषा, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध के आधार पर)

इन केन्द्रों में साहित्यिक दक्खिनी का विकास हुआ है। इस संबन्ध में प्रो० श्रीरामशर्मा का वक्तव्य उल्लेखनीय है। उन्होंने कहा है...

परिनिष्ठित और साहित्यिक दक्खिनी हिन्दी का क्षेत्र बीजापुर, गुलबर्गा और हैदराबाद तक सीमित है।

"परिनिष्ठित और साहित्यिक दक्खिनी हिन्दी का क्षेत्र बीजापुर, गुलबर्गा और हैदराबाद तक सीमित है। विशेष कारणों से निश्चित अवधि केलिए इस सीमा का विस्तार औरंगाबाद तक हुआ।" (दक्खिनी हिन्दी का उद्भव और विकास पृ० 21)

5. दक्खिनी हिन्दी के विकास का सूत्रपात सन् 1296 में अल्लाउद्दीन खिलजी के प्रथम आक्रमण से हुआ माना जा सकता है। सन् 1325 में गियासुद्दीन तुगलक के काकतीय साम्राज्य पर आक्रमण काल से आन्ध्र प्रदेश का तेलांगाणा प्रांत के दिल्ली सुल्तानों के प्रभाव क्षेत्र में आने से विकास का सिलसिला आगे बढने लगा। सन् 1336 में विजय नगर साम्राज्य की स्थापना से मुसलमानों के साथ संघर्ष का एक युग आरंभ होता है। इसी के आसपास सन् 1350 में बहमनी साम्राज्य की स्थापना भी हो चुकी थी। इससे अरबों और फारसियों के साथ एक सांस्कृतिक समन्वय का भी इतिहास आरंभ होता है। 16 वीं और 17 वीं शताब्दियों में कुतुबशाही वंश के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधीन तो बहुत ही सामंजस्य पूर्ण संबन्ध रहे हैं। इब्राहीम कुली कुतुब शाह के गद्दी पर बैठने के साथ साथ (सन् 1550 में) तेलुगु प्रान्त में एक आदान-प्रदान का युग आरंभ हो जाता है। लगभग यही समय विजय नगर साम्राज्य के पतन का भी समय है। एक प्रकार से लगभग समस्त आन्ध्र प्रान्त मुसलमानों के अधीन आ गया। इस समय से साहित्य सृजन को और बल मिल गया। यह परंपरा लगभग सन् 1850 तक रही है। साहित्य सृजन कार्य के इस लंबे इतिहास को निम्न काल खण्डों में देखा जा सकता है...

आदिकाल	सन् 1300 से 1500 तक
मध्यकाल	सन् 1500 से 1700 तक
उत्तर मध्यकाल	सन् 1700 से 1850 तक
आधुनिक काल	सन् 1850 से।

इन विभिन्न काल खण्डों में सृजित साहित्य का विवरण इस प्रकार है —

आदि काल: सन् 1300 से 1500 तक

इस समय के प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं—

1. ख्वाजा बन्दे नवाज गेसु दराज (सन् 1332—1437) : ये दक्खिनी के प्रथम कवि हैं। उनकी रचनाएँ हैं—मैराजुल आशकीन, हिदायत नामा, शिकारनामा, दुरुल इसरार आदि। ये दक्षिण में आकर बसे थे।
2. निजाम बीदरी (सन् 1460—62) : ये सुलतान अहमद शाह तृतीय के दरबारी कवि थे। इनकी मसनवी 'कदमराव व पदमराव' प्रसिद्ध है। यह एक चरित काव्य है।
3. कुरेशी : ये मुहम्मदशाह बहमनी (सन् 1482—1520) के दरबारी कवि थे। उनकी रचना है—'भोग बल'।

इस प्रकार व लुतफी, अब्दुल्ला हुसैनी मुश्ताक आदि भी इस समय के उल्लेखनीय हैं।

मध्यकाल : सन् 1500—1700 तक

इस काल को दक्खिनी हिन्दी का स्वर्णयुग कह सकते हैं।

(1) शाह असरफ (सन् 1529) निजामशाही के शासन काल के कवि हैं। इन की महत्वपूर्ण रचना है—'नौसरहार'।

(2) बुरहानुद्दीन जानम (सन् 1554—1583) : इनका जन्म बीजापुर में हुआ है। इन की रचना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईर्शदनामा व वसीयतुल हादी, मुनफतुल ईमान, पंच गंज आदि हैं।

(3) इब्राहीम आदिल शाह (सन् 1580—1623) : आदिशाही राजवंश के कवि हैं। इन की प्रसिद्ध रचना है—'नवरस'।

(4) अब्दुल (सन् 1604): इब्राहीम आदिलशाह के समय के कवि हैं। इन्होंने उस समय की प्रसिद्ध रचना 'इब्रहीम नामा' लिखी है।

(5) मुहम्मद कुली कुतुब शाह (सन् 1571—1611) : गोलकोण्डा के कुतुबशाही वंश के बादशाह। इन की रचना है—'कुल्याते मुहम्मद कुली कुतुबशाह'।

(6) मुल्ला वजही : कुलीकुतुब-शाह के शासनकाल के प्रसिद्ध रचनाकार थे। गद्य और पद्य की दोनों प्रक्रियाओं में उन्होंने रचनाएँ की हैं। प्रसिद्ध रचनाएँ हैं—कुतुब मुश्तरी और 'सबरस'।

(7) मुल्ला गवासी—ये भी कुली कुतुबशाह के शासनकाल के कवि थे। इन की रचनाएँ हैं सैफुलमुल्क व बदीउल जमाल, तूतोनामा और मैनासतवन्ती।

(8) नुस्रती: आदिलशाही शासन काल के दरबारी कवि हैं। इन की रचनाएँ हैं गुलशने इश्क, अलीनामा, तारिखे सिकन्दरी।

(9) बहरी (सन् 1620—1718) : ये गुलबर्गा के माने जाते हैं। इन की रचनाएँ हैं—मनलगन, बंगा-वनामा, गज़ल संग्रह।

(10) इब्ननिशाती : ये भी अब्दुल कुतुबशाह के दरबारी कवि थे। इनकी रचना फुलबन प्रसिद्ध है।

(11) अबुल हसन (तानाशाह), अशरफ, फताही नूरी, गुलाम अली आदि भी इस समय के अन्य कवि रहे हैं।

उत्तरकाल : सन् 1700 से 1850 तक :

राज्याश्रय की दृष्टि से दक्खिनी के लिए यह अच्छा समय नहीं कहा जा सकता। इसी समय मुगलों का आक्रमण खासकर औरंगजेब का दक्षिण पर आक्रमण हुआ था। फिर भी साहित्य की धारा इस समय में भी प्रवाहित रही है। इस समय के कवि हैं--

(1) वली (सन् 1668—1741) : कसीदा, मसनवी, तरजीबन्द, गज़ल आदि काव्यरूपों को दक्खिनी में इन्होंने प्रवेश कराया है। इन के काल में उर्दू की ओर कविता अग्र-सर हुई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंबई नाटक कंपनियों (फारसी कंपनियों) के प्रभाव से तेलुगु भाषी पुरुषोत्तम कवि ने 32 नाटकों की रचना करके दक्खिनी हिन्दी को यहाँ एक नया जीवन प्रदान किया है।

( ) शाह तुराब : इनकी रचनाएं हैं जहूर कुल्ला, गंजुल असरार, शमन स्वरूप, आइने-ए-कसरत आदि। ये मद्रास के कवि माने जाते हैं।

आधुनिक काल (सन् 1850 से) : इस समय से रचनाएँ, खासकर मुसलमान कवियों की, उर्दू शैली की ओर उन्मुख हो चुकी थी। किन्तु बंबई नाटक कंपनियों (फारसी कंपनियों) के प्रभाव से तेलुगु भाषी पुरुषोत्तम कवि ने 32 नाटकों की रचना करके दक्खिनी हिन्दी को यहाँ एक नया जीवन प्रदान किया है। इन के सभी नाटक अप्राप्य हैं किन्तु 6 नाटक पूर्ण रूप से और कुछ नाटक आशिक रूप से अब प्राप्त हुए हैं।

इतन साहित्य के विहंगम पर्यवेक्षण से यह स्पष्ट होता है कि दक्षिण में, प्रमुखतः हैदराबाद केन्द्र से, दक्खिनी हिन्दी का विशाल साहित्य रचित हुआ है। इस का आरंभिक रूप 14 वीं शती से उभरता है और 17 वीं शती तक एक अनवरत सृजन की परंपरा को लेकर चलता है। 17 वीं शती के बाद लगभग 70 वर्षों का अन्तराल मिलता है। पर 19 वीं शती में नाटक साहित्य के क्षेत्र में नयी दिशा को लेकर दक्खिनी साहित्य का सृजन आरंभ होता है। बीसवीं शती में साहित्य की अन्य विधाओं में रचनाएँ मिल रही हैं। कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में इस की नयी रूपरेखाएँ देखी जा सकती हैं।

6. उक्त साहित्य की भाषा का अनुशीलन करने से कुछ बातें अवश्य उभरती हैं जिसके आधार पर दक्खिनी हिन्दी के संरचनात्मक रूप का हिन्दी संरचनाओं से संबन्ध निरूपित हो जाते हैं। भाषा के संरचनात्मक सांचे खडीबोली के साथ साथ अधिक जुडते हैं। वाक्य के घटकों में पदक्रम, लिंग-वचन समन्वय आदि तो खडीबोली रूपों के साथ ही मेल खाते हैं। जहाँ तक प्रभाव की बात है इन पर तेलुगु, मराठी और कन्नड के प्रभावों को देखा जा सकता है। शब्द भण्डार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में भी इन रूपों और उधार लिये शब्दों की प्रयोग—विविधता को देख सकते हैं। इस का परिचय कुछ अंशों के उदाहरणों से और स्पष्ट होगा। दक्खिनी हिन्दी के कुछ प्रमुख ग्रन्थों से उद्धृत इन उदाहरणों को लीजिए— इन में भाषिक प्रयोगों को ध्यान से परखिएगा :

प्यारी के मुख म्याने खेल्या वसन्त
फूली हौज़ थे चरके छिडक्या बसन्त
बसन्त वास चुन चुन के चुनरी बंधे
जो उभर के लहगं सो आया बसन्त।
— मुहम्मद कुली कुतुब शाह,
कुल्लियाते †
मुहम्मद कुली कुतुबशाह। (पृष्ट 36)

मुहब्बत लगने जो लगती है साफ
न कर यार का वादा हर्गिज़ खिलाफ
जो इसी बात पर वो चंचल छन्द भरी
जो रुख यार के घर को जाने करो
यकायक सबा का उजाला हुआ
उसे वो उजाला सो जाला हुआ।
(तूतीनामा, वजही, पृष्ठ 93)

दिया था खुदा उसकूं सब कुछ मगर
वले सख्त मुहताज था बिन पिसर
दिल उसका अछे कूच सब सुख सूं बाग़
बरे पन नित उस ग़म ते जीवन लाल दाग़।
(मसववी गुलशमे इश्क,
नुसरती, पृ. 139)

क्या नस्र क्या नज़्म हर एक बात क
ज़ेब व रौनक है खुदा के हम्द सूं
गर्चे हूं मैं आज मदहर में मुकीम
लेक बीजापुर है वतने कदीम
बाया मेरा माग़फ़र व मासूर है
सो रन में जग में सब मशहूर है।
(रियाजुल आरफ़ीन,
इसहाफ बीजापुरी पृ. 200)

थी रानी शाह की यक सतवन्ती नांव
चन्द्र सुरज कधीं देखी न थीं छांव
कवीं दरपन में जो मुख देखे जाय
देख अपने नयन की पुतलियां सरमाय
(फूलबन, इब्न निशाती, पृ. 27)

अथी उसकी बेटी थी सांहवे जमाल
अथा नाम उसका सो चन्दा कमाल
था उस बादशाही में गवाल एक
इस्म उसका लोरक अथा नाम नेक।
(मसनवी गवासा दकनी,
गवासी, पृ. 286)

दक्खिनी हिन्दी के गद्य के कुछ नमूने देखिए—

(1) भई उसे देखे पिछे पछानने का एक कतार आता है, सो उस कतरे कूं बन्दा बोलते हैं। बा... दीगर इस गोश्त के तन में खुदा ... बी पछानना अपसकूं भी पछानना—

(†) यहाँ से आगे उदाहरण के ... दी गयी पृष्ठ संख्याएँ दक्खिनी ... गद्य और पद्य को हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहगद, लहू, हाड़, चमडा इस चिजा कूं अल्ला बन्दा न बोलना ! (तर्जुमा बजुदुल आरफीन, बन्दा नवाज़, पृ० 399)

(2) नक़ल। एक शहर था, शहर का नाउ सीस्तान। इस सीस्तान के बादशाह का नाउं अकल। दीन व दुनिया का तमाम काम उससे चलता, उसके हुक्म बाज ज़र्रा कई नई हिलता। इसके फरमाये पर जिने चले, हर जो जहान में वे भले। (सबरस, वजही, पृ० 406)

उक्त मुसलमान कवियों के साथ साथ एक हिन्दू लेखक के भी दो उदाहरण लीजिए। हिन्दू लेखक नाटककार पुरुषोत्तम कवि हैं—

(1) यह बात खूब है। कौन तो भी हो यथार्थ दृष्टि से देखेगा तो रामरावणों कु फरक नहीं, रामदास पंजदारों कु भी फरक नहीं, कहके समझेगा। कैंके राम का नाम जो ग्रंथ में है वही ग्रंथ में रावण का नाम भी है। जो उनकु पढता है वहीच इनकु भी पढता है।
(रामदास चरित्रमु, पुरुषोत्तम कवि के हिन्दुस्तानी नाटक, पृ० 7)

(2) महाराज जी ! ब्राह्मणा नैष्ठिकता से, क्षत्रियां बाहुबल पराक्रम अतिशय से, वैश्या धन-धान्य समृद्धि से, अंध्रिजां विवेयता

इन उदाहरणों से यह स्पष्ट ही हो जाता है कि संरचनात्मक धरातल पर दक्खिनी हिन्दी खडीबोली के साथ किस प्रकार मिलती जुलती है।

आदि सुगुण भूषण से आरामी पाते हैं।

(अपूर्व दांपत्यमु, वही, पृ० 235)

इन उदाहरणों से यह स्पष्ट ही हो जाता है कि संरचनात्मक धरातल पर दक्खिनी हिन्दी खडीबोली के साथ किस प्रकार मिलती जुलती है। इस विवेचन के बाद दक्षिण भाषाओं के प्रभाव पर भी प्रकाश डालना समीचीन होगा। बोलचाल की भाषा के साहित्यिक अवतरण इस में मिलते हैं। एक प्रकार से भाषाई अभिसरण की प्रवृत्ति भी इस स्थिति में पाई जाती है।

7. अन्य भाषाओं का प्रभाव पद रूप और वाक्य निर्माण में देखा जा सकता है। जहाँ तक तेलुगु के प्रभाव का संबन्ध है, दक्खिनी में बहुवचन रूपों को निष्पन्न करने में देखा जाता है। हिन्दी बहुवचन रूपों से भिन्न दिशा में तेलुगु के रचना-विधान को दृष्टि में रखकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक विशेष प्रत्यय का प्रयोग दक्खिनी के साहित्य रूपों में मिलता है। वह प्रत्यय है '—आं'। इस प्रत्यय का प्रयोग सभी शब्द रूपों में मिलता है जैसे घर - घरां, पुस्तक - पुस्तकां, लडका - लडकां आदि। कारकीय रूप में भी 'घरों को' - के लिए 'घरां को' वाले रूप मिलते हैं। इस प्रकार यह देखा जा सकता है कि इस संरचना का निर्माण शायद तेलुगु बहुवचन प्रत्यय 'लु' औ 'ल' के समानांतर में दक्खिनी में आ गया हो। यहाँ ध्यान देने की एक बात और यह है कि हिन्दी वहुवचन व्यवस्था मंद पडती दिखायी देती है। इस के अलावा अन्य व्याकरणिक व्यवस्थाएँ खडी बोली की व्यवस्थाओं के समान ही हैं।

कुछ स्थानों में तेलुगु वाक्य व्यवस्था का प्रभाव भी दक्खिनी हिन्दी की रचनाओं में देखा जा सकता है। निम्न उदाहरण देखिएगा—

(अ) खुदा है कर तो बोल्या जाता है कि कुछ भी दिस आता है।
(सरवस, 6—23 वजही)
(देवुडुन्नाडनि अंटारू कानी एमो कनिपिंचडु।)

(आ) तू नई तोडता सो तुटता क्यू?
(सरवस 79—1)
(नुव्वु विचक पोते आदि एन्दुकु विरुगुतुंदि ?)

(इ) यह बात खूब है। (पृ० 7—13 हिन्दुस्तानी नाटक, पुरुषोत्तम कवि)
(ई माट बागुंदि)

(ई) कभी नहीं किए सो ऐसी काम अब के लिए हैं ?
(पृ० 43—16 वही)

8. भाषा में जो शब्द भण्डार प्रयोग की सुविधा के लिए घुस पाया है, वही साहित्य में भा अपना स्थान पा सका है। तेलुगु से दक्खिनी हिन्दी साहित्य में प्रवेश पाये कुछ शब्दों को देखिए।[1]

उपन्यास (भाषण के अर्थ में)
हिं. ना. 175—22)

कालवा (नहर) (सबरस 175—17)
कोट (किला) कुतुबमुश्तरी, 97—2
तगादा (झगडा) (सबरस, 105—15)
दोरा (प्रधान) (कुतुबमुश्तरी, 192—2)

9 इस प्रकार हम देख सकते हैं कि दक्खिनी हिन्दी साहित्य में भाषा खडीबोली की प्रकृति को अपना कर चली है। इस पर अन्य

1. यहाँ कुंडलयों में जो संख्याएँ हैं वे क्रमशः पृष्ट और पंक्ति के सूचक हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोलियों का प्रभाव भी है, प्रमुखत : हरियाणवी, ब्रज, और गूजरी का। लगभग 500 वर्षों के क्रमिक इतिहास से संपन्न साहित्यिक धाराएँ प्रवाहित होती रही हैं। अधिकांशत: इस साहित्य को मुसलमान शासकों का आश्रय मिला है। सूफी संतों ने भी इस को आगे बढाया है। इस साहित्य की वस्तु के संबन्ध में प्रस्तुत प्रपत्र मे कुछ प्रकाश नहीं डाला

जिस समय दक्खिन में दक्खिनी का साहित्य लिखा जा रहा था, उत्तर भारत के बहुत बड भू-भाग में ब्रजभाषा साहित्यिक भाषा के रूप में प्रयुक्त हो रही थी।

गया है। किन्तु इस विषय पर एक दिशा निर्देशक वक्तव्य प्रो० श्रीराम शर्मा का यहाँ प्रस्तुत किया जा सकता है—जिस समय दक्खिन में दक्खिनी का साहित्य लिखा जा रहा था, उत्तर भारत के बहुत बडे भू-भाग में ब्रजभाषा साहित्यिक भाषा के रूप में प्रयुक्त हो रही थी। (दक्खिनी हिन्दी का साहित्य, पृ० 39) इस तरह से दक्खिनी आधुनिक

ब्रजभाषा के स्थान पर साहित्य के लिए विशेष कर हिन्दी या हिन्दुस्थानी के प्रयोग का आदर्श उत्तरी भारत के समक्ष सर्वप्रथम 'दक्कन' वालों ने ही रखा।

हिन्दी के पूर्व इतिहास को संपन्न करती है। प्रो०शर्मा ने अपनी खोज से जिन पुस्तकों का उल्लेख किया है उन के आधार पर दक्खिनी हिन्दी साहित्य की प्रमुख दिशाएँ रही हैं—निर्गुण भक्ति, सूफी प्रेमधारा और प्रबन्ध काव्य की शैली पर कथात्मक काव्य। प्रेमाख्यानात्मक काव्य उभर आया है। मुसलमानों के प्रभाव के कारण भाव कविता और गजल आदि का भी आधिक्य है।

10. दक्खिनी हिन्दी साहित्य की महत्ता के संबन्ध में यहाँ डा० सुनीत कुमार चटर्जिया के शब्दों को उद्धृत कर देना अत्यंत उपयुक्त होगा—ब्रजभाषा के स्थान पर साहित्य के लिए विशेषकर हिन्दी या हिन्दुस्थानी के प्रयोग का आदर्श उत्तरी भारत के समक्ष सर्वप्रथम 'दक्कन' वालों ने ही रखा।' (भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी (पृ. 211, द्वि. सं. 1957) इस आदर्श

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप को प्रस्तुत करने के प्रयत्नों को अधिकांशत: सफल बनाने का श्रेय आन्ध्र प्रान्त को हैं ।

संदर्भ ग्रंथ :

(1) तेलुगु भाषी हिन्दी नाटककार पुरुषोत्तम कवि - डा० भीमसेन सिर्मल, हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ, 1969.

(2) दक्खिनी का पद्य और गद्य - संपा. डा० श्रीराम शर्मा, हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद. 1954.

(3) दक्खिनी साहित्य का इतिहास - दशरथ राज, अपोलो प्रकाशन, आगरा, 1972.

(4) दक्खिनी हिन्दी का साहित्य - डा० श्रीराम शर्मा, दक्षिण प्रकाशन, गांधी नगर, हैदराबाद-1972.

(5) दक्खिनी हिन्दी का उद्भव और विकास - डा० श्रीराम शर्मा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, प्रथम संस्करण ।

(6) भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी - डा० सुनीति कुमार चर्टाजिया, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-1977.

(7) हिन्दीं : उद्भव, विकास और ... डा० हरदेव बाहरी, कि... महल, इलाहाबाद ।

(8) हिन्दी और उसकी विविध बोलियां - प्रो० दीपचन्द्र ... एवं डा० कैलास तिवारी, भोपाल-1972.

(9) हिन्दी भाषा का इतिहास- डा० धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दु... अकादमी, प्रयाग-1958.

(10) दक्खिनी उर्दू (अंग्रेज़ी में)- एस. खादर मोहिद्दीन, अन्नामलै विश्वविद्यालय, ... शास्त्र विभाग-1980.

(11) इंफ्लुयेंस ऑफ उर्दू आन ते... डा स्वराज्य लक्ष्मी, लेखकीय प्रकाशन-1984.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनापन का अभिमान और सम्मान

क कु

[केरल के विख्यात हिन्दी लेखक श्री. क कु का यह नया स्तंभ इस अंक से आरंभ हो रहा है।]

श्रीकृष्ण तुलाभार के अवसर तुला के एक पलडे में भगवान श्रीकृष्ण थे और दूसरे में एक तुलसी दल। लेकिन तुलामान करते समय तुलसी-दल का पलडा भारी रहा। क्योंकि उस तुलसी दल के साथ एक शुद्ध मनोभावना जुडी हुई थी जो स्वयं भगवान से भी भारी थी।

ठीक उसी प्रकार केरल हिन्दी प्रचार सभा ने स्वतंत्रता संग्राम के समय से हिन्दी प्रचार में लगे हुए दस वरिष्ठ हिन्दी प्रचारकों को छः छः हजार रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की। ये प्रचारक ऐसे आदरणीय व्यक्ति थे जिन्होंने सर्वस्व त्याग कर राष्ट्रपिता महात्मा की प्रेरणा से हिन्दी प्रचार क्षेत्र में प्रवेश किया था और हिन्दी प्रचार के द्वारा लोगों में राष्ट्रीय एकता और स्वतंत्रता की भावना फैलायी। ब्रिटिशों की काली साया में पलनेवाली सामन्ती शासन व्यवस्था से अनेक प्रकार की विषमताएँ इन्हें झेलनी पडी थीं। लेकिन वे अपने लक्ष्य पर अडिग रहे और तब तक अपना कार्य धीरता से करते रहे जब तक राष्ट्र स्वतंत्र हो गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भी वे हिन्दी प्रचार के कार्य में जुटे रहे। लेकिन वेदनापूर्ण बात यह रही कि स्वतंत्रता प्राप्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के बाद अनेक लोगों को राष्ट्र ने पुरस्कारों, उपाधियों और ताम्र पत्रों से सम्मानित किया और निस्वार्थ त्यागी हिन्दी प्रचारक यांत्रिक रूप से ताली पीटते रहे जब उनके मन में न जाने किन किन विकारों के ज्वार-भाटे उत्पन्न होते रहे। शोले में जना धूप में मिटता नहीं है। और इसलिए वे निराशा के वशीभूत न होकर अपने कर्म क्षेत्र में कार्यरत रहे। उनमें से जीवित रहने वाले दस वरिष्ठ प्रचारकों को केरल हिन्दी प्रचार सभा ने छः छः हज़ार रुपये की राशि दी थी जो उनके त्याग की तुलना में तुच्छ है, लेकिन उस लघु संख्या के साथ वरेण्य व्यक्तियों को समाहृत करने की भावना जुडी हुई थी; इसलिए अन्य संस्थाओं और सत्ता की अपेक्षा केरल हिन्दी प्रचार सभा का पलडा भारी रहा।

x x x

आर्थिक सहायता वितरण के एक सप्ताह बाद कृ कु अपने मित्रों के साथ एक शव-यात्रा में शामिल होकर श्मशान तक गया। वहाँ श्री. चन्द्रशेखरन नायर नामक एक पुराने हिन्दी प्रचारक के निर्जीव शरीर को विद्युत् श्मशान में दाह-

यह अभियान तब तक जारी रहे जब तक शासन सत्ता राष्ट्र सेवा एवं स्वतंत्रता संग्राम से जुडे रहकर प्रतिकूल परिस्थितियों में हिन्दी का प्रचार करके स्वतंत्रता प्राप्ति को त्वरित करते रहे उन बचे खुचे हिन्दी प्रचारकों को उचित सम्मान न करती।

संस्कार किया गया जिनका नाम केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा समाहृत दस व्यक्तियों में था। दस में आठ ही व्यक्ति समारोह में आ पाये थे और दो व्यक्ति शारीरिक दुखों के कारण आ न पाये थे और उनमें एक था स्व० चन्द्रशेखरन नायर। श्मशान में कृ कु मन ही मन कह उठा- सभा ने कितना अच्छा किया कि कमसे कम मृत्यु के आगमन के पहले ही उन महान हिन्दी प्रचारक को आश्वासन प्रदान कर सकी।

x x x

कहानी यहाँ से प्रारंभ होती है। भू के ऊपर विराजमान आलीशान अट्टालिका पर सब की आँखें उलझ जाती हैं। लेकिन भू के नीचे अदृश्य होनेवाले मट-मैले नींव के पत्थरों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की कौन परवाह करे ! क्यों परवाह करे ? इसका केरल हिन्दी प्रचार सभा ने उत्तर दिया अपने कर्म के द्वारा। वरिष्ठ दस हिन्दी प्रचारकों को सम्मान प्रदान करने मात्र से कार्य पूरा नहीं होता। यह अभियान तब तक जारी रहे जब तक शासन सत्ता राष्ट्र सेवा एवं स्वतंत्रता संग्राम से जुडे रहकर प्रतिकूल परिस्थितियों में हिन्दी का प्रचार करके स्वतंत्रता प्राप्ति को त्वरित करते रहे उन बचे खुचे हिन्दी प्रचारकों को उचित सम्मान न करती। वे किसी के सामने हाथ पसारने वाले नहीं हैं। क्यों कि उन्होंने वर्षों से हज़ारों को सुनाया, पढाया और दिखाया है कि खादी के धागे धागे में अपनापन का अभिमान भरा है। ★

राष्ट्रभाषा हिन्दी हो जाने पर हमारे व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन पर विदेशी भाषा का प्रभुत्व गर्हित बात है।

पं० कमलापति त्रिपाठी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकों के पत्र

आपकी पत्रिका तथा आपके कार्यक्रमों की सूचना बराबर मिलती रहती है। आप के हिन्दी के प्रचार-प्रसार कार्य की जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है। आप की निष्ठा एवं कर्मठता के लिए मैं आप को बधाई देता हूँ।

डा० तारकनाथ बाली
अध्यक्ष
हिन्दी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

केरल ज्योति का जून, 1988 का अंक प्राप्त हुआ। मुझे यह देखकर प्रसन्नता हुई कि आपने इस अंक को दक्खिनी हिन्दी का विशेषांक ही बना दिया है और इसमें केरल विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित संगोष्ठी के अवसर पर जो प्रमुख भाषण हुए या पेपर पढे गये थे, उन्हें अविकल रूप से प्रकाशित किया यह सराहनीय कार्य किया है। इसके लिए मैं आप को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

इस अंक में "दक्खिनी हिन्दी और साहित्य के विकास में इसका योगदान" विषय पर मेरा भाषण भी बहुत सुन्दर ढ़ंग से प्रकाशित किया गया है। इसकेलिए मैं आभार व्यक्त करता हूँ। हिन्दी के प्रचार और प्रसार में केरल ज्योति का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है। सुदूर दक्षिण से प्रकाशित होनेवाली यह पत्रिका उत्तर में भी उतनी ही लोकप्रिय है, जितनी दक्षिण में इसका सारा श्रेय आपके कुशल संचालन और सम्पादन को जाता है।

डा० परमानन्द पांचाल
संघ लोकसेवा आयोग
शाहजहाँ रोड, नई दिल्ली
फोन : 385038

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरभाष । 61378 तार : "जय हिन्दी"

केरलज्योति

पुष्प 23
दल 7

एक प्रति—1 रु० 50 पै०
वार्षिक—15 रु०

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका
अक्तूबर 1988

संपादकीय

हिन्दी दिवस और हिन्दी सप्ताह

संविधान में राजभाषा के रूप में हिन्दी को स्वीकृत करनेवाली धारा 14-9-1949 को सर्वसम्मति से पारित हुई थी। इस उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष 14 सितंबर को हिन्दी दिवस मनाने का क्रम हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद; राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा आदि स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं ने आरंभ किया।

गत कुछ वर्षों से भारत सरकार के गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग सुनिश्चित करने केलिए केन्द्र सरकारी कार्यालयों का जो वार्षिक कार्यक्रम तैयार किया जाता है इस में यह भी सुझाया जाता रहा कि सभी केन्द्र सरकारी कार्यालयों में वर्ष में एक बार हिन्दी दिवस/हिन्दी सप्ताह मनाया जाये। किन्तु यह नहीं सुझाया जाता था कि यह समारोह कब और कैसे मनाया जाये। फलत: हर कार्यालय अपनी सुविधा के अनुसार किसी न किसी दिन येन केन प्रकारेण हिन्दी दिवस या हिन्दी सप्ताह मनाकर आदेश का पालन किया करता रहा। कहीं कहीं कुछ भाषण/लेखन प्रतियोगितायें चलती। कहीं कहीं हिन्दी दिवस का बैनर कार्यालय के द्वार पर प्रदर्शित करना ही एकमात्र कार्यक्रम रह गया था। इस से कोई प्रभाव गोचर नहीं होता था।

केरल हिन्दी प्रचार सभा ने एक नया प्रयोग आरंभ किया। केरल स्थित केन्द्र सरकारी कार्यालयों, निगमों, उपक्रमों एवं राष्ट्रीयकृत बैंकों के सहयोग से प्रतिवर्ष 14 सितंबर को हिन्दी दिवस और उस दिन से सात दिनों तक हिन्दी सप्ताह विविध कार्यक्रमों के साथ मनाया जाने लगा। इस का बहुत बडा प्रभाव लक्षित हुआ। इस अनुभव के आधार पर सभा ने केन्द्र सरकार की केन्द्रीय हिन्दी समिति में तथा अनेकों मंत्रालयों की हिन्दी सलाहकार समितियों में यह सुझाव रखा के राजभाषा विभाग द्वारा तैयार किये जा रहे वार्षिक कार्यक्रम में यह स्पष्ट निर्देश दिया जाये कि कार्यालयों में 14 सितंबर को ही हिन्दी दिवस मनाया जाये और उसी दिन से हिन्दी सप्ताह मनाया जाये। यह भी सुझाया जाये कि इन समारोहों के आयोजन में स्वैच्छिक हिंदी संस्थाओं का भी सहयोग लिया जाये। आयोजन की माँग रखा भी दी गयी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में

निरक्षरता दूर करें 3
श्री. राजीव गांधी

बीच भारतीय भाषाओं के अधिक तालमेल हो 6
डा० शंकरदयाल शर्मा

हिन्दी लोगों के दिल में आये 8
श्री. राजीव गांधी

केरल और केन्द्र के पत्र व्यवहार केलिए क्यों न हिन्दी अपनायें? 14
श्रीमती रामदुलारी सिन्हा

हिन्दी सप्ताह समारोह केरल का अनुकरणीय आदर्श 23

सदी इक्कीसवीं आ रही है (कविता) 34
श्री. पी. नारायण "नरन"

अग्नये स्वाहा ! (कविता) 35
मूल : डॉ० पुतुश्शेरी रामचन्द्रन
अनु : डॉ० एस. तंकमणि अम्मा

'हँसी' (कविता) 38
डा० रती सक्सेना

रद्दी (एक व्यंग्य) 39
शकुन्तला सिरोठिया

दीपावली (कविता) 40
बशीर अहमद मायूख

पाठकों के पत्र

हमें बड़ी प्रसन्नता है कि इस वर्ष के वार्षिक कार्यक्रम में ऐसा ही निदेश दिया गया। फलस्वरूप इतिहास में पहली बार केन्द्र सरकार के हर कार्यालय में गत 14 सितंबर को हिन्दी दिवस और उसी दिन से हिन्दी सप्ताह मनाया गया। दिल्ली में भी इस संबन्ध में भी विराट आयोजन हुए। देश के कर्णधारों ने इस अवसर पर राजभाषा के रूप में हिन्दी का प्रगामी प्रयोग सुनिश्चित करने के संबंध में सरकारी कर्मचारियों को उद्बुद्ध किया। राष्ट्रपति, उप राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री द्वारा दिये गये उद्बोधन इस अंक में दिये गये हैं। इस अवसर डाक विभाग द्वारा एक विशेष डाक टिकट भी निर्गमित किया गया। इन सब कार्यक्रमों से एक प्रकार का जो समेकित प्रभाव कर्मचारियों और साधारण जनता पर पड सका है वह अन्यथा असंभव होता। इस महत्वपूर्ण कदम केलिए हम राजभाषा विभाग का हार्दिक अभिनन्दन करते हैं और आशा करते हैं इस आयोजन के प्रगामी विस्तार और उन्नति केलिए आवश्यक निदेश आगामी वार्षिक कार्यक्रम में दिये जाते रहेंगे।

केरल में हिन्दी दिवस और हिन्दी सप्ताह इस वर्ष कैसे मनाया गया उसकी झलक इस अंक से मिलेगी। केरल के राज्यपाल ने समारोह के दौरान एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रश्न उठाया है। उनका प्रश्न है कि केरल जैसे हिन्दीतर प्रान्त जहाँ हिन्दी का वर्षों से प्रचार हो रहा है केन्द्र सरकार के साथ पत्र व्यवहार करने में अंग्रेज़ी की जगह क्यों न हिन्दी अपनायें। इस संबंध में विशद और व्यापक चर्चा आरंभ करनी है ताकि निकट भविष्य में यह सुन्दर संकल्प यथार्थ हो सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरक्षरता दूर करें

[8-9-1988 विश्व साक्षरता दिवस मनाया गया। इस उपलक्ष्य में दिये गये कुछ महत्वपूर्ण सन्देश आगे दिये जा रहे हैं।]

निरक्षरता बडी बाधा है

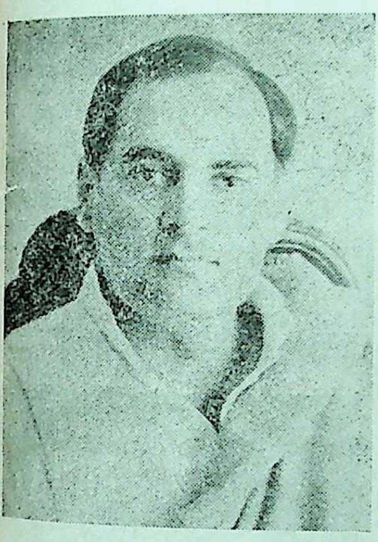

श्री. राजीव गांधी
प्रधान मंत्री

"निरक्षरता हमारी प्रगति के रास्ते में बहुत बडी बाधा है। साक्षरता से हमारा लोकतंत्र मजबूत होता है और इससे विकास में तेजी आती है। लिखने-पढ़ने योग्य होने से व्यक्ति विशेष की जानकारी में वृद्धि होती है और उसे अपनी क्षमता के पूर्ण विकास हेतु और अधिक शक्ति प्राप्त होती है। निरक्षरता के शाप का सामना करने के लिए हमने एक राष्ट्रीय अभियान चलाया है।

राष्ट्रीय साक्षरता दिवस प्रतिवर्ष साक्षरता कार्यक्रमों के क्रियान्वयन का मूल्यांकन करने और निरक्षरता को हटाने के लिए जनता को भागीदार बनाने के लिए मनाया जाता है। इस दिन हम निरक्षरता को हटाने और मानव संसाधन की अपार क्षमता को अपने देश की बेहतरी और मानव के व्यक्तित्व के पूरे विकास हेतु प्रयोग में लाने के अपने संकल्प को दोहराते हैं।"

प्रतिबद्धता का विषय

"साक्षरता को प्रोत्साहन अब विकल्पों का चुनाव नहीं रह गया है, यह सरकार की ओर से गहन विश्वास एवं प्रतिबद्धता का विषय है जिसने राष्ट्रीय साक्षरता मिशन शुरू किया है। यह हमारे राष्ट्रीय अंत:करण को झकोरने का विषय है कि इस सदी के अंत तक विश्व के सबसे अधिक निरक्षर हमारे देश में होंगे अत: समाज के उन सभी वर्गों एवं शक्तियों को सक्रिय करने की आवश्यकता है जो निरक्षरता के उन्मूलन एवं साक्षरता के प्रोत्साहन में अपना योगदान कर सकें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

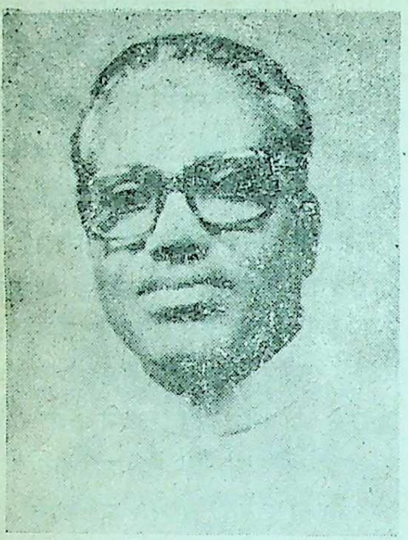

श्री. पी. शिवशंकर
केन्द्र मानव संसाधन विकास मंत्री

इस दिन, जो कि 1967 से ही विश्व भर में साक्षरता दिवस के रूप में मनाया जाता है, मैं इस मिशन को सफलता हेतु समाज के सभी वर्गों से अपने असीमित सहयोग तथा समर्थन की अपील करता हूँ।"

चुनौती लें

"प्रत्येक वर्ष 8 सितम्बर, 1988 को अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस के रूप में मनाया जाता है, ताकि इस बारें में जनता को सूचित किया जा सके, इस बारे में जनमत तैयार किया जा सके तथा साक्षरता को बढ़ावा देने हेतु सभी संसाधन उपलब्ध कराए जा सकें। अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस मनाया जाना इस लिए और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है क्यों कि हमारे देश ने राष्ट्रीय साक्षरता अभियान द्वारा 15 से 35 वर्ष के आयुवर्ग में निरक्षरता को मिटाने का संकल्प लिया है। इस अभियान का उद्देश्य सीखने वाले लोगों को साक्षरता के मामले में आत्मनिर्भर बनाना तथा निजी विकास के साथ-साथ राष्ट्रीय विकास में भागीदारी हेतु उनकी

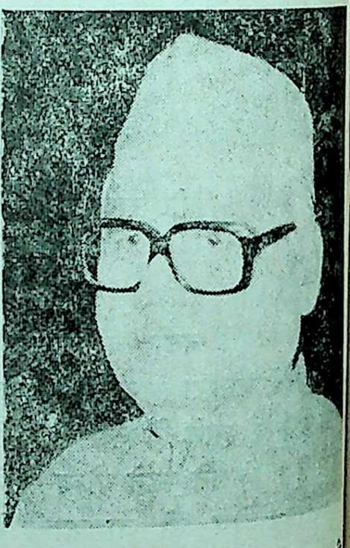

श्रीं. ललितेश्वर प्रसाद शाही
केन्द्र शिक्षा तथा संस्कृति राज्यमंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संख्या में तथा क्षमता में बढ़ोतरी करना है। यह सब विभिन्न प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों द्वारा उनके मूल्यों प्रतिभा, ज्ञान तथा कुशलता दोनों की क्षमताओं के विकास से होगा। हमें आशा है, यह अभियान इसके अंतर्गत शिक्षा लाभ पाने वालों को समाज के उपयोगी सदस्य बनने में सहायक होगा।

आज के दिन, मैं सभी संबद्ध व्यक्तियों से अनुरोध करता हूँ कि वे स्थिति की और इस अभियान के उद्देश्यों की गंभीरता को समझें तथा साक्षरता की चुनौती को सही परिप्रेक्ष्य में लें और इस अभियान को सफल बनाने केलिए अपना हार्दिक समर्थन दें।''

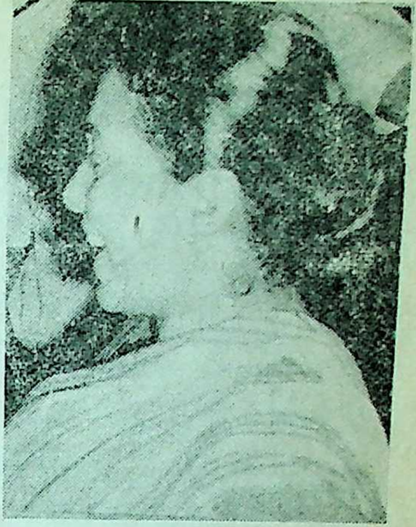

श्रीमती मार्ग्रेट आल्वा
केन्द्र महिला और बाल विकास राज्यमंत्री

हार्दिक सहयोग दें

''साक्षरता को प्रोत्साहन देने में जनता को भागीदार बनाने के लिए प्रतिवर्ष अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस मनाया जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का उद्देश्य शिक्षा के द्वारा सामाजिक परिवर्तन का कारक है। राष्ट्रीय साक्षरता मिशन ने यह संदेश ग्रामीण क्षेत्रों, विशेषकर महिलाओं तक पहुँचायेगा।

यह सभी संबंधित लोगों का कर्तव्य है, विशेष तौर पर जो महिलाओं का दर्जा बढ़ाने के लिए कृत संकल्प हैं, कि वे सन 2000 तक भारत में सभी लोगों को साक्षर बनाने हेतु अपना हार्दिक सहयोग दें।'' ★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

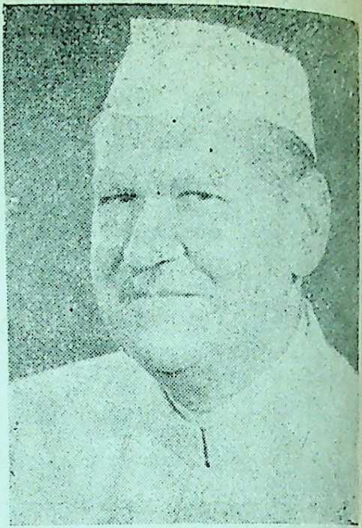

बीच भारतीय भाषाओं के अधिक तालमेल हो

डा० शंकरदयाल शर्मा
उपराष्ट्रपति

उपराष्ट्रपति डा० शंकरदयाल शर्मा ने लोगों से भाषा के मामलों में प्रगतिशील और अधिक उदारवादी दृष्टिकोण अपनाने तथा विभिन्न भारतीय भाषाओं जिसमें हिन्दी भी शामिल है अधिक समन्वय स्थापित करने पर बल दिया है।

14-9-1988 को हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में प्रमुख अतिथि के रूप में बोलते हुए उपराष्ट्रपति ने कहा कि इस तालमेल से न केवल सभी भारतीय भाषाएँ समृद्ध होंगी, बल्कि इससे देश के विभिन्न भागों में रहने वाले लोगों में एकता तथा परास्पारिक समझ-बूझ को भी बढ़ावा मिलेगा।

डा० शर्मा ने भारत की सारी भाषाओं का विकास करने की आवश्यकता पर बल दिया और कहा कि अगर हिन्दी को सम्पर्क भाषा के रूप में अपनी भूमिका निभानी है तो उसे अपने को कृत्रिमता से मुक्त करना होगा जो वर्तमान राजभाषा के रूप में उसमें आ गई है। उन्होंने कहा कि हिन्दी को स्वाभाविक गति देने और अधिकांश लोगों द्वारा स्वीकार किये जाने के लिए यह आवश्यक है कि वह अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दों और प्रयोगों को अपनाए। अन्य भारतीय भाषाओं की महत्वपूर्ण रचनाओं के हिन्दी में अनुवाद को प्रोत्साहन देकर ऐसा किया जा सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी को स्वाभाविक गति देने और अधिकांश लोगों द्वारा स्वीकार किए जाने के लिए यह आवश्यक है कि वह अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दों और प्रयोगों को अपनाए। अन्य भारतीय भाषाओं की महत्वपूर्ण रचनाओं के हिन्दी में अनुवाद को प्रोत्साहन देकर ऐसा किया जा सकता है।

डा० शर्मा ने याद दिलाया कि हिन्दी का विकास अहिन्दी भाषी क्षेत्रों के नेताओं तथा महात्मा गांधी, तिलक, विनोबा भावे, दयानन्द सरस्वती और अन्य के प्रयासों के फलस्वरूप हुआ है। देश के अधिकांश लोग हिन्दी बोलते हैं और स्वयं राष्ट्रीय एकता की भावना का प्रतिरूप है। डा० शर्मा ने कहा कि इन नेताओं का दृढ़ विश्वास था कि कोई भी राष्ट्र अपनी राष्ट्रीय भाषा की अनुपस्थिति में अपनी स्वतंत्रता की परिभाषा नहीं कर सकता। वे इस बात को भी समझते थे कि अगर

कोई भी राष्ट्र अपनी राष्ट्रीय भाषा की अनुपस्थिति में अपनी स्वतंत्रता की परिभाषा नहीं कर सकता।

हमें राष्ट्र एक-रूपता की भावना को मजबूत करना है, तो हमारी सम्पर्क भाषा होनी चाहिए।

इस समारोह का आयोजन दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा किया गया। इसमें प्रतिष्ठित साहित्यिक विभूतियों —
डा० हरिवंश राय बच्चन,
आचार्य क्षेम चन्द सुमन,
श्री. जयदयाल डालमिया,
श्रीमती शीला झुनझुन वाला,
श्री. बालकवि वैरागी,
श्री. सत्यनारायण बंसल और श्री. संतोषानंद को उनके हिन्दी साहित्य और पत्रकारिता में योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी लोगों के दिल में आये

श्री. राजीव गांधी
प्रधान मंत्री

16–9–1988 को नई दिल्ली स्थित विज्ञान भवन में गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन तथा इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। सम्मेलन का उद्घाटन और पुरस्कार वितरण प्रधानमंत्री श्री. राजीव गांधी ने किया।

भारत की शक्ति भारत की विभिन्नता में है। हमारी सभ्यता पांच हज़ार सालों से बगैर टूट के चलती हुई आ रही है। हमारी सभ्यता में बहुत से गुण हैं, बहुत सी ताकतें हैं।

इस अवसर पर अपने भाषण में श्री. गांधी ने कहा: भारत की शक्ति भारत की विभिन्नता में है। हमारी सभ्यता पांच हज़ार सालों से बगैर टूट के चलती हुई आ रही है। हमारी सभ्यता में बहुत से गुण हैं, बहुत सी ताकतें हैं। शायद सबसे महत्वपूर्ण बात हमारी सभ्यता में हमारा आत्मविश्वास है। क्योंकि इस आत्मविश्वास के साथ इसकी शक्ति पर हम हमारी सभ्यता में एक सहनशीलता ला पाये हैं। हम हमारी सभ्यता में एक एब्जोरप्शन (ग्रहण करने) की भावना ला पाये हैं। हम हमारी सभ्यता में ऐसी शक्तियां बना पाये हैं जिससे हम कभी हरे नहीं दूसरी संस्कृतियों से, दूसरी विचारधाराओं से, बल्कि हमने खुल कर उन्हें समझा है, पढ़ा है और जहाँ हमें ठीक लगा हमने उन्हें लेकर हमारी संस्कृति में, हमारी सभ्यता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में मिला के रख लिया है। यही हमारे देश की सबसे बडी शक्ति है। एक तरफ विविधता, दूसरो तरफ, उसी में एकता। इसी से हम भारत को आज इतना मज़बूत बना पाये हैं। अगर इस शक्ति को कम होने दें तो भारत की शक्ति कम हो जाती है।

अगर हमें आज हिन्दी का एक राजभाषा बनाकर प्रचार करना है तो हमें हमारी सभ्यता की शक्तियों को ध्यान में रखना है, इसी रो में हमें हिन्दी का प्रचार करना है, हिन्दी को आगे बढ़ाना है। अगर हम इसी तरह से करेंगे तो कोई भी कमजोरी नहीं आयेगी। अगर हम इसके बदले में इस तरह से प्रचार करें कि लोगों को महसूस हो, लोगों को लगे कि जबरदस्ती उनके ऊपर हिन्दी लगायी जा रही है, अगर उन पर जबरदस्ती या दंड देकर हम हिन्दी पहुंचायें तो हो सकता है कि असर उल्टा हो और हिन्दी का प्रचार बनाये आगे बढ़ने के ज्यादा कमज़ोर हो जाये।

हमारे संविधान में 15 भाषाओं को जगह दी गयी है और ये सब भाषाएँ बराबर हैं। सब भारत की भाषाएँ हैं। सब को बराबर सम्मान

अगर कहीं पर भी लगने लगेगा हिन्दी किसी प्रांत की भाषा को हटा रही है अपनी जगह से या नीचे दबाने की कोशिश कर रही है तब लोग अकड के खडे हो जायेंगे और हिन्दी का बहुत सख्त विरोध होगा।

देना है। सब को बराबर आदर देना है। हमें देखना है कि सबको पूरा मौका मिले आगे बढने का, परिवर्तन करने का। क्योंकि जब सब प्रांतीय भषाओं को ऐसा मौका मिलेगा तभी उनमें, उन प्रांत के लोगों में वो शक्ति आयेगी कि वो हिन्दी को मान्यता देंगे और हिन्दी को भी अपनी भाषा पूरी तरह से मानेंगे। अगर कहीं पर भी लगने लगेगा कि हिन्दी किसी प्रांत की भाषा को हटा रही हैं अपनी जगह से या नीचे दबाने की कोशिश कर रही है तब लोग अकड़ के खडे हो जायेंगे और हिन्दी का बहुत सख्त विरोध होगा। तो जब हम हिन्दी का प्रचार करें तो हमें इन बातों को ध्यान रखकर ऐसे प्रचार करना चाहिए कि हिन्दी लोगों के दिल में आये उनके मन में

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आए और वो प्यार से हिन्दी को मान लें, अपना लें।

गांधी जी ने हिन्दी को बहुत महत्वपूर्ण जगह दी थी। गांधी जी ने हमें सिखाया था कि हिन्दी में और कोई प्रांतीय भाषा में कोई टककर नहीं है, दोनों के लिए जगह है। भारत एक बहुत बडा देश है और इसी तरह से आज भी हमें हिन्दी को आगे बढाना है, हिन्दी का प्रचार करना है। एक तरफ तो हमें देखना है कि हिन्दी राजभाषा बने सरकार की भाषा बने, दूसरी तरफ उतना ही हमें देखना है कि हिन्दी लोगों की भाषा बने। जब तक दोनों चीजें नहीं होंगी तब तक असलियत में हिन्दी का प्रचार देश के कोने-कोने तक नहीं हो पायेगा।

अगर हमें हिन्दी को लोगों की भाषा बनानी है तो हमें बहुत गौर से देखना है कि क्या क्या करने की जरूरत है। लोगों को महसूस नहीं होना चाहिए कि कोई जबरदस्ती हिन्दी उनके ऊपर थोप रहा है लेकिन उससे भी ज्यादा जरूरी है कि उन्हें लगे कि हिन्दी एक जीवित भाषा है। हिन्दी में दूसरी भाषाओं से भी शब्द आयें। जैसे नयी टैक्नोल्लोजी बनती है, विज्ञान आगे बढ़ता है तो हिन्दी में नये शब्द आयें जिसमें हिन्दी आज के जमाने के साथ-साथ चले। हमें देखना है कि हिन्दी में. अंग्रेजी से, उर्दू से, भारत की दूसरी भाषाओं से भी शब्द आयें क्योंकि उसी से एक जीवित भाषा रहेगी। लेकिन सबसे जरूरी हमें देखना है कि लोगों को लगे कि अगर वो हिन्दी सीखें, अगर वो हिन्दी पढ़ें तो उनको जीवन-स्थिति में कुछ परिवर्तन आयेगा, उन्हें बहुत ज्यादा मौका मिलेगा आगे बढ़ने के लिए। इस तरफ हम अभी भी काफी ध्यान नहीं दे रहे हैं। अगर हम आज भी देश में किसी युवक से पूछें कि अगर उसे नौकरी चाहिये, रोजगारी चाहिये तो अंग्रेजी की तरफ सीधे देखना है। मैं आज भी देख रहा हूँ गाँव में भी देहात में भी जिसके पास भी साधन होता है वो सीधे अंग्रेजी की तरफ,

लोगों को लगे कि अगर वो हिन्दी सीखें, अगर वो हिन्दी पढ़ें तो उनकी जीवन-स्थिति में कुछ परिवर्तन आयेगा उन्हें बहुत ज्यादा मौका मिलेगा आगे बढ़ने के लिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने बच्चों का ध्यान अंग्रेजी की तरफ डालता है। क्योंकि उसे महसूस होता है कि अंग्रेजी से उसके बच्चे को ज्यादा मौका मिलेगा आगे बढ़ने के लिए। तो हमें खुद भी देखना है कि हम हिन्दी पढ़ने वालों के लिए काफी मौका दे रहे हैं कि नहीं। हम उनको काफी अवसर दे रहे हैं कि नहीं आगे बढ़ने के लिए। जब तक इस तरफ भी हम पूरा ध्यान नहीं दे पायेंगे तब तक लोग हिन्दी को अच्छी तरह से स्वीकृत नहीं करेंगे।

हमने राजभाषा का दर्जा तो हिन्दी को दे दिया है। हिन्दी देश भर में बहुत लोग समझते हैं और बहुत लोग बोलते हैं, बहुत से ऐसे इलाकों में भी जहाँ हिन्दी भाषा आम लोग नहीं बोलते हैं वहाँ भी लोग हिन्दी को आज समझने लग गये हैं। हिन्दी भारत की बहुत दूसरी भाषाओं के साथ संबंध रखती है और बहुत से शब्द ऐसे हैं जो लोग आसानी से समझ सकते हैं। और हमने देखा है कि नयी किताबों के साथ खासकर विज्ञान और टैक्नोलोजी की किताबों के साथ हिन्दी बहुत अलंकृत हुई है इसलिए हमारे सरकारी काम के लिए हिन्दी

दक्षिण की भाषाएँ संस्कृत से बहुत संबंध रखती हैं और अगर हम सरल हिन्दी बोलेंगे, इस्तेमाल करेंगे तो हमारे दक्षिण के भाइयों और बहनों के लिए बहुत ज्यादा मुश्किल हो जायेगा।

से अच्छी और कोई भाषा नहीं हो सकती है। हिन्दी का प्रचार करना है लेकिन जैसे मैं ने कहा था कि बहुत ध्यान से करना है।

पंडित जवाहरलाल नेहरू जी ने जो नीति हमारे सामने रखी उसी नीति पर हमें आगे बढ़ना है। एक तरफ हिन्दी का प्रचार होना है दूसरी तरफ ऐसा दबाव नहीं लगना है कि लोग अकड़कर खड़े हो जायें। जब भी हम ऐसे प्रदेशों में हिन्दी का प्रचार करते हैं जहाँ आम लोग हिन्दी नहीं बोलते हैं वहाँ हमें बहुत खास ध्यान इन बातों पर देना है। एक दूसरा बहुत बड़ा प्रश्न सामने आता है वो कि किस तरह की हिन्दी हो क्योंकि उत्तर में तो सरल हिन्दी का प्रचार होता है जितनी सरल हो, उतना आसान होगा, उतने लोग उसे इस्तेमाल करेंगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन अगर हमें सचमुच में पूरे देश में हिन्दी को फैलाना है तब सरल हिन्दी फैलाने में और मुश्किल होगी क्योंकि दक्षिण की भाषाएँ संस्कृत से बहुत संबंध रखती हैं और अगर हम सरल हिन्दी बोलेंगे, इस्तेमाल करेंगे तो हमारे दक्षिण के भाइयों और बहनों के लिए बहुत ज्यादा मुश्किल हो जायेगा। तो इन दो बातों में हमें एक ठीक रास्ता निकालना है जिसमें पूरे देश में हिन्दी अच्छी तरह से, तेजी से फैले।

अभी आपके बीच में आने में मुझे कुछ मिनट विलम्ब हो गया क्योंकि मैं बाहर जो प्रदर्शनी लगी है उसमें चला गया था और कई चीजें देखीं, जो परिवर्तन हुआ है इन सालों में वो मैं ने देखा, खासकर मैं ने देखा कि मशीनों में बहुत परिवर्तन हुआ है। कम्प्युटरस में, टेलीप्रिंटर्स में टाइपराइटस में और इसे देखकर मुझे बहुत खुशी हुई क्योंकि अगर हिन्दी को देश के कोने-कोने तक पहुँचना है और आज के जमाने में हिन्दी को राज-भाषा, देश की एक भाषा बननी है तब बहुत जरूरी है कि ऐसी मशीनों को भी हम हिन्दी में लाएं, चलाएँ, जिसमें सुविधा हो हिन्दी में काम करने की।

मेरी उम्मीद है कि जो काम हो रहा है वो है बहुत अच्छा लेकिन तब भी जितना फैलना था, जितना पहुंचाना था जो पहुंच हो जानी थी वो अभी तक नहीं हो पायी है। तो शुरूआत अच्छी है लेकिन अब और भी ज्यादा जोर लगाना है दफ्तरों में, घरों में, इन चीजों को पहुंचाने के लिए। मैं खास मुबारकबाद देना चाहता हूँ राजभाषा विभाग को क्योंकि उन्होंने बहुत काम किया है राजभाषा को आगे बढाने के लिए। मैं उन्हें मुबारकबाद देना चाहता हूँ इस सम्मेलन के लिए जो उन्होंने पंडित जवाहरलाल नेहरू जी की शताब्दी के लिए बुलाया है और मेरी उम्मीद है कि इस सम्मेलन से एक नयी गति बनेगी, हिन्दी राजभाषा और तेजी से बनने लगेगी और भारत की एकता और अखंडता बनाने में, भारत को मजबूत रखने में हिन्दी का पूरा भाग होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंत में मैं सब को मुबारकबाद देना चाहता हूँ जिनको आज पुरस्कार मिले हैं और मेरी उम्मीद है कि इन पुरस्कारों से हिन्दी का प्रचार बढेगा, मेरी उम्मीद कि आते हुए साल के लिए और विभाग भी बहुत जोर से काम करेंगे और अगले साल इन पुरस्कारों के लिए एक बडी दौड होगी जिससे हिन्दी का भी प्रचार और होगा।

इन सालों में हमने देखा है कि हिन्दी खाली राजभाषा नहीं बल्कि राष्ट्रभाषा और एक विश्व-भाषा भी बनने लग रही है। हमारी उम्मीद है कि इस रास्ते से हम हिन्दी के लिए विश्व में एक अच्छी जगह बनाकर रखेंगे और हिन्दी के इस प्रचार से खाली हिन्दी नहीं बल्कि भारत की प्राचीन परम्पराएँ भारत की पुरानी विचारधाराएँ दुनिया में फैलेंगी और पूरी दुनिया में एक नयी भावना आयेगी—एकता की, प्रगति की और विकास की।

प्रान्तीय भाषाओं की श्रेष्ठ रचनाओं से हिन्दी साहित्य को परिपुष्ट बनाते रहें तो हिन्दी विरोधी भावना पनप नहीं पावेगी।

श्री. के. वासुदेवन पिल्लै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल और केन्द्र के पत्रव्यवहार केलिए क्यों न हिन्दी अपनायें ?

श्रीमती रामदुलारी सिन्हा
राज्यपाल, केरल

[केरल हिन्दी प्रचार सभा और केरल स्थित केन्द्र सरकारी कार्यालयों के तत्वावधान में आयोजित हिन्दी सप्ताह समारोह के समापन सम्मेलन में 20-9-1988 को दिया गया उद्घाटन भाषण]

मलयालम, तमिल, कन्नड, तेलुगु, मराठी, गुजराती, हिन्दी जैसी आधुनिक भारतीय भाषायें, साहित्य की दृष्टि से, काफी समृद्ध हैं और विकासशील हैं।

हमारा देश अनेक सुन्दर भाषाओं से समृद्ध है। भारत की सभी भाषायें हमारे लिये प्रिय हैं और आदरणीय हैं। इन सब के ज़रिये भारत की आत्मा अपने को अभिव्यक्त करती है।

मलयालम, तमिल, कन्नड, तेलुगु, मराठी, गुजराती, हिन्दी जैसी आधुनिक भारतीय भाषायें, साहित्य की दृष्टि से, काफ़ी समृद्ध हैं और विकासशील हैं। करीब दो शताब्दियों तक हमारा देश अंग्रेज़ों के अधीन रहा। तब अंग्रेज़ों ने अपनी सुविधा के लिए, अंग्रेज़ी को कई स्तरों पर, शासन का माध्यय बनाया। न्यायपालिका व शिक्षा में भी अंग्रेज़ी को, भारतीय भाषाओं की अपेक्षा, प्रमुखता दी गयी। अन्तर्प्रान्तीय संपर्क भी अंग्रेज़ी में होने लगा। इन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब कारणों से, भारतीय भाषाओं की गति, कुछ अवरुद्ध-सी हो गयी। यदि अंग्रेजों की दासता हमें भोगनी नहीं पड़ती तो शायद हमारी भारतीय भाषायें, शासन, न्यायपालिका और शिक्षा के माध्यम के रूप में, अधिक विकास पा गयी होती और भारत की एकता दृढ़तर हुई होती।

मध्यकालीन नवजागरण के समय से ही भारतीय भाषाओं के विकास का भी प्रयत्न आरंभ हुआ। अंत-प्रान्तीय संपर्क केलिए एक भारतीय भाषा को विकास करने की आवश्यकता महसूस हुई। हिन्दी उत्तर के अनेक प्रान्तों में बोली जाती थी। अलाउद्दीन खिलजी और मुहम्मद बिन-तुग्लक ने, दक्षिण में हिन्दी पहुँचायी थी। व्यापारियों और तीर्थयात्रियों के ज़रिये भी, हिन्दी देश के कोने-कोने में पहुँच चुकी थी। केरल में स्वाति तिरुनाल ने, हिन्दी में अति सुन्दर गीत रचे थे। दक्षिण के इतर प्रान्तों में भी, हिन्दी साहित्य की वृद्धि हो रही थी। दक्खिनी हिन्दी के नाम से, हिन्दी की एक अलग शैली ही, विकसित हो चुकी थी। राजा राम मोहनराय, केशवचन्द्र सेन, स्वामी दयानन्द सरस्वती, मदन मोहन मालवीय जैसे समाज सुधारकों ने, हिन्दी को आम

स्वतंत्रता संग्राम के समय, मुख्यत: हिन्दीतर भाषा-भाषी नेताओं द्वारा, हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा बनाने का संकल्प किया गया।

भाषा के रूप में, विकसित करने का प्रारंभ किया।

स्वतंत्रता संग्राम के समय मुख्यत: हिन्दीतर भाषा-भाषी नेताओं द्वारा, हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा बनाने का संकल्प किया गया। महात्मा गांधी ने अपने रचनात्मक कार्यक्रमों में हिन्दी को स्थान दिया। हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, हिन्दी प्रचार समिति, वर्धा, बिहार हिन्दी विद्यापीठ, गुजरात हिन्दी विद्यापीठ, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, केरल हिन्दी प्रचार सभा जैसी स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं की स्थापना हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए, तपोनिष्ठ देश प्रेमियों ने की। देश की एकता को सुदृढ़ करने की इच्छा से, देश-भर में हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन बड़े प्रेम से होने लगा। जनता ने चाहा कि प्रान्तीय स्तर पर प्रान्तीय भाषायें, और राष्ट्र-स्तर-पर हिन्दी हमारे शासन का माध्यम बनें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे संविधान निर्माताओं ने जनता की इस इच्छा को साकार बनाने के लिए संविधान के भाग सत्रह में राजभाषा-संबंधी-धाराओं का समावेश किया। इस भाग का प्रथम अध्याय संघ की राजभाषा के संबंध में है। द्वितीय अध्याय, प्रादेशिक भाषाओं के संबंध में है। तृतीय अध्याय उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालयों आदि की भाषाओं के संबंध में है। चौथे अध्याय में कुछ विशेष निदेश हैं जिन में हिन्दी-भाषा के विकास के लिए भी निर्देश समाहित है।

उक्त भाग में धारा 343 (1) में यह घोषित किया गया कि संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। इस अवसर पर संविधान सभा के अध्यक्ष एवं भारतीय भाषाओं के अनन्य प्रेमी डा० राजेन्द्र प्रसाद ने कहा—" आज पहली बार हम अपने सबिधान में एक भाषा को स्वीकार कर रहे हैं जो भारत संघ के प्रशासन की भाषा होगी और जिसे समय के अनुसार अपने आप को ढालना और विकसित करना होगा।—हमने अभी देश का राजनैतिक एकीकरण संपन्न किया है। राज-

अंग्रेज़ी की जगह भारतीय भाषा को स्थापित करने से हम निश्चय ही और एक दूसरे के नज़दीक आयेंगे।"

भाषा हिन्दी देश की एकता को कश्मीर से कन्याकुमारी तक अधिक सुदृढ बना सकेगी।—अंग्रेज़ी की जगह भारतीय भाषा को स्थापित करने से हम निश्चय ही और एक दूसरे के नज़दीक आयेंगे।"

हिन्दी को संघ की राजभाषा स्वीकार करनेवाली उक्त धारा 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने स्वीकार की थी। इस उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष 14 सितंबर का दिन हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता आ रहा है। यह परंपरा हिन्दी साहित्य सम्मेलन जैसी कुछ स्वैच्छिक संस्थाओं ने आरंभ की।

संविधान के अनुच्छेद 344 (2) के अनुसार संविधान के लागू होने के पन्द्रह वर्ष की अवधि तक, अर्थात् पच्चीस जनवरी 1965 तक, संघ सरकार के कार्यों के लिए, अंग्रेज़ी का प्रयोग जारी रखने की व्यवस्था की गयी थी। अनुच्छेद 343 (3) में,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसद को यह अधिकार दिया गया कि वह अधिनियम पारित करके, छब्बीस जनवरी 1965 के बाद भी, सरकारी काम-काज में, अंग्रेजी का प्रयोग जारी रखने के बारे में व्यवस्था कर सके। तदनुसार इस शक्ति का प्रयोग करते हुए राजभाषा अधिनियम 1963 पारित किया गया जिसे 1967 में संशोधित किया गया। राजभाषा अधिनियम के अधीन राजभाषा नियम वर्ष 1976 में बनाये गये।

राजभाषा अधिनियम पारित करने के साथ-साथ, दिसंबर 1967 में संसद के दोनों सदनों में, भाषा-नीति-संबन्धि एक संकल्प पारित किया गया। इसके अनुसार हिन्दी के प्रसार तथा विकास के लिए और संघ के विभिन्न सरकारी प्रयोजनों के लिए, हिन्दी के उत्तरोत्तर प्रयोग में गति लाने हेतु प्रत्येक वर्ष, गहन और विस्तृत कार्यक्रम तैयार करने और उसे कार्यान्वित करने का दायित्व, केन्द्रीय सरकार को सौंपा गया। इसके अनुपालन में, राज भाषा विभाग द्वारा हर वर्ष, एक वार्षिक कार्यक्रम बनाया जाता है, जिसमें केन्द्रीय सरकार के सभी कार्यालयों द्वारा, एक वर्ष में हिन्दी में काम करने के लक्ष्य निर्धारित किये जाते हैं। इस कार्यक्रम में यह भी सुझाया जाता है कि सरकारी काम-काज में राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रति जागरूकता तथा उसके उत्तरोत्तर प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से, केन्द्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों, विभागों कार्यालयों, उपक्रमों एवं राष्ट्रीयकृत बैंकों में, 14 सितंबर को हिन्दी दिवस और 14 से 20 सितंबर तक हिन्दी सप्ताह मनाया जाय। यह भी सुझाया गया है कि इन आयोजनों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में लगी हुई स्वयं सेवी संस्थाओं को भी, सहयोजित किया जाय।

उक्त कार्यक्रम के अनुसार भारत-भर के केन्द्र सरकारी कार्यालयों में, 14 सितंबर को हिन्दी दिवस और चौदह से बीस सितंबर तक हिन्दी सप्ताह मनागा जाता है। इस सप्ताह के दौरान, राजभाषा संगोष्ठियाँ, राजभाषा प्रदर्शनियाँ, हिन्दी में आलेखन, टिप्पण, टंकण, भाषण, निबन्ध, काव्य, नाटक, गीत आदि की प्रतियोगितायें, पुरस्कार वितरण आदि विशेष कार्यक्रम आयोजित होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह जानकर मुझे बडा संतोष हो रहा है कि केरल में संस्था-स्तरीय उक्त कार्यक्रमों के अलावा, केरल हिन्दी प्रचार सभा और केरल स्थित केन्द्र सरकारी कार्यालयों निगमों, उपक्रमों और राष्ट्रीयकृत बैंकों के संयुक्त तत्वावधान में गठित, हिन्दी सप्ताह समारोह समिति, कुछ महत्वपूर्ण कार्यक्रम भी सम्मिलित रूप से आयोजित करती है। इस वर्ष, हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में, विशेष डाक टिकट का विमोचन हुआ है। दूरदर्शन, आकाशवाणी, समाचार पत्र, जैसे जनसंचार माध्यम भी, हिन्दी-सप्ताह समारोह के कार्यक्रमों का व्यापक प्रचार कर रहे हैं। इन कार्यक्रमों का जो प्रभाव सरकारी कर्मचारियों और जनता पर पडेगा उससे निश्चय ही हिन्दी का और इतर भारतीय भाषाओं का प्रयोग, प्रशासन में अधिक मात्रा में होने लगेगा और इतर भारतीय भाषाओं के प्रति जनमानस में अधिक श्रद्धा उत्पन्न होगी। न्याय-पालिका और शिक्षा के क्षेत्र में भी, भारतीय भाषाओं को उचित स्थान दिलाने में, ऐसे कार्यक्रम सहायक होंगे।

जिस प्रकार संघ के शासन में हिन्दी का प्रगामी प्रयोग वांछित है, उसी प्रकार राज्य स्तर पर, प्रान्तीय भाषाओं को, प्रशासन में अधिकाधिक स्थान दिलाना भी, अत्यन्त आवश्यक है। अंग्रेजी, आज भी कई राज्यों में, शासन का मुख्य माध्यम बनी हुई है। चूँकि भारत में अंग्रेजी जाननेवालों की संख्या बहुत कम है इसलिए अंग्रेजी हमारी जनतंत्रात्मक

जिस प्रकार संघ के शासन में हिन्दी का प्रगामी प्रयोग वांछित है उसी प्राकर राज्य स्तर पर, प्रान्तीय भाषाओं को प्रशासन में अधिकाधिक स्थान दिलाना भी, अत्यन्त आवश्यक है।

शासन प्रणाली में जनता की वांछित प्रतिभागिता होने नहीं देती। जितनी शीघ्रता से अंग्रेजी के स्थान पर राज्यों के प्रशासन कार्यों में प्रान्तीय भाषाओं को स्थान दिलायेंगे, जनतंत्र की सार्थक बनाने में हमें उतनी ही अधिक सफलता मिलेगी।

यह भी विचारणीय है कि केरल जैसे ऐसे हिन्दीतर प्रान्तों में जहाँ हिन्दी का वर्षों से प्रचार हो रहा है, इतर राज्यों और केन्द्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह भी विचारणीय है कि केरल जैसे ऐसे हिन्दीतर प्रान्तों में जहाँ हिन्दी का वर्षों से प्रचार हो रहा है, इतर राज्यों और केन्द्र सरकार के साथ पत्र व्यवहार करने में अंग्रेज़ी के स्थान पर क्यों न हिन्दी अपनाई जाय ?

सरकार के साथ पत्र व्यवहार करने में अंग्रेजी के स्थान पर क्यों न हिन्दी अपनाई जाय ?

केरल के हिन्दी प्रचार और हिन्दी अध्यापन के संबन्ध में मैं पूर्ण रूप से संतुष्ट नहीं हूँ। यद्यपि यहाँ करीब पचास वर्षों से हिन्दी का सुव्यवस्थित प्रचार हो रहा है, स्कूलों में त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत हिन्दी का अनिवार्य विषय के रूप में अध्यापन होता आ रहा है और कॉलेजों में हिन्दी का उच्च अध्ययन और शोध करने की पर्याप्त सुविधायें उपलब्ध हैं तो भी मेरा अनुभव यही है कि यहाँ का हिन्दी-अध्यापन बच्चों में हिन्दी बोलने की क्षमता उत्पन्न करने में सफल नहीं हो रहा है। हिन्दी में एम. ए. परीक्षा उत्तीर्ण करनेवाले भी हिन्दी भाषी लोगों से हिन्दी में वार्तालाप करने में हिचकते हैं। यह स्थिति बिलकुल संतोषजनक नहीं है। हिन्दी को हम विविध भाषा-भाषी भारतीय जन-समूहों के आपसी संपर्क का माध्यम बनाना चाहते हैं और इस माध्यम से हम देश की एकता को सुदृढ़ करना चाहते हैं ताकि हमारी स्वतंत्रता सुरक्षित रहे। यदि इस लक्ष्य को सिद्ध करना

यहाँ का हिन्दी अध्यापन बच्चों में हिन्दी बोलने की क्षमता उत्पन्न करने में सफल नहीं हो रहा है। हिन्दी में एम. ए. परीक्षा उत्तीर्ण करनेवाले भी हिन्दी-भाषी लोगों से हिन्दी में वार्तालाप करने में हिचकते हैं।

है तो हमें बच्चों में हिन्दी बोलने की क्षमता उत्पन्न करनी होगी। इस उद्देश्य को दृष्टि में रखकर हिन्दी अध्यापक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में हमें आवश्यक सुधार लानी होगी।

चौदह सितंबर से हिन्दी सप्ताह समारोह के सफल आयोजन में लगी हुई केरल हिन्दी प्रचार सभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का और केरल स्थित केन्द्र सरकारी कार्यालयों, निगमों, उपक्रमों और राष्ट्रीयकृत बैंकों का मैं हार्दिक अभिनन्दन करती हूँ। राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को सुनिश्चित करने की दिशा में तिरुवनन्तपुरम की केन्द्र सरकारी स्थापनाओं की तथा राष्ट्रीयकृत बैंकों की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियाँ जो स्तुत्य सेवा कर रही हैं उससे मैं संतुष्ट हूँ। मैं समझती हूँ कि इस सप्ताह के दौरान आयोजित भारतीय भाषा कवि सम्मेलन, राजभाषा संगोष्ठी, राजभाषा प्रदर्शनी आदि कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहे। कर्मचारियों के लिए और उनके बच्चों के लिए आयोजित प्रतियोगिताओं के जो विजेता आज यहाँ पुरस्कृत किये जा रहे हैं उनका भी मैं हार्दिक अभिनन्दन करती हूँ। मैं उस संस्था का भी अभिनन्दन करती हूँ जिस ने कर्मचारियों की प्रतियोगिताओं में सर्वाधिक अंक पाकर केरल हिन्दी प्रचार सभा का शील्ड पाने की अर्हता पायी है। इस अवसर पर एक स्मारिका प्रकाशित की जा रही है जिसमें गत वर्ष के और इस वर्ष के हिन्दी सप्ताह समारोहों का

इस वर्ष का यह हिन्दी सप्ता[ह] शासन न्यायपालिका, शिक्ष[ा] तथा अन्तर्प्रान्तीय संपर्क [में] भारतीय भाषाओं को पुन[:] प्रतिष्ठित करने की प्रेरणा दे

सचित्र विवरण दिया है। इस[के] प्रकाशन में जिन संस्थाओं ने सहयो[ग] दिया उनका भी मैं हार्दिक अभि[]नन्दन करती हूँ। मैं समझती [हूँ] इस सम्मेलन के बाद भारती[य] रिजर्व पुलिस के कर्मचारियों [की] ओर से और केन्द्रीय विद्यालय [के] बच्चों की ओर से भारत के विभि[न्न] प्रान्तों के, विभिन्न भाषाओं [में] सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये [जा] रहे हैं। ऐसे समारोहों से और [ऐसे] कवि सम्मेलनों से भारत [की] भावात्मक एकता सुदृढ होगी।

इस वर्ष का यह हिन्दी सप्[ताह] समारोह, शासन, न्यायपालि[का,] शिक्षा तथा अन्तर्प्रान्तीय संपर्क [में] भारतीय भाषाओं को पुनः प्रतिष्[ठित] करने की प्रेरणा दे। इन शब्दों [के] साथ मैं इस समापन सम्मेलन [का] उद्घाटन करती हूँ।

"जय हिन्द"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी सप्ताह समारोह
केरल का अनुकरणीय आदर्श

भारत की संविधान सभा ने चौदह सितंबर 1949 को संविधान की राजभाषा संबंधी धारा 343 (1) पारित की थी जिसमें यह घोषित किया गया है कि संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। इस उपलक्ष्य में स्वैच्छिक हिन्दी संस्थायें प्रतिवर्ष चौदह सितंबर को हिन्दी दिवस मनाती आ रही हैं। राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा तैयार किये जा रहे वार्षिक कार्यक्रम में सुझाया जाता है कि केन्द्र सरकारी कार्यालयों में चौदह सितंबर को हिन्दी दिवस और चौदह से बीस सितंबर तक हिन्दी सप्ताह मनाया जाये और इसके आयोजन में स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं को सहयोजित किया जाये।

तदनुसार हर राज्य के विभिन्न केन्द्र सरकारी कार्यालयों में हिन्दी सप्ताह मनाया जाता है। यह प्राय: संस्था के स्तर तक सीमित रहता है। पर केरल में गत कुछ वर्षों से संस्थागत समारोह के साथ-साथ विभिन्न संस्थाओं के तत्वावधान में सम्मिलित समारोह भी धूम-धाम से मनाया जाता है। प्रतिवर्ष इस आयोजन में केन्द्र सरकारी संस्थाओं का उत्साह बढ़ता जा रहा है। केरल हिन्दी प्रचार सभा तथा केरल स्थित केन्द्र सरकारी कार्यालयों, निगमों, उपक्रमों एवं राष्ट्रीयकृत बैंकों की एक हिन्दी सप्ताह समारोह समिति इस सम्मिलित समारोह का आयोजन करती है।

कार्यक्रम आयोजन सम्मेलन

1988 सितंबर 14 से 20 तक मनाये जानेवाले हिन्दी सप्ताह समारोह केलिए एक समुचित कार्यक्रम बनाने के वास्ते केन्द्र सरकारी स्थापनाओं, तिरुवनन्तपुरम स्थित नगर राज-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए श्री. सो. जे. मात्यु ने डा० गंगाशरण सिंह के चित्र पर माल्यार्पण किया ।

भाषा कार्यान्वयन समितियों तथा केरल हिन्दी प्रचार सभा के कार्यालय प्रधानों/प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन 22-8-1988 को प्रात: 10.30 बजे केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम में आयोजित हुआ ।

केरल परिमंडल के पोस्टमास्टर जनरल एवं तिरुवनन्तपुरम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री. सी. जे. मात्यु सम्मेलन के अध्यक्ष रहे । 58 प्रतिनिधियों ने सम्मेलन में भाग लिया ।

सम्मेलन ने प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी एवं अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के अध्यक्ष डा० गंगाशरण सिंह के निधन पर शोक प्रकट किया और उनको श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए एक मिनट का मौन रखा । अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए श्री. सी जे. मात्यु ने डा० गंगाशरण सिंह के चित्र पर माल्यार्पण किया।

उपस्थित सज्जनों का स्वागत करते हुए केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री श्री. एम. के. वेलायुधन नायर ने 1988 सितंबर 14 से 20 तक हिन्दी सप्ताह समारोह का सफलता-पूर्वक आयोजन करने में सभी उपस्थित सज्जनों के पूर्ण सहयोग का आग्रह किया ।

अपने अध्यक्षीय भाषण में पोस्ट मास्टर जनरल श्री. सी. जे. मात्यु ने बताया कि तिरुवनन्तपुरम में स्थित 102 केन्द्र सरकारी स्थापनाओं और उपक्रमों द्वारा जिन के कर्मचारियों की संख्या 30,000 है भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में स्तुत्यर्ह कार्य किया जा रहा है ।

प्रान्तीय भाषाओं की प्रधानता पर प्रकाश डालते हुए आपने इस बात पर ज़ोर दिया कि राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के विरुद्ध जनता की प्रतिक्रिया होने न पाये और आग्रह किया कि जनता को समझाया जाये कि राजभाषा नीति का कार्यान्वयन प्रान्तीय भाषाओं की प्रगति में बाधक नहीं होगा ।

आपने कहा कि हर कार्यालय में मनाये जा रहे हिन्दी दिवस और हिन्दी सप्ताह के आयोजन के अतिरिक्त व्यापक स्तर के समारोह के अंश के रूप में सम्मिलित प्रयत्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से यह आयोजन किया जा रहा है। गत वर्ष के समारोह ने जनता पर जो प्रभाव डाला उसका अनुस्मरण करते हुए आपने सब प्रतिभागियों से अनुरोध किया कि वे इस वर्ष के आयोजन को सफल बनाने में अपना सहयोग दें।

सम्मिलित समारोह को अपने सहयोग का वाग्दान करते हुए श्री यु. पी. कम्मत, प्रभागीय प्रबन्धक, कैनरा बैंक; श्री. पी. आर. विश्वम्भरन, वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबंधक, भारतीय खाद्य निगम; श्री. एम विश्वनाथन, उप-महा-प्रबंधक, दूर संचार; श्री. महेन्द्र प्रसाद, अतिरिक्त महा निरीक्षक, सी.आर.पी.एफ.; श्री. एन. केशवन नायर, उप-प्रधान सूचना अधिकारी, पत्र सूचना कार्यालय; श्री. प्रेमलाल डबराल, प्रधानाचार्य, केन्द्रीय विद्यालय, पल्लिप्पुरम; श्री. पी. के. के. मेनोन, कल्याण अधिकारी, पोस्टमास्टर जनरल का कार्यालय, तिरुवनन्तपुरम और डा० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर ने सम्मेलन को संबोधित किया।

हिन्दी सप्ताह समारोह समिति

उपस्थित सभी प्रतिनिधियों को मिलाकर हिन्दी सप्ताह समारोह समिति 1988 का गठन किया गया।

समिति के अध्यक्ष के पद पर पोस्टमास्टर जनरल श्री. सी. जे. मात्यु और प्रधान संयोजक के पद पर केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री श्री. एम. के. वेलायुधन नायर चुने गये।

उप-समितियाँ

समारोह के आयोजन केलिए निम्नलिखित उप-समितियाँ गठित की गयीं। हर कार्यक्रम के प्रायोजक विभागों/कार्यालयों के प्रधान संबद्ध उप-समिति के अध्यक्ष मनोनीत हुए।

1 संवाददाता सम्मेलन :
पत्र सूचना कार्यालय द्वारा प्रायोजित

संयोजक :

श्री. एन. केशवन नायर
उप-प्रधान सूचना अधिकारी,
पत्र सूचना कार्यालय

सदस्य :

विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र, भारतीय खाद्य निगम, दूरदर्शन, बैंकों की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, तिरुवनन्तपुरम रेलवे।

2 उद्घाटन समारोह :
स्टेट बैंक ऑफ ट्रावनकोर के मुख्य कार्यालय, पूजप्पुरा, तिरुवनन्तपुरम द्वारा प्रायोजित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयोजक :

श्री. ए. माधवन नायर, प्रबन्धक (राजभाषा), स्टेट बैंक ऑफ त्रावणकोर।

सदस्य :

रेलवे, भारतीय खाद्य निगम, बैंकों की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, तिरुवनन्तपुरम।
महालेखाकार का कार्यालय तिरुवनन्तपुरम, दूरसंचार।

3 संगोष्ठी :

द्रव न्योदन प्रणाली केन्द्र द्वारा प्रायोजित

संयोजक :

श्री. के. के. नायर
कार्मिक एवं सामान्य प्रशासन अधिकारी, वलियमला काम्प्लेक्स, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन।

सदस्य :

केन्द्रीय विद्यालय, पल्लिप्पुरम,
केन्द्रीय विद्यालय, पट्टम,
केन्द्रीय विद्यालय, पांगोट,
इन्डियन एयर-लाईन्स,
राष्ट्रीय बीज निगम,
ओरियन्टल इन्षोरन्स कम्पनी।

4 प्रदर्शनी :

आई. एम. पी. सी. सी. द्वारा प्रायोजित

संयोजक :

श्री. एन. केशवन नायर, उप-प्रधान सूचना अधिकारी, पत्र सूचना कार्यालय

सदस्य :

फील्ड पब्लिसिटी निदेशालय
आकाशवाणी,
डी. ए. वी. पी.

5 केन्द्रीकृत कार्यशाला :

भारतीय खाद्य निगम द्वारा प्रायोजित

संयोजक :

श्री. पी. आर. विश्वम्भरन
वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबन्धक, भारतीय खाद्य निगम

सदस्य :

पोस्ट मास्टर जनरल का कार्यालय,
दूरदर्शन,
रेलवे,
स्टेट बैंक ऑफ त्रावणकोर,
आयकर विभाग, दूरदर्शन

6 भारतीय भाषा कवि सम्मेलन :

बैंकों की राजभाषा कार्यान्वयन समिति, तिरुवनन्तपुरम एवं कैनरा बैंक द्वारा प्रायोजित

संयोजक :

डा० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदस्य :
सी. आर. पी. एफ.
जनगणना
केन्द्रीय विद्यालय, पट्टम
केन्द्रीय विद्यालय, पांगोट,
केन्द्रीय विद्यालय, पल्लिप्पुरम

7 प्रतियोगितायें :
भारतीय खाद्य निगम द्वारा प्रायोजित

(अ) कर्मचारियों की प्रतियोगिताओं केलिए

संयोजक :
श्री: प्रेमलाल डबराल, प्रधानाचार्य
केन्द्रीय विद्यालय, पल्लिप्पुरम

सदस्य :
केन्द्रीय विद्यालय, पट्टम,
केन्द्रीय विद्यालय, पांगोट,
केरल हिन्दी प्रचार सभा

(आ) कर्मचारियो के बच्चों की प्रतियोगिताओं केलिए

संयोजक :
डा० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर

सदस्य :
केरल हिन्दी प्रचार सभा,
दूरसंचार, हिन्दुस्थान लैटेक्स,
भारतीय रिसर्व बैंक

8 सांस्कृतिक संध्या :
भारतीय खाद्य निगम द्वारा प्रायोजित और हिन्दुस्थान लैटेक्स लिमिटेड द्वारा सहप्रायोजित

संयोजक :
श्री. पी. आर. विश्वम्भरन,
वरिष्ठ क्षेत्रीय-प्रबन्धक,
भारतीय खाद्य निगम

सदस्य :
केन्द्रीय विद्यालय, पट्टम,
केन्द्रीय विद्यालय, पांगोट,
केन्द्रीय विद्यालय, पल्लिप्पुरम एवं सथर्ण एयर कमाण्ड

9 स्मारिका :
भारतीय खाद्य निगम द्वारा प्रायोजित

संयोजक :
श्री पी. आर. विश्वम्भरन, भारतीय खाद्य निगम

सदस्य :
श्री. पी. के. के. मेनोन, कल्याण अधिकारी, पोस्ट मास्टर जनरल का कार्यालय, केरल परिमण्डल
डा०. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर,
श्री .के. जी. बालकृष्ण पिल्लै,
संपादक, केरल ज्योति

10 समापन समारोह :
केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा प्रायोजित

संयोजक :
प्र० पी. जे. जोसफ, अध्यक्ष, केरल हिन्दी प्रचार सभा

सदस्य :
प्रो०. एम. जनार्द्दनल पिल्ले, कोषाध्यक्ष, केरल हिन्दी प्रचार सभा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिसर्व बैंक ऑफ इंडिया, एल. आइ. सी, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया

केरल ज्योति के संपादक श्री. के. जी. बालकृष्ण पिल्लै ने कृतज्ञता ज्ञापित की। राष्ट्रगीत के साथ अपराह्न 1.00 बजे सम्मेलन समाप्त हुआ।

विशेष डाक टिकट का विमोचन

हिन्दी सप्ताह समारोह का आरंभ हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में केन्द्र सरकार द्वारा निर्गमित विशेष डाक टिकट के विमोचन के साथ हुआ। 14-9-1988 को वाई.एम.सी.ए हॉल तिरुवनन्तपुरम में आयोजित सम्मेलन

जिस प्रकार विशेष डाक टिकट पर हिन्दी की छाप पडी है उसी प्रकार हमारे हृदय में भी हिन्दी की छाप पड़े।

में केरल परिमण्डल के पोस्ट मास्टर जनरल एवं तिरुवनन्तपुरम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री. सी जे. मात्यु ने विशेष डाक टिकट विमोचनार्थ प्रस्तुत किया। विख्यात गांधीवादी विचारक एवं गांधीग्राम ग्रामीण विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति देशिकोत्तम डा० जी. रामचन्द्रन ने टिकट का विमोचन किया और कहा कि जिस प्रकार विशेष डाक टिकट पर हिन्दी की छाप पडी है उसी प्रकार हमारे हृदय में भी हिन्दी की छाप पड़े। आप ने कहा कि हिन्दी का जो राजनीति प्रेरित विरोध तमिलनाडु में पाया जाता है वह इतिहास के प्रवाह में टिक नहीं पायेगा। आपने कहा कि चूँकि भारत की अधिकांश जनता हिन्दी बोलती है इसलिए मातृभाषा के बाद राष्ट्रभाषा हिन्दी को स्थान मिलना चाहिए। आपने केरल की जनता से आग्रह किया कि हिन्दी के प्रचार केलिए केरल हिन्दी प्रचार सभा जो योजनायें कार्यान्वित कर रही है उनका पूरा पूरा लाभ उठाकर सब लोग हिन्दी पढ़ें।

केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री एवं हिन्दी सप्ताह समारोह के प्रधान संयोजक श्री.एम.के. वेलायुधन नायर ने स्वागत भाषण दिया और पत्र सूचना कार्यालय के उपप्रधान सूचना अधिकारी श्री. एन. केशवन नायर ने कृतज्ञता प्रकट की।

उद्घाटन समारोह

समारोह का औपचारिक उद्घाटन 14-9-1988 को स्टेट बैंक ऑफ ट्रावनकोर के मुख्य कार्यालय,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

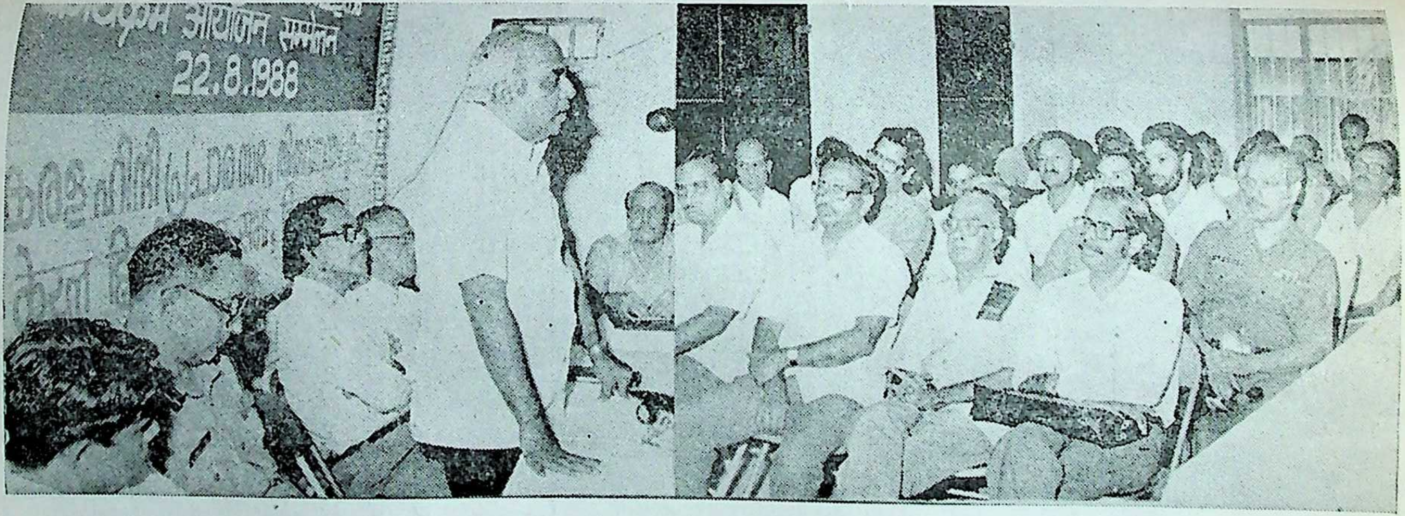

22-8-1988 के कार्यक्रम आयोजन सम्मेलन में अध्यक्षीय भाषण दे रहे हैं श्री. सी. जे. मात्यु, पोस्टमास्टर जनरल, केरल परिमंडल एवं अध्यक्ष, हिन्दी सप्ताह समारोह समिति । बैठे हैं (बायें से) श्री. एस. विश्वनाथन, उपमहाप्रबंधक, दूरसंचार केरल परिमंडल, श्री. महेन्द्र प्रसाद, अवर पुलीस उप-महा निरीक्षक, केन्द्रीय रिसर्व पुलीस, पल्लिप्पुरम, श्री. पी. आर. विश्वंभरन, वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबंधक, भारतीय खाद्य निगम, श्री. एम. के. वेलायुधन नायर, मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखिल भारतीय कवि सम्मेलन

14-9-1988 को वाई. एम. सी. ए. हॉल, तिरुवनन्तपुरम में आयोजित अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का उद्घाटन कर रही हैं मलयालम की विख्यात कवयित्री श्रीमती बालामणि अम्मा। प्रो० ओ. एन. वी. कुरुप अध्यक्षता कर रहे हैं। समीप बैठे हैं डा० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर (संयोजक)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

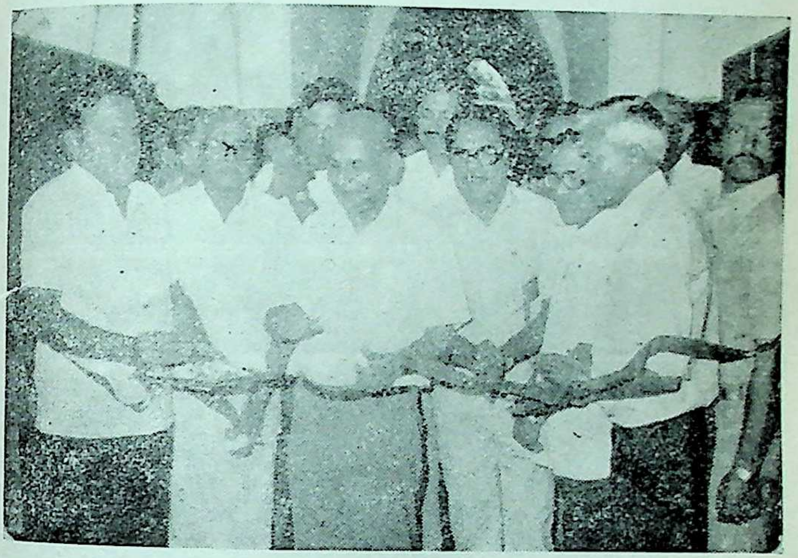

राजभाषा प्रदर्शनी

वी. जे. टी. हॉल, तिरुवनन्तपुरम में आयोजित राजभाषा प्रदर्शनी का उद्घाटन 15-9-1988 को विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र के निदेशक डा० एस. सी. गुप्त ने किया। समीप हैं (बायें से) श्री. श्यामनाथ, कारोबार प्रबन्धक, प्रकाशन विभाग, श्री. एम. के. वेलायुधन नायर, मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा, श्री. कुन्हिकृष्णन, निदेशक, दूरदर्शन, तिरुवनन्तपुरम, श्री. पी. आर. विश्वंभरन, वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबन्धक, भारतीय खाद्य निगम आदि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

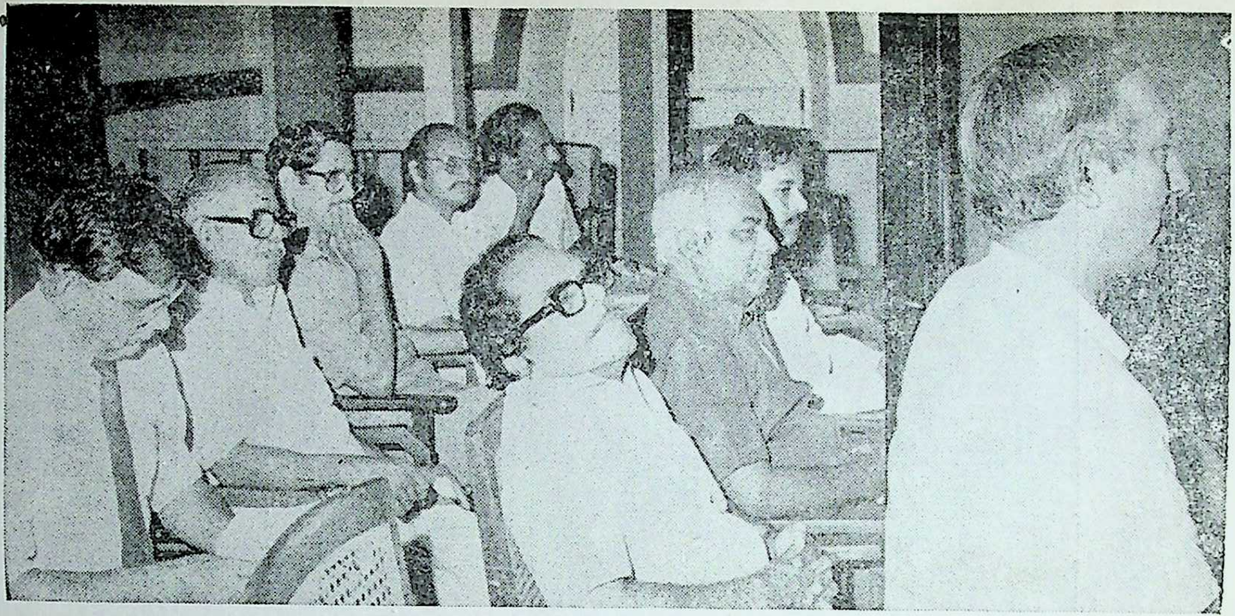

हिन्दी कार्यशाला

15-9-1988 को वी. जे. टी. हॉल, तिरुवनन्तपुरम में आयोजित केन्द्रीकृत कार्यशाला का उद्घाटन श्री. एम. के. केशवन (आयुक्त, आयकर विभाग, तिरुवनन्तपुरम) ने किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

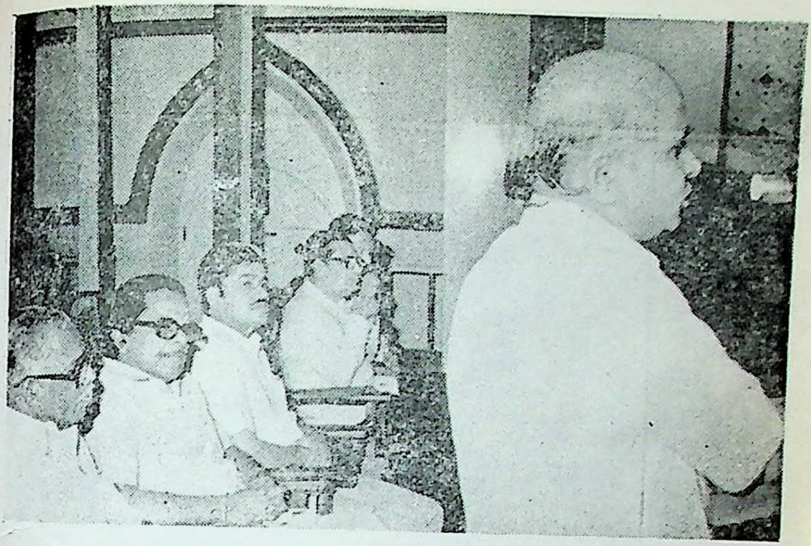

15-9-1988 को वी. जे. टी. हॉल, तिरुवनन्तपुरम में आयोजित राजभाषा प्रदर्शनी का उद्घाटन विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र, तुम्पा के निदेशक डा० एस. सी. गुप्त ने किया।

16-9-1988 को द्रव न्योदन प्रणाली केन्द्र, वलियमला में आयोजित राजभाषा संगोष्ठी का उद्घाटन कर रहे हैं डा० जी. बालमोहन तंपी, कुलपति, केरल विश्वविद्यालय। बैंठे हैं (बायें से) डा० एस. सी. गुप्त, डा० ए. ई. मुत्तुनायकम, श्री. सी. जे. मत्थ्यु और श्री. एम. के. वेलायुधन नायर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी सप्ताह समारोह के सिलसिले में केरल स्थित केन्द्र सरकारी कार्यालयों, उपक्रमों, निगमों और राष्ट्रीयकृत बैंकों के कर्मचारियों के लिए आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेता केरल सरकार के खाद्य और पूर्ति मंत्री श्री. ई. चन्द्रशेखरन नायर के कर कमलों से पुरस्कार ग्रहण कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्मचारियों के बच्चों की प्रतियोगिताओं का पुरस्कार वितरण: और एक दृश्य ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्मचारियों के बच्चों केलिए आयोजित प्रतियोगिताओं का पुरस्कार वितरण केरल सरकार के खेल एवं युवाकार्य मंत्री श्री. ए. नीललोहितदासन नाटार ने किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्मचारियों की प्रतियोगिताओं में अधिकतम अंक प्राप्त संस्थाओं को केरल के खाद्य एवं नागरिक पूर्ति मंत्री श्री ई. चन्द्रशेखरन नायर ने "केरल हिन्दी प्रचार सभा शील्ड" प्रदान किये। शील्ड ग्रहण कर रहे हैं (दायें से) श्री. आनंद शंकर (महालेखकार कार्यालय केलिए), श्री. बी. गुप्त(स्टटे बैंक ऑफ ट्रावनकोर केलिए) और श्री. के. एम. जोर्ज (विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र, तुम्पा केलिए)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी देश की एकता बोध की प्रतीक है ।

पूजप्पुरा में आयोजित सम्मेलन में केरल के संस्कृति मंत्री श्री टी. के. रामकृष्णन ने किया। आपने कहा कि हिन्दी देश की एकता बोध की प्रतीक है । विविध भाषा-भाषी भारतीय जन समूहों में एकता का बोध उत्पन्न करने केलिए गांधीजी ने हिन्दी प्रचार को अपने रचनात्मक कार्यक्रमों में मुख्य स्थान दिया था। आपने कहा कि देश की एकता का नारा बुलन्द करना समय की मांग है।

स्टेट बैंक ऑफ ट्रावनकोर के मुख्य प्रबन्धक श्री. के. के. खण्डेलवाल सम्मेलन में अध्यक्ष रहे।

हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में स्टेट बैंक ऑफ ट्रावनकोर द्वारा अपने कर्मचारियों के लिए आयोजित विविध हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को केरल के वन मंत्री प्रो० एन एम जोसफ ने पुरस्कार वितरित किये। आपने इस बात पर खेद प्रकट किया कि स्वतंत्रता संग्राम के समय में जनता में हिन्दी सीखने का जो आवेश था वह अब ठंडा पड गया है। देश की भावात्मक एकता केलिए समतुलित आर्थिक विकास जितना आवश्यक है उतना ही आवश्यक है राष्ट्रभाषा का व्यापक प्रचार। आप ने आह्वान किया कि प्रादेशिकता की संकुचित मनोवृत्ति छोड़कर हिन्दी के ज़रिये भारतीयता बोध का विकास करें।

1987 में केरल सरकार द्वारा संचालित हिन्दी टीचिंग डिप्लोमा परीक्षा में तिरुवनन्तपुरम और तृश्शूर केन्द्र से उन्नत स्थान प्राप्त छात्राध्यापकों को पी. जी कामत अक्षय निधि के न्यासियों की हैसियत से स्टेट बैंक ऑफ ट्रावनकोर द्वारा प्रदत्त पी. जी. कामत पुरस्कार श्री सी जे मात्यु ने वितरित किये।

प्रादेशिकता की संकुचित मनोवृत्ति छोड़कर हिन्दी के ज़रिये भारतीयता बोध का विकास करें।

श्री. एम. के. वेलायुधन नायर ने अपने आशीर्वाद भाषण में इस बात पर ज़ोर दिया कि भारत का शासन भारतीय भाषाओं में ही होना चाहिए।

स्टेट बैंक आफ ट्रावनकोर के महाप्रबन्धक श्री. आर. ऐ. राघवन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विविध भाषाओं की कविताओं द्वारा स्नेह और करुणा का स्वर विश्व भर में मुखरित हो।

ने स्वागत भाषण दिया और श्री. ए माधवन नायर (प्रबन्धक, राजभाषा) ने कृतज्ञता प्रकट की।

भारतीय भाषा कवि सम्मेलन

14 - 9 - 1988 का और एक कार्य क्रम था भारतीय भाषा कवि सम्मेलन। शाम को 5.30 बजे वाई. एम. सी. ए. हॉल, तिरुवनन्तपुरम में आयोजित भारतीय भाषा कवि सम्मेलन का उद्घाटन मलयालम की विख्यात कवयित्री श्रीमती बालामणि अम्मा ने किया। आप ने कहा कि कवि उन ऋषियों की परंपरा में आते हैं जिन्होंने गाया "एको देव सर्व भूतेषु गूढ़ा"। मानव जीवन के अति सूक्ष्म भावों को शब्दों द्वारा अभिव्यक्त करने में वे सफल होते हैं। व्यास आदि कवियों ने विद्वेष और कलह की व्यर्थता और दुरन्त का चित्रण किया है। आज के कवि सर्वजनीन स्नेह के गायक हैं। श्रीमती बालामणि अम्मा ने आग्रह किया कि विविध भाषाओं की कविताओं द्वारा स्नेह और करुणा का स्वर विश्व भर में मुखरित हो।

सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए मलयालम के विख्यात गीतकार प्रो० ओ. एन वी. कुरुप ने बताया कि सभी भारतीय भाषाओं में भारत की आत्मा का प्रकाश पाया जाता है। आपने कहा—भारत की बाईस भाषाओं में लिखने वाले सभी भारतीय कवि भारत की आत्मा से ही अपना पैतृक ग्रहण करते हैं और समान स्वप्न देखते हैं। यद्यपि इन भाषाओं के बिंब और सस्यप्राणि

यद्यपि इन भाषाओं के बिंब और सस्यप्राणि प्रकृति भिन्न भिन्न है तो भी मनुष्य प्रकृति एक है।

प्रकृति भिन्न भिन्न है तो भी मनुष्य प्रकृति एक है।

डा० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर ने कवि सम्मेलन का संयोजन किया। श्रीमती बालामणी अम्मा, प्रो० ओ. एन. वी. कुरुप, डा० मावेलिक्करा अच्युतन, प्रो० विष्णुनारायणन नंपूतिरि, डा० ए.षुमंगलम करुणाकरन, डा० नसीमुदीन, श्री. नल्लै एस. मुत्तु, पंडित नारायण देव, डा० एन. चन्द्रशेखरन नायर, प्रो० टी. के. भास्कर वर्मा, डा० एम. षण्मुखम, श्री.सुरेश रस्तोगी, श्री.एस.रामय्यर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीतर भाषा भाषी लेखकों द्वारा हिन्दी में लिखित उच्चस्तरीय पुस्तकें इस भ्रांति को निर्मूल प्रमाणित करती हैं कि हिन्दीतर प्रान्तों की जनता हिन्दी सीखने में रुचि नहीं लेती।

श्री. पी. एम. षा, डा० भक्तवत्सल रेड्डी, डा० के. रामा, श्री. सुभाष चन्द्र गैन्धर, श्री. अशोक वानर्जी, श्री. संतोषकुमार सिंह, श्री. शशि चेर्तला और श्री. जी. पी. कुमारस्वामी आचारी ने विविध भाषाओं की कवितायें सुनायीं।

कैनरा बैंक के उप महाप्रबन्धक एवं बैंकों की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, तिरुवनन्तपुरम के अध्यक्ष श्री. ए. एम. प्रभु ने स्वागत भाषण दिया और केन्द्रीय विद्यालय, पल्लिप्पुरम के प्राचार्य श्री. प्रेमलाल डबराल ने कृतज्ञता प्रकट की।

वी. जे. टी. हॉल, तिरुवनन्तपुरम में आयोजित राजभाषा प्रदर्शनी का उद्‌घाटन 15 - 9 - 1988 प्रातः 10 बजे विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र, तुम्बा के निदेशक डा० एस. सी. गुप्त ने किया। आप ने कहा—हिन्दीतर भाषा भाषी लेखकों द्वारा हिन्दी में लिखित उच्चस्तरीय पुस्तकें इस भ्रांति को निर्मूल प्रमाणित करती हैं कि हिन्दीतर प्रान्तों की जनता हिन्दी सीखने में रुचि नहीं लेती। आपने कहा कि स्वतंत्र देश के सरकारी कार्यालयों का कार्य शासन करना नहीं बल्कि जनता के विकास में सहायता पहुँचाना है, जनना की सेवा करना है। यदि कार्यालय में आनेवाले नागरिक अपनी भाषा में कार्यालय के कार्यकर्ताओं से संपर्क नहीं कर पायेंगे तो उनमें एक प्रकार की हीनता की भावना उत्पन्न होगी जो देश के विकास में बाधक होगी। इसलिए कार्यालयों में हमें भारतीय भाषाओं का अधिक उपयोग करना चाहिए। उद्‌घाटन सम्मेलन की अध्यक्षता तिरुवनन्तपुरम दूरदर्शन केन्द्र के निदेशक श्री. के. कुन्हिकृष्णन ने की। उन्होंने कहा कि प्रदर्शनी की सामग्रियाँ हिन्दी की प्रधानता और प्रगति समझाने में सर्वथा सहायक हैं। श्री. एन. केशवन नायर ने स्वागत भाषण में कहा कि इस वर्ष की प्रदर्शनी गत वर्ष की प्रदर्शनी से अधिक सुसज्जित और सूचनाप्रद है। आप ने इस बात पर संतोष प्रकट किया कि हिन्दी दिवस के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवसर पर राष्ट्रवाणी शीर्षक जो मलयालम फीचर दूरदर्शन के तिरुवनन्तपुरम केन्द्र द्वारा संप्रेषित हुआ वह केरलीय जनता के हृदय में हिन्दी के प्रति अधिक स्नेह उत्पन्न करने में सफल रहा।

प्रकाशन प्रभाग के प्रबन्धक श्री. श्याम नाथ ने कृतज्ञता प्रकट की। प्रदर्शनी तीन दिन तक जारी रही। प्रदर्शनी स्टाल में पुस्तक बिक्री की सुविधा रही।

15–9–1988 को वी.जे टी हॉल में कर्मचारियों केलिए एक कार्य-शाला का भी आयोजन किया गया

भारत की आत्मा को समझने केलिए हिन्दी का ज्ञान अत्यन्त अपेक्षित है।

जिस में करीब एक सौ कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला का उद्घाटन आयकर विभाग, तिरुवनन्तपुरम के अयुक्त श्री एम. के. केशवन ने किया। आपने कहा कि हिन्दी हमारे देश की एकता का प्रतीक है। भारत की आत्मा को समझने केलिए हिन्दी का ज्ञान अत्यन्त अपेक्षित है। उद्घाटन सम्मेलन की अध्यक्षता केरल के महा लेखाकार श्री. आनन्द शंकर ने

हिन्दीवाले यह न समझें कि हिन्दीतर भाषा भाषियों के लिए हिन्दी सीखना अनिवार्य है और हिन्दीतर भाषा भाषी यह न समझ बैठें कि अंग्रेज़ो में सदा सब कुछ होता रहेगा।

की। उन्होंने इस बात पर संतोष प्रकट किया कि इस वर्ष के हिन्दी सप्ताह समारोह में केरल स्थित केन्द्र सरकारी कार्यालयों के कर्मचारी पूर्वाधिक उत्साह प्रदर्शित कर रहे हैं और यह आशा अभिव्यक्त की कि केरल में हिन्दी की उत्तरोत्तर उन्नति होगी। नबार्ड के सहायक विकास अधिकारी (राजभाषा) श्री. राजेन्द्रसिंह नेगी ने कृतज्ञता प्रकट की।

राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन द्रव न्योदन प्रणाली केन्द्र, वलियमला काम्प्लेक्स के सभा भवन में 16-9-1988 को मध्याह्न 2.30 बजे से हुआ।

सगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए केरल विश्वविद्यालय के कुलपति डा० जी. बालमोहन तंपी ने कहा कि हिन्दीवाले यह न समझें कि हिन्दीतर भाषा भाषियों के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुनिया के छोटे छोटे राष्ट्र भी अपनी राष्ट्रभाषा के महत्व को मानते हैं और वहाँ की जनता उसे ज़रूर पढती है।

हिन्दी सीखना अनिवार्य है और हिन्दीतर भाषा भाषी यह न समझ बैठें कि अंग्रेजी में सदा सब कुछ होता रहेगा । श्री. सी जे. मात्यु अध्यक्ष रहे । द्रव न्योदन प्रणाली केन्द्र के तकनीकी निदेशक (टी. एफ. श्री.) श्री करुणानिधि ने विषय प्रस्तुत किया । श्री. एन. के. गुप्त, इंजिनियर, द्रव न्योदन प्रणाणी केन्द्र, श्री. मोहम्मद मुस्लीम, इंजिनियर, द्रव न्योदन प्रणाली केन्द्र. डा० एन. ई विश्वनाथ अय्यर और श्री. एम. के. वेलायुधन नायर ने प्रपत्र प्रस्तुत किये । डा० एस. सी. गुप्त ने भाषण दिया । द्रव न्योदन प्रणाली केन्द्र के निदेशक डा० ए ई मुत्तुनायकम ने स्वागत भाषण दिया और श्री. मोहम्मद मुस्लीम ने कृतज्ञता प्रकट की ।

कर्मचारिकों के बच्चों केलिए आयोजित प्रतियोगितायें 18-9-1988 को केरल हिन्दी प्रचार सभा भवन में प्रात: 9.30 से आरंभ हुई । प्रतियोगिताओं का उद्घाडन केरल दूर संचार के मुख्य महा प्रबन्धक श्री. यू. वी. नायक ने किया । उन्होंने कहा कि दुनिया के छोटे छोटे राष्ट्र भी अपनी राष्ट्रभाषा के महत्व को मानते हैं और वहाँ की जनता उसे ज़रूर पढती है । हिन्दी भारत के अधिकांश लोगों की भाषा है । तो भी भारत के सरकारी कामकाज में हिन्दी को उचित स्थान नहीं मिला है । उन्होंने बच्चों से अनुरोध किया कि वे हिन्दी में अपनी रुचि बनाये रखें ।

उद्घाटन सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए केन्द्रीय रिसर्व पुलिस फोर्स, पल्लिप्पुरम के अतिरिक्त महानिदेशक श्री. महेन्द्रप्रसाद ने कहा कि इतर भारतीय भाषाओं से शब्दावली आत्मसात करने की क्षमता हिन्दी में विद्यमान है । हमें देश के समन्वय और प्रगति केलिए क्षेत्रीय भाषाओं का और हिन्दी का समुचित विकास करना है ।

पोस्ट मास्टर जनरल कार्यालय, तिरुवनन्तपुरम के कल्याण अधिकारी श्री. के के. मेनन ने स्वागत-भाषण दिया और भारतीय खाद्य निगम के तिरुवनन्तपुरम क्षेत्रीय कार्यालय के सहायक संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री. एन. बालकृष्णन नाटार ने कृतज्ञता प्रकट की ।

कर्मचारियों की प्रतियोगिताएँ 19-9-1988 को प्रात: 9.30 से केरल हिन्दी प्रचार सभा भवन में चलायी गयीं । पल्लिप्पुरम केन्द्रीय विद्यालय के प्राचार्य श्री प्रेमलाल डबराल ने स्वागत भाषण दिया । प्रतियोगिताओं का उद्घाटन आकाशवाणी, तिरुवनन्तपुरम केन्द्र के निदेशक श्री. एन. एस. कृष्णमूर्ति द्वारा संपन्न हुआ । श्री. पी. आर. विश्वम्भरन अध्यक्ष रहे। केरल दूरसंचार के मुख्य महा प्रबन्धक कार्यालय के हिन्दी अधिकारी श्री. सी. के. शशिकुमार ने कृतज्ञता प्रकट की ।

समापन समारोह

समारोह के समापन सम्मेलन का उद्घाटन केरल की माननीय राज्यपाल श्रीमती रामदुलारी सिन्हा ने किया । (भाषण अन्यत्र)

समारोह के दौरान कर्मचारियों के लिए आयोजित प्रतियोगिताओं के पुरस्कारों का वितरण करते हुए केरल खाद्य एवं नागरिक पूर्ति मंत्री श्री. ई. चन्द्रशेखरन नायर ने कहा कि हिन्दी का प्रचार इस तरह किया जाये कि जनता प्रेम से हिन्दी को अपनाये । इन प्रतियोगिताओं में अधिकतम अंक पाकर प्रथम स्थान प्राप्त महालेखाकार कार्यालय, तिरुवनन्तपुरम को, द्वितीय स्थान प्राप्त स्टेट बैंक ऑफ ट्रावनकोर को और तृतीय स्थान प्राप्त विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र को मंत्री ने केरल हिन्दी प्रचार सभा शील्ड प्रदान किये ।

कर्मचारियों के बच्चों की प्रतियोगिताओं के विजेताओं के पुरस्कार केरल के खेल एवं युवा कार्य मंत्री श्री ए. नीललोहितदासन नाटार ने वितरित किये । समारोह की सुन्दर स्मरणिका का विमोचन भारतीय खाद्य निगम के महाप्रबन्धक श्री. बी. बालचन्द्रन को एक प्रति देकर श्री. नाटार ने किया । आपने माननीय राज्याल से अनुरोध किया कि केरल सरकार के सचिवालय में एक हिन्दी विभाग आरंभ करने के लिए आवश्यक आर्थिक सहायता केन्द्र सरकार से दिलाने में वे सहायता करें ताकि केन्द्र सरकार से और इतर राज्यों से केरल सरकार के पत्राचार में हिन्दी का उपयोग आरंभ किया जा सके ।

केरल परिमंडल के पोस्ट मास्टर जनरल एवं हिन्दी सप्ताह समारोह समिति के अध्यक्ष श्री. सी. जे. मातु सम्मेलन में अध्यक्ष रहे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल सरकार के सचिवालय में एक हिन्दी विभाग आरंभ करने के लिए आवश्यक आर्थिक सहायता केन्द्र सरकार से दिलाने में वे सहायता करें ताकि केन्द्र सरकार से और इतर राज्यों से केरल सरकार के पत्राचार में हिन्दी का उपयोग आरंभ किया जा सके ।

केरल के महालेखाकार श्री आर. हरिहरन और द्रव न्योदन प्रणाली केन्द्र, वलियमला काम्प्लेक्स के निदेशक श्री ए. ई. मुत्तुनायकम ने आशीर्वाद भाषण दिया । समापन सम्मेलन के उपरान्त भारतीय खाद्य निगम के वरिष्ठ महाप्रबन्धक श्री. पी. आर. विश्वंभरन ने सांस्कृतिक संध्या का सफल संयोजन किया । भारतीय खाद्य निगम, तिरुवनन्तपुरम; केन्द्रीय रिसर्व पुलिस, पल्लिप्पुरम; दक्षिणी वायु सेना कमाण्ड; केन्द्रीय विद्यालय, पट्टम; केन्द्रीय विद्यालय, पांगोट; और केन्द्रीय विद्यालय, पल्लिप्पुरम ने विविध भारतीय भाषाओं में जो रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की गयी ।

★

राजभाषा हिन्दी पर निर्मित फिल्मों का प्रदर्शन

केन्द्रीय संसदीय कार्य और सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री. हरकिशन लाल भगत ने 13-9-1988 को नई दिल्ली में बताया कि सूचना और प्रसारण मंत्रालय के फिल्म प्रभाग ने राजभाषा विभाग के सहयोग से राजभाषा हिन्दी पर 40 मिनट की फिल्म बनाई है और सिनेमा घरों में दिखाने के लिए 20 मिनट का एक वृत्त चित्र बनाया है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदी इक्कीसवीं आ रही है

श्री. पी. नारायण "नरन"

"पढ़ा करो नित अखबार
हों कहीं शंका कभी-
पूछ लिया करो
समझो देश को बूझो जहान
पूत वतन के बनो महान
सुनो बोल वजीरे आजम का
बीती सदी बीसवीं जा रही है
और इक्कीसवीं
आगे-आगे आ रही है''
गया मान मुन्ना नन्हा
संदेश पिता का
उठा सन्देह
''मद्य होता कैसा पेय है''
सजग बोले पिता—
''मद्यपान हेय है''
''प्रजावत्सल सरकार भला
पिलाती क्यों मद्य है ?''
''निहित प्रजाहित''
''हित कैसा ?
हित-हेय का कैसा मेल ?
क्षेम राष्ट्र का अजब अबूझ खेल''
''खेल नहीं बेटा ! सरकार बेचारी है
बिक्री मद्य की उसकी लाचारी है
मालीहाल देश का बेहद बिगडा है
दाम हर चीज़ का बस बढा-चढा है
तंगी पेय जलकी-सूखी सारी दरिया है
मद्य विक्रय सरकार का आय का
जरिया है''

देख मौन मुन्ना को
आश्वस्त पिता मन ही मन
शंका समाधान हुआ
षॉपिंग शाम को निकले जनक जननी
थाम छिगुनी-
मुन्ना साथ हुआ
चले फिरे थके प्यारे
चढे तीनों होटल में
हुई पुकार वेइटर की
''काफी चाय, रोस मिलक, लिमका
बज्जी बोंडा, रोस्ट दोशे''
पसंद माता-पिता की-
''काफी एक एक चाय''
उठा बोल मुन्ना गमगीन
''दुखियारी-सरकार हमारी हाय !
बीसवीं बीत चली
सदी इक्कीसवीं में
पैर मैं धरूँगा
लिमका न रोसमिलक
गिलास अपना
मद्य से भरूँगा

सन्यासी परंपु
नीलिक्काट
पालक्काट-678 002
(केरल)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्नये स्वाहा !

मूल : डॉ० पुतुश्शेरी रामचन्द्रन
अनुवाद : डॉ० एस. तंकमणि अम्मा

[आधुनिक मलयालम के सर्वश्रेष्ठ नाटककार, लब्धप्रतिष्ठ आलोचक, सफल साहित्येतिहासकार एवं सर्वोपरि शिष्यों के लिए कल्पतरु सम गुरुवर प्रो० एन. कृष्ण पिल्लैजी के निधन पर उन्हीं के प्रिय शिष्य तथा मलयालम के विख्यात कवि एवं प्रोफेसर डॉ० पुतुश्शेरि रामचन्दन द्वारा प्रणीत मलयालम कविता का हिन्दी रूपान्तर । प्रो० कृष्ण पिल्लैजी के भौतिक शरीर का अग्नि-समर्पण करनेवालों में स्वयं कवि भी शरीक थे ।]

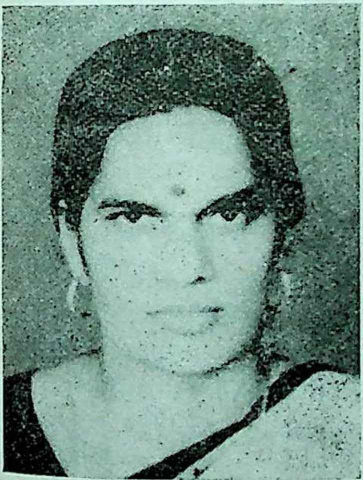

डॉ० एम. तंकमणि अम्मा

हे अग्निदेव ! स्वीकार ले
इस ज्ञानाग्नि को ।
पुनीत हो जा,
पा ले इस शुचिता को ।

दो

हे पावक ! और भी
पुनीत बन जा;
इस पुण्य-चरित को
प्रतिष्ठित कर ले निज मन में !!

यह हमारे प्राण
यह हमारे देव
यह हमारे
पुरा पुण्य संचित सौभाग्य !

यह है हमारी
चिरन्तन संस्कृति का चरमोत्कर्ष !
यह है हमारा हर्ष
स्वीकार ले; अग्नये स्वाहा !

उज्ज्वल प्रसंगों के
गूढ़ सौन्दर्य को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निज भावुक उर के
कोमल संस्पर्श से पहचाननेवाले !

इस कानन में
जहाँ विषग्न्धियाँ
पीली हँसी फैलाती हैं,
वहाँ, वनज्योत्स्ना बन
सुगन्ध भरनेवाले !

हमारे गुरुवर को
हमारे आचार्यवर को
माता-पिता बन हमें
नित प्यार करनेवाले को

हे अग्निदेव ! स्वीकार ले
इस ज्ञानाग्नि को
पुनीत हो जा,
पा ले इस शुचिता को।

हे पावक ! और भी
पुनीत बन जा;
इस पुण्य-चरित को
प्रतिष्ठित कर ले निज मन में !!

तीन

उस दिन,
भाग-भाग, हाँफ़-हाँफ़,
मैं आया, इस मन्दिर के द्वार
रुद्ध पूजा पुनः आरंभ करने को !

रोक लिया द्वारपालकों ने—
"हे मन्दिर-विध्वंसक !
भला, तेरे लिए कहाँ
मन्दिर में प्रवेश ?......"

स्मरण हो आता है
वह वात्सल्य
जिसने
एकलव्य कैसे
हताश लौटे
मुझ अनाथ को
अपना बना लिया।

तभी पहचान सका मैं
उस रूखे स्वर को
बाहर से खुरदुरे
उस मधुर पनस फल को !

वैसा ही तो मैं भी आया
आपके सम्मुख
हम 'क्रान्ति-गायक'
और दूसरे भी।

आपके शिष्य
हम सब रहे
जिनमें रहा न कोई मेल
आदर्श भी भिन्न-भिन्न,
हम रहे वे पक्षी

जो बसा गये हैं निज नीड़
एक ही पेड़ में।
नील-वितान तले
प्रज्ज्वलित वे दिवस
आज भी स्मृति में
धूप-से झिलमिलाते हैं,
स्वर्ण-मीनार बन
आसमान में उठते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बार
प्रतिशोध-धूम से हीन
स्वच्छ दिवा सम
ज्वलित प्रेम के शुचि प्रकाश में
केरलपाणिनी से प्रतिष्ठापित
मन्दिर के मण्डपों में
करायी आपने
शिक्षा-दीक्षा मेरी
हाथ भर-भर कर
आपने जो प्रसाद बिखेरे
हाय ! पा न सका मैं भर पूर
हाथ जो काँप रहे थे थर-थर
विमुखतावश तो नहीं,
लाज भी मुझमें रही कहाँ ?
मैं जो ठहरा ग्वाल-बालक
निरा कौपीन मात्र धारी !

x x x

फिर आया एक बार
आपके दर्शनार्थ
पर, उस दिन आप सो गये
फिर कभी उ जागे !

पाँच

आज स्मृति में
दीप्त हो रहा है वह तेजोरूप !
शेष है वह स्मृति-चित्र
जिसे हृदय में संजोये अब रहेंगे !
देखा मैं ने आपको
निज हाथ में दीप लिए आते
और, कैरली के
चित्र-मण्डप-शिल्पों पर
आलोक बिखेरते ।
और देखा,
नव वर्णों का कुसुम-विकास
और उनमें
नव-नव भावों का दीप्ति-विलास !
अभी, कितने ही
शिला-शिल्प रह गये हैं
आपकी पद चाप सुनने को
आतुर अहल्यावत् !
अभी कौन आयेगा
इस शती के दल-संपुटों में—
जिनका विकास अभी शेष है,
सौम्य-सुगन्धि छिड़कने ?
—यों सोच उत्कर्ण
खड़ा है काल
हाय ! क्या फिर न आयेंगे
पूर्णकाम आर्य ?......?

x x x

यह हमारे प्राण
यह हमारे देव
यह हमारे
पुरा पुण्य संचित सौभाग्य !
यह है हमारी
चिरन्तन संस्कृति का चरमोत्कर्ष !
यह है हमारा हर्ष
स्वीकार ले
अग्नये
स्वाहा ! ★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविता

'हँसी'

डा० रती सक्सेना

इन उबलते हुए कहकहों के बीच,
फैले हुए होंठ
ये सोचने को मजबूर हो जाते हैं-
कि ये हँसी है या-
कोई चीत्कार अँधेरी-
पथरीली चट्टानों के बीच-
प्रतिध्वनित हो उठी है ।
अथवा
कुछ भाव आँखों की राह से-
बह जाने के बजाय-
होंठों को भेद-
गलत मार्ग से सायास निकल पड़े हैं
होंठ अपनी गलती तो महसूस कर
फिर जुड़ना चाहते हैं-
किन्तु उनकी गल्ती का अहसास
सिर्फ अहसास ही बना रहता है ।
वापिस जुड जाने के तीव्र इच्छुक-
बस खुले ही रहते हैं ।

और हँसी दौर चलता ही रहता है
भाव पिघल-पिघल कर बहते ही
जाते हैं।
शायद डर हैं उनको कि-
सही रास्ता पकड़ लेने पर
लोगों की ही नहीं अपनी भी-
सहानुभूति खो बैठेंगे ।
गलत रास्ते से प्राप्त-
सत्कार उन्हें सही रास्ते पर
नहीं मिल पाएगा ।
और.........और
मैं नहीं चाहकर भी,
सिर्फ हँसती ही रहती हूँ-
बस हँसती ही रहती हूँ ॥ ★

प्राध्यापिका,
हिन्दी अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालय
केरल हिन्दी प्रचार सभा
तिरुवनन्तपुरम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक व्यंग्य

रद्दी

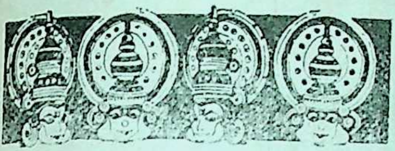

श्रीमती शकुन्तला सिरोठिया

बड़े सबेरे पेपर आया ।
उत्सुकता से उसे उठाया
सभी शीर्षक देख गयी
मैं जल्दी जल्दी लेकिन-
'कोई नहीं पंजाब में
हत्या नहीं किसी की हुई बिहार में
'नहीं डकैती पड़ी
किसी भी बैंक में
लगा कि चोर डकैत'
सो गए चैन में ।
सोचा शायद पेपर बहुत पुराना हैं
दस वर्षों पहले का कूडा खाना है ।'
लेकिन तिथि तो सही
आज का ही पेपर था ।
फिर क्यों नहीं ... ?
बलात्कार की कोई घटना ?
नहीं कोई स्टोर फटा क्यों ?
नहीं ट्रेन से कोई कटा क्यों ?
नहीं लगी क्यों आग
किसी भी दफ्तर में ?
पिचला कोई गया न
चुक्की टक्कर में ।
नहीं लूट या वम का
कोई शिकार हुआ ।
नहीं किसी दंगे में
नर-संहार हुआ ।
छि यह है अखबार
कि रद्दी कागज हैं !
आज सुबह का समय,
गया बेकार मैं
फेंका पेपर-
रद्दी के व्यवहार में

108 बाई का बाग
इलाहाबाद-3
उ. प्र.

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविता

दीपावली

श्री. बशीर अहमद मायूख

कि जिनके कारतामों से हिमालय हो गया नंगा,
कि जिनके पाप धोने से अरे इनचार है गंगा,
उन्हें अभिशाप देता है तपस्या-लीन दंडक वत,
कि फिर होगा असुर-मर्दन, लिखी जायेगी रामायण

अशोक वन से सीता को छुड़ा कर राय लायेंगे-
दिवाली के दिये हम देशवासी फिर जलायेंगे ।

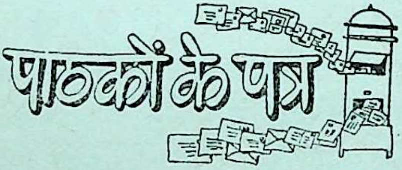

बहुत दिनों के बाद 'केरल ज्योति' के दर्शन हुए । बहुत अच्छा लगा । विशेष कर गंगा बाबू के संबन्ध में आपकी टिप्पणी दिल को छू लेती है । आशा है जैसे मैंने निवेदन किया है, उसके अनुसार केरल ज्योति' के दर्शन अब होते रहेंगे ।

आपका,

शंकर दयाल सिंह

कामता-सदन,

बोरिंग रोड, पटना-800 001

आपकी '५० वर्षों की हिन्दी सेवा' लेख 'केरल ज्योति' में पढ़ा ।

कृपया केरल हिन्दी प्रचार सभा की एक रिपोर्ट भिजवाइये ।

सिंहाई जे. के. जैन

संपादक, जैन जागरण

सदर बाज़ार, रयपुर, म. प्र.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरभाष : 61378

तार : "जय हिन्दी"

केरल ज्योति

पुष्प 23
दल 8

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका
नवंबर 1988

एक प्रति—1 रु० 50 पै०
वार्षिक—15 रु०

संपादकीय

एकता ज्योति

अक्तूबर का महीना राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का स्मरण कराने आता है। इस महीने में देश विदेश में गांधी जयन्ती का पर्व इस तरह मनाया जाता है कि मानव राशि में एकता और शांति की आशा पुनः जग जाती है और उसके लिए प्रयत्न करने का आग्रह और उत्साह बढ जाता है।

इस वर्ष के अक्तूबर महीने में हिन्दी प्रचार जगत में महात्मा गांधी की स्मरण तीव्रतर बनाने की एक योजना भी कार्यान्वित हुई। महात्मा गांधी ने देश की एकता के लिए देश की विविध कोनों में जो राष्ट्रभाषा मंदिर स्थापित किये उन में प्रमुख, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा द्वारा अपने स्वर्ण जयन्ती समारोह के उपलक्ष्य में निकाली गयी एकता ज्योति आसेतु हिमाचल परिक्रमा कर रही थी। विघटन के अंधकार में एकता की ज्योति जब निकली तो उस का सर्वत्र स्वागत हुआ। जगह जगह उस के स्वागत में सम्मेलन हुए। एकता यात्रायें आयोजित हुईं और जनता ने पुनः एक रहने का शपथ ग्रहण किया। इस में कई राजनीतिक दलों और अन्य संस्थाओं ने सहयोग दिया।

केरल में एकता ज्योति का जो भव्य स्वागत किया गया उसका सचित्र विवरण इस अंक में दिया गया है। केरल की राजधानी तिरुवनन्तपुरम में केरल हिन्दी प्रचार सभा के तत्वावधान में केरल गांधी स्मारक निधि के सहयोग से यह कार्यक्रम आयोजित हुआ। तिरुवनन्तपुरम नगर निगम ने हिन्दी में मंगल-पत्र देकर ज्योति का स्वागत किया। जो एकता यात्रा महात्मा गांधी मार्ग से निकली उस में केरल के विविध भागों के हिन्दी विद्यालयों के अध्यापकों और विद्यार्थियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में

गंगा बाबू को श्रद्धाञ्जलि 3

हिन्दी एकता की ज्योति का स्वागत—केरल में 11

केरल के दक्खिनी हिन्दी भाषी एक परिचयात्मक अध्ययन 14
डा० शाहजहाँ

हम भारतवासी 24
श्रीमती शकुन्तला सिरोठिया

काग भगोडा 25
डा० एम. षणमुखन

मजदूर 26
डा० देवराज

दक्खिनी हिन्दी और तमिल 27
श्री. एस. जयप्रकाश

दक्खिनी और कन्नड का परस्पर प्रभाव 33
डा० टी. आर. भट्ट

ने भाग लिया। उस में भाग ले... केलिए मीलों की दूरी तय कर के पहुँचे... नगर के हाई स्कूलों, कालिजों और केन्द्री... विद्यालयों के भी छात्र और अध्याप... पहुँचे। हिन्दी के प्रमुख कार्यकर्ता और लेखक पहुँचे। प्रमुख गांधीवादी कार्यकर्ता पहुँचे। जुलूस के प्रतिभागी एकता ... जोशीले गीत गाते चले जो इस अव... केलिए विशेष रूप से रचे गये थे। केर... सरकार के एक मंत्री ने भी इस में भा... लिया। समापन सम्मेलन में प्रमुख नेता... शिक्षा विदों और साहित्यकारों ... हिन्दी के द्वारा भारत की एकता को ... करने का आह्वान किया।

उक्त कार्यक्रम का वीडियो टेप ... अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ ... साधारण सभा के अवसर पर 25-10-19... को नई दिल्ली में दिखाया गया तब ... ने बताया कि एकता ज्योति का सब... भव्य स्वागत केरल में किया गया।

केरल के हिन्दी कार्यकर्ताओं केलिए ... एक नया अनुभव था। स्व० गंगा बा... को यह सोच कर दुःख होता था कि हि... अब पीछे जा रही है। वे चाहते थे ... हिन्दी के प्रचार केलिए हिन्दी परीक्षा... के अलावा कुछ उपाय ढूंढें। हिन्दी को ... लाने केलिए ऐसे ही परीक्षेतर कार्य... हमें व्यापक तौर पर आयोजित करने ... जिन से महात्मा गांधी के लक्ष्य लिये ... शीघ्रता आ जाये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्व० गंगा बाबू को श्रद्धाञ्जलि

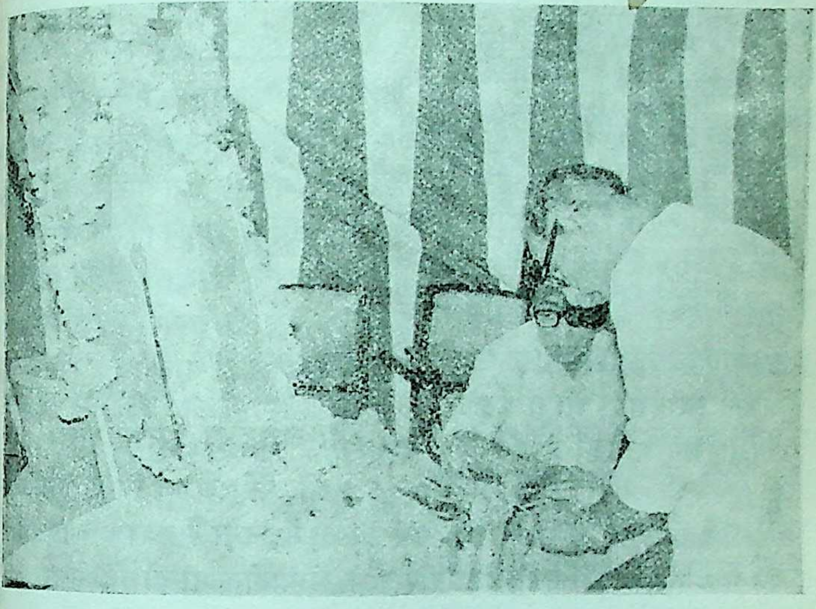

श्रद्धा के सुमन

विविध संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने गंगा बाबू के चित्र के सामने श्रद्धा के सुमन अर्पित किये। केरल हिन्दी प्रचार सभा की ओर से श्री. के. जी. बालकृष्ण पिल्लै (संपादक, केरल ज्योति) श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए।

25-10-1988 को नयी दिल्ली में अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ की साधारण सभा की बैठक संपन्न हुई। उस दिन प्रातः दस बजे संस्था संघ के कार्यालय के प्रांगन में स्व० गंगा बाबू जी की पुण्य स्मृति में श्रद्धांजलि अर्पित करने केलिए एक सम्मेलन आयोजित हुआ। तपोनिष्ठ हिन्दी सेवी श्री. शंकर राव लोंढे जी अध्यक्ष रहे। संस्था संघ की सदस्य संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने बाबूजी के पूर्णाकार चित्र पर श्रद्धा के सुमन अर्पित किये और वन्दना की। अनेक कार्यकर्ताओं ने बाबूजी के व्यक्तित्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की विशेषताओं पर प्रकाश डाला। उनके द्वारा अभिव्यक्त उद्गारों का संक्षेप आगे दिया जा रहा है :

प्रो० रामलाल पारीख

गंगा बाबू की बिदाई एक व्यक्ति की बिदाई नहीं। एक युग पलटा। गंगा बाबू की डाली हुई परंपरा इतनी मज़बूती से पडी है कि हम उसके अनुसार परस्पर विश्वास और परस्पर स्नेह के साथ काम कर सकते हैं। उनका आग्रह था कि हिन्दी संस्थाएँ किसी भी प्रलोभन में पडकर अपनी स्वायत्तता खो न बैठें। इस केलिए हमें अधिक जागरूक रहना है।

तीन चार करोड लोगों को संघ की सदस्य संस्थाओं ने हिन्दी पढ़ाई, यह बहुत बडी चीज़ है। इस काम को हमें आगे बढ़ाना होगा। परीक्षा का काम हमने सच्चाई से किया, ईमानदारी से किया। विश्व-विद्यालयों के मामले में जो अव्यवस्था आ गयी है, वह हिन्दी संस्थाओं में नहीं आयी। गंगा बाबू चाहते थे कि हम परीक्षा के अलावा कुछ ऐसे तरीके ढूँढें, जिनसे हिन्दी के प्रति प्रेम जगे जन-मानस में। आखिरी दिन तक बाबूजी हिन्दी के प्रति बहुत चिन्तित थे। वे कहते थे ... ...

आखिरी दिन तक बाबूजी हिन्दी के प्रति बहुत चिन्तित थे। वे कहते थे......हिन्दी पीछे जा रही है।

हिन्दी पीछे जा रही है। हिन्दी को यद्यपि सत्ता-समर्थन कम है, तो भी जन-समर्थन प्राप्त करें। कोई एक व्यक्ति गंगा बाबू का रिक्त स्थान पूरा नहीं कर सकेगा। हम सब मिलकर काम करें तो सम्भव है, उनके काम को आगे बढा पायेंगे।

श्री. जगदीश प्रसाद शर्मा

श्री. गंगा शरण सिंह का जन्म 1905 में पटना में हुआ। वे 1920–21 के असहयोग आन्दोलन में सरकारी शिक्षालय छोडकर सम्मिलित हुए। तब से वे बराबर सार्वजनिक कार्य तथा राष्ट्रीय कार्य में लगे रहे। 1948 तक कांग्रेस में रहे। उसके बाद सोशलिस्ट पार्टी में आये। 1956–1974 तक संसद सदस्य रहे। 1968—1974 तक राष्ट्रपति द्वारा राज्यसभा के मनोनीत सदस्य रहे।

1934—38 तक पटना जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष, 1935 में बिहार कांग्रेस स्वर्ण जयन्ती कमेटी के मंत्री और 1948 में बिहार प्रादेशिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांग्रेस कार्य समिति के सदस्य रहे। 1934—48 तक अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य रहे। बाद में 1948 में अखिल भारतीय सोशलिस्ट पार्टी की कार्य समिति के सदस्य तथा उसके कण्ट्रोल कमीशन के अध्यक्ष रहे। भारत में प्रजा सोशलिस्ट पार्टी बनने पर उसकी कार्य समिति के सदस्य तथा उसकी पार्लियामेण्ट्री बोर्ड के मंत्री तथा उसके उपाध्यक्ष रहे। 1956 से 1969 तक प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के अध्यक्ष रहे। 1956 में राज्यसभा में प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के नेता बने। बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पटना, अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग आदि के सदस्य रहे। अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के अध्यक्ष, बालिका विद्यापीठ, लखीसराय, बिहार विद्यापीठ, पटना, राजेन्द्र स्मृति, पटना के अध्यक्ष; हिन्दी विद्यापीठ, देवघर के कुलाधिपति, कमला नेहरू शिशु-विहार, पटना, बिहार रिलीफ़ कमेटी, पटना तथा राजेन्द्र ग्राम विकास निधि, पटना के कार्यकारी अध्यक्ष रहकर आप ने देश की अमूल्य सेवा की है।

उन्हें हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेज़ी, बंगला और गुजराती भाषाओं का ज्ञान था। साहित्य दर्शन और खगोल विद्या में उन्हें विशेष रुचि थी। 'माधुरी', 'मतवाला', 'हिन्दूमंच', 'बालक', 'मौज़ी', 'देश', 'धर्मयुग', 'आज', 'हिन्दुस्तान' आदि में उनके लेख प्रकाशित हुए हैं। वे दो बार प्रेस कानफ्रन्स की पुनर्गठन समिति के सदस्य रहे। राष्ट्रीय आन्दोलन के समय वे छः बार जेल गए।

राष्ट्रीय आन्दोलन के समय वे छः बार जेल गए।

आगरा विश्वविद्यालय और पटना विश्वविद्यालय ने 'डी० लिट्' की मानद उपाधि से उन्हें सम्मानित किया। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पटना, राजस्थान के साहित्यिक, सांस्कृतिक मंच, कर्नाटक हिन्दी प्रचार समिति आदि के द्वारा वे सम्मानित और पुरस्कृत किये गये। सारे देश में विशेषकर हिन्दीतर भाषी प्रान्तों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने में वे जीवन के अन्तिम क्षण तक लगे रहे। संस्था संघ के कर्मचारियों के प्रति उनका असीम स्नेह और वात्सल्य रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज्यपाल के अतिथि बनने की अपेक्षा वे साधारण हिन्दी कार्य-कर्ता का आतिथ्य स्वीकार करना पसंद करते थे ।

प्रो० नागप्पा

गंगा बाबू की सरसता और सहृदयता इतनी थी कि अपने सम्पर्क में आनेवालों को वे ऊँचा उठाते थे। राज्यपाल के अतिथि बनने की अपेक्षा वे साधारण हिन्दी कार्यकर्ता का आतिथ्य स्वीकार करना पसंद करते थे। वे चाहते थे कि हिन्दी संस्थायें राजनीति से बचकर चलें सर्वथा अविरोधेण चलें। उनका आग्रह था कि हिन्दी संस्थायें विश्व-विद्यालयों से आगे बढें।

डा० मो. दि. पराडकर

गंगा बाबू हिन्दी के कट्टर विरोधियों को भी हिन्दी के अनुकूल बना लेते थे। अण्णादुरै ने कहा था......... "यदि इनकी हिन्दी की बात छोड दें, तो ये हमारे हैं।" उन्होंने दूसरों के गुणों की पूजा करते-करते अपना स्नेह-शील-व्यक्तित्व विकसित किया था।

प्रो० नवल किशोर गौड

हिन्दी विद्यापीठ के वे फ्रेन्ड, फ़िलोसफ़र और गाइड थे। विश्वास पदा करने वाले उनके हँस मुख व्यक्तित्व के पीछे बडी वैयक्तिक पीडा थी। वे नीलकण्ठ थे जो पारिवारिक दुःख को गले में छिपाकर सार्वजनिक कार्य में लगे रहते थे।

प्रो० चमनलाल सप्रू

भारत-रत्न की उपाधि उन्हें मिलनी चाहिए। वे युग-निर्माता थे।

वे नीलकण्ठ थे जो पारिवारिक दुख को गले में छिपाकर सार्व-जनिक कार्य में लगे रहते थे।

भावी-पीढी के निर्माण पर बल देते थे। हिन्दी को जनता के पास पहुँचाना चाहते थे। जोश के साथ होश से भी काम करते थे।

श्री० सीताराम केसरी

जब कभी मैं राजनीतिक संकट में पडा—राष्ट्रीय स्तर पर तब तब गंगा बाबू मुझे परामर्श देते थे। कहते थे— "आवेश में कुछ काम नहीं करना चाहिए।" उनके पास एक भारतीय का हृदय था। सभी दलों के कार्यकर्ताओं को वे मार्गदर्शन देते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

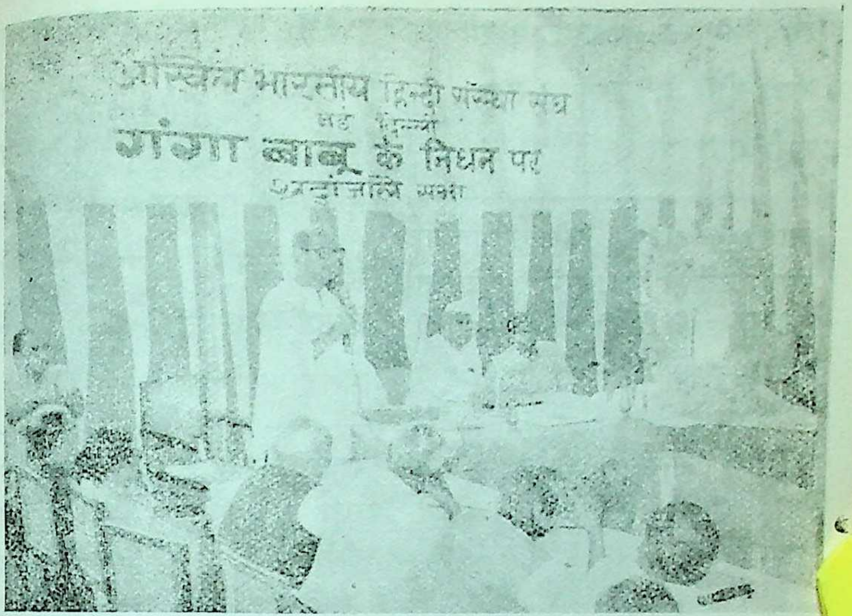

केरल हिन्दी प्रचार सभा के प्रतिनिधि श्री. के. जी. बालकृष्ण पिल्लै ने गंगा बाबू के संस्मरण में बताया कि केरल हिन्दी प्रचार सभा के कार्यकर्ताओं के साथ उनका बडा प्रेम और वात्सल्य रहा ।

रहे । उनकी स्मृति में शीघ्रातिशीघ्र कोई चिरस्थायी स्मारक बनायें ।

श्री. नरेन्द्र अंजारिया

आज के सार्वजनिक जीवन में जिन बातों की कमी है, वे सब बातें उन में थीं । सादगी की वे मूर्ति थे । छोटे-से कार्यकर्ताओं के समान रहते थे । वे अजातशत्रु थे । प्रेम से, सद्भाव से खरीखोटी सुनाते थे । खुशामद जो आजकल बहुत बडा रोग है, उन्हें छू नहीं गया था । कार्यकर्ताओं के छोटे-से-छोटे गुणों को भी वे उभार देते थे ।

उनके पास एक भारतीय का हृदय था । सभी दलों के कार्यकर्ताओं को वे मार्ग दर्शन देते रहे ।

श्री० शंकर राव लोंढे

गंगा बाबू के गुणों को अपने जीवन में लाना ही हमारी श्रद्धांजली है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुशामद जो आजकल बहुत बडा रोग है, उन्हें छू तक नहीं गया था ।

साहित्यकारों की जो सद्भावना यात्रा उन्होंने बिहार में आयोजित की थी, उसमें हिन्दी के कट्टर विरोधी अखिलन भी थे। यात्रा के बाद अखिलन ने कहा, 'मैं समझ गया कि मेरा हिन्दी विरोध ठीक नहीं था। अब मैं हिन्दी का पक्षपाती हो गया हूँ।''

श्री० वी. वी. महाजन

कितने उत्साह और लगन से गंगा बाबू ने आखिरी दम तक हिन्दी का काम किया ! उनके निधन से हिन्दी जगत को जबरदस्त धक्का लगा है। राजभाषा के रूप मे हिन्दी को बढावा देने में और हिन्दी के अनुकूल मानसिकता उत्पन्न करने में स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं को उनकी प्रेरणा सदैव मार्गदर्शक रहे।

संघ की साधारण समिति ने जो शोक प्रस्ताव पारित किया उसमें बताया गया— बाबूजी ने राष्ट्रभाषा हिन्दी की सेवा की। उनकी साधना को हम सब मिलकर आगे बढायेंगे।

हम आकांक्षा करते हैं कि बाबूजी की प्रेरणा और व्यक्तित्व हमारे पथ को आलोकित करता रहे जिसके प्रकाश में हम उनके द्वारा प्रारंभ किये गए कार्य को निरंतर सफलता के पथ पर अग्रसर करते रहें

हम आकांक्षा करते हैं कि बाबूजी की प्रेरणा और व्यक्तित्व हमारे पथ को आलोकित करता रहे जिसके प्रकाश में हम उनके द्वारा प्रारंभ किये गए कार्य को निरन्तर सफलता के पथपर अग्रसर करते रहें। संघ की साधारण सभा बाबूजी के निधन पर अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करती है और परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को चिरशांति प्रदान करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी में मंगल पत्र – तिरुवनन्तपुरम नगर पालिका द्वारा

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के स्वर्ण जयन्ती समारोह के सिलसिले में निकली एकता ज्योति का भव्य स्वागत तिरुवनन्तपुरम नगर निगम ने किया। पार्षद श्री. एस. राम अय्यर हिन्दी में मंगल पत्र पढ रहे हैं। तिरुवनन्तपुरम के महापौर श्री. सी. जयन बाबू, नगर निगम के पार्षद, केरल हिन्दी प्रचार सभा के अध्यक्ष प्रो० पी. जे. जोसफ, सभा के मंत्री श्री. एम. के. वेलायुधन नायर आदि दिखाई दे रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

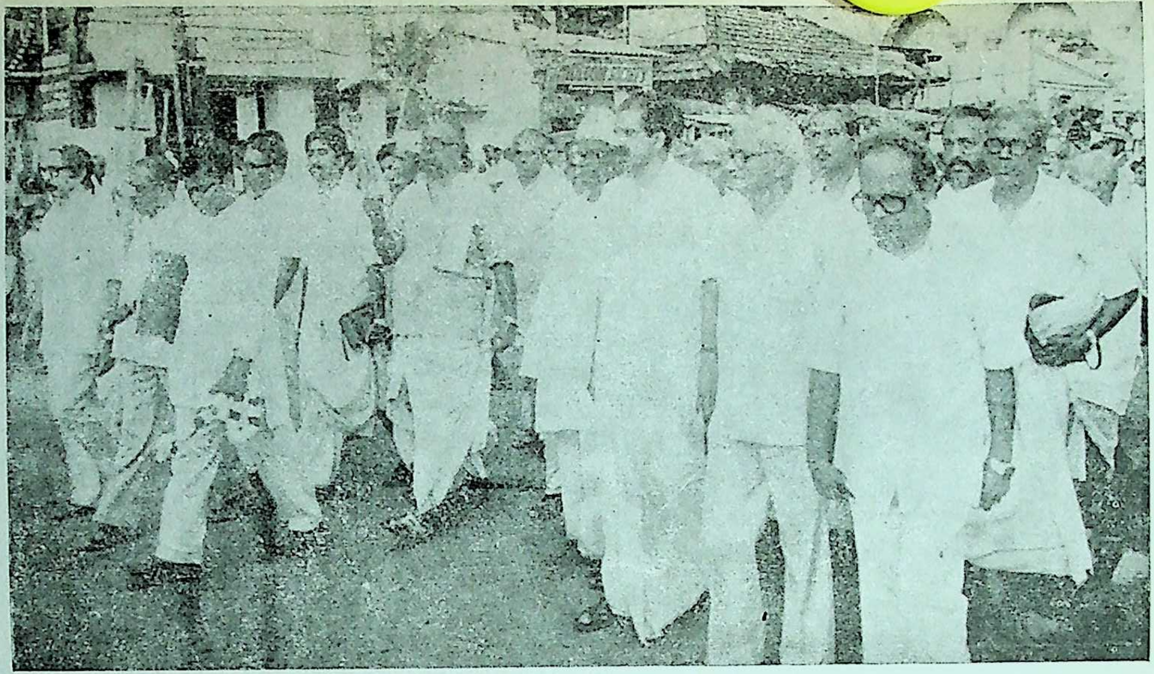

राष्ट्रभाषा – ज़िन्दाबाद

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के स्वर्ण जयन्ती समारोह के उपलक्ष्य में निकली एकता ज्योति के स्वागतार्थ केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा तिरुवनन्तपुरम में आयोजित जाथा महात्मा गांधी मार्ग से आगे बढ़ रही है। केरल के प्रमुख हिन्दी प्रचारक, लेखक और गांधीवादी कार्यकर्ता केरल के आवास मन्त्री श्री. लोनप्पन नंपाटन के साथ प्रथम पंक्ति में दिखाई रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखिल भारतीय हिन्दी संस्था-संघ के नये पदाधिकारी

25-10-1988 को नयी दिल्ली में आयोजित अखिल भारतीय हिन्दी संस्था सघ की साधारण सभा ने सर्वसम्मति से संघ के निम्न लिखित पदाधिकारियों को अगले तीन वर्ष केलिए चुना ।

1. प्रो० रामलाल परीख — अध्यक्ष
   कुलपति, गुजरात विद्यापीठ
2. डा० मो. दि. पराडकर — सचिव
   कुलपति, बम्बई हिन्दी विद्यापीठ
3. श्री. एम. के. वेलायुधन नायर — कोषाध्यक्ष
   मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा

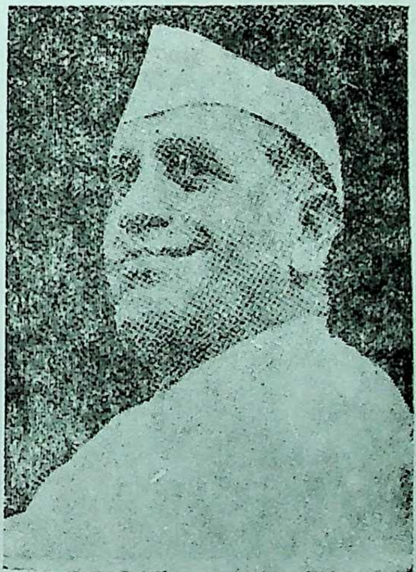

प्रो० रामलाल परीख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा० मो. दि. पराडकर

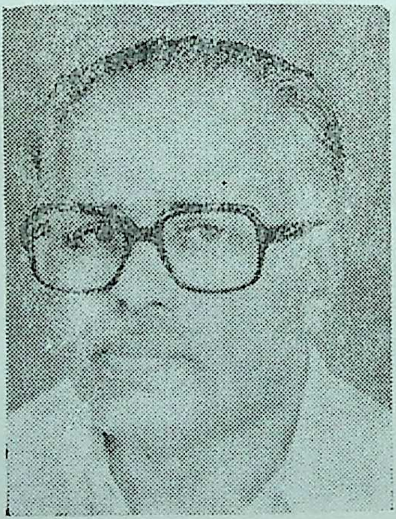

श्री. एम. के. वेलायुधन नायर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी एकता की ज्योति का स्वागत—केरल में

विविध भाषाभाषी भारतीय जनता को एक राष्ट्रभाषा के सूत्र में पिरोने के महान उद्देश्य से महात्मा गांधी द्वारा सन् 1918 में संस्थापित राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा, नागपुर, नई दिल्ली और मोरिशियस में तीन विश्व हिन्दी सम्मेलनों के पश्चात अपने स्वर्ण जयंती समारोह के सिलसिले में देश के विविध भागों में 'एकता ज्योति' की जैत्र यात्रा का आयोजन करके देश की भावात्मक एकता को सुशक्त बनाने की दशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। वर्धा से निकली यह ज्योति तमिलनाट से होकर गत गांधी जयंती सप्ताह के दौरान केरल की राजधानी तिरुवनन्तपुरम पहुँची तो केरल हिन्दी प्रचार सभा और केरल गांधी स्मारक निधि के संयुक्त तत्वावधान में 11-10-1988 को उसका भव्य स्वागत किया गया।

इस उपलक्ष्य में 11-10-1988 को एकता जाथा और सार्वजनिक सम्मेलन आयोजित हुए। सायं चार बजे तिरुवनन्तपुरम नगर पालिका के सामने केरल के विविध भागों से अनेकों हिन्दी प्रचारक एवं सामाजिक कार्यकर्ता और विद्यार्थी एकत्र हुए। तिरुवनन्तपुरम के महापौर श्री. सी. जयन बाबु ने एकता जाथा का उद्घाटन किया। नगर निगम के सदस्य एवं केरल हिन्दी प्रचार सभा की निर्वाहक समिति के प्राक्तन सदस्य श्री एस. राम अय्यर 'साईराम' ने हिन्दी में मुद्रित 'मंगल पत्र' पढ कर तिरुवनन्तपुरम के नागरिकों की ओर से एकता ज्योति के वाहकों को भेंट किया। एकता जाथा के आगे आगे महात्मा गांधी के बडे चित्र से अलंकृत जीप चली जिस में बैठ कर कॉलेज की छात्राओं ने एकता गीतों का आलापन किया। उसके पीछे एक अलंकृत मिनी लोरी चली जिसमें बैठकर हाईस्कूल की छात्राओं ने एकता गीत गाये। इन गीतों की रचना इस संदर्भ केलिए मलयालम के विख्यात कवि डा० शूरनाट्टु कुंजन पिल्लै, महाकवि एम.पी. अप्पन,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रो० विष्णु नारायणन नंबूतिरी और श्री. चेम्मनम चाक्को ने की थी। उसके पीछे स्कूल के बच्चे बैंड और ड्रम बजाते हुए कदम बढ़ाते चले। केरल हिन्दी प्रचार सभा के सर्वोत्तम हिन्दी प्रचारक श्री के. केशवन नायर एकता ज्योति लिये चले। केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री एवं केन्द्रीय हिन्दी समिति के सदस्य श्री. एम. के वेलायुधन नायर और केरल गांधी स्मारक निधि के सचिव श्री. लूकोस बंचमिन ने जाथा का नेतृत्व किया। जाथा के प्रतिभागी विविध ऐसे प्लकार्ड लिये हुए थे जिन पर विविध भारतीय भाषाओं में 'एकता जाथा' लिखा था और ऐसे नारे लगाते चले कि जिन के मुख्य सन्देश थे— जनतंत्रात्मक शासन प्रणाली की सफलता केलिए और भारतीय भाषायें देश की शिक्षा और शासन में प्रतिष्ठित हों और उनका पारस्परिक विकास हो। सभी भारतीय भाषायें हमें प्रतिपद प्रियंकर और आदरणीय हैं।

जाथा जब सचिवालय के सामने से होते हुए गांधीपार्क के सामने पहुंची तब केरल सरकार के आवास मंत्री श्री. लोनप्पन नंपाटन ने एकता ज्योति ग्रहण की। जाथा का समापन तीर्थपाद मंडपम में हुआ जहाँ सार्वजनिक सम्मेलन आयोजित हुआ।

सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए केरल के भूतपूर्व मुख्य मंत्री एवं केरल विधान सभा के विरोधी दल के नेता श्री. के. करुणाकरन ने कहा—भारत की एकता राष्ट्रभाषा के माध्यम से ही सुदृढ हो सकती है। हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में भारत भर में गौरवपूर्वक स्वीकार किया जाना चाहिए। भारत की एकता को सुदृढ करने के उद्देश्य से ही महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता संग्राम के रचनात्मक कार्यक्रमों में हिन्दी प्रचार को प्रमुख स्थान दिया था। कुछ लोग अपने निहित स्वार्थ की रक्षा केलिए यह व्यापक प्रचार कर रहे हैं कि औत्तराहों की भाषा हिन्दी दाक्षिणात्यों पर लादी जा रही है। यह बात सर्वथा निर्मूल है। भारत की भाषा के रूप में हिन्दी को भारत की राजभाषा स्वीकृत करने में संविधान समिति के हिन्दीतर भाषा भाषी सदस्यों ने अधिक योगदान दिया था।

आवास मंत्री श्री. लोनप्पन नंपाटन ने इस बात पर खेद प्रकट किया कि अंग्रेज़ी माध्यम स्कूल भारत की गरिमामय संस्कृति को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विकल कर रहे हैं। आपने आह्वान किया कि प्रशासन शिक्षा और विज्ञापन में भारतीय भाषाओं को प्रमुख स्थान दें। उन्होंने कहा कि केरल के सरकारी कार्यालयों के नामपट्ट भी वैसे ही प्रान्तीय भाषा, हिन्दी और अंग्रेज़ी में लिखे जाएँ, जैसे केन्द्र सरकारी कार्यालयों के नामपट्ट लिखे जाते हैं। इस में प्रथम प्रान्तीय भाषा को, द्वितीय स्थान हिन्दी को और तृतीय स्थान अंग्रेज़ी को मिले।

डा० शूरनाट्टु कुंजन पिल्लै ने चेतावनी दी कि अंग्रेज़ी भारत की संस्कृति को खतरा पहुंचायेगी। उन्होंने कहा जिस मलयालम ने एपुत्तच्छन जैसे विद्वान साहित्यकारों को जन्म दिया है उसे प्रशासन का माध्यम बनने में अक्षम बताना युक्तिसंगत नहीं है।

भारतीय भाषाओं को पुनः प्रतिष्ठित करने की आवश्यकता पर ज़ोर देते हुए महाकवि एम.पी. अप्पन, केरल विश्वविद्यालय के भूतपूर्व उप कुलपति डा० एन. ए. करीम, मलयालम साहित्यकार डा० पुतुश्शेरी रामचन्द्रन, हिन्दी कहानीकार डा० वी. गोविन्द शेनाय और हिन्दी-मलयालम लेखक डा० एन. चन्द्रशेखरन नायर ने भाषण दिया।

हिन्दी प्रचार समिति वर्धा के कार्यकर्ता एवं स्वतंत्रता सेनानी श्री. सुशील कुमार शाह ने कहा कि विविध प्रान्तों में एकता ज्योति को जो हार्दिक स्वागत मिला वह इस बात का प्रमाण है कि जनता हिन्दी के तथा इतर भारतीय भाषाओं के माध्यम से भारत की एकता को सुदृढ करना चाहती है।

स्वागत भाषण में केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री श्री.एम.के. वेलायुधन नायर ने आग्रह किया कि केरल सरकार प्रशासनिक कार्यों में अंग्रेजी की जगह प्रान्तीय भाषा मलयालम को पूर्ण रूप से प्रतिष्ठित करने में अब विलंब न करे।

मंच पर रखी एकता ज्योति को विविध संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने पुष्पांजलि अर्पित की।

केरल गांधी स्मारक निधि के मंत्री श्री लूकोस बेंचमिन ने कृतज्ञता प्रकट की।

केरल की राजधानी के प्रमुख मार्ग से एकता ज्योति की यह जो जैत्रयात्रा आयोजित हुई उससे यह निस्संदेह प्रमाणित हो गया कि केरल की जनता हिन्दी का पूर्ण हृदय से स्वागत करती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल के दक्खिनी हिन्दी भाषी एक परिचयात्मक अध्ययन

डा० शाहजहाँ

[22 से 24 जनवरी 1988 तक विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सहयोग से केरल विश्वविद्यालय द्वारा तिरुवनन्तपुरम में आयोजित संगोष्ठी में प्रस्तुत प्रपत्र]

किसी भी जनसमुदाय की अस्मिता का बोध उसकी भाषा से ही होता है। इसलिए भाषा किसी समुदाय विशेष या जातिविशेष के अस्तित्व की सूचक होती है। केरल की दक्खिनी हिन्दी भाषा पर विचार करते समय कई ऐसे तथ्य उभरकर सामने आते हैं, जो उस भाषा के बोलनेवालों की परंपरा और सामाजिक स्तर से जुडने लगते हैं। दसवीं शताब्दी के आरंभ से पंजाब के आसपास रूप ग्रहण करनेवाली खडी बोली हिन्दी, अलाउद्दीन खिलजी की सेना के साथ तेरहवीं शती में दक्षिण तो पहुँच गयी। लेकिन केरल कब पहुँची और कैसे इस सवाल का जवाब ढूँढना बहुत ही कठिन कार्य लगता है।

फिर भी ऐतिहासिक एवं सामाजिक संदर्भों की पृष्ठ भूमि में इनका जवाब ढूँढा जा सकता है। केरल में दक्खिनी हिन्दी बोलनेवाले लोग मुख्यतः मुसलमान ही हैं और ये अपने को 'दक्खिनी मुस्लीम' कहते हैं। अपने अस्तित्व को भाषा की विशिष्टता से जोडकर स्थानीय मुसलमानों से अपनी भिन्नता को दिखाने के उद्देश्य से ही इन्होंने अपने को 'दक्खिनी मुस्लिम' कहा है।

केरल में दक्खिनी हिन्दी बोलनेवाले लोग मुख्यतः मुसलमान ही हैं और ये अपने को 'दक्खिनी मुस्लीम' कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा की इस भिन्नता के कारण मलयालम भाषियों ने भी इन्हें अपनी ओर से नया नाम प्रदान किया था और यह नाम था 'पट्टाणि' जो कि पठान शब्द का मलयालीकृत रूप है। इसका यह अर्थ है कि सदियों से यह अल्प संख्यक वर्ग अपनी भाषा और परंपरा की रक्षा में लगा हुआ था और केरल की जनता भी उनके विशिष्ट अस्तित्व को स्वीकार करती रही।

केरल में दक्खिनी हिन्दी भाषी 'कासरगोड' से 'तिरुवनन्तपुरम' तक फैले पडे हैं। इनकी आबादी करीब एक लाख की होगी।

केरल में दक्खिनी हिन्दी भाषी 'कासरगोड' से 'तिरुवनन्तपुरम' तक फैले पडे हैं। इनकी आबादी करीब एक लाख की होगी। केरल के सभी प्रमुख शहरों में ये लोग बसे हुए है। तिरुवनन्तपुरम्, कोल्लम्, पुनलूर, आलप्पि, मट्टांचेरी, एरणाकुलम्, त्रिचर, पालघाट, कालिकट्, तलश्शेरी और कण्णूर कुछ ऐसे शहर हैं, जहाँ इस भाषा के बोलनेवालों की संख्या काफी मात्रा में उपलब्ध होती है।

दक्खिनी हिन्दी भाषियों का केरल में आगमन कैसे हुआ? इसका निश्चित जवाब नहीं दिया जा सकता। फिर भी अन्वेषण के आधार पर यह अनुमान लगाया जाता है कि करीब पाँच सौ वर्ष पूर्व से लेकर ये लोग यहाँ आते रहे हैं। अब प्रश्न उठता है कि क्या ये भाषा भाषी सभी एक ही प्रान्त से आये? अधिकतर यह विश्वास किया जाता है कि केरल के दक्खिनी भाषी मुसलमानों के पूर्वज हैदराबाद या उसी के आसपास के रहनेवाले थे।

परन्तु केरल के दक्खिनी भाषियों का आगमन सिर्फ हैदराबाद से हुआ, यह मानना कठिन है। इसके लिए कोई विशेष प्रमाण भी उपलब्ध नहीं है। दक्खिनी हिन्दी केवल केरल में ही नहीं बोली जाती। तमिलनाडु व कर्नाटक राज्यों में भी इस भाषा के बोलनेवाले बडी संख्या में मिलते हैं।

मेरे विचार में केरल में दक्खिनी हिन्दी भाषियों का आगमन तीन केन्द्रों से हुआ है। पहला केन्द्र है हैदराबाद, दूसरा मैसूरराज्य और तीसरा है तमिलनाडु। हैदराबाद या आन्ध्र प्रदेश के दक्खिनी भाषी क्षेत्रों से आनेवाले मुसलमानों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे विचार में केरल में दक्खिनी हिन्दी भाषियों का आगमन तीन केन्द्रों से हुआ है। पहला केन्द्र है हैदराबाद, दूसरा मैसूर राज्य और तीसरा है तमिलनाडु।

संबन्ध सीधे केरल के शासकों से रहा है। केरल के इतिहास में कई ऐसी सूचनायें मिलती है जिनके आधार पर पता चलता है कि तिरुवितांकूर के एक से अधिक शासकों ने अपनी सेना को अधिक सक्षम बनाने के उद्देश्य से, या शासन कार्य में सहायता प्राप्त करने के लक्ष्य से या अपनी शारीरिक सुरक्षा के उद्देश्य से हैदराबाद और अन्य इलाकों से मुसलमान वीरों को बुलाया था। ईमानदारी, धैर्य और स्वामिभक्ति इन दक्खिनी मुसलमानों का श्रेष्ठ गुण था। इस प्रकार के वीरों को आमंत्रित करनेवालों में ट्रावनकोर के मार्ताण्ड वर्मा, स्वातितिरुनाल, कोच्चिन राज्य के पालियत्तच्चन आदि प्रमुख हैं। इतना ही नहीं, मार्ताण्ड वर्मा के शत्रु एट्टुवीट्टिल पिल्लै लोगों ने भी इन्हीं दक्खिनी भाषी योद्धाओं की सहायता प्राप्त की थी। तिरुवितांकूर में इस प्रकार पर्याप्त मात्रा में दक्खिनी हिन्दी भाषियों का आगमन हुआ था। आश्रयदाताओं से सीधा संबन्ध रखने के कारण इन हिन्दी भाषियों की प्रभुता अक्षुण्ण बनी रही।

बडे शासकों की देखा देखी अन्य स्थानीय राजाओं ने भी दक्खिनी भाषियों की सेवा का लाभ उठाया था। मेरी नानी के पिताजी कायंकुलम राजा के द्वारा नियुक्त किये

तिरुवितांकूर के एक से अधिक शासकों ने अपनी सेना को अधिक सक्षम बनाने के उद्देश्य से, या शासन कार्य में सहायता प्राप्त करने के लक्ष्य से या अपनी शारीरिक सुरक्षा के उद्देश्य से हैदराबाद और अन्य इलाकों से मुसलमान वीरों को बुलाया था।

गये जिलाधीश थे जिनका नाम था शेरखाँ अमीनादार। कायंकुलम से लेकर शेनकोट्टा – जो कि आज तमिलनाडु में है—तक के इलाकों का शासनभार शेरखाँ अमीनादार को सौंपा गया था और उनका खिताब था "पतिनेट्टु मण्डपत्तुक्कुम शेरखाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमीनादार।" उनका निवास स्थान जहाँ था वहीं आज कायंकुलम का 'कोकनट रिसर्च स्टेशन' बना हुआ है। दक्खिनी हिन्दी भाषी अन्य परिवारों के कुछ सदस्यों से पूछ-ताछ करने पर भी मुझे पता चला कि उनके भी पूर्वज तिरुवितांकूर महाराजा को सेवा करने केलिए यहाँ आ बसे थे। हैदरअली और

मेरी नानी के पिताजी कायंकुलम राजा के द्वारा नियुक्त किये गये जिलाधीश थे जिनका नाम था शेरखाँ अमीनादार।

टिप्पु सुलतान का आक्रमण एक ऐतिहासिक घटना है। उनकी चढाई के दौरान उनकी सेना के कई अधिकारी यहाँ बस गये थे। सुलतान के साथ वे लौट नहीं पाये थे। केरल के उत्तरी इलाकों में बसे हुए हिन्दी भाषियों का संबन्ध इन लोगों से माना जाता है।

सुलतान के साथ वे लौट नहीं पाये थे। केरल क उत्तरी इलाकों में बसे हुए हिन्दी भाषियों का संबन्ध इन लोगो से माना जाता है।

केरल में आकर बसे ये लोग बडे ही स्वतंत्र व्यक्तित्व वाले थे। शासन, सेना, घुडसवारी, युद्धकला, शिकार आदि के क्षेत्रों में वे असीम क्षमता रखते थे।

दक्खिनी भाषियों का तीसरा वर्ग तमिलनाडु से आया हुआ था, जो अपेक्षाकृत तमिल-संस्कृति से रंगा हुआ था। तमिलनाडु के उत्तरी भागों में शासन करनेवाले आरकाट के नवाब लोग दक्खिनी हिन्दी बोलते थे और इनके शासनकाल में हिन्दी भाषियों की अच्छी हालत रही। मद्रास से लेकर तिरुनेलवेली तक के सभी जिलों में दक्खिनी भाषियों की स्थिति अच्छी रही। इन लोगों का केरल के दक्षिणी भागों से संबन्ध बना रहा।

जो भी हो केरल में आकर बसे ये लोग बडे ही स्वतंत्र व्यक्तित्ववाले थे। शासन, सेना, घुडसवारी, युद्ध-कला, शिकार आदि के क्षेत्र में वे असीम क्षमता रखते थे। राजा महाराजा लोग इनकी ईमानदारी पर मुग्ध थे। इसी कारण स्थानीय वीरों की अपेक्षा इनका अधिक सम्मान भी होता रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसे जैसे छोटे छोटे राजाओं का ज़माना खतम होने लगा और अंग्रेज़ों का शासन स्थापित होने लगा, वैसे वैसे इन लोगों का भी भाग्य चक्र घूमने लगा। अपने पदों से वंचित होने पर न वे अपने जन्मस्थान लौट पाये थे न अपना बसेरा ही यहाँ जमा पाये थे। ऐसी स्थिति में उनके बुरे दिनों का आरंभ हुआ। कई दक्खिनी मुसलमानों ने मलयालम भाषी मुस्लिम कन्याओं से ब्याह कर के अपने को इसी मिट्टी से जोडने की कोशिश की थी।

वैसे दक्खिनी हिन्दी भाषी मुसलमानों की दृष्टि काफी उदार लगती है। धार्मिक सहिष्णुता उनमें ज़्यादा थी। रीति-रिवाज़ों के प्रति वे विशेष ध्यान दिया करते थे। उनके रिवाज़ और रस्में उत्तर भारत की आम जनता के रिवाज़ और रस्मों से समानता रखती हैं। शादी के समय, मेंहदी की रस्म, हल्दी की रस्म, वधू के चेहरे को आइने में दिखाने की रस्म इत्यादि इसके उदाहरण हैं। उसी तरह ढोल बजा-कर स्त्रियों का गाना, कंगन की रस्म, सेहरा बाँधने का रिवाज़ आदि से सूचित करते हैं कि हिन्दी भाषियों से उनका संबन्ध टूटा हुआ नहीं था।

उनके रिवाज़ और रस्में उत्तर भारत की आम जनता के रिवाज़ और रस्मों से समानता रखती हैं। शादी के समय, मेंहदी की रस्म, हल्दी की रस्म, वधू के चेहरे को आइने में दिखाने की रस्म इत्यादि इसके उदाहरण हैं।

मानसिक रूप में लगाव बना हुआ था। परंपरा को निभाने की इच्छा भी वे छोड नहीं पाये थे। आश्चर्य की बात है कि लगभग चार सौ वर्ष तक मलयालम भाषा-भाषियों के बीच केरल की सांस्कृतिक परंपराओं के बीच रहने पर भी वे अपनी पुरानी परंपरागत मान्यताओं को छोड नहीं पाये।

इसी रूढिवादिता ने दक्खिनी भाषी मुसलमानों के आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षिक स्तर को ऊपर उठने नहीं दिया। समय के साथ चलने में वे असमर्थ रहे। अपनेलिए घर बनाने में, जायदाद कमाने में, बच्चों को उचित शिक्षा देने में वे पिछड गये। परिणामस्वरूप शिक्षाहीन दक्खिनी-भाषी युवकों को छोटे-मोटे धन्धे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय आय की दृष्टि से देखा जाय तो केरल के दक्खिनी भाषी ग रीबी की रेखा के नीचे ही खडे हैं।

करने पडे। गरीबी और बेरोजगारी के शिकार ये युवक अपनी हालत सुधार नहीं पाये। राष्ट्रीय आय की दृष्टि से देखा जाय तो केरल के दक्खिनी भाषी गरीबी की रेखा के नीचे ही खडे हैं।

दक्खिनी भाषियों ने पिछले बीस पच्चीस वर्षों के दर्मियान केरल के बहुसंख्यक समाज से प्रेरणा ग्रहण कर शिक्षा के क्षेत्र में आगे आने का प्रयास किया है। आजकल इसके अच्छे परिणाम दिखाई देने लगे हैं। डाक्टरी, इंजीनियरी, प्रोफसरी आदि पेशों में लगे हुए दक्खिनी भाषी कहीं न कहीं मिल जाते हैं। फिर भी अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने केलिए इनको बहुत कुछ करना है। सामाजिक दृष्टि से भी केरल के दक्खिनो हिन्दी भाषी अपने अस्तित्व को महसूस करा नहीं पाये हैं। असंघटित होने के कारण, मुस्लिम समाज के अन्दर मलयालम भाषी मुसलमानों से अलग अपना स्वर मुखरित करने की शक्ति इनमें नहीं रही है। इस कारण एक इकाई के रूप में इन्हें अभी तक मान्यता प्राप्त नहीं हुई हैं। राजनैतिक भक्ति का अभाव इस समस्या को और भी गहरी बना देता है। संख्या में सीमित होने के कारण इनकी ओर कोई भी राजनैतिक दल विशेष ध्य न नहीं दे पाया है। व्यावहारिक

व्यावहारिक दृष्टि से देखने पर केरल के दाक्खनी भाषी लोगों का, मलयालम भाषो मुस्लिम जनता से भिन्न अस्तित्व ही स्वीकारा नहीं गया है।

दृष्टि से देखने पर केरल दक्खिनी भाषी लोगों का, मसयालम भाषी मुस्लिम जनता से भिन्न आस्तित्व ही स्वीकारा नहीं गया है।

अब हम सबसे संकीर्ण समस्या की ओर आ जाते हैं और वह समस्या है दक्खिनी हिन्दी भाषा के अस्तित्व की समस्या। सच कहें तो आज केरल की दक्खिनो हिन्दी भाषा का ह्रास होता जा रहा है। मलयालम जैसी विकसित और साहित्यिक धन से संपन्न भाषा के प्रभाव को रोकने में आज दक्खिनो हिन्दी असफल होती जा रहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिछले पाँच सौ वर्षों से जैसे अपनी अस्मिता को बनाये रखनेवाली केरल की दक्खिनी आज बडे ही संकट में पडी है। उसका कारण यह है कि शिक्षित दक्खिनी भाषियों का समूह इस भाषा के प्रति आज विशेष दिलचस्पी नहीं रखता। स्थानीयता के रंग में रंगे जाने की इच्छा दक्खिनी समाज में इतनी अधिक है कि वे अपनी मातृभाषा के व्यवधान को ही नष्ट कर देना चाहते हैं। केरल की सांस्कृतिक, भाषागत एवं साहित्यिक परपराओं से पूर्णतया तादात्म्य जोडने की उत्कट अभिलाषा ने कई परिवारों से दक्खिनी हिन्दी को निष्कासित कर दिया है। उन्हीं परिवारों में मातृभाषा का स्थान मलयालम को प्राप्त हो रहा है। जहाँ मलयालम का प्रभाव गहरा है, वहाँ दक्खिनी हिन्दी बिलकुल बोली नहीं जाती और जहाँ यह प्रभाव धीरे धीरे जड जमा रहा है वहाँ दक्खिनी हिन्दी के साथ

केरल की सांस्कृतिक, भाषागत एवं साहित्यिक परंपराओं से पूर्णतया तादात्म्य जोडने की उत्कट अभिलाषा ने कई परिवारों से दक्खिनी हिन्दी को निष्कासित कर दिया है।

मेरे यहाँ दक्खिनी हिन्दी और मलयालम समानान्तर रूप से चलती है, दोनों के प्रति समान निष्ठा हमारे परिवार के सदस्यों में है।

पारिवारिक सदस्य मलयालम का भी प्रयोग करते दिखाई देते हैं।

दोनों भाषाओं को अपनी मातृभाषा मानना असल में एक खतरनाक प्रवृति है, जो उस भाषा-भाषी समूह के अस्तित्व के उखडने का सूचक है। वस्तुत: दक्खिनी भाषी परिवारों में काफी मात्रा में यह प्रवृत्ति दिखाई दे रही है। अपनी भाषा के प्रति दक्खिनी मुसलमानों का लगाव समाप्त सा हो रहा है। आज की स्कूल जाने वाली पीढी के सदस्यों में दक्खिनी भाषा बोलनेवाले बिरले ही मिलेंगे। अंग्रेज़ी के रौब के कारण शिक्षित माँ-बाप कहीं कहीं घर में अंग्रेज़ी बोलना सभ्यता की निशानी मान बैठे हैं। कई परिवारों में एक समझौता जैसे हो गया है, घर के अन्दर हिन्दी और घर के बाहर मलयालम। लेकिन कभी बाहर वाली भाषा घर की मालिकिन बन बैठती है। अपने परिवार की बात कहूँ तो, मेरे यहाँ दक्खिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी और मलयालम समानान्तर रूप से चलती है, दोनों के प्रति समान निष्ठा हमारे परिवार के सदस्यों में है।

दक्खिनी हिन्दी के ह्रास को बढावा देनेवाला एक और कारण इस भाषा केलिए निश्चित लिपि का अभाव है। न इस भाषा के बोलने वाले उर्दू लिपि जानते हैं, न देव-नागरी ही। इस कारण चिट्ठी-पत्र

न इस भाषा के बोलनेवाले उर्दू लिपि जानते हैं, न देवनागरी ही। इस कारण चिट्ठी-पत्र सब मलयालम में लिखे जाते हैं।

सब मलयालम में लिखे जाते हैं। आधुनिक बातों को समझाने केलिए दक्खिनी हिन्दी शब्दों की कमी का अनुभव होने लगता है। ऐसे प्रसंगों पर मलयालम के शब्दों को दक्खिनी में फिट करके लोग काम चलाते हैं। इस कारण भाषा की स्वाभाविकता नष्ट होने लगती है और भाषा मलयालम मिश्रित हो जाती है। यह खिचडी भाषा बोलने से अधिक आसान है मलयालम बोलना। इस कारण बहुत सारे दक्खिनी भाषी, मलयालम के पक्ष में खडे हो जाते हैं।

मुझे इस बात की आशंका है कि पचास वर्षों के बाद इस भाषा के बोलनेवाले केरल में पचास हज़ार भी नहीं होंगे।

इस प्रकार दक्खिनी हिन्दी भाषा का केरल में ह्रास हो रहा है। मुझे इस बात की आशंका है कि पचास वर्षों के बाद इस भाषा के बोलने-वाले केरल में पचास हज़ार भी नहीं होंगे। इसका एक और कारण यह है कि आर्थिक लाभ को ध्यान में रखकर दक्खिनी युवक मलयालम भाषी मुस्लिम कन्याओं से शादी करने के पक्ष में है और विवाह के बाद ये युवक मलयालम को मातृ-भाषा बना लेते हैं। इस तरह उनकी सन्तान दक्खिनी हिन्दी की जान-कारी से वंचित हो जाती है। भाषा और परंपरा के प्रति किया जाने-वाला यह अपराध रोटी,धन,दौलत आदि के सामने स्वीकार्य बन जाता है। तो फिर दक्खिनी हिन्दी इन युवकों के हाथों में कैसे सुरक्षित बनी रह सकती है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[केरल में प्रचलित बोलचाल की दक्खिनी हिन्दी का एक नमूना और उसका हिन्दी रूपान्तर आगे दिया जा रहा है]

दक्खिनी

यक बस्ती में यक राजा रत्था। उने महीने में यक बार शिकार कु जाता। यक दिन जंगल में जाने में यक हत्थी आया। राजा डर गा। जल्दीउने घोडे के उप्पर से उतरिया। दौड को उने एक झाड में चढिया। झाड में दो बान्दरे बैठे थे। बान्दरा पूछिया "राजा राजा तू माय यो डरते सौ" राजा बोलिया "वो हत्थी मँजे मारने आते। उने सिंग से चुबाँगा। वो जनु मैं झाड पे चढिया सो"

ये सुनको बान्दरे हसे। बान्दरनी पूछी "इने कायका राजा। हत्थी कु देखको डरते सो उने अदमियाँ को कैसे पालुंगा।" बान्दरनी राजा के हाथ खोरची। राजा डर को निच्चे पडिया

हिन्दी

एक देश में एक राजा रहता था। वह हर महीने शिकार के लिये जाया करता था। एक दिन जब वह जंगल पहुँचा तो रास्ते में एक हाथी दिखाई पडा। राजा डर गया। घोडे वह से जल्दी नीचे उतरा। झट से वह एक पेड पर चढ गया। पेड पर दो बन्दर बैठे थे। बन्दर ने राजा से पूछा "हाय राजा, मुझे डर क्यों लग रहा है" राजा बोला वह हाथी मुझे मारने आ रहा है वह अपने दोनों दाँतों (सींगों से मुझे चुभा डालेगा। इसी कारण मैं पेड पर चढा हूं।

यह सुनते ही बन्दर हँस पडा। बन्दरिया पूछ बैठी— यह भी कोई राजा है! जो हाथी से डरता है, वह जनता का पालन पोषण कैसे करेगा"

बन्दरिया ने राजा के हाथ पर खरोच दिया। राजा डर के कारण नीचे डिर पडा।

सवाद की शैलियाँ

माँ किसी नटखट लडके से

"अरे पोट्टे जा को अगार का डब्बा ले लका"

(हे लडके, दियासलाई खरीद लाओ)

लडकी से

"अगे पोट्टी जरा चुप बैठ, आवाज करने को"

(खामोश हो जाओ, चिल्लाओ मत)

केरल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरे अवाज करने को कायको रे अवाज करते (चिल्लाओ मत, लडके) ये छोरे को अच्छा मार देना
(इस लडके को खूब पीटना चाहिये)

एक और उदाहरण
(विवरणात्मक कथन का

मरी बेटी कल आयी थी। उने सिनेमा देखना करको बोली। उस कने पैसे नै थे। मेरे कने से पैसे ले लको मेरी देवरानी के साथ सिनेमा देखने गई।

हिन्दी में

कज बेटी मुझ से मिलने आयी थी। वह सिनेमा जाना चाहती थी। लेकिन उसके पास पैसे नहीं थे। मेरे पास से पैसे लेकर वह मेरी देवरानी के साथ फिल्म देखने गयी।

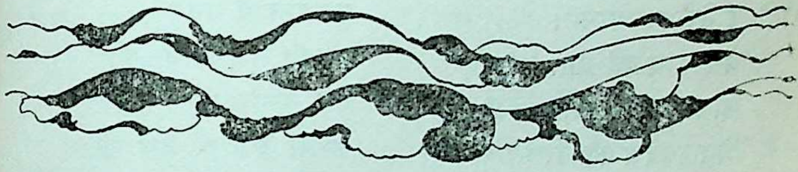

हमसे अपनी मातृभाषा में बोलते समय भी गलतियाँ हो जाती हैं। लेकिन वे इतनी हास्यास्पद नहीं होती जितनी कि जब हम विदेशी जबान में बोलने की कोशिश करते हैं।

महात्मा गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(1) हम भारतवासी

मैं मद्रासी, तुम पंजाबी,
यह असमी है, वह बंगाली,
ऐसी बातें सुनने में भी
लगती है कानों को गाली ।
कोई छोटा, कोई लम्बा,
कोई गोरा, कोई काला,
कोई वैज्ञानिक भाभा है
कोई है कवि पंत, निराला ।
कुछ भी हों, हैं भारतवासी,
माँ की सब प्यारी संतानें,
सब ने दूध पिया इस माँ का
गोदी में खेले मनमाने ।
भेद भाव की बातें कड़ुवीं,
छोड़ो, गले मिलें, सब आओ,
प्रिय स्वदेश की उन्नति के हित
अपनी-अपनी शक्ति लगाओ ।।

(2) क्षणिकाएँ—

इन अनगिन तारों की
नहीं बिसात कुछ
एक चाँद सबको
दे देता भाव है ।
सौ सौ जुगनू नहीं
अँधेरा हर सके,
एक दीप से
शरमा जाती रात है ।
सरिता की तरल तरंगों का
खुल कर बहना ही अच्छा है
जो बँध न सके सीमाओं में
उसका ढहना ही अच्छा है ।।
दुख के चरवाहे ने कैसी
वंशी करुण बजायी ?
वृक्ष तले सुख की चरवाहिन
सहसा ही अकुलाई ।

(3) मुक्तक—

कागज के फूल हँस रहे
गुलदान में मगर
महका सके फ़िजा को
एक गुलाब बहुत है ।
काली है रात, जल रहे
तारे ये बेशुमार,
रोशन करे तो एक ही
चिराग बहुत है;
मरने के लिए अंजुरी भर
जल ही बहुत है,
सम्मान से जीने के लिए
पल ही बहुत है ।
हम क्या करें जहान में
फैली जमीन का
दो पैर टिक सकें जहाँ
वह थल ही बहुत है ।

श्रीमती शकुन्तला सिरोठिया
108 बाई का बाग
इलाहाबाद-3

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काग भगोड़ा

डा० एम. षणमुखन

पहले,
जब वह आया
आकार उसका
गुरु का था,
और मुझसे वही मांगा–
'दाहिना अंगूठा ।'
बरसों बाद
सलाहकार के वेश में
वह फिर आया ।
मुझे सलाह देकर
–वक्त के एहसास से
खामोश हो
मेहनत करें–
उखाडकर ले चला ..
मेरी एकमात्र जीभ।
फिर, एक संक्रांतिकाल में
वह अरूपी
मुझे बेड़ी और हथकड़ी पहनाकर
दिल की धड़कनें बटोर कर
आंधी सा भाग निकला ।
फिर मुझे कुछ भी याद नहीं
कब वह आया
और मुझे इतिहास के चौराहे पर
खड़ा कर दिया ।
न जाने कब
मैं यों ही, शून्य नभ में
एक पोस्टर सा टंग गया था
और गँवारू बच्चों ने
और एक पोस्टर टांग दी थी–
'बिवेर आँफ दिस
यह काटेगा नहीं ।"

हिन्दी विभाग
कोचिन विश्वविद्यालय
कोचिन–682022

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मजदूर

डा० देवराज

तुम्हारी आँखों ने पिये हैं
पूरी एक उम्र के आँसू
लोहा गलाने वाली
भट्टी के सामने,
पसीना भी
कहाँ टपक सका है
जमीन पर किसी वक्त
सदा ही
सिर से चल कर
पेट पर आते ही
सूख गया है
लोहे को
आग से भी
अधिक गरम
भूख की आँच से,
साँस से तुम
उगलते रहे हो
वह कीचड़
जो तुम्हारे सबसे छोटे बच्चे ने
अपने रक्त से तैयार की है,
किसी ईंट पर
कभी
तुम्हारा नाम नहीं लिखा गया
न तुम्हें
नसीब हुआ
कभी पक्का घर,
तुम
कभी पत्नी को
दूसरा लहंगा नहीं दिला पाए
और बच्चों को
मौसम में आग
या मकई का भुट्टा
या टाफी
हर दोपहर तो
प्याज और लूनी रोटी भी नहीं,
किस मिट्टी के बने हो तुम
तुम्हारी पत्नी
तुम्हारे बच्चे
किस हवा को
पीते हो तुम ?

हिन्दी विभाग
मणिपुर विश्वविद्यालय
इम्फाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्खिनी हिन्दी और तमिल

श्री. एस. जयप्रकाश

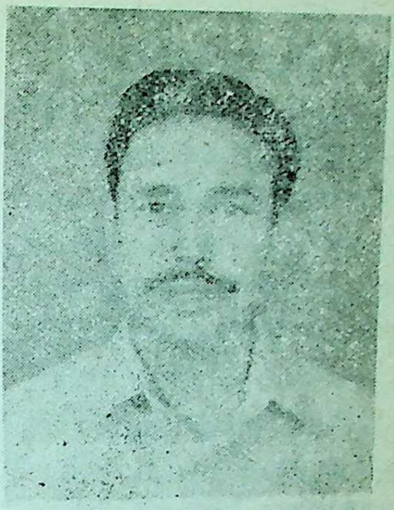

[विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सहयोग से 22-24 जनवरी 1988 को केरल विश्व-विद्यालय द्वारा आयोजित संगोष्ठी में प्रस्तुत प्रपत्र]

तमिलनाडु में कुछ शताब्दियों के पहले ही आसपास के प्रांतों से हजारों की संख्या में लोग आये थे। मुगलों के शासन काल में यहाँ के कुछ राजा भी तेलुगु भाषी और मराठी-भाषी थे। अठारहवीं शताब्दी में मदुरै में तिरुमलै नायक का राज्य कायम हुआ था जो आंध्र प्रदेश से आकर यहाँ के राजा को जीतनेवाले विजेताओं के वंशज थे। इसीप्रकार तंजाऊर में सरफोजी राजा का शासन पिछली शताब्दी में कायम हुआ था जो महाराष्ट्र से दक्षिण की ओर सैनिक बल के साथ बढ़ आये थे। मुगलों के शासन काल में तो राजकीय काम से उत्तर से कई सेनाएँ तमिल प्रदेश में आती जाती थीं। इन सभी के संपर्क से तमिल भाषा और संस्कृति पर भारत की विभिन्न संस्कृतियों का प्रभाव पड़ा है।

तमिलनाडु के दक्खिनी हिन्दी भाषी ज्यादातर मुसलमान हैं। इनके पूर्वज प्रायः आंध्र प्रदेश के ही निवासी थे। अल्प-संख्या में उत्तर

द्राविड-भाषा परिवार की अन्य भाषाओं से तमिल के ध्वनिग्राम भिन्न हैं और इसकी वर्णमाला में महाप्राण की ध्वनियाँ नहीं हैं। अतः दक्खिनी हिन्दी तमिल भाषियों के लिए बोधगम्य और ग्राह्य नहीं रही थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत से और आंध्र से यहाँ आकर बसे हुए हिन्दू भी हैं। द्राविड-भाषा परिवार की अन्य भाषाओं से तमिल के ध्वनिग्राम भिन्न हैं और इसकी वर्णमाला में महाप्राण की ध्वनियाँ नहीं हैं। अत: दक्खिनी हिन्दी तमिल भाषियों के लिए बोधगम्य और ग्राह्य नहीं रही थी और दक्खिनी हिन्दी का व्यवहार स्थानांतरित लोगों के घर तक ही सीमित था। एक प्रकार से दक्खिनी हिन्दी की स्थिति 'क्रियोल' की ही है।

तिरुनेल्वेलि जिले के 'पणगुडि' गाँव में हजारों की संख्या में दक्खिनी भाषी मुसलमान रहते हैं। ये पठानी मुसलमान कहलाते हैं।

फिर भी तमिल प्रदेश में दक्खिनी हिन्दी भाषी सुदूर दक्षिण में तिरुनेल्वेलि जिले तक जाकर बस चुके हैं। तिरुनेल्वेलि जिले के 'पणगुडि' गाँव में हजारों की संख्या में दक्खिनी भाषी मुसलमान रहते हैं। ये पठानी मुसलमान कहलाते हैं। इनका स्थानीय नवधर्मांतरित मुसलमानों पर आधिपत्य भी चलता था। फिर भी आजकल स्थानीय मुसलमानों से इनका वैवाहिक संबंध है और सांस्कृतिक कार्यों में भी अच्छा मेल मिलाप है। यद्यपि इनकी भाषा उत्तर भारत में प्रचलित उर्दू से भिन्न है तो भी इनकी भाषा भी उर्दू ही कहलाती है।

तमिलनाडु की दक्षिणी सीमा के कन्याकुमारी जिले में दक्खिनी हिन्दी भाषी बिलकुल नहीं हैं। इसका कारण यह है कि पहले यह प्रदेश केरल के राज्य से सम्मिलित था। आजकल तिरुनेल्वेलि, तूत्तुकुडि जैसे प्रमुख शहरों में दक्खिनी भाषियों के कुछ परिवार हैं। इनके अधिक से परिवार मदुरै में और उसके उत्तर के ज़िलों में हैं। तमिलनाडु के उत्तर के दक्षिणी आर्काड और उत्तरी आर्काड जिलों में इनकी बस्तियाँ अधिक हैं। उनका संपर्क आंध्र के लोगों से आज तक बना रहा है। इससे यह स्पष्ट रूप से प्रमाणित होता है कि ये आंध्र से ही

तमिलनाडु के उत्तर के दक्षिणी आर्काड और उत्तरी आर्काड जिलों में इनकी बस्तियाँ अधिक हैं।

स्थानांतरित हुए हैं। मद्रास और आर्काड जिलों के स्कूलों में शिक्षा उर्दू के माध्यम में दी जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मद्रास और आर्काड जिलों के स्कूलों में शिक्षा उर्दू के माध्यम में दी जाती है।

अतः यहाँ के शिक्षित दक्खिनी भाषी उर्दू के ठेठ और परिष्कृत रूप से भी परिचित हैं। परंतु उनकी बोलचाल की भाषा दक्खिनी हिन्दी ही है। तमिलनाडु में दक्खिनी हिन्दी में रचित साहित्य उपलब्ध नहीं है।

तमिल विद्वानों का संघ इसे आर्य भाषाओं के प्रभाव से बचाये रखने में दत्तचित्त है। उनकी हिन्दी विरोधी भावना के कारण रेडियो पर आकाशवाणी शब्द का भी बहिष्कार किया गया है।

द्राविड भाषाओं में तमिल का साहित्य बहुत पुराना है। तमिल भाषा पर संस्कृत और अन्य आर्य-भाषाओं का प्रभाव और द्राविड भाषाओं की तुलना में बहुत कम ही पड़ा है। तमिल विद्वानों का संघ इसे आर्यभाषाओं के प्रभाव से बचाये रखने में दत्तचित्त है। उनकी हिन्दी विरोधी भावना के कारण रेडियो पर आकाशवाणी शब्द का भी बहिष्कार किया गया है। उसके स्थान पर अंग्रेजी शब्द का ही प्रयोग किया जाता है। सार्वजनिक स्थानों में यथासंभव हिन्दी की देवनागरी लिपि का वर्जन किया जाता है। इतना सब होने पर भी तमिल भाषा पर दक्खिनी हिन्दी और हिन्दुस्तानी का प्रभाव पड़ा है। सदियों पहले यहाँ आकर बसे हुए दक्खिनी हिन्दी भाषियों के संपर्क के कारण तमिल भाषा के शब्द भंडार में कई हिन्दी शब्द मिलाये गये हैं और तमिल भाषी रोज उन शब्दों को किसी प्रकार के संकोच के बिना बोलते हैं। वैसे तमिल में स्वीकृत शब्दों पर प्रस्तुत लेख में विचार किया जाता है।

तमिलनाडु का दक्षिणी भाग मुगलों के शासन काल में भी उनके राज्य से संबद्ध न होकर स्थानीय राजाओं के अधीन ही रहा था। तमिलनाडु के उत्तरी जिलों में दक्खिनी उर्दू बोलने-वाले मुसलमानों की बोलियाँ अधिक हैं। ये उत्तर भारत से आये हुए हैं। इनमें बहुत से लोग उर्दू हरूफ भी जानते हैं। इनकी भाषा अधिकतर शुद्ध है। परंतु दक्षिण जिलों में यानी मदुरै के आसपास दक्खिनी हिन्दी केवल बोलचाल की भाषा रही —

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। उत्तर से आये हुए मुसलमानों के अलावा कुछ हिन्दु परिवार भी यह भाषा बोलते हैं। तमिलनाडु में उत्तर भारत के कई प्रांतों से विभिन्न जातियों के लोग आकर बस गये हैं। उत्तर से 'सौराष्ट्र' कहलानेवाले वयनजीवी लोग एवं महाराष्ट्र से भी बहुत से लोग बडी संख्या में यहाँ आये हैं। तमिलनाडु के प्रमुख शहरों में व्यापार करने के लिए राजस्थान, गुजरात और सिंध से बहुत से लोग आये हैं। खच्छ प्रदेश से मेमन कहलानेवाले मुसलमान भी बडी तादाद में आकर कुछ शहरों में रहते हैं। इन सभी लोगों की संपर्क भाषा खडी बोली से नहीं मिलती जुलती है। परंतु दक्खिनी हिन्दी के निकट ही उसका रूप है। इन लोगों के संपर्क से

इन सभी लोगों की संपर्क भाषा खडी बोली से नहीं मिलती जुलती है परंतु दक्खिनी हिन्दी के निकट ही उसका रूप है। इन लोगों के संपर्क से तमिल में हिन्दी के बहुत से शब्द प्रचलित हो गये हैं।

तमिल में हिन्दी के बहुत से शब्द प्रचलित हो गये हैं।

डोलक और झूमक जैसे कान के गहनों के तमिल पर्याय आज लुप्त हो गये हैं। कलाई लगाना लौंग और धनिया शब्द तमिलनाडु के उत्तरी जिलों में प्रचलित हैं।

व्यापार के कारण बहुत से हिन्दी शब्द बोलचाल की तमिल में अपनाये गये हैं। ग्राहक, बाजार, आसामी, कसापु, नल्ली, सामान, कच्चा, पक्का, तैयार, रकम, गोदाम, नाडा, गाढ़ा और तराजू जैसे शब्द इसके उदाहरण हैं। आजकल इनके समानार्थी तमिल शब्द धीरे धीरे लुप्त होते जाते हैं। तमिल में ग्राहक से ग्र क्कि, बाजार से बजार, कसाई से कसाप्पु गोदाम से किडंगु और तराजू से तरासु जैसे रूपांतरण हो गये हैं। डोलक और झूमक जैसे कान के गहनों के तमिल पर्याय आज लुप्त हो गये हैं। कलाई लगाना, लौंग और धनिया शब्द तमिलनाडु के उत्तरी जिलों में प्रचलित हैं। दक्षिण के जिलों में इन चीजों के तमिल पर्याय प्रयुक्त होते हैं।

प्रशासन संबंधी बहुत से हिन्दी शब्द तमिल में स्वीकृत हैं। इनके स्थान पर तमिल पर्याय वाजिब नहीं ठहरते। अमल, रद्द, दावा, हद,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फैसल, ऋजु, दंड, बंदोबस्त, राजीनामा, चंदा, असल, और नकल जैसे शब्द इस प्रकार के है। इनसे कुछ क्रियाएँ भी बनी हैं और इनको लोग तमिल शब्द ही समझ बैठते हैं। नकल से नक्कल शब्द भी व्युत्पन्न हुआ है जिसका मतलब परिहास है। सरासरी का अर्थ बिलकुल न होकर औसत होता है। वैसे ही राजी होना का अर्थ दोस्ती या समझौता करना बन गया है। जल्दी और ज़रूर जैसे क्रिया विशेषण भी तमिल में बोले

प्रशासन संबधी बहुत से हिन्दी शब्द तमिल में स्वीकृत हैं। इनके स्थान पर तमिल पर्याय वाजिब नहीं ठहरते।

जाते हैं। परंतु जरूर का अर्थ बहुत तेज़ हो गया है।

तमिल प्रदेश के अलावा कुछ शब्द दक्खिनी के प्रभाव से दक्षिण भारत भर में प्रचलित हैं। जास्ति, कम्मि, जोडी, रास्ता, मैदान, दोस्त, वकालत, कसरत और सलाम इसके उदाहरण हैं। उस्ताद शब्द तमिल में वस्ताद बन गया है जिसका अर्थ पहलवान होता है। पहलवान का रूप भी भ्रष्ट होकर फयिलवान बना है। कचहरी से कच्चेरी शब्द बना है।

देगचा, अंडा और चिमटा जैसे घरेलू इस्तेमाल की चीजों के नाम भी तमिल में स्वीकृत हैं।

यह शब्द अदालत के अलावा संगीत सभा और अन्य सभाओं के लिए भी इस्तेमाल किया जाता हैं। जिसमें मोल भाव की गुंजाइश नहीं रहती उसे करार दाम कहा जाता है। करार शब्द कई प्रसगों में भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है। लगाम का रूप तमिल में लगान बन गया है। गलाटा, तकरार, गोलमाल, बेजार और गड़बड़ शब्द भी कई जगहों में प्रचलित है। गड़बड़ से गेड्डुविडि और तकरार से तगरारु शब्द बने हैं। देगचा, अंडा और चिमटा जसे घरेलू इस्तेमाल की चीजों के नाम भी तमिल में स्वीकृत हैं।

गुमान के अर्थ में गमे और गेत्तु जैसे शब्द प्रयुक्त हैं। हिम्मत के अर्थ 'दिल' शब्द बोला जाता है। होदा और बंदा क्रमशः पद और ओहदे के ठाटबाट का बोध कराते हैं। मद्रास में चुप हो जाओ के अर्थ में 'गम रहो' कहा जाता है। वहाँ फलाना और दफा शब्द बोलचाल के शब्द हैं। जोडी से चप्पल अर्थवाला जोड़ु बना है। तरफ से तरप्पु शब्द बना है जिसका मतलब पक्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या गुट है। खाली और गत्ता शब्द इतनी अधिक बार बोले जाते हैं कि ये तमिल के अपने शब्द लगते हैं। खलास से खलास शब्द बना है। खाली शब्द स्वीकृत है लेकिन भर्ती शब्द प्रयुक्त नहीं होता। किसी की प्रशंसा करनी है तो तमिल भाषी बेश, शाबाश, बले और जोर शब्दों का सहारा लेते हैं। जोर का मतलब बढिया भी है। भला से ही बले शब्द बना है। तमिल में अलग से अलादि शब्द बना है जिसका मतलब न्यारा या असाधारण होता है। आजकल लड़के उम्दा या अति उत्तम के अर्थ में 'टक्कर' शब्द का प्रयोग करतेहैं।

किसी की प्रशंसा करनी है तो तमिलभाषी बेश, शाबाश, बले और जोर शब्दों का सहारा लेते हैं। जोर का मतलब बढिया भी है। भला से ही बले शब्द बना है।

मदुरै के कुछ स्थानों के नामकरणों से दक्खिनी का प्रभाव स्पष्टतया समझा जा सकताहै। मीनाक्षी मंदिर के सामने एक स्थान नगरा मंडप कहलाता है। मदुरै में दक्खिनी भाषियों के मोहल्ले गोरिपालयम, महबूब पालयम, इस्मायिलपुरम और बीबीकुलम कहलाते हैं। ये

दक्खिनी हिन्दी से तमिल में स्वीकृत शब्द बहुत महत्वपूर्ण है। अगर इनको तमिल के शब्द भंडार से निकाल दिया जायेगा तो तमिल भाषा की शक्ति बहुत कमजोर हो जायेगी।

नाम कई शताब्दियों से प्रचलित हैं।

वास्तव में तमिल भाषा में दक्खिनी का प्रभाव पड़ने से पहले भी कई संस्कृत शब्द तत्सम और तद्भव होकर प्रयुक्त होने लगे हैं। पंक्ति, विषय और समय जैसे सैकड़ों ऐसे शब्द हैं जिनके तमिल पर्याय भी बोले जाते हैं। परंतु दक्खिनी हिन्दी से तमिल में स्वीकृत शब्द बहुत महत्वपूर्ण है। अगर इनको तमिल के शब्द भंडार से निकाल दिया जायेगा तो तमिल भाषा की शक्ति बहुत कमजोर हो जायेगी। फिर भी ध्यान देने की बात यह है कि इन शब्दों को तमिल साहित्यकारों ने नहीं अपनाया है। इस प्रकार दक्खिनी हिन्दी के कई शब्द कुछ अर्थ परिवर्तनों सहित या अपने मूल अर्थ में ही तमिल में प्रयुक्त होते रहते हैं। ★

(सहायक प्राध्यापक,
एस. टी. हिन्दु कॉलेज
नागरकोविल-2)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्खिनी और कन्नड का परस्पर प्रभाव

डॉ0 टी. आर. भट्ट

[24 जनवरी 1988 को विश्वविद्यालय अनुसंधान आयोग के सहयोग से केरल विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित संगोष्ठी में प्रस्तुत प्रपत्र]

दक्खिनी का संबंध परिवार-संबंध की दृष्टि से उत्तर भारत की आर्य-भाषा से है। वह हिन्दी की एक विशिष्ट बोली है। वह दक्खिनी इसीलिए कहलाई कि उसका संबंध दक्षिण के राज्यों के संपर्क एवं आदान-प्रदान के कारण है। खडी-बोली के साहित्य की परंपरा 14, 15 वीं सदी में गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र आदि दक्षिण के प्रदेशों में मुसलमानी फौजों, संतों के साथ आ गई और ये लोग ज्यों-ज्यों वहाँ बसते गये, त्यों-त्यों वहाँ इसने भी घर कर लिया। औरंगजेब ने जब दक्षिण को जीत लिया तब बडी संख्या में आना जाना शुरू हुआ। उनके साथ यह भाषा यहाँ आकर

खडीबोली के साहित्य की परंपरा 14, 15 वीं सदी में गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र आदि दक्षिण के प्रदेशों में मुसलमानी फौजों, संतों के साथ आ गई और ये लोग ज्यों-ज्यों वहाँ बसते गये, त्यों-त्यों वहाँ इसने भी घर कर लिया।

विकसित हुई और उसने यहाँ अपना स्वतंत्र अस्तित्व स्थापित कर लिया।

किसी भी भाषा के विकास में तत्कालीन ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ अपना गहरा प्रभाव डालती हैं-- इसका अच्छा उदाहरण दक्खिनी हिन्दी है। दक्खिनी दक्षिण राज्यों की मूल भाषा नहीं है। दक्खिनी भाषा तथा साहित्य अन्य राज्यों की तरह कर्नाटक के लिए नया है। यह भाषा तथा साहित्य बहमनी, आदिलशाही, कुतुबशाही आदि सुल्तानों और उनके दरबारियों के मस्तिष्क की उपज थी। दक्खिनी भाषा के प्रचार के पहले कर्नाटक में कन्नड में रचनाएँ होती थीं। कन्नड द्रविड परिवार की एक मुख्य सुसंस्कृत भाषा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय भाषाओं में साहित्य की संपन्नता की दृष्टि से संस्कृत एवं तमिल के बाद कन्नड ही तीसरा स्थान ग्रहण करती है।

द्रविड परिवार में साहित्य की प्राचीनता की दृष्टि से कन्नड दूसरा स्थान रखती है। भारतीय भाषाओं में साहित्य की संपन्नता की दृष्टि से संस्कृत एवं तमिल के बाद कन्नड है तीसरा स्थान ग्रहण करती है। तेरहवीं-चौदहवीं शताब्दी तक कन्नड भाषा विदेशी शब्दों के प्रभाव या सम्मिश्रण से मुक्त थी। किंतु इसके बाद इसके शब्दकोश में संस्कृत के अनेकों शब्द आ गये। बाद में कर्नाटक में मुसलमान शासकों का आगमन हुआ और उनकी भाषा के शब्द कन्नड में प्रयुक्त होने लगे। इस तरह कन्नड के साथ दक्खिनी का गहरा संबंध स्थापित हो गया।

प्रत्येक भाषा के दो रूप होते हैं:—उच्चरित और लिखित। भाषा का उच्चरित रूप शीघ्र ही दूसरी भाषा के संपर्क में आकर प्रभावित होता है, भाषा का लिखित रूप आसानी से प्रभावित नहीं होता। इसके लिए दीर्घ समय की आवश्यकता होती है। कन्नड भाषा का उच्चरित रूप दक्खिनी भाषा के संपर्क में आकर प्रभावित हुआ और इसने दक्खिनी के अनेक शब्द अपने में पचा लिये। कन्नड की ध्वनियां पर दक्खिनी की ध्वनियों का प्रभाव पडा और कन्नड के क्रियारूप भी दक्खिनी से प्रभावित हुए। इसी प्रभाव के कारण कन्नड की कुछ स्थानीय बोलियों में खरापन पाया जाता है।

कन्नड के साथ दक्खिनी का संबंध काफी पुराना है। तेरहवीं शती के उत्तरार्द्ध में दक्खिनी का प्रवेश कर्नाटक में हुआ। उस समय उत्तर भारत से सूफी संत, व्यापारी लोग गुजरात के द्वारा दक्षिण में आ गये। इनके साथ यह भाषा भी आ गयी। चौदहवीं शताब्दी में मुसलमान शासकों के आक्रमण तथा उनका शासन स्थापित होने के कारण उन लोगों की भाषा के संपर्क में यहां के लोग आ गये। दक्षिण में उस समय चालुक्य आदि स्थानीय राजा लोग शासन कर रहे थे। वे आपस में झगड रहे थे। इसका फायदा अल्लाउद्दीन, मलिक काफर आदि सम्राटों ने उठाया और दक्षिण के राज्यों को जीतकर अपने वश में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रख लिया। उस समय हिन्दी का प्रभाव कन्नड पर उतना नहीं था। मगर जब सन् 1347 में गुलबर्गा में बहमनी सुलतानों का शासन शुरू हुआ तब दक्खिनी हिन्दी को विकसित होने के लिए अवकाश मिल गया। इस प्रकार दिल्ली की खडीबोली की एक शाखा उत्तर कर्नाटक में आकर चौदहवीं शताब्दी से लेकर 17 वीं शती तक विकसित रही। इस दक्खिनी में उतर की उर्दू या खडीबोली की अपेक्षा फारसी

इस दक्खिनी में उत्तर की उर्दू या खडीबोली की अपेक्षा फारसी शब्द कम हैं। इस पर प्रादेशिक भाषा के शब्दों का अधिक प्रभाव रहा है।

शब्द कम हैं। इस पर प्रादेशिक भाषा के शब्दों का अधिक प्रभाव रहा है। बाकी प्रदेशों की अपेक्षा कर्नाटक में ही दक्खिनी में अधिक साहित्य की रचना हुई। कर्नाटक के उत्तर भाग बीजापुर, बीदर, गुलबर्गा — ये तीनों मुसलमान शासकों के केन्द्र थे। इन भागों में शासकों ने दक्खिनी हिन्दी को अपने दरबार की तथा शासन की भाषा के रूप में अपनाया।

कर्नाटक में दक्खिनी भाषा में करीब छ: सौ सदियों तक साहित्यिक कार्य संपन्न हुआ। इस काल को स्थूल रूप में चार काल-खंडों में विभाजित किया जा सकता है।

1. बहमनी सुलतान काल (1347—1525)
2. मोगल सम्राटों का काल (1686—1750)
3. हैदर टीपू सुलतान काल (1761—1799)
4. मैसूर महाराजाओं का काल (1799—1950)

इनमें पहले के दो काल-खंडों की अवधि में उत्तर कर्नाटक (बीजापुर, बीदर, रायचूर, गुलबर्गा) में दक्खिनी भाषा का खूब प्रचार हुआ और उसका सीधा प्रभाव उत्तर कर्नाटक की कन्नड पर पडा। बाद के दो काल खंडों की अवधि में दक्षिण कर्नाटक अर्थात मैसूर कन्नड पर विशेष प्रभाव गोचर होता है। मगर यहाँ का प्रभाव गहरा नहीं है। इसका कारण यही है कि मैसूर में तत्कालीन शासकों ने दक्खिनी से बढकर प्रदेश भाषा कन्नड को शासन तथा व्यवहार की भाषा के रूप में अपनाया। साथ ही दक्षिण कर्नाटक के अन्य प्रदेश मुसलमान शासकों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधीन नहीं थे। अत: वहाँ की कन्नड में दक्खिनी का प्रभाव बहुत ही कम है। बीजापुर में आदिलशाही, गुलबर्गा में बहमनि सुलतान शासकों ने करीब चार सौ साल तक शासन किया। बहमनि शासन बहुत ही जल्दी शक्तिशाली बन गया और उसने समूचे कर्नाटक में अपना प्रभाव स्थापित किया। इन शासकों ने अपने शासन काल में साहित्य, कला आदि को विशेष प्रोत्साहन दिया। इन में कुछ शासक खुद कवि भी थे जिन्होंने दूर दूर के विद्वानों को बुलाकर अपने दरबार में आश्रय दिया। इनके दरबारी कवियों ने अपनी रचनाओं में इन शासकों का गुणगान किया है। इन दो काल खंडों की अवधि में ही दक्खिनी हिन्दी को प्रधानता मिली और उन्होंने उसे शासन, व्यवहार और साहित्य की भाषा का स्थान दिया। बहमनि सुल्तान पहला मुहम्मद षा (सन् 1375) ने बाहर के श्रेष्ठ कवि शिराज हाफीज को अपने दरबार में आने के लिए निमंत्रण दिया था। इन सम्राटों के बाद फिरोज षा (1436) का नाम उल्लेखनीय है जिसने अपने शासन काल में साहित्य कला को प्रोत्साहन दिया। इन्हीं के काल

सय्यद मुहम्मद हुसैनी नामक सूफी संत गुलबर्गा में अपने शिष्यों के साथ आकर वहीं रह गये। वे अरबी फारसी के साथ संस्कृत में भी विद्वान थे।

में सय्यद मुहम्मद हुसैनी नामक सूफी संत गुलबर्गा में अपने शिष्यों के साथ आकर वहीं रह गये। वे अरबी फारसी के साथ संस्कृत में भी विद्वान थे। उन्होंने अपने उत्कृष्ट काव्य की रचना गुलबर्गा में की है। इसी प्रकार इस काल में कुछ अन्य कवि भी हुए जिन्होंने दक्खिनी में गद्य और पद्य की रचना की है।

मुगल शासकों ने बीजापुर पर आक्रमण करके उसे (सन् 1682-86) जीत लिया। इस काल में कर्नाटक में दक्खिनी साहित्य का विकास कुंठित हो गया। मुगल शासन की अस्तव्यस्तता के कारण दक्खिनी भाषा तथा साहित्य हैदराबाद और औरंगाबाद में विकसित होने लगा। धीरे धीरे कर्नाटक में दक्खिनी के स्थान को उर्दू ने ले लिया।

हैदरअली और टीपु सुलतान के काल में उनका ध्यान राजनीति तथा सैनिक कार्याचरण पर ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टिपु के शासन काल में तरफ़दार लगान के विषय को कन्नड में लिखते थे और हिसाब की प्रति कन्नड, मराठी तथा फारसी भाषा में बनायी जाती थी।

अधिक होने के कारण साहित्य तथा भाषा पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया। इस काल में फारसी तथा कन्नड व्यवहार की भाषा थी। इनके काल में दक्खिनि को जनता की बोली के रूप में स्थान मिल गया। उनके दरबारी कवि हैदरअली का गुणगान कन्नड में किया करते थे। टीपू सुलतान खुद विद्वान थे अत: उन्होंने साहित्य को महत्व दिया। उन्होंने दक्खिनी में अनेक पत्र लिखे हैं। टीपु के शासन काल में तरफ़दार लगान के विषय को कन्नड में लिखते थे और हिसाब की प्रति कन्नड, मराठी तथा फारसी भाषा में बनायी जाती थी। इस प्रकार कर्नाटक के दक्षिण भागों में दक्खिनी की अपेक्षा कन्नड भाषा को महत्व मिल गया।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि उत्तर कर्नाटक में कई शताब्दियों तक दक्खिनी हिन्दी को राजाश्रय के कारण विकसित होने के लिए अवकाश मिल गया। और दक्खिनी स्थानीय कन्नड-बोली एवं साहित्य की भाषा को प्रभावित करने में समर्थ हुई। 19 वीं सदी के आरंभ से दक्खिनी केवल एक बोली के रूप में रह गई और साहित्य का माध्यम कन्नड, उर्दू ने ले लिया।

कन्नड भाषा पर दक्खिनी का पर्याप्त प्रभाव लक्षित किया जा सकता है। साथ ही कन्नड भाषा का प्रभाव भी दक्खिनी पर पर्याप्त रूप में पडा है। कर्नाटक में मुसलमान, लमाणी, ग्वाल आदि जाति के लोगों ने दक्खिनी को अपनी मातृभाषा के रूप में अपनाया है। यहाँ कन्नड के वातावरण के कारण कन्नड भाषा का प्रभाव सिर्फ दक्खिनी के शब्द-कोश की दृष्टि से ही नहीं, अपितु व्याकरण के स्तर पर भी हुआ है।

कर्नाटक में उत्तर कर्नाटक की कन्नड पर दक्खिनी का विशेष प्रभाव गोचर होता है। यह प्रभाव व्यवहार की भाषा तथा साहित्य की

कन्नड भाषा का प्रभाव सिर्फ दक्खिनी के शब्दकोश की दृष्टि से ही नहीं, अपितु व्याकरण के स्तर पर भी हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा-दोनों स्तर पर हुआ है। इस प्रदेश की भाषा में वस्तुवाचक, भाववाचक पद, शासन से सबंधित पद, संख्यावाचक विशेषण आदि में दक्खिनी के अनेकों शब्द कन्नड में सम्मिलित हो गये हैं। किला, सवारी, धोबी, रजाई, दूकान, हिकमत, नजर, बयान, सर्दी, गरम, बारिक, किराय, तेज, खराब, गुंजाइश, मुश्किल, शिकायत, इज्जत, एक, दो, तीन, दौड, जरा, पसंद आदि।

इसी प्रकार के हजारों दक्खिनी के शब्द—कोर्ट कचहरी, दैनिक व्यवहार, शासन, खेलकूद, फूल-फल, पशुपक्षियों के नाम, आभरण कपडे, संगीत आदि से संबंधित अनेक शब्द जनता की बोली में मिल-जुल गये-हैं। साथ ही क्रियापद, अंगांगों के नाम, संबंधकाव्यय, द्विरुक्ति, कहावत, संबोधन, उद्गारवाचक पद, गाली तथा निषेधार्थक पद, स्थान विशेष के नाम आदि कन्नड में पाये जाते हैं। यहाँ कुछ उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं:—

गुजराइसु, उंगलि, देखरेख, भोलाभाला, यार पत्थर चार, हुज़ूर, साहब, खबरदार, ठीक, बदमाश, हराम, नालायक, शैतान, बेशर्म आदि कई दक्खिनी के शब्द कन्नड में मिल जुलकर कन्नड के ही शब्द बन गये हैं। शाहाबाद, हुम्नाबाद, शाहपुर, महागांवकर, आदि स्थानों के नाम दक्खिनी से ही कन्नड में आ गये हैं। मूल कन्नड में ख, झ, फ, ध्वनियों से आरंभ होनेवाले शब्द नहीं हैं। अत: दक्खिनी के प्रभाव से ये ध्वनियाँ कन्नड में सम्मिलित हो गयी हैं। बीदर और गुलबर्गा की कन्नड पर दक्खिनी का गहरा प्रभाव देखा जा सकता है। वाक्य के स्तर पर दक्खिनी का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है:—

मूल कन्नड मे ख झ, फ ध्वनियों से आरंभ होनेवाले शब्द नहीं हैं। अत: दक्खिनी के प्रभाव से ये ध्वनियाँ कन्नड में सम्मिलित हो गयी हैं।

नानु निम्मोडेने बरुत्तेने (मैं आप के साथ आता हूँ)

यह कन्नड का सरल वाक्य है। यही वाक्य दक्खिनी के प्रभाव के कारण इस प्रकार उलटा हो गया है:—

(1) अंव अंदी कि नाबु निम्मसरि बरते (अर्थात् उसने कहा कि वह भी आप के साथ आयेगा)

(2) दुनियाद मंदि हेळतार कि आंवा थोल छंद हान। अर्थात् बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्खिनी हिन्दी का पर्याप्त प्रभाव कन्नड पर पडा है और कन्नड का भी प्रभाव काफी मात्रा में दक्खिनी पर पडा है।

से लोग कहते हैं कि वह बहुत ही सुन्दर है।

यहाँ पर यह स्पष्ट है कि कन्नड में किस प्रकार दक्खिनी के संज्ञा-पद, अव्यय आदि उसी रूप में प्रयुक्त होते हैं। विशेषण और क्रिया-विशेषणों से युक्त अनेक पदों में दक्खिनी कन्नड का सम्मिश्रण गोचर होता है उदा: कितायदर्मान, खुदऊरु (खुद का गाँव), जवान हुडुग (जवान लडका), मुश्किल केलस (मुश्किल काम) आदि।

दक्खिनी के अनेक क्रिया विशेषण कन्नड में घुस गये हैं :- अचानक, दौड आदि। इसी तरह पौणे, अडीच, दीड, बार, धा आदि संख्यावाचक विशेषण कुछ परिवर्तन के साथ प्रयुक्त होते हैं। दक्खिनी हिन्दी के क्रिया समुच्चय के समान कन्नड क्रिया समुच्चय का निर्माण होता है। उदा :—

साकुमाडु — बस करो.
कोल्लि हाकु — मार डालो
गिड हच्चु — झाड लगावो

इस प्रकार यह देखा जा सकता है कि दक्खिनी हिन्दी का पर्याप्त प्रभाव कन्नड पर पडा है और कन्नड का भी प्रभाव काफी मात्रा में दक्खिनी पर पडा है। उत्तर की दक्खिनी अब उसी मूल रूप में कर्नाटक में सुनने को नहीं मिलेगी। व्याकरण तथा शब्दकोश की दृष्टि से कन्नड का व्यापक प्रभाव दक्खिनी पर पडा है। कन्नड के कई वाक्य-प्रयोग दक्खिनी में घुस गये हैं। अत: आज दक्खिनी पूर्ण रूप से परिवर्तित हो गयी है। उदा :—

क्यों बे ? (अर्थात् क्यों माँ) याक बे ? आदि

इसी तरह कन्नड के कई संख्या-वाचक विशेषणों का प्रयोग दक्खिनी में होता है :— ओंदु हज़ार, एकडु हजार, आदि।

निर्देशक पदसमुच्चय संख्या के प्रयोग में दक्खिनी संख्या के साथ कन्नड प्रत्यय लग जाता है: उदा :— पहलादव, दूसरादव आदि।

शब्दावली, संज्ञा, अव्यय, क्रिया-पद आदि सभी स्तरों पर कन्नड का प्रभाव लक्षित किया जा सकता है। साथ ही कन्नड का प्रभाव दक्खिनी उच्चारण की दृष्टि से भी हुआ है।

अंत में यह कहा जा सकता है कि दक्खिनी एक विशेष जाति के साथ दक्षिण में आकर यहाँ की प्रादेशिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह आज मुख्यत: व्यवहार की भाषा अर्थात व्यापार-उद्योगों में प्रचलित भाषा का स्थान ग्रहण कर रही है।

भाषा से प्रभावित होकर विकसित हुई और वह अब कर्नाटक में विशेष रूप में कर्नाटक के उत्तर भाग में किसी एक जाति की भाषा न होकर जन समुदाय की भाषा बन गयी है और वह आज मुख्यत: व्यवहार भाषा अर्थात व्यापार-उद्योगों में प्रचलित भाषा का स्थान ग्रहण कर रही है। दक्खिनी का महत्व साहित्य की अपेक्षा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से अधिक है। हिन्दी भाषा के अध्ययन की दृष्टि से दक्खिनी का अध्ययन अनिवार्य है। साथ ही कन्नड भाषा के विकास-क्रम को पूर्ण रूप से जानने के लिए दक्खिनी का अध्ययन आवश्यक है। कन्नड से प्रभावित होकर दक्खिनी ने कन्नड को प्रभावित किया। कन्नड के साथ उसका अटूट संबंध है।

रीडर, हिन्दी विभाग
कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़

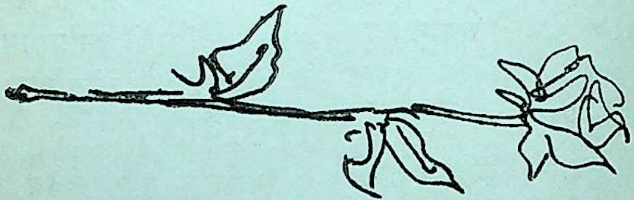

> देश के विभिन्न भागों के निवासियों के व्यवहार केलिए सर्वसुगम व्यापक तथा एकता स्थापित करने के साधन के रूप में हिन्दी का ज्ञान आवश्यक है।
>
> —डा० सी पी. रामस्वामी अय्यर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरभाष : 61378 तार : "जय हिन्दी"

केरल ज्योति

पुष्प 23
दल 9

एक प्रति—1 रु० 50 पै०
वार्षिक—15 रु०

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका
दिसंबर 1988

संपादकीय

हिन्दी पुस्तकें
हिन्दीतर भाषा भाषियों द्वारा

देशा की शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद जो महत्वपूर्ण भूमिका निभाती आ रही है वह सर्वविदित है। शिक्षा संबंधी विषयों पर किये जा रहे अनुसंधानों के परिणाम को प्रशिक्षकों, अध्यापकों एवं विद्यार्थियों तक पहुँचाने में परिषद नयी नयी योजनायें कार्यान्वित कर रही है।

हिन्दी शिक्षण को प्रभावी बनाने की दिशा में भी परिषद काफी प्रयत्न कर रही है। विविध विषयों पर विद्यालयोपयोगी पुस्तकें हिन्दी मे विधिवत् तैयार करनेवाली संस्थाओं में परिषद का मुख्य स्थान है।

परिषद के तत्वावधान में 'पढें और लिखें' योजना के अन्तर्गत केरल हिन्दी प्रचार सभा के तिरुवनन्तपुरम परिसर में पंचदिवसीय लेखकीय कार्य गोष्ठी आयोजित हुई। महान लेखकों और अनुभवी अध्यापकों की यह कार्य गोष्ठी अत्यंत सफल रही। प्रतिभागियों का स्वागत सत्कार राजभवन में कर के केरल की माननीय राज्यपाल श्रीमती रामदुलारी सिन्हा ने कार्य गोष्ठी का गौरव तो बढाया ही, साथ ही केरल के जनमानस में हिन्दी को अधिक प्रतिष्ठा दिलायी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में

शिक्षकों का दायित्व श्री. आर. वेंकटरामन	3
नेहरू का भारत और भारत के नेहरू डा० शंकरदयाल शर्मा	4
कर्तव्य निष्ठा डा० वी. गोविन्द शेनाय	9
मानव अधिकारों का सजग प्रहरी—भारत नवीन पन्त	11
कृष्ण का दुःख (कविता) प्रो० सी. गोपीनाथन पिल्लै	15
शंख बजाओ हे मनमोहन ! (कविता) श्री. एस. राम अय्यर (साई राम)	17
दक्खिनी हिन्दी और द्राविड़ भाषाएँ - कुछ प्रभाव और समान प्रवृत्तियाँ डा० एस. एन. गणेशन	20
सूफ़ी सौन्दर्य बोध डा० नूरजहाँ बेगम	26
हिन्दी गद्य के विकास में दक्खिनी का योगदान - श्री. वी. शिवराम पिल्लै	34

कार्यगोष्ठी के समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए केरल विश्वविद्यालय के उपकुलपति एवं विख्यात शिक्षाविद डा ए सुकुमारन नायर ने इस बात पर ज़ोर दिया है कि हिन्दीतर भाषा भाषी विद्यार्थियों के अतिरिक्त वाचन के लिए विशेष प्रकार की ऐसी हिन्दी पुस्तकें तैयार की जायें जो हिन्दीतर प्रान्तों की सांस्कृतिक परंपराओं पर आधारित हो। ऐसी पुस्तकें हिन्दीतर प्रान्तों के विद्यार्थियों के लिए अधिक रुचिकर होंगी। हिन्दी को भारत की सामासिक संस्कृति का प्रतिबिंब बनाने में भी इन पुस्तकों का अपना योगदान रहेगा। निश्चय ही वर्तमान परिस्थिति में, जबकि हिन्दीतर भाषाओं में लिखनेवाले हिन्दी भाषी लेखकों की संख्या बहुत कम है, इस कार्य में हिन्दीतर भाषाभाषी हिन्दी लेखकों का अधिक सहयोग लेना होगा।

आशा है राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद उक्त सुझाव पर गंभीरतापूर्वक विचार करेगी और अपनी पुस्तक निर्माण योजना में तदनुकूल परिवर्तन लाने में संकोच नहीं करेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षकों का दायित्व

श्री आर. वेंकटरामन
राष्ट्रपति

शिक्षकों को स्वयं को प्रथमत: राष्ट्रीय एकता के वाहक और इसके बाद में ही शिक्षक समझना चाहिए। प्रत्येक शिक्षक को शिक्षा ऐसे समय यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वह अपने विद्यार्थियों के मन में भारतीय एकता के प्रति आदर भावना को मजबूत करे। शिक्षकों को सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारे बच्चों के बहुमूल्य और कोमल हृदय कभी भी घृणा अथवा द्वेष की भावना से दूषित न होने पाये और उनके मन में जाति, सम्प्रदाय अथवा भाषा सम्बन्धित जड़ न जमा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

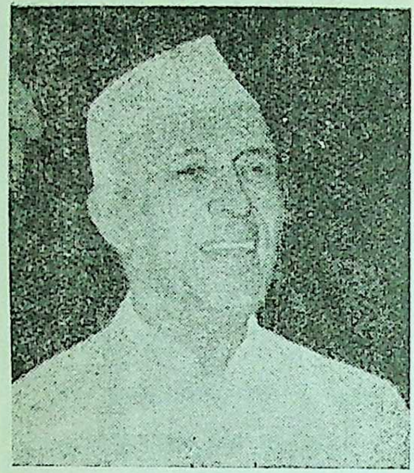

नेहरू का भारत और भारत के नेहरू

डा० शंकर दयाल शर्मा

[उपराष्ट्रपति डा० शंकर दयाल शर्मा द्वारा 14 नवम्बर को पंडित जवाहर लाल नेहरु की जन्म शताब्दी के उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए दिये गये भाषण का अंश]

इस शुभ अवसर पर जवाहर लाल नेहरू की जन्म शताब्दी मनाते समय हमें फिर से यह अहसास हो रहा है कि नेहरूजी कितने प्रभावशाली व्यक्ति थे और मानव प्रगति के इतिहास तथा भविष्य पर उनकी कितनी गहरी छाप थी। साथ ही यह भी महसूस होता है कि भारत की जनता के साथ वे कितने गहरे जुड़े थे।

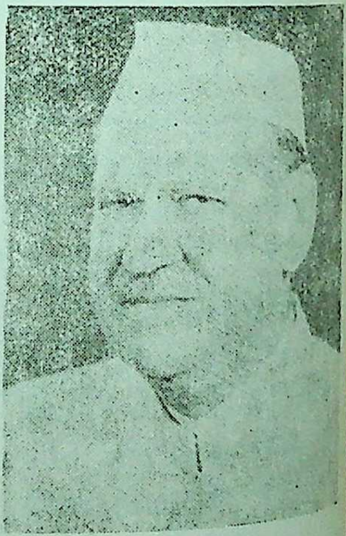

डा० शंकर दयाल शर्मा

महात्मा गांधी ने उन्हें "स्फटिक की तरह शुद्ध" और "ईश्वर का चुना हुआ माध्यम" बताया। उनके व्यक्तित्व के चारों ओर हमारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहस, करुणा और निष्ठा जैसी चारित्रिक विशेषताओं ने उनके जीवन में उन व्यावहारिक क्षमताओं को पुष्ट किया जिनके बल पर वे अपना जीवन जन कल्याण में लगा सके ।

देश की आज़ादी के लिए किए गए त्याग और बलिदान का एक छवि-मण्डल मौजूद था जिसका प्रकाश उनके संपर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचता था और उन्हें कर्म और विचार की उच्चता प्रदान करता था। जवाहर लाल नेहरू का व्यक्ति पर पड़ने वाला प्रभाव बहुत कोमल होता था पर होता बहुत गहरा था और उनके व्यक्तित्व में ऐसी चुम्बकीय मोहक शक्ति थी जो महान व्यक्तियों में ही संभव है।

नेहरू जी को जितना भारत से लगाव था उतना ही लगाव भारत को नेहरू जी से था। यदि भारत के लोग नेहरू जी को पूजते हैं तो यह याद रखना ज़रूरी है कि उनके प्रति यह गहरी आस्था एक महान व्यक्ति और देश के नेता के प्रति रही है जो निरंतर होती गई है। आस्था की यह व्यापकता और गहराई केवल उनके व्यक्तित्व के बाहरी रूप या उच्च बौद्धिक क्षमताओं के कारण नहीं थी। बापू जी की तरह देश के लोग नेहरू जी को गहरी सूझबूझ और सुदृढ़ विचारों के कारण उनका सम्मान करते थे। वे जानते थे कि नेहरू जी ऐसे व्यक्ति हैं जिनमें नैतिक मूल्य कूट-कूट कर भरे थे। साहस, करुणा और निष्ठा जैसी चारित्रिक विशेषताओं ने उनके जीवन में उन व्यावहारिक क्षमताओं को पुष्ट किया जिनके बल पर वे अपना जीवन जन कल्याण में लगा सके।

भारत के हज़ारों वर्ष के इतिहास में ऐसे लोग बहुत कम हुए हैं जिनमें मानवीय कार्यकलापों को दिशा देने की इस तरह की क्षमता मौजूद रही। भारत के लोगों ने जवाहर लाल नेहरू में इन गुणों को पहचाना। वे उनके लिए ईश्वर का महान देव बन गए। भारतीय धारणाओं के अनुरूप यहाँ के लाखों लोग सचमुच यह मानते थे कि नेहरू जी गरिमापूर्ण अतीत की एक महान आत्मा थे जो देश और मानवता की स्वतंत्रता के लिए नया चोला पहनकर अवतरित हुई। नेहरू जी तथा भारतीय जन मानस के इस अनोखे संबंध में एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे के प्रति रहस्यपूर्ण समर्पण की एक शक्ति थी जो आज तक विद्यमान है। इस संबंध की जड़ में नैतिक मूल्यों के महत्व का बोध मौजूद है।

नेहरू जी के नेतृत्व का आधुनिक दृष्टि से मूल्यांकन करते समय इस बुनियादी तत्व की अकसर उपेक्षा की जाती है। लेकिन पंडित जी प्रायः संसार को, देश को और अपनी पार्टी को इस बारे में सचेत करते रहते थे। पन्द्रह अगस्त 1958 को "ए. आई. सी. सी. इकानामिक रिव्यू" के अंक में छपी एक टिप्पणी में नहरू जी ने मानवीय प्रगति के मुख्य पहलुओं विज्ञान और टेक्नोलोजी, विभिन्न राजनीतिक प्रणालियों और विचार-धाराओं की तुलनात्मक शक्ति, हिंसा, की समस्या, व्यक्तिगत और सामाजिक उत्थान की स्थिति, गरीबी और कल्याण राज्य, नियोजित अर्थव्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण तथा हमारे दीर्घावधि और अल्पावधि उद्देश्य जैसी जटिल समस्याओं का विश्लेषण किया। यह ऐसा दस्तावेज है जिसे पढ़ने से राजनीति विज्ञान के सभी विद्यार्थी तथा राजनेता और प्रशासक लाभान्वित होंगे। उस टिप्पणी में एक महत्वपूर्ण वाक्य में जवाहर लाल ने एक ऐसे परिप्रेक्ष्य की शुरूआत की, जो इन

"केवल भौतिक प्रगति से मानव जीवन समृद्ध और सार्थक नहीं बनता। इसलिए आर्थिक विकास के साथ नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को भी विकसित करना होगा।

सभी समस्याओं को अपने में समेट लेता है। उन्होंने लिखा—"हमें जीवन के नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों को नहीं भूलना चाहिए, जो अंततः संस्कृति और सभ्यता के मूल तत्व हैं और जिन्होंने जीवन को सार्थकता प्रदान की है।"

1964 में भुवनेश्वर में अपने जीवन के अंतिम कांग्रेस अधिवेशन में आर्थिक विकास, सार्वजनिक निजी तथा सहकारी क्षेत्रों, उद्योग, कृषि मूल्य नियंत्रण विज्ञान तथा टेक्नोलोजी के विकास और अन्य संबंधित विषयों के बारे में एक प्रस्ताव पारित किया गया। पंडित जी ने स्वयं एक पैरा तैयार किया और यह कहते हुए उसे प्रस्ताव में अवश्य करने पर जोर दिया कि उसके बिना इस पूरे प्रस्ताव का उनके लिए कोई अर्थ नहीं होगा। वह पैरा इस प्रकार है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'केवल भौतिक प्रगति से मानव जीवन समृद्ध और सार्थक नहीं बनता। इसलिए आर्थिक विकास के साथ नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को भी विकसित करना होगा। इसी से ही मानव संसाधनों तथा मानव चरित का पूर्ण विकास हो सकेगा। केवल इसी आधार पर आज के ढाँचे को धीरे-धीरे ऐसे समाज का रूप दिया जाएगा जो समाजवादी होते हुए भी व्यक्ति तथा समुदाय के पूर्ण विकास के अवसर प्रदान करेगा। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की परिकल्पना ऐसे ही समाज की है, जिसमें गरीबी, बीमारी तथा अज्ञान का नाम नहीं रहेगा जिसमें किसी भी रूप में सम्पत्ति तथा अधिकारों का स्थान बहुत सीमित होगा, जिसमें सभी नागरिकों को समान अवसर मिलेगा और जिसमें नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्य व्यक्ति और समुदाय को परिपूर्ण बनाने में सहायक होंगे।''

बापू जी ने दूर दृष्टि से कहा था—'' मेरे जाने के बाद वह मेरी ही भाषा बोलेगा।'' ''जब मैं नहीं रहूँगा तो वह जानता होगा कि काम को आगे कैसे बढ़ाना है।''

जवाहर लाल नेहरू 40 वर्ष की आयु में कांग्रेस के अध्यक्ष बन गए थे। लाहौर में 1929 के उस अविस्मरणीय अधिवेशन में कांग्रेस ने स्वतंत्रता प्राप्ति को भारत का राजनीतिक लक्ष्य घोषित किया। जवाहर लाल नेहरू के अध्यक्षीय भाषण में गजब की स्पष्टता तथा प्रभावशक्ति थी जिसमें राष्ट्र को प्रभावित करने वाली सभी तपस्याओं का विश्लेषण किया गया था और संकोच था आधे मन से नहीं बल्कि ऐसे व्यक्ति के पूर्ण विश्वास से भरे समाधान प्रस्तुत किए गए थे जिसके पास विस्तृत ज्ञान और गहरी विचार-धारा है और जो उच्च विचारों की रोशनी को प्रकाश स्तंभ के रूप में प्रयोग करता है। वह भाषण 20 वर्ष बाद प्रधान मंत्री के रूप में नेहरू जी द्वारा अपनाई गई नीतियों का एक प्रकार से प्रारूप था। स्वतंत्रता के प्रारंभिक वर्षों में जिस आत्म-विश्वास तथा अनुभवपूर्ण कुशलता के साथ नई सरकार ने काम किया उसे देखकर दुनिया दंग रह गई। इसका रहस्य यही था कि नेहरू जी ने लाहौर अधिवेशन में अपनाए गए विचारों तथा नीतिगत सिद्धांतों को कार्यरूप दिया था। आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक आयामों की व्युत्पति तथा विकास के बीज-मंत्रों को उन्होने सैद्धांतिक आकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया तथा उन्हें व्यक्त किया था। इन्हीं बीजमंत्रों को बाद में प्रधान मंत्री के रूप में उन्होंने सरकार तथा समाज के लिए नीति के रूप में विकसित किया। हमारी राजनीति का संघीय स्वरूप संसदीय लोकतांत्रिक प्रणाली, सरकार के तीन अंग-विधायिका कार्यपालिका तथा न्यायपालिका, प्रशासनिक तथा सैनिक सेवाओं का गैर राजनीतिक

मुख्य रूप से उन्होंने ही भारत में लोकतत्र, समाजवाद धर्म निरपेक्षता एवं राष्ट्रवाद को एक सूत्र में पिरोने का ऐतिहासिक कार्य किया।

स्वरूप, नियोजित अर्थव्यवस्था जिसमें सार्वजनिक क्षेत्र की बुनियादी भूमिका हो, औद्योगीकरण की नीति विज्ञान तथा टेक्नोलोजी एवं परमाणु ऊर्जा का विकास समतामूलक समाज की रचना, बड़ी सिंचाई तथा बिजली परियोजनाएँ देश के युवकों के विकास तथा उनका सहयोग लेने पर बल देना, वैज्ञानिक चिंतन को बढाना, देश में सांस्कृतिक परम्पराओं और सामाजिक मान्यताओं को दृढ़ करना राष्ट्र जीवन के ये सभी परस्पर भिन्न किन्तु एक दूसरे से गहरे जुड़े हुए पहलुओं को नेहरू जी का रचनात्मक समर्थन प्राप्त हुआ। मुख्य रूप से उन्होंने ही भारत में लोकतंत्र, समाजवाद धर्मनिरपेक्षता एवं राष्ट्रवाद को एक सूत्र में पिरोने का ऐतिहासिक कार्य किया। उन्होंने राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लिए वैचारिक सामंजस्य प्रदान किया।

आपरेशन ब्लैक बोर्ड योजना वर्ष 1987–88 में आरंभ की गई थी। इस वर्ष के दौरान 1106114 लाख रुपये की केन्द्रीय सहायता 24 राज्यों और तीन केन्द्रशासित प्रदेशों को, 1703 खंडों और 313 नगरपालिका क्षेत्रों 1,13,417 प्राथमिक स्कूलों के लिए दी गई थी। आपरेशन ब्लैक बोर्ड योजना का उद्देश्य देश में चरणबद्ध तरीके से 1990 तक सभी खंडों को शामिल करना है। वर्ष 1988–89 के दौरान पश्चिम बंगाल को 768.68 लाख रुपये की कुल स्वीकृत राशि में से 384 34 लाख रुपये को पहली किस्त का 50 प्रतिशत, 20 नगरपालिका क्षेत्रों, 73 खंडों और 11,139 स्कूलों के लिए पहले ही जारी किया जा चुका है। इसी प्रकार तमिलनाडु को 498.74 लाख रुपये की कुल स्वीकृत राशि में से वर्ष 1988–89 के लिए 240.47 लाख रुपये को पहली किस्त की 50 प्रतिशत राशि जारी की गई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्तव्य-निष्ठा

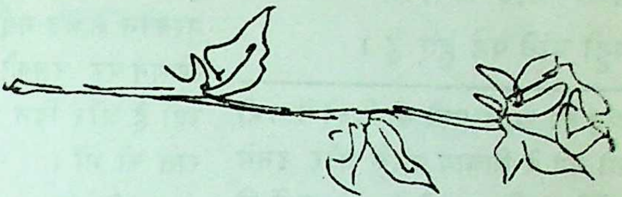

डा० वी. गोविन्द शेनाय

धक्का खाकर बुड्ढा प्लाटफार्म पर धम्म से जा गिरा। गाडी छूट गई। टुप्पय्या द्वार के पास ही अपनी जगह पर जा बैठा। टिकट-निरीक्षक था टी० टी० ई०। आधी रात को आरक्षित डिब्बे में जो कोई भी घुस आ जाय उसे बाहर करने में ही कुशल है। टुप्पय्या ने यही किया है। धक्का देकर घुसपैठ को बाहर करके

> धक्का देकर घुसपैठ को बाहर करके उसने अनुचित कुछ भी नहीं किया है; मात्र कर्तव्य को निबाहा है।

उसने अनुचित कुछ भी नहीं किया है; मात्र कर्तव्य को निबाहा है। वह कौन है? क्या है? कहाँ जा रहा है? इत्यादि से उसका कोई वास्ता

> दाईं तरफ शायिका में मुहब्बत का जोडा शराब के नशे में दीन दुनिया को भूल गया है।

ही नहीं है, न ही उसकी कोई जरूरत है। गाडी की गति तेज़ हो गई थी। हवा सर्द थी और अंधकार गाढ। टुप्पय्या ने हाथ कोट के जेबों में डाल दिये और ऐसा बैठा रहा मानों करने को अब कुछ भी नहीं रह गया है। इतने में देखा, दाईं तरफ शायिका में मुहब्बत का जोडा शराब के नशे में दीन दुनिया को भूल गया है। उसने आँखें फेर लीं। सोचा, चुप रहने में ही कुशल है। बाहर घहराते अधकार को घूरता रहा। उसे याद आया ऐसे ही एक मामले में हस्तक्षेप करने पर उसे तमाचा लगा था;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेटा, पिता तुम से मिलने स्टेशन गये थे, प्लेटफार्म पर गिर पडे। सख्त चोट लगी है। पट्टी बांधे पडे हुए हैं।

मुंह की खानी पडी थी डिब्बे में सभी सो गये थे सिवाय इनके और इनसे कोई असुविधा औरों को नहीं हो रही थी। परन्तु बुड्ढे के संबध में बात यह नहीं थी। टुप्पय्या उठ खडा हुआ और तेज़ चाल से डिब्ब के दूसरे सिरे की ओर चल दिया। गाडी आगे के स्टेशन पर रुकी। फिर क्या था! द्वार पर धक्के पर धक्के लगे जो इतने ज़ोरदार थे कि टुप्पय्या ने स्वयं द्वार खोला। एकदम पन्द्रह-बीस मुस्टंडे अंदर घुस आये। टुप्पय्या उनकी ओर बगैर कोई ध्यान दिये ही अपनी सीट की ओर चला दिया। देखा, उस पर दो मुस्टंडे आसन जमाये हुए हैं। एक ने उदारता दिखाई। कहा—आप भी बैठिए। टुप्पय्या के चेहरे पर मरी सी मुस्कान अकड गई। सोचा—अगले स्टेशन पर उसकी ड्यूटी खतम हो रही है और दिन भर छुट्टी है और रात को भी।

ड्यूटी समाप्त होने पर टुप्पय्या घर पहुँचा। द्वार पर माँ मिली, रुआंसा चेहरा, उदास, बिलकुल ही विवर्ण। पूछा बात क्या है? बोला—बेटा, पिता तुम से मिलने स्टेशन गये थे, प्लाटफार्म पर गिर पडे। सख्त चोट लगी है। पट्टी बांधे पडे हुए हैं। कहते थे—किसी ने धक्का दिया था। टुप्पय्या स्तब्ध खडा रहा।

V/13-A ओल्लूकरा,
तृश्शूर, केरल

शिक्षक का महत्व

शिक्षक राष्ट्र के वास्तविक निर्माता हैं। देश के अत्यन्त महत्वपूर्ण मानव संसाधन का विकास और युवा पीढ़ी मे विद्यमान सर्वोत्तम प्रतिभा को विकसित करना उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षक को यह उत्तर-दायित्व बड़े धैर्य, अनुशासन और आत्मविश्वास से पूरा करना चाहिए।

—श्री. राजीव गांधी
प्रधान मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानव अधिकारों का सजग प्रहरी—भारत

नवीन पन्त

स्वतंत्रता के बाद मानव अधिकारों की रक्षा में भारत की भूमिका शानदार रही है। उसने हर मंच पर मानव अधिकारों के उल्लंघन का दृढ़ता से विरोध किया है और विश्व में मानव अधिकारों के पक्ष में प्रबल जनमत तैयार किया है। भारत ने देश में अति सावधानी और निष्ठा से मानव अधिकारों की रक्षा की है और विदेशों में हर किस्म के उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद और शोषण का विरोध किया है। 10 दिसम्बर 1988 को विश्व भर में मानव अधिकार दिवस धूमधाम से मनाया जाएगा। प्रस्तुत है इस अवसर पर एक विवेचनात्मक समीक्षा।

धरती पर जन्म लेने के साथ ही प्रत्येक मनुष्य कुछ अधिकारों का स्वामी हो जाता है। इन अधिकारों को प्राकृतिक जन्मजात और नैसर्गिक अधिकार भी कहते हैं। गरिमा और सम्मान के साथ मनुष्य जीवन बिताने के लिए इन अधिकारों का होना जरूरी है। इन अधिकारों का विकास होने में हजारों वर्ष लगे। सबसे पहले मनुष्य को जीवन का अधिकार मिला। अनेक पशु अपनी सन्तान की जान भी ले लेते हैं। दूसरे पशु भी अन्य पशुओं की जान लेने में कोई हिचकिचाहट नहीं दिखाते। लेकिन सामान्य परिस्थितियों में मनुष्य मनुष्य की जान नहीं लेता।

जीवन के अधिकार के बाद मनुष्य समाज में समानता का अधिकार विकसित हुआ। फ्रान्स के महान दार्शनिक रूसो ने कहा था कि मनुष्य स्वतंत्र पैदा होता है लेकिन वह हर जगह बेडियों में दिखाई देता है। रूसो जैसे दार्शनिकों के प्रभाव से फ्रान्स में क्रांति हुई। इस क्रांति के मूल मंत्र थे, "समानता,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुष्य स्वतंत्र पैदा होता है लेकिन वह हर जगह बेडियों में दिखाई देता है।

स्वतंत्रता और जन भ्रातृभाव।"
फ्रान्स की राज्य क्रान्ति ने विश्व भर में स्वतंत्रता सेनानियों को वैचारिक प्रेरणा प्रदान की।

फ्रान्स की क्रान्ति ने 18वीं शताब्दी में समानता का सिद्धान्त प्रतिपादित किया। समानता के सिद्धान्त का अर्थ है, सभी मनुष्य बराबर हैं, मानव समाज में ऊँच-नीच नहीं है, सभी मनुष्यों को समाज में बराबर के अधिकार हैं और अभिजात वर्ग के लोगों और साधारण जनता में कोई अन्तर नहीं है। वास्तव में समानता के सिद्धान्त ने ही लोकतंत्र का मार्ग प्रशस्त किया।

उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में विश्व के अधिकांश देशों में लोकतंत्र की स्थापना मानव सभ्यता की सबसे बडी उपलब्धि है। लोकतंत्र की स्थापना से मानव अधिकारों में जबरदस्त वृद्धि हुई। समानता के सिद्धान्त की मान्यता और लोकतंत्र की स्थापना के साथ सम्यक न्याय, कानून के सामने बराबरी, विशेषाधिकारों की समाप्ति, शोषण की समाप्ति और भेदभावों की समाप्ति जैसे विचार मजबूत हुए। धीरे-धीरे इन विचारों और आदर्शों को सभ्य समाज के नियमों के रूप में मान लिया गया।

द्वितीय महायुद्ध के दौरान कुछ देशों ने इन नियमों का खुलमखुल्ला उल्लंघन किया। महायुद्ध से पहले नाज़ी जर्मनी कुछ जातियों की श्रेष्ठता का सिद्धान्त प्रतिपादित किया। केवल यहूदी होने के कारण युद्ध काल में लाखों लोगों को यातना शिविरों और गैस चैम्बरों में डाल दिया गया। युद्ध के दौरान अन्य अमानुषिक अत्याचार भी किए गए।

घोषणा-पत्र की शुरूआत

युद्ध के बाद इस तरह की घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए संयुक्त राष्ट्र ने मानव अधिकारों का घोषणा-पत्र तैयार किया। 10 दिसम्बर, 1948 को इसे विधिवत स्वीकार किया गया। यह घोषणा विश्व में स्वतंत्रता, न्याय और शांति की नींव रखने के लिए की गई थी। यह अपेक्षा की गई कि विश्व के सभी राष्ट्र इन सामान्य मानकों को स्वीकार कर लेंगे। और अपने देश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कानूनों में इनकी व्यवस्था करने के अतिरिक्त अपने देश के नागरिकों में इनका प्रचलन करेंगे।

मानव अधिकारों को मोटे तौर पर दो वर्गों में बाँटा जा सकता है। पहले वर्ग में आते हैं राजनीतिक, निजी और नागरिक अधिकार, दूसरे वर्ग में आते हैं आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकार।

सामाजिक प्रगति, बेहतर जीवन-स्तर और स्वतन्त्रता में विस्तार के लिए ये सभी अधिकार आवश्यक हैं। अतः यह जरूरी है कि कानून के शासन के जरिए इन अधिकारों और जनता की रक्षा की जाए।

सामाजिक प्रगति, बेहतर जीवन-स्तर और स्वतंत्रता में विस्तार के लिए ये सभी अधिकार आवश्यक है। अतः यह जरूरी है कि कानून के शासन के जरिए इन अधिकारों और जनता की रक्षा की जाए। जहाँ मानव अधिकारों की घोषणा में बोलने और विश्वास की स्वतंत्रता और भय एवं अभाव से मुक्ति के सामान्य सिद्धांतों की चर्चा है नागरिक एवं राजनीतिक अधिकार और आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विषयों पर अन्तर्राष्ट्रीय समझौतों में वह ढाँचा प्रस्तुत किया गया है जिस पर विभिन्न देशों को कार्रवाई करनी है।

भारतीय संविधान 26 जनवरी, 1950 को लागू हुआ। लेकिन हमारे संविधान निर्माता संयुक्त राष्ट्र की स्थापना, मानव अधिकारों की घोषणा आदि महत्वपूर्ण और ज्वलन्त प्रश्नों के प्रति बेखबर नहीं थे। भारत का स्वतंत्रता संग्राम महात्मा गांधी के नेतृत्व में सत्य और अहिंसा के सिद्धान्तों के जरिए पूर्णाहुति की ओर पहुँचा। यही कारण है कि स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में ही हमारा देश कुछ नीतियों, सिद्धांतों के प्रति वचनबद्ध हो गया था।

संविधान में मानव अधिकारो की रक्षा

मानव अधिकारों संबंधी अनेक सिद्धान्त हमारे संविधान में ज्यों के त्यों स्थान पाते हैं। संविधान की प्रस्तावना में कहा गया है कि भारत की जनता ने समस्त नागरिकों को "सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार अभिव्यक्ति,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वास धर्म और उपासना की स्वतत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त करने के लिए तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता सुनिश्चित करने वाली बन्धुता बढ़ाने के लिए" संविधान को स्वीकार करती है।

भारतीय संविधान में प्रत्येक नागरिक को कुछ मूल अधिकार दिए गए हैं। इनमें विधि के समक्ष समता (समानता), धर्म तथा जाति, लिग या जन्म के आधार पर भेदभाव का निषेध है। इनमें राज्य सेवाओं में अवसर की समानता, छूआछून, बेगार का अन्त, बोलने और विचार प्रकट करने की स्वतंत्रता, शांतिपूर्वक एकत्र होने, संघ बनाने, भारत में कहीं भी आने, रहने और बसने की स्वतंत्रता, सम्पत्ति अर्पित करने और उसे बेचने का अधिकार, कोई भी व्यवसाय, या कारोबार करने का अधिकार, बन्दी बनाए जाने के बाद न्यायालय के सामने पेश किए जाने का अधिकार प्रमुख हैं।

भारतीय संविधान के अन्तर्गत कोई व्यक्ति विधि के अधिकार के बिना अपनी संपत्ति से वंचित नहीं किया जा सकता। किसी व्यक्ति को नया कानून बनाकर पिछले अपराध

संविधान में इस बात की भी स्पष्ट व्यवस्था है कि मूल अधिकारों का उल्लंघन करने वाले कानून अवैध हैं और राज्य ऐसे कानून नहीं बनाएगा जो मूल अधिकारों को कमजोर या समाप्त करें।

के लिए दण्डित नहीं किया जा सकता और किसी भी व्यक्ति को अपने विरुद्ध गवाही देने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता। सभी नागरिकों को अपनी मन मर्जी का धर्म मानने और अपने अन्तःकरण की आवाज पर चलने का अधिकार दिया गया है।

भारत में मूल अधिकारों के उल्लंघन के विरुद्ध उच्चतम न्यायालय का दरवाजा खटखटाया जा सकता है। मूल अधिकारों के उल्लंघन के उच्चतम न्यायालय में आने का अधिकार भी मूल अधिकार है। संविधान में इस बात की भी स्पष्ट व्यवस्था है कि मूल अधिकारों का उल्लंघन करने वाले कानून अवैध हैं और राज्य ऐसे कानून नहीं बनाएगा जो मूल अधिकारों को कमजोर या समाप्त करें। अगर इस तरह के कानून बनाएँ जाते हैं तो वे अवैध और शून्य माने जाएँगे।

(अपूर्ण)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविता

कृष्ण का दुःख

प्रो० सी. गोपीनाथन पिल्लै

कृष्ण एक मज़दूर है
हर प्रकार की मज़दूरी करता है ।
पर जीना उस केलिए वेदना का नाम है ।
वह पढा-लिखा नहीं है
इसलिए मेहनत करना बुरा न मानता है ।
ज्ञान का विरोध भी न करता है ।
शाम को अगर कहीं भीड़ जमा होती है
विश्राम के विचार से बीच जा बैठता है ।
साहित्यिकों का भाषण ध्यान से सुनता है ।
बात जानता नहीं,
भाषा का सुख खींच ले जाता है ।
एक बात रोज़ उसे सताती है—
क्यों राजनीतिज्ञ विरोधियों को गाली मात्र देते हैं
दुःशासन की तरह शब्द-करों से उनकी बीबियों का
वस्त्राक्षेप करते हैं ।
हर काम केलिए शिक्षा अपेक्षित है ।
कॉलिज में पढ़ कर उपाधि लेकर कोई अध्यापक बनता है
एम. बी. बी. एस उपाधि लेकर कोई डाक्टरी का काम करता है ।
पुल और मकान बनानेवाला इंजनीयर भी पढ़ कर ही आता है ।
परन्तु
भावी शासकों को गाली सुनाने का अभ्यास ही चाहिए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह कहाँ का न्याय है ?
क्या प्रजातंत्र का मंत्र है ?
या किस्सा कुरसी का तंत्र है ।
स्वतंत्रता के बाद वर्ष बीते चालीस
क्या बेकारी की समस्या हल हुई ?
क्या आबादी की समस्या हल हुई ?
क्या लोग भूखों न मरते हैं ?
क्या मानव को मान-अभिमान बेचकर जीना पडता है न ?

कृष्ण शून्यता की ओर देखता है
दूध और मधु बहाने का वादा रोज़ सुनता है
कितनी बार उस ने यह राग सुना है ।
वह कभी कभी सोचता ?
क्यों मुझे क्रोध नहीं आता ?
क्यों मेरा रक्त खौलता नहीं
क्यों मैं इसे कोरा झूठ कह नहीं पाता ?
क्या मैं जी कर भी मर चुका हूँ ।
हे ईश्वर ! तुम्हारे सिवा और किस का नाम लूँ ?
तू न होता तो कब के शून्य हो जाता
तू सब सुन कर भी अनसुनी कर देता है
सचमुच सुनता तो ठीक उत्तर भी देता ।
मौन की उपासना करने से तेरे पास
उपासकों की भीड़ सदा बनी रहती है ।

★

श्रीनारायण कालेज
कोल्लम, केरल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शंख बजाओ हे मनमोहन !

श्री. एस. राम अय्यर (साई राम)

हे मनमोहन ! हे जनरंजन !
जिस भारत में अवतरित
तुमने धर्मस्थापना की थी,
सत्य धर्म औ प्रेम शांति का
अलौकिक संदेश फैलाया था
आज उसी भारत को
हाय ! क्या ही दशा हो गयी है !

x x x

भारत जो पुण्यभूमि ठहरी
धनधान की खान भरी
उसकी ख्याति दुनिया भर फैली
जग की नज़रें उसपर आ टपकीं ।
देवगण तक लालायित होकर
जहाँ अपना जन्म ले लिया था
वहाँ लालची मनुजों का क्या कहना ?
एक एक कर
परबत की घाटी पार कर या
समुंदर की लहरें लांघकर
तुर्की आये परंगी आये
विदेशी आये — जो भी आये
उन सबका
खूब यहाँ सादर सत्कार हुआ ।
कितने शाह-बादशाह हुए
किन किनका शासन हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन सबका इतिहास ही साक्षी है।
आखिर बरसों बीती गुलामी से
हम बड़ भाग से आज़ाद हुए,
हमें स्वराज्य मिला
पर चालीस बरस बीतने पर भी
सुराज्य अब तक बदा नहीं !
इने गिने जो नेता थे
अब नेताओं की कमी नहीं
गिनती उनकी बढ़ती गयी
पर मूल्य घटता ही रहा।
पार्टियाँ जो एकाध थीं
अब एक नहीं अनेक हैं
'ए' से 'इसड़' तक
पार्टियों की भरमार है।
चीजें महँगी बिकती हैं
रोटी-कपडे-काम-धाम को
जनसाधारण तरसते हैं
जनजीवन अति दुष्कर है
अति दारुण है
आगे जीना बिलकुल मुशकिल है।
राज में जहँ देखो अराज ही अराज है।
—सत्य के बदले असत्य
—धर्म के अधर्म
—शांति के अशांति
प्रति दिन बढ़ता रहता है
नाता-रिश्ता प्रेम भाव
छोड़ सब
आपस में लड़ते-भिड़ते हैं

—कहीं मार-पीट होती है
– कहीं लूट मार होती है
—भोले-भाले बालकों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुले आम
हत्याकांड होता है।
पूजनीय नारी मणियों का
मानभंग भी होता है
पुलिस यह सब देख
कठ पुतली-सी खडी रहती है।
कोई अपना फर्ज न निभाते
अपनी धुन में मस्त रहते हैं
रक्षक भक्षक है निकला

x x x

उन दिनों मानव पर दानव का
आक्रमण हुआ तो
तुम अवतार लेकर आये थे
आज मानव पर दानव नहीं
मानव ही दानव बन पडे
अनाचार करता है
अत्याचार करता है ॥

x x x

हे करुणा निधान! दीनों के नाथ
आज तुम्हीं हमारा एकमात्र आधार है
मुरलि बजाने वाले मोहन ?
अब मुरलीवादन का समय नहीं
उठाकर पांचजन्य करतल में
शंख बजाओ भम भम भम
गूँज उठे शंख काहल जगतल में
पंच भूत तक थर थर काँपे
उथल पुथल मच जाये ! !
दुष्ट जनों का सर्वनाश हो ! !
जनजागरण हो जगकल्याण
मंगलमय हो जगजीवन
शंख बजाओ रे मनमोहन
हे जगमोहन हे जनरंजन ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्खिनी हिन्दी और द्राविड़ भाषाएँ—कुछ प्रभाव और समान प्रवृत्तियाँ

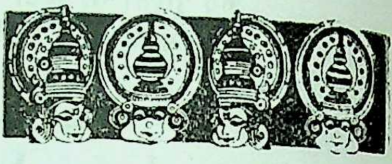

डॉ एस. एन. गणेशन
हिन्दी विभागाध्यक्ष, मद्रास विश्वविद्यालय

(22 से 24 जनवरी 1988 तक को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सहयोग से केरल विश्वविद्यालय द्वारा तिरुवनन्तपुरम में आयोजित संगोष्ठी में प्रस्तुत प्रपत्र)

1. यद्यपि विविध कालों में 'दक्खिन' शब्द का प्रयोग विभिन्न प्रदेशों केलिए होता था तो भी सामान्यत: विन्ध्याचल से दक्षिण में मुग़लों द्वारा शासित एवं विदर्भ और खानदेश के अतिरिक्त उस समय के गोलकुण्डा और बीजापुर राज्य के अन्तर्गत प्रदेशों को दक्खिन माना जा सकता है।[1] बीजापुर और गोलकुण्डा के मुसलमान शासक, जो औरंगजेब की विजय के पहले शासन करते थे, अपने को 'दक्खिन के शासक' मानते थे। मुख्यत: इन स्थानों को केन्द्र बनाकर जो भाषा विकसित हुई वही दक्खिनी हिन्दी या दक्खिनी उर्दू है। प्राप्य सामग्रियों के आधार पर इसकी कई शैलियाँ मानी जा सकती हैं जिनपर हिन्दी और उर्दू के अतिरिक्त ब्रज आदि बोलियों (या भाषाओं) का प्रभाव पड़ा है। तेलुगु और कन्नड़ के सम्पर्क

> तेलुगु और कन्नड़ के सम्पर्क के साथ विकसित शैलियों में कुछ द्राविड़ प्रभाव भी द्रष्टव्य हैं।

1. श्रीराम शर्मा, 1964 पृ. 6

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के साथ विकसित शैलियां में कुछ द्राविड़ प्रभाव भी द्रष्टव्य हैं।

2 ध्वनि एवं रूप के स्तरों पर द्राविड़ भाषाओं की कुछ प्रवृत्तियाँ दक्खिनी में मिलती हैं। इनमें कुछ व्यापक प्रवृत्तियाँ हैं, तो कुछ सीमित, याने सामान्य रूप में संपूर्ण भाषा को प्रभावित करने वाली नहीं है।

1. ध्वनि परक प्रवृत्तियाँ

1 (1) ह्रस्व ऍ (e) ओ (o) का प्रयोग

हिन्दी और उर्दू में ह्रस्व ऍ और ओ नहीं है, पर दक्खिनी में हैं।

अब प्रश्न यह है कि क्या प्राकृत की जिस प्रवृत्ति को हिन्दी और उर्दू ने स्वीकृत नहीं किया, उसको दक्खिनी ने स्वीकृत कर सुरक्षित रखा, या उसने द्राविड़ भाषाओं के सम्पर्क के कारण स्वतंत्र रूप में ह्रस्व 'ऍ' और 'ओ' का विकास किया।

किन्तु यह कहना कठिन है कि यह मात्र दक्खिनी की प्रवृत्ति है। प्राकृत भाषाओं में भी यह प्रवृत्ति मिलती है[1] जो कई अपभ्रंशों तक मैं सुरक्षित रही।[2] अब प्रश्न यह है कि क्या प्राकृत की जिस प्रवृत्ति को हिन्दी और उर्दू ने स्वीकृत नहीं किया, उसको दक्खिनी ने स्वीकृत कर सुरक्षित रखा, या उसको द्राविड़ भाषाओं के सम्पर्क के कारण स्वतंत्र रूप में ह्रस्व 'ऍ' और 'ओ' का विकास किया। अगर प्राकृत—अपभ्रंश से आया हो, तब भी यह संभावना है कि प्राकृत में भी ऐसे कई ध्वनि परिवर्तन द्राविड़ भाषाओं के सम्पर्क के कारण हुआ।[3]

1 (2) मध्यम और अन्तिम 'अ' उच्चरित

हिन्दी और उर्दू में शब्दान्त के 'अ' कार का और शब्द में बीच मैं कुछ स्थानों के 'अ' कार का उच्चारण नहीं होता। श्रीराम शर्मा ने कहा है दक्खिनी में इसका उच्चारण होता है। लेकिन इसे

1. भोलानाथ तिवारी—हिन्दी भाषा, इलाहाबाद
2. द्रष्टव्य, पुष्पदन्त, णायकुमार चरिउ, संपा. हीरालाल जैन 1972—भूमिका पृ. XXX
3. गणेशन एस. एन, 1985 Phonological Pattern of Dravidian and Phonological changes in MIA Languages—Paper presented in XVX. All India Conference of Linguists.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

> 'ऐ' और 'औ' के उच्चारण में भी प्रादेशिक भेद द्रष्टव्य है। कुछ विद्वानों ने इनके उच्चारणों को 'अइ' और 'अव' की तरह माना है। यह ठीक है तो इसे द्राविड़ प्रभाव समझा जा सकता है।

दक्खिनी की सामान्य प्रवृत्ति नहीं मान सकते। संभव है, कुछ शब्दों में जैसे 'तगबगी' (शर्मा पृ. ३०) आदि में विशेष कर द्राविड़—भाषियों के उच्चारण में 'अ' कार का लोप न होता हो।

1 (3) 'ऐ' और 'औ' का उच्चारण

'ऐ' और 'औ' के उच्चारण में प्रादेशिक भेद द्रष्टव्य है। कुछ विद्वानों ने[1] इनके उच्चारणों को 'अइ' और 'अव' की तरह माना है। यह ठीक है तो इसे द्राविड़ प्रभाव समझा जा सकता है। संस्कृत में ये ध्वनियाँ 'अई' और 'अव' के रूप में संयुक्त ध्वनियाँ ही हैं। परवर्ती काल में ही—अपभ्रंश और मुस्लीम सपर्क काल में ही ये असंयुक्त बनीं। हिन्दी-उर्दू में असंयुक्त ही हैं। अगर दक्खिनी में ये संयुक्त ध्वनियाँ हैं (अई, अइ) तो स्पष्टत: तेलुगु-कन्नड का प्रभाव है। द्राविड़ भाषाओं के निकटस्थ दक्खिनियों में ही इनका प्रयोग मिलता है। खादिर मोहिदीन[2] ने माना है कि दक्खिनी उर्दू में संयुक्त स्वर नहीं है!

1 (4) महाप्राण व्यंजनों का अल्प-प्राणीकरण

कहीं कहीं हिन्दी की महाप्राण ध्वनियों का अल्प प्राणीकरण भी दक्खिनी में मिलता है!

जैसे—

खांब < स्कंभ
खांद्यां < स्कन्ध
छितड़ा < चिथड़ा
भवूती < भभूत < विभूति[3]
धनक < धनख < धनुष;
रिद < रिद्धि, सिद < सिद्धि[4]
देक < देख[5]

यहाँ दो तीन बातें उल्लेखनीय हैं।

1. श्रीराम शर्मा, 1964 पृ. 33
2. खादिर मोहिदीन एस. 1980, पृष्ठ. 27
3. श्रीराम शर्मा, 1964, पृ. 121
4. ,, ,, पृ. 51
5. खादिर मोहिदीन, 1920, पृ. 110

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(1) यह प्रवृत्ति प्राकृतों के कुछ रूपों में भी मिलती है ।[1] जैसे वद < वध, मेग < मेघ आदि । पर वहाँ भी इसका कारण द्राविड़ प्रभाव हो सकता है । संभव है कि द्राविड़ भाषियों द्वारा बोलते समय प्राकृतों और दक्खिनी में स्वतंत्र रूप में यह परिवर्तन हुआ है । (2) दूसरी ओर यह भी देखा जाता है कि यह

संभव है कि द्राविड़ भाषियों द्वारा बोलते समय प्राकृतों और दक्खिनी में स्वतेग रूप में यह परिवर्तन हुआ है ।

परिवर्तन पूर्ण या सर्वांगीण नहीं है । सभी महाप्राण व्यंजन इस तरह प्रभावित नहीं हुए हैं, जो इस बात को पुष्ट करता है, कि कुछ शब्दों में अन्य भाषा-प्रभाव के कारण यह अल्प प्राणीकरण हुआ है, (3) तीसरी बात यह है कि कहीं कहीं इसकी उलटी प्रवृत्ति याने अल्पप्राण ध्वनियों का महाप्राणीकरण भी हुआ है, जिसे श्रीराम शर्मा ने दिखाया हैं ।[2]

[illegible] > [illegible]

उलटा > उल्ठा

पलटना > पल्ठना

इससे स्पष्ट है कि ये परिवर्तन एक ही दिशा के या पूर्णतः व्यवस्थित नहीं हैं । एक प्रकार से उलझन की दशा दिखायी पड़ती है, जो प्रायः अन्य भाषा-संपर्क की दशा में ही होती है ।

1 (5) इ > एँ; उ > ओ

खादिर मोहिदीन ने बोलचाल की दक्खिनी में कुछ शब्द दिये हैं जिनमें 'इ' के स्थान पर 'एँ' और 'उ' के स्थान पर 'ओ' मिलते हैं ।

इतना > एँत्ता

कितना > केत्ता

उतना > ओत्ता

यह तमिल और मलयालम में (संभवतः तेलुगु, कन्नड में भी) दीखने वाली एक उच्चारण प्रवृत्ति के समान ही है ।

इला (ila) > एँला (ela) = पत्ता

इरप्पाळि > एँरप्पाळि = भिखारी

उलक्का > ओलक्का = मूसल

उण्डु > ओण्डु = है

---

1. गणेशन् एस. सन, 1925
2. श्रीराम शर्मा, 1964, पृ. 121

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्खिनी में सामान्यतः 'ने' प्रत्यय का प्रयोग नहीं होता और क्रिया कर्ता के अनुसार ही होती है।

यह परिवर्तन भी सार्वजनिक और पूर्ण नहीं है। दक्खिनी एवं द्राविड़ भाषाओं में सीमित रूप में मिलता है। अतः इसे दोनों भाषाओं में एक समान्तर प्रवृत्ति मान सकते हैं।

2. व्याकरणिक रूप

दक्खिनी के कुछ व्याकरणिक रूपों पर भी द्राविड़ भाषाओं के स्वरूप का आरोप हुआ दीखता है।

2 (1) 'ने' प्रत्यय का प्रयोग न होना

दक्खिनी में सामान्यतः 'ने' प्रत्यय का प्रयोग नहीं होता, और क्रिया कर्ता के अनुसार ही होती है। श्रीराम शर्मा ने दिखाया है कि दक्खिनी के कुछ लेखकों ने 'नें' का प्रयोग किया है[1] और ऐसा प्रयोग वर्तमान काल के वाक्यों में भी है— जैसे 'उन्नें नईं देता' (पृ. 185) भविष्यत् के कुछ वाक्यों में भी 'ने' द्रष्टव्य हैं।—तेरी सरथा ने लेंगी बलैया (पृ. 186)। पर इनको अपवाद रूप में ही लेना पड़ेगा। ऐसे वाक्यों में भी क्रिया कर्त्तानुसार ही है।

अब समस्या यह है कि 'ने' रहित यह वाक्य-रचना-पद्धति दक्खिनी में स्वतंत्र रूप में विकसित हुई है, या द्राविड़ भाषा प्रभाव से। हिन्दी में 'ने' प्रत्यय के विकास के पहले के प्राकृत अपभ्रंश रूपों को दक्खिनी ने सुरक्षित रखा है, इसकी संभावना कम दीखती है, पर यह एकदम असंभव नहीं है। जो भी हो, यह प्रयोग द्रविड भाषा की वाक्य-रचना-प्रणाली के समान्तर है।

मैं पियूँ। — मैं ने पिया।
तू काट्या — तू ने काटा
उन खोल्या — उसने खोला

(2) 2 कृदन्त विशेषण

हिन्दी और उर्दू में विशेषणों के रूप में कृदन्तों का प्रयोग साधारण है।

आता हुआ आदमी।
भूँकता कुत्ता।
निकली (हुई) गाडी।

अब समस्या यह है कि 'ने' रहित यह वाक्य रचना पद्धति दक्खिनी में स्वतंत्र रूप में विकसित हुई है, या द्रविड भाषा प्रभाव से।

1. श्रीराम शर्मा, 1964, पृ. 184-85

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्खिनी में ऐसे कृदन्तों के साथ सार्वनामिक शब्द 'सो' जोड़कर संज्ञा रूप में भी प्रयुक्त किये जाते हैं। जैसे :—

आता — सो 'जो आता है वह'
आती — सो 'जो आती है वह'
आते — सो 'जो आते हैं वे'
आया — सो 'जो आया वह'
आयी — सो 'जो आयी वह'
आये — सो 'जो आये वे।

इस तरह के प्रयोग मानक हिन्दी में नही होते। पर द्राविड भाषाओं में कृदन्तों के साथ सार्वनामिक प्रत्यय जोड़कर संज्ञा शब्द बनाये जाते हैं।——

त. वरुकिरवन् (पु) म. वरुन्नवन्
वरुकिरवळ् (स्त्री) वरुन्नवळ्
वरुकिरवरकळ् व वरुन्नवर
वन्तवन् (पु) म. वन्नवन्
वन्तवळ् (स्त्री) वन्नवळ् आदि

दक्खिनी के प्रयोग इन द्राविड़ प्रयोगों के समान्तर हैं, पर यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता

दक्खिनी के विश्लेषण में एक बड़ी समस्या यह है कि उसकी भी अनेक शैलियाँ होती हैं, जिनमें संरचना की एकरूपता नहीं है।

ऐसे प्रयोगों का कारण द्राविड प्रभाव में संभव है, परोक्ष रूप में द्राविड संरचना पद्धति का आरोप हुआ हो।

3. उपसंहार :— उपर्युक्त सभी प्रयोग दक्खिनी में सीमित रूप में ही मिलते हैं। दक्खिनी के विश्लेषण में एक बड़ी समस्या यह है कि उसकी भी अनेक शैलियाँ होती हैं, जिनमें संरचना की एकरूपता नहीं है। कोई ध्वनि-सम्बन्धी या व्याकरण-सम्बन्धी प्रवृत्ति सर्वांगीण नहीं हो तो इससे यहीं अनुमान करना पड़ता है कि वह उस भाषा की मूल प्रवृत्ति नहीं है. अन्य भाषा के प्रभाव या सम्पर्क से आयी प्रवृत्ति होगी। इसी आधार पर दक्खिनी के उपर्युक्त प्रवृत्तियों को द्राविड़ प्रभाव से उत्पन्न माना जाता है। ●

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :—

खादिर मोहिदीन : 1980 : दक्खनी उर्दू, अण्णमलै विश्वविद्यालय, अण्णमलै नगर

गणेशन, एस एन ; 1985 : Phonological Pattern of Dravidian and Phonological changes in MIA Languages, Paper presented in 14th All India conference of Linguists, Nagpur.

पुष्पदत्त : णायकुमार चरिउ, संपा, हीरालाल जैन : 1972 : भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।

भोलानाथ त्रिपाठी : हिन्दी भाषा, किताब महल, प्रयाग।

वररुचि : प्राकृत प्रकाश, संपा, जगन्नाथ शास्त्री होशिंगा, 1982 : चौखंबा संस्कृत संस्थान, काशी।

श्रीराम शर्मा : 1964 : दक्खिनी हिन्दी का उद्भव और विकास, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूफ़ी सौन्दर्यबोध
(दक्खिनी हिन्दी के सूफी काव्य के संदर्भ में)

डॉ० नूरजहाँ बेगम
एम. ए. (हिन्दी), एम. ए. (संस्कृत) पी-एच. डी.
हिन्दी विभाग हैदराबाद वि. वि-500 134

[22 से 24 जनवरी 1988 तक विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सहयोग से केरल विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित संगोष्ठी में प्रस्तुत प्रपत्र]

विद्वानों की राय है कि बाह्य सौन्दर्य की कोई निश्चित परिभाषा नहीं की जा सकती। यों समय समय पर सभी सुन्दर लगते हैं, कोई रूप कुरूप नहीं होता, पर जिसकी जिधर रुचि हो उसके लिए वही सुन्दर है। यह भी सत्य है कि मानव निसर्गत: सौन्दर्यप्रेमी है। अत: सौन्दर्य से तात्पर्य समत्व और पूर्णत्व से है। मानव के समस्त प्रयत्नो के मूल में सुन्दर और पूर्ण होने का लक्ष्य है। परम सौन्दर्य रूप ईश्वर ही है। अत: विश्व में एक मात्र वही पूर्ण है। अत वह मानव का काम्य आदर्श है। उस पूर्णता को पाने के लिए मानव ईश्वर में अनुरक्त होता है। वह ईश्वर के साक्षात्कार का अभिलाषा करता है। प्लेटो ने बहुत पहले ही इस संबंध में कहा था—'सौन्दर्य किसी निश्चित नैतिकता या किसी सत्रोध-रूपक से अलग किसी रहस्यमय सादृश्य से शिव और सत्य का पोषक होता है, जिसके माध्यम से मनुष्य पूर्णता के सोपान पार करता हुआ आनंदमय अंतदर्शन के बिन्दु पर पहुँच जाता है और स्वयं अपनी स्थिति में तथा अपने प्रतिवेशियों के साथ विश्रांति का अनुभव करता है क्योंकि वह दृश्य जगत के साथ एकात्म्य हो जाता है। कांट भी उदात्त और नैसर्गिक सौंदर्य के प्रति सवेदन-शीलता व नैतिक विचारों की ग्रहण-शीलता की ओर संकेत करते हैं। वस्तुत: 18वीं और 19 वीं शताब्दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के दार्शनिको ने सौन्दर्य की आध्यात्मिकता के सिद्धान्त को पल्लवित करने का प्रयत्न किया। प्लेटो ने तो यहाँ तक कहा कि सौन्दर्य सृष्टि का मूल तत्व है और इसका संधान करना ही तत्वद्रष्टा का मूल लक्ष्य है। वह सत् का पर्याय है और श्रेयस से अभिन्न है। सौन्दर्य और प्रेम एक ही तत्व के दो वास्तविक पक्ष हैं। सृष्टि में ईश्वरीय सौन्दर्य को मानते हुए कलावादी हीगेल उसकी पूर्णता का प्रकथन कथाओं में मानते हैं। अत: इतना स्पष्ट है कि सौन्दर्य-सृष्टि में परम विभु की अभिव्यक्ति है। दक्खिनी हिन्दी के कवियों ने ईश्वर को प्रकाश रूप कहा है। गुलशने इश्क में नुसरती ने कहा है—

तेरा नूर है तूं व दीपे नयन।
इसी नूर का सबमें झलकार है॥
x x x
तेरे नूर का शाला हर घर अछे।
गुपुत तूं च होंर तूं च परगट अछे॥

रूप सौन्दर्य वर्णन में सूफी कवियों ने परमात्मा के जमाल और जलाल का उद्घाटन किया है। इब्नुल अरबी ने कहा है — प्रेम का मूल कारण सौन्दर्य है, परमात्मा सर्वाधिक सौन्दर्यसम्पन्न है और सौन्दर्य की अनिवार्य प्रभूति है कि वह प्रेम किये जाने के लिए अपने को प्रकट करे।

इश्क हकीकी अर्थात् अलौकिक प्रणयानुभूति को लौकिक प्रणयानुभूति के माध्यम से स्पष्ट करने में कठिनाई होता है। अत: इश्क मजाजी (लौकिक प्रेम) वाले प्रतीकों के माध्यम से सूफी कवियों ने इश्क हकीकी (अलौकिक प्रेम) की ओर इंगित किया।

एक हदीस में भी उल्लेख है - "कुंतो मजन मख फियन फलह बबतो अन ओ रफा फखुलमुतल खतम।" अर्थात मैं एक छिपा हुआ खजाना था मेरी चाह थी कि मुझे सब लोग जानें। अत: मैंनें मखलूक (सृष्टि) की रचना की। यहीं से इश्क हकीकी (सौंदर्य) की धारणा पुष्ट होती है। इश्क हकीकी अर्थात् अलौकिक प्रणयानुभूति को लौकिक प्रणयानुभूति के माध्यम से स्पष्ट करने में कठिनाई होती है। अत: इश्क मजाजी (लौकिक प्रेम) वाले प्रतीकों के माध्यम से सूफी कवियों ने इश्क हकीकी (अलौकिक प्रेम) की ओर इंगित किया। गुलशने इश्क में नुसरती का कथन है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मजाज़ी में कूँते तो चुपसर गँवाए। ककीकी पै दौड़े ता मंजिल कूँ पाए।

यूँ तो किसी भी भक्ति भावना में प्रतीकों की प्रतिष्ठा होती है किन्तु तसव्वुफ में उन का पूरा प्रसार है। उत्तरी हिन्दी के सूफी प्रेमाख्यानों में प्रतीकों के मूल में भारतीय और ईरानी दोनों प्रभाव हैं पर दक्खिनी हिन्दी के काव्यों में प्रतीक प्राय: फारसी काव्य से गृहीत हैं। चूँकि दक्खिनी हिन्दी की अनेक प्रेमगाथाएँ फारसी काव्यों की रूपान्तर हैं अथवा अनेक गाथाओं के मूल स्रोत फारसी के तत्तद विषयक प्रेमाख्यान है, इसलिए स्वाभाविक है कि फारसी के अनेक प्रतीक उनके काव्यों में गृहीत हैं। जैसे साक़ी, शराब, मैखाना, गुल-बुलबुल, पर्दा, तोबा, जाम, जमाल, जलाल, हिजाब, हुस्नदिल, कल्ब, लब, मंज़िल, नूर शाम, सहर आदि। लौकिक पात्रों में सभी कवियों ने जैसे मुल्ला वजही ने कुतुब मुश्तरी में, मुकोमी ने चन्दबदन व महियार में, इब्न निशाती ने फूलबन में वजीहुद्दीन वजदी ने पंछी बाछा में अल्लाह का ही नूर देखा है।

सूफी साधना प्रेम पर आधारित प्रेममूलक, प्रेम प्रभु साधना है। लौकिक प्रेम का सम्प्रयन करके से दिव्य प्रेम की भूमिका पर प्रतिष्ठित करना सूफी साधना की चरम परिणति है। सूफी प्रेमाख्यानों में एक आध्यात्मिक प्रेम-मूलक अर्थ की अभिव्यंजना होती है। सूफी प्रेमाख्यानों में स्त्री को प्रेम (ब्रह्म) का प्रतीक माना गया है। इसका कारण यह है कि इब्नुल अरबी का कथन है—अल्लाह कभी अमूर्त रूप में दर्शन नहीं देता स्त्रीरूप में ही उसका सुन्दर साक्षात्कार होता है। जहाँ ब्रह्म के जमाल का जलवा है वहीं रति का आगमन होता है। लौकिक हुस्न का आकर्षण अलौकिक हो जाने पर ईश्वर की ओर गति हो जाती है। सूफी का जो रति का आलम्बन है वही प्रेम का प्रतीक है। सूफी चाहे जिस किसी को आलम्बन माने पर उनका प्रियतम परमात्मा ही है। यहाँ यह भी ध्यान देने योग्य है कि जब प्रियतम या प्रियतमा ही परमात्मा है, माशूका ही प्रतीक है, तब उसका नख-शिख, या शिख-नख भी प्रतीकात्मक ही होगा। इन सौन्दर्यवर्णन के माध्यम से इन कवियों ने परमात्मा के जमाल जलाल का उद्घाटन किया है। नायिका के मुख-मण्डल आदि के वर्णनों में इन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहाँ यह भी ध्यान देने योग्य है कि जब प्रियतम या प्रियतमा हो परमात्मा है, माशूका हो प्रतीक है, तब उसका नख-शिख या शिख-नख भी प्रतीकात्मक ही होगा ।

कवियों ने ईश्वरीय शक्ति और सौन्दर्य की ओर इंगित किया है । प्रेमी और प्रेमिका एक दूसरे के रूप सौन्दर्य की सूचना अनेक माध्यमों से पा लेते हैं । कभी स्वप्न के द्वारा, कभी किसी पक्षी या दूती आदि के द्वारा । इन्हें प्राप्त करने के लिए उनकी आत्मा विकल हो जाती है । उसकी एक झलक भी पाकर प्रेमी सुधबुध खो बैठता है अथवा मूर्छित हो जाता है । यह स्थिति उत्तरी सूफी प्रेमाख्यान तथा दक्खिनी सूफी प्रेमाख्यान दोनों में आती है । किन्तु अन्तर यह है कि दक्खिनी सूफी प्रेमाख्यान में कभी प्रेमिका प्रेमी का सौन्दर्य दर्शन कर सुध-बुध खो बैठती है और कभी प्रेमी प्रमिका के सौन्दर्य को देखते ही सुध-बुध खो बैठता है ।

मुल्ला वजही की दो रचनाएँ कुतुब मुश्तरी तथा सबरस हैं । कुतुब मुश्तरी में पूर्वराग का उदय नायक तथा नायिका दोनों में हुआ है । और स्वप्नदर्शन तथा चित्र दर्शन की स्थिति में दोनों में सुध बुध खोने की अवस्था का वर्णन किया गया है — मुश्तरी कहती है मेरा जीव तुम्हारे पास है —

मेरा हाल क्या है सोऐ शाह नेक
तू उसे जीव मेरे कूं तुम पूच देक ।

"सब रस" में मानवीय भावों को पात्ररूप में प्रस्तुत किया गया है । हुस्न और दिल नामक दो मुख्य (प्रेमी-प्रेमिका) पात्र हैं । दोनों में पूर्व-राग उत्पन्न होता है तथा दर्शन की स्थिति में सुध-बुध खो बैठते हैं । ख्याल ने दिल को जब हुस्न की सूरत दिखलाई तो उसकी स्थिति का अंदाज लगाया जा सकता है ।

दिल ऐते च उस हुस्न की अजायब सूरत पर, मनहर मूरत पर आशिक हुआ वो नक्श भाया । उस नक्श को जिव लाया सुध खोया, आहनाले भरने लग्या, दीवानी दीवानी चालें करने लग्या । अक्ल सुट्या कुछ था सो कुछ हुआ । — "हुस्न" — "हुस्न" यो च लगी थी उसकी धुन ।

गव्वासी दक्खिनी में श्रेष्ठ कवियों में है इनकी तीन कृतियाँ — सैफुल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूलक व बदाउज्जमाल, तूतीनामा तथा मैना सतवन्ती की कथा है। सैफुल मुलूक वदीगाउज्जमाल में सैफुलमुलक ने एक जरबरूत खोला जिसे उसे राजा ने दिया था, उस में एक चित्र था। चित्र देखते ही— राजकुमार बेसुध हो गया। इसी प्रकार से लगभग अब तक प्राप्त अधिकांश दक्खिनी हिन्दी की सूफी प्रेमाख्यानक रचनाएँ हैं जैसे कदम-राव पदम राव—निजामि, लैला-

उनमें उत्तरो हिन्दो के सूफी प्रेमाख्यानों की भांति प्रेमी (साधक) प्रेमिका ब्रह्म के रूप का दर्शन करते ही मूर्छित हो जाता है अथवा सुधबुध खो बैठता है किन्तु दक्खिनी हिन्दी में एक जो इसके विपरीत की प्रवृत्ति है उसमें साधक प्रेमिका है। (स्त्री) तथा साध्य प्रेमी (पुरुष=ब्रह्म)है।

मजनूं आजिज़, चन्दर बदन व महियार—मुकीमी, फूलबन—इब्न निषाती, यूसफ जुलेखा—मीरा हाशिमी इत्यादि। उनमें उतरी हिन्दी के सूफी प्रेमाख्यानों की भांति प्रेमी (साधक) प्रेमिका ब्रह्म के रूप का दर्शन करते ही मूर्छित हो जाता है अथवा सुधबुध खो बैठता है। किन्तु दक्खिनी हिन्दी में एक जो इसके विपरीत की प्रवृति है उसमें साधक प्रेमिका है (स्त्री) तथा साध्य प्रेमी (पुरुष ब्रह्म) है। मीरा हाशमी की यूसुफ जुलेखाकृति इस प्रकार की एक विशिष्ट कृति है।

दूसरी जो उल्लेखनीय स्थिति है जिसे हम निरंतर उत्तरी तथा दक्खिनी दोनों सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों में देखते आ रहे हैं वह है-प्रेमी तथा प्रेमिका एक दूसरे के रूप की सूचना अनेक माध्यमों से पा लेते हैं। उन्हें प्राप्त करने के लिए उनकी आत्मा विकल हो जाती है। अनेक कठिनाइयों का सामना करने के पश्चात जब उन्हें रूप का दर्शन होता है तो तत्काल ताब नहीं ला पाते, मूर्छित हो जाते हैं, या सुध बुध खो बैठते हैं। ऐसा क्यों है? इस संबन्ध में आचार्य शुक्ल ने पद्मावत की भूमिका में लिखा है कि संयोग वर्णन में जायसी सहसा सौन्दर्य के साक्षात्कार से हृदय के उस आनंद सम्मोहन का वर्णन करते हैं जो मूर्छा की दशा तक पहुँचा हुआ जान पड़ता है। फिर राजा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने दुख की कहानी और प्रेम मार्ग में अपने ऊपर पड़े हुए संकट का वर्णन कर के प्रेम मार्ग की उस सामान्य प्रवृति का परिचय देता है जिसके अनुसार प्रेमी अपने प्रियतम के हृदय में अपने ऊपर दया तथा करुणा का भाव जाग्रत करने का बराबर प्रयत्न किया करता है"। सौन्दर्य के साक्षात्कार से अनंद सम्मोहन की स्थिति जो मूर्छा की दशा तक पहुँच जाती है कुछ उचित नहीं जान पड़ती। वास्तव में सूफी सौन्दर्य बोध पूर्णतः इस्लाम की धार्मिक भावना से उद्भूत है।

कुरान शरीफ़ में हजरत मूसा जो एक महान साधक थे उनके जीवन से संबन्धित एक घटना है जिसका विस्तृत उल्लेख हदीस में है। हज़रत मूसा निरतर खोदा की बन्दगी में तल्लीन थे। खोदा से उनका एक ही आग्रह था दर्शन पाने का। उन के बार बार आग्रह करने पर जब खोदा ने अपने "नूर" को एक झलक "मूसा" को दिखलाई तो उस जलवे की ताब न लाकर वह बेहोश हो गए। निष्कर्ष यह कि सूफी प्रेमाख्यान पूर्णतः आध्यात्मिक है। ब्रह्म का दर्शन मात्र उस "नूर" का दर्शन है जिसका जलवा अकथनीय एवं बेताब

दक्खिनी हिंदी के सूफी प्रेमाख्यान द्वि-आयामी हैं। कभी स्त्री साधक है तो पुरुष साध्य तो कभी पुरुष साधक है तो स्त्री साध्य।

कर देने वाला है। सम्पूर्ण दक्खिनी हिन्दी के काव्यों में यह स्थिति दिखलाई पड़ती है।

दक्खिनी हिन्दी के सूफी प्रेमाख्यान द्वि-आयामी हैं। कभी स्त्री साधक है तो पुरुष साध्य तो कभी पुरुष साधक है तो स्त्री साध्य। किन्तु मूर्छा की स्थिति दोनों ही रूपों में है। प्रयोजन मात्र ब्रह्म के नूर के जलाल व जमाल के साक्षात्कार का है। साक्षात्कार के उपरान्त साध्य ब्रह्म) सांसारिक विघ्न वाधाओं से फिर पिछड़ जाता है। यह स्थिति अत्यन्त ही दयनीय होती है। बार बार वह प्रेमिका (साध्य के नाम की रट लगाए रहता है और जब उस में उन्माद (हाल) के लक्षण प्रकट होने लगते हैं तब वह सांसारिक विषयों से परे हो जाता है। इन तल्लीनता से एक अलौकिक सौन्दर्यानुभूति एवं आनंद की प्राप्ति होती है। जिसे आलमें वज्द या भावोल्लास की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामान्यत: यूसुफ़ जुलेखा की कथा जिस का स्रोत कुरान शरीफ है उस पर आधारित अनेक फारसी और दक्खिनी काव्य लिखे गए ।

स्थिति कहा जाता है । इस स्थिति के सम्बन्ध में जलालुद्दीन रूमी का एक उद्‌गार है :—

प्रियतम के दरवाजे को किसी ने बाहर से खट-खटाया भीतर से आवाज़ आई, कौन ? उसने जवाब दिया मैं, "हूँ" । भीतर से आवाज़ आई, इस घर में तेरे और मेरे दोनों केलिए कोई स्थान नहीं है । प्रेमी चला गया । उसने एकान्त सेवन किया । प्रार्थना मे निरत रहा, उपवास किया । एक वर्ष बाद वह फिर लौटा । उसने पुन: दरवाजा खटखटाया । आवाज़ आई कौन ? प्रेमी ने उत्तर दिया तू है— और तब दरवाजा खुल गया ।

साधक, "प्रेमिका" साध्य "प्रेमी" की प्रवृत्ति को लेकर लिखा गया काव्य यूसुफ जुलेखा "मीरा हाशमी" का विशेष महत्व का है । सामान्यत: यूसुफ़ जुलेखा की कथा जिसका स्रोत कुरान शरीफ है उस पर आधारित अनेक फारसी और दक्खिनी काव्य लिखे गए । जैसे फारसी में जामी ने यूसुफ़ जुलेखा नाम का काव्य लिखा है तथा दक्खिनी हिन्दी में अन्य दो और काव्य मातेबरखाँ का यूसुफ़ जुलेखा काव्य तथा अमीन गुजराती का यूसुफ़ जुलेखा काव्य है ।

उपर्युक्त सभी यूसुफ़ जुलेखा के कथानक पर आधारित काव्यों में साधना की उसी पद्धति का प्रयोग किया गया है । अन्तर केवल कथा को कहीं दुखांत बनाया गया है तथा सुखान्त ।

मीरा हाशमी कृत यूसुफ़ जुलेखा विशेष उल्लेखनीय है । इसमें यूसुफ़ सौन्दर्य के अप्रतिमरूप हैं । जुलेखा भी सुन्दर हैं किन्तु यूसुफ़ अपेक्षाकृत अधिक सुन्दर है । सम्पूर्ण संसार में सौन्दर्य का अधिकांश भाग उनको प्राप्त है । ऐसा प्रतीत होता था कि परमात्मा की ज्योति उनमें समा गई है इसलिए जो भी उन्हें देखता अनुरक्त हो जाता था । एक रात जुलेखा ने स्वप्न में इस दिव्य पुरुष को देखा । प्रात:काल जुलेखा की दयनीय दशा हो गयी और जोगिन का वेश धारण कर उसने सब कुछ वैभव का त्याग कर दिया । वह विरह विक्षिप्त हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गयीं। उसे बादशाह ने बेड़ियाँ पहना दी। दूसरी तरफ यूसुफ़ को उसके भाइयों ने ईर्ष्यावश अनेक कष्ट दिए। जुलेखा ने यूसुफ़ को पाने के लिए अनेक कठिनाइयाँ उठाईं किन्तु मिलने पर यूसुफ़ उससे दूर भागता। उसने यूसुफ़ को कैद कर लिया। फिर भी यूसुफ़ में वासना नहीं जगी। जुलेखा उसकी प्रतीक्षा में जीवन बिताती रही और बूढ़ी हो गयी। यूसुफ़ के स्पर्श से वह युवती हो गयी और दोनों का मिलन हुआ।

तात्पर्य यह है कि यहाँ पर "यूसुफ़" ब्रह्म के प्रतीक हैं और जुलेखा साधक की प्रतीक हैं। इस आयाम के पीछे सूफी साधना की एक दृष्टि जो सामान्य है वह सौन्दर्य बोध में ब्रह्म बोध की दृष्टि है। क्योंकि जहाँ सौन्दर्य होता है वहीं प्रेम होता है। प्रेम के पुल पर चलकर ही सूफीसाधक भवसागर पार करते हैं। प्रेम ही उनका अमोघ अस्त्र या परम साधन है। परमात्मा का ही अंश मानव है क्योंकि परमात्मा की इच्छा ही मानव है। उसमें प्रेम भी दिव्य स्रोत से ही आया है और वह दैवी विभूति स्वयं प्रेम रूप है। ★

परमात्मा का ही अंश मानव है क्योंकि परमात्मा की इच्छा ही मानव है। उसमें प्रेम भी दिव्य स्त्रोत से ही आया है और वह दैवी विभूति स्वय प्रेम रूप है।

शिक्षा और राष्ट्र को प्रगति

गुरु के मार्गदर्शन में ही शिक्षा और ज्ञानार्जन संभव है, यही प्राचीन परम्परागत मूल्य है। शिक्षक उन भावी नागरिकों का निर्माण करता है जिनपर राष्ट्र की प्रगति और समृद्धि निर्भर करती है। शिक्षा का व्यवसाय पहले भी श्रेष्ठतम माना जाता था और आज भी यह श्रेष्ठतम है।

—श्री० ललितेश्वर प्रसाद शाही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी गद्य के विकास में दक्खिनी का योगदान

श्री० वी. शिवराम पिल्ले
कायमकुलम

[22 से 24 जनवरी 1988 तक केरल विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित संगोष्ठी में प्रस्तुत प्रपत्र]

आधुनिक हिन्दी का विकास खड़ीबोली से हुआ है। खड़ीबोली का जितना विकास हिन्दीतर प्रदेश में हुआ है उतना उत्तर के हिन्दी क्षेत्र में नहीं हुआ है। लेकिन हिन्दी के विद्वानों का ध्यान खड़ीबोली के दक्षिण में विकसित रूप की ओर नहीं गया है। उत्तर भारत के विद्वान गद्य के विकास का इतिहास भारतेन्दु युग से समझते हैं। उन्होंने खड़ीबोली को पुरानी साहित्य संपत्ति पर शायद विचार नहीं किया था। इस कारण खड़ीबोली के विकास का इतिहास अंधकार में पड़ा रहा। पूरे देश को दृष्टि में रखते हुए जब हिन्दी गद्य के विकास को समझने का प्रयत्न करते हैं तब हमें पता चलता है कि हमारा यह रूढ़िबद्ध विचार सही नहीं है। हिन्दी का जो रूप हमारे सामने है उसका पूर्ववर्ती रूप दक्खिन में विकसित हुआ है।

उत्तर भारत के विद्वान गद्य के विकास का इतिहास भारतेन्दु युग से समझते हैं। उन्होंने खडोबोली की पुरानी साहित्य संपत्ति पर शायद विचार नहीं किया था।

इस प्रकार खड़ीबोली का क्षेत्र उत्तर तक सीमित न रह कर दक्षिण तक व्याप्त हो जाता है। इसलिए हमें उत्तर दक्षिण में निर्मित साहित्य को समान दृष्टि से देखना चाहिए। दिल्ली और आसपास की खड़ीबोली जब दक्खिन में आयी तब वह दक्खिनी कहलाई। वहां दक्खिनी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरबी फारसी लिपि में लिखी जाती रही जिस की वजह से वह उर्दू मान ली गया। लेकिन शब्दावली व्याकरणिक विशेषताएँ और अन्य अनेक कारणों से इस बात का समर्थन किया जाता है कि दक्खिनी खड़ीबोली हिन्दी ही है। इसलिए हिन्दी गद्य के विकास को उपलब्ध प्राचीनतम ग्रन्थों के आधार पर प्रस्तुत करना चाहिए।

दक्खिनी में उपलब्ध साहित्यिक ग्रंथों के उपेक्षित होने का कारण यह है कि अरबी फारसी लिपि में यह लिपिबद्ध हो गया था। लिपि की अज्ञानता के कारण खड़ीबोली के विद्वानों ने उस पर ध्यान नहीं किया। अरबी फारसी लिपि में निर्मित दक्खिनी का साहित्य हिन्दी साहित्य का अभिन्न अंग है। मलयालम की पुरानी लिपि में लिखित हिन्दी ग्रन्थ केरल विश्वविद्यालय के हस्तलिखित ग्रन्थालय में है। इसलिए हमें कहना पड़ता है कि दक्खिनी का क्षेत्र दक्खिन तक सीमित न होकर केरल तक बढ आया है।

लेकिन दक्खिनी के प्रथम सूफी लेखक के रूप में बन्देनवाज़ का नाम लिया जाता है। दक्खिनी की प्रथम गद्यरचना के रूप में 'मेराजुल-आशिकीन' को लिया जाता है। मौलवी अब्दुल हक ने इसे पहली बार बन्देनवाज़ कृत बताया था। उपलब्ध ग्रन्थ में इस बात का कहीं कोई संकेत नहीं मिलता कि इसके लेखक बन्देनवाज़ हैं। फिर भी बहुत से विद्वान यह मानते हैं कि 'मेराजुल-आशिकीन' बन्देनवाज़ की कृति है।

डॉ० हफीज़कतील, डॉ० जमील जलिबी, डॉ० हुसैनी शाहिद आदि दक्खिनी के विद्वानों ने 'मेराजुल-आशिकीन' की प्रामाणिकता पर विचार करते हुए असंदिग्ध रूप से यह सिद्ध किया है कि 'मेराजुल-अशिकीन' बन्देनवाज़ की रचना नहीं है।

डॉ० हफीज़ कतोल की दृष्टि में 'मेराजुलआशिकीन' मखदूमशॉह हुसैनीबलकातूरो की रचना 'तिलाबुत्तल वुजूद' का सार है। वे हज़रत अमीन की परंपरा में आते हैं। डॉ० जमीन जालिबी ने 'मेराजुलआशिकीन' का रचना काल हिजरी सन् ग्यारहवीं शताब्दी के अन्तिम चरण और बारहवीं शताब्दी के प्रथम चरण में माना है। बन्देनवाज़ की मृत्यु हिजरी 825 अर्थात् करीब पौने तीन सौ वर्ष पूर्व हुई। डा० हुसैनो शाहिद ने यह

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिद्ध किया है कि 'मेराजुल-आशिकीन' के लेखक मखदूम शॉह हुसैनी हैं । अंतसाक्ष्य तथा भाषिक विशिष्टता के आधार पर निर्विवाद रूप से हम यह निर्णय कर सकते हैं कि 'मेराजुलआशिकीन' बन्देनवाज़ की कृति नहीं है ।

'मेराजुलआशिकीन' पर दृष्टि-पात करने से हमें मालूम होता है कि यह एक स्वतंत्र पुस्तक नहीं है। हर सूफी ग्रन्थ का प्रारंभ ईशस्तुति से होता है । 'मेराजुलआशिकीन' में इस परंपरा का पालन नहीं किया गया है ।

"काल नबी अलैहिस्सलाम कहे इंसान के
वूजन कूं पांचा तन, हर एक तन कूं पाँच दरवाजे
हैं और पाँच दरबान हैं ।"

बन्देनवाज़ ने अपनी गद्य कृति में ईश्वर, जीव, प्रकृति, पंचतत्व शरीर आदि का विश्लेषण किया है । इस ग्रन्थ में विचारों का कोई क्रमबद्ध रूप नहीं है। 'दुर्रुलअसरार' और 'शिकारनामा' दोनों की प्रामाणिकता भी संदिग्ध है । इसलिए बन्देनवाज़ को प्रथम गद्यलेखक के रूप में मानना युक्तिसंगत नहीं लगता ।

खड़ीबोली में सर्वप्रथम गद्य ग्रन्थ लिखने का श्रेय दक्खिनी के सूफी आचार्य शेख़ बुरहानुदीन जानम को दिया जाना चाहिए । जानम का 'कलिमतुल हकाइक' हिन्दी गद्य का प्रारंभिक ग्रन्थ है । प्रारंभिक काल में गद्य रचना करनेवाले जानम के सामने कोई गद्य ग्रन्थ उपलब्ध नहीं था । गद्य का कोई आदर्श ग्रन्थ न पाकर उन्होने अपने पद्य बद्ध ग्रन्थ को, गद्य में परिणित कर दिया। जानम ने गद्य और पद्य दोनों क्षेत्रों में अपनी लेखनी चलाई। 'इरशादनामा' जानम का काव्य है और 'कलिमतुलहकाइक' गद्य ग्रन्थ है । इन दोनों की रचना शैली की आलोचना करने पर मालूम होता है कि जानम ने थोडे से परिवर्तन के साथ अपने पद्यबद्ध ग्रन्थ को गद्यबद्ध बनाया था । 'इरशादनामा' की कुछ पंक्तियाँ देखिये :—

"सहज सहज सू उसका ठार
सहज हुआ है उसे थे बार"

उन्होंने उसका गद्य रूप ऐसा लिखा:-

"सहज सहज सु तेरा ठार व सहज हुआ भी तूज थे बार ।"

जानम अपनी पद्य शैली को, गद्य रूप में, इसी प्रकार नकल करते थे। हम कह सकते हैं कि जानम के समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में खडीबोली में कोई गद्य ग्रन्थ नहीं था।

यह तो सब जानते हैं कि किसी भी भाषा में साहित्य की रचना पहले पहल पद्य में ही की गयी है। बाद में ही गद्य में लिखने का प्रयास किया गया है। दक्खिनी भी इसकी अपवाद न रही।

हिन्दी गद्य के विकास के बारे में रामचन्द्र शुक्लजी अपने इतिहास में कहते हैं कि जिस समय फोर्ट विलियम कॉलेज की ओर से उर्दू और हिन्दी गद्य की पुस्तकें लिखाने की व्यवस्था हुई उसके पहले खडी-बोली में गद्य की पुस्तकें लिखी जा चुकी थी। जब अंग्रेजों की ओर से पुस्तक लिखाने की व्यवस्था हुई उसके एक दो वर्ष पहले मुंशी सदासुख की 'ज्ञानोपदेशावली' पुस्तक और इंशा की 'रानी केतकी की कहानी' लिखी जा चुकी थी। पहले पहल हिन्दी और उर्दू का साहित्य पद्यमय था। जब व्यापारी लोग विभिन्न देश के विभिन्न भागों में फैल गये तब से लोगों का ध्यान गद्य लिखने की ओर गया। धीरे धीरे खडीबोली गद्य को एक साथ आगे बढानेवाले चार महानुभाव हुए हैं—मुंशी सदासुखलाल, सैयद इंशा अल्लाखां, लल्लू लाल और सदल मिश्र। हिन्दी गद्य के सबसे प्राचीन लेखक श्री. गोरखनाथ हैं जिनका समय आधुनिक खोजों के अनुसार सन् 943 ई० माना जाता है। अंग्रेजों के आने के पश्चात् जब कलकत्ते में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना हुई तब से खडीबोली गद्य का विकास भी होने लगा। सदासुखलाल फोर्ट विलियम कॉलेज में हिन्दी अध्यापक थे। उन्होंने 'नासिकेतोपाख्यान', 'चन्द्रावती' आदि पुस्तकों का निर्माण किया। उन्होंने सर्वप्रथम खड़ीबोली गद्य को आधुनिक गद्य रूप देने का प्रयत्न किया। मुंशी सदासुखलालजी ने विष्णुपुराण के आधार पर एक गद्य पुस्तक की रचना की। उनकी भाषा में स्थान स्थान पर संस्कृत तत्सम शब्दों का प्रयोग मिलता है।

हिन्दी गद्य की प्राथमिक अवस्था के समय उर्दू को प्रधानता मिलने लगी। कचहरियों की भाषा उर्दू हो जाने से जनसाधारण का झुकाव उर्दू की ओर गया। भाषा के संबन्ध में राजा लक्ष्मणसिंह ने लिखा—"हमारी समझ में हिन्दी और उर्दू दो बोली न्यारी न्यारी हैं। हिन्दी इस देश के हिन्दू बोलते हैं और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उर्दू यहाँ के मुसलमानों और फारसी पढे हुए हिन्दुओं की बोलचाल की भाषा है। हम उस भाषा को हिन्दी नहीं कहते जिस में अरबी व फारसी के शब्द भरे हो।''

गद्य कला के विकास को देखने के लिए जानम और मुल्ला वजही की कृतियों पर ध्यान देना आवश्यक है। जानम दक्खिनी हिन्दी में गद्य लिखनेवाले प्रारंभिक लेखकों में हैं जिनके सामने गद्य विधा का कोई आदर्श नहीं था।

मुल्ला वजही अमीन के समकालीन गद्य लेखक थे। आप गोलकुण्डा के समुन्नत साहित्यकार थे। 'सबरस' आप की अपार प्रतिभा का ज्वलंत उदाहरण है। खड़ीबोली की विशेषताओं को समेटते हुए 'सबरस' हमें अपनी ओर आकृष्ट करता है। भाषा और भाव की दृष्टि से 'सबरस' के अध्ययन अनुशीलन करने पर निस्सन्देह इस निष्कर्ष पर पहुँच सकेंगे कि दक्खिनी और उत्तरी हिन्दी में, मध्य काल में ऐसा दूसरा गद्य निर्मित नहीं हुआ है जो 'सबरस से समता रखता हो। 'सबरस' औपन्यासिक ढंग में लिखे हुए महाकाव्य जैसे विशालकाय गद्यबद्ध रचना होने पर भी हमें लगता है कि यह निबंधों का एक संकलन हो। हाँ, निबंध कला के प्रथम प्रवर्तक के रूप में 'वजही' का नाम लिया जाना चाहिए। 'सबरस' में हिन्दी का गद्य विलास करता नजर आता है। लगता है मानों वे संस्कृत के महान गद्य लेखक दंडी का अनुकरण कर रहे हो। किंतु वे कोरी नकल करने वाले नहीं थे। अपनी रचनाओं में उन्होंने अपने व्यक्तित्व की अमिट छाप छोड दी है।

'सबरस' में मानसिक भावों को पात्र बनाया गया है। विषय को सरल बनाने में प्रतिपादन की यह नवीन शैली (सत्रहवीं सोलहवीं शताब्दी में इस प्रकार मानसिक भावों को व्यक्तित्व देना एक नवीन शैली थी।) सहायक हुई है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि सबरस के रचयिता विश्व साहित्य में भी निबंध कला के प्रथम प्रवर्तकों में स्थान पाने के अधिकारी हैं क्योंकि आप फ्रेंच निबंधकार मोनटैन और अंग्रेजी निबंधकार बैकन के समकालीन होकर खड़ीबोली हिन्दी में अपना विचार प्रस्तुत कर रहे थे।

वजही के गद्य की एक खूबी यह है कि उन्होंने अपनी बात के समर्थन के लिए बहुत से विद्वानों को उद्धृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया है। हम देखते हैं कि हिन्दी के सर्वाधिक क्रांतिकारी कवि महात्मा कबीर की उक्तियों के अतिरिक्त अरबी फारसी के कई मूर्धन्य विद्वानों की उक्तियाँ भी उद्धृत की हैं। कवि की विद्वत्ता एवं बहुज्ञता का परिचय हमें उनकी रचनाओं से मिलता है। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि वजही के टक्कर के कोई गद्य लेखक उतरी हिन्दी में भी नहीं मिलता।

वजही की कृतियों पर विचार करते समय दो बातें हमें आकृष्ट करती हैं।

1. विषय की महत्ता।
2. भाषा का स्वरूप।

भाषा का ऐसा चलता हुआ जीवंत स्वरूप और कहीं देखने को नहीं मिलता। उनकी भाषा में संस्कृत तत्सम शब्दों का प्राचुर्य भी देखा जा सकता है। मुहावरों और लोकोक्तियाँ का प्रचुर प्रयोग देखकर हमें लगता है मानों यह एक मुहावरा कोश हो।

वजही का गद्य साहित्य इतना गंभीर और उत्तम कोटि का है कि उसका स्वतंत्र अध्ययन किया जाना चाहिए। हिन्दी के गद्य साहित्य के विकास में वजही का योगदान सुवर्णाक्षरों में अंकनीय है। खेद की बात तो यह है कि खड़ीबोली की दक्खिन में प्रचलित दक्खिनी में अपने विचार अभिव्यंजित करनेवाले महान कवि और महान गद्य लेखक वजही के नाम से भी हम परिचित नहीं हैं। 'सबरस' वजही का गद्य काव्य है। वह फारसी में लिपिबद्ध होने से दक्खिनी के विद्वानों की आँखों से ओझल रहा। वजही ने 'सबरस' में फारसी, अरबी, ब्रज, दक्खिनी आदि अनेक भाषाओं के उद्धरण देते हुए बहुभाषा ज्ञान या परिचय दिया है। आगे वजही अपनी भाषा को 'जबान हिन्दुस्तान' बताते हैं। सबरस की भाषा का अंश देखिए:—

"कोई इस जहान में हिन्दुस्थान में 'हिन्दी जबान सूँ इस लताफत इस छिंदी सूँ नज़म होर नस्र मिलाकर यूँ नें बोल्या।"

'सबरस' दक्खिनी के विकास काल में रचित ग्रन्थ है। दक्खिनी तो दिल्ली की खड़ीबोली से विकसित रूप ही है। 'सबरस' वजही का सृजन शक्ति का मणिमुकुट है। उस गद्य रत्न में निबंध कला विलास करती नज़र आती है। खड़ीबोली के विकास के अनेक पहलुओं को भलीभाँति समझने के लिए सबरस बडा काम देता है। असल में वजही की भाषा हिन्दी ही है जो दक्खिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम से मशहूर भी थी। हिन्दी की अन्य किसी बोली में 'सबरस' का जैसा उत्कृष्ट गद्य ग्रन्थ पाया नहीं जाता। केवल लिपि को लेकर 'सबरस' के लेखक को उर्दूवालों ने अपने साहित्यिक इतिहास में स्थान दिया। लिपि की अज्ञता के कारण हिन्दीवालों ने इस अनुपम ग्रन्थ-रत्न की उपेक्षा की। हिन्दी गद्य साहित्य का इतिहास तभी पूर्ण और सही बनेगा जब सबरस और अन्य दक्खिनी के गद्य ग्रन्थों को उसके अन्तर्गत स्थान दिया जाएगा।

वजही के अलावा दक्खिनी में और भी लेखक हैं जो अब्दुस्समद, मीराँ याकूब आबिदशाह हसन उल हुसैनी, शाह बुरहानुद्दीन कादरी, मुहम्मद शरीफ आदि हैं। उनके गद्य ग्रन्थों से हिन्दी गद्य साहित्य की समृद्धि हुई है।

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि हिन्दी गद्य के विकास में दक्खिनी का प्रमुख स्थान है।

★

तीन बातें

डा० राधाकृष्णन के जीवन में तीन बातें बहुत महत्वपूर्ण थीं। पहली बात थी, हमारे इतिहास के उतार-चढाओं के बावबूद 5000 वर्षों तक भारत की सभ्यता को समृद्ध बनाने में सहायक परस्पराओं, सिद्धांतों और मूल्यों की समझ और उन्हें बनाए रखने का महत्व। दूसरी बात थी, बढिया शिक्षा के माध्यम से जो हमारे विशाल देश के हर गांव, हर मोहल्ले और हर बस्ती तक पहुँचे, ये मूल्य और सिद्धान्त हमारे युवाओं में पैदा करने का महत्व। तीसरी बात थी, हमारे देश के लोकतंत्र के सर्वोच्च मंच, संसद की कार्रवाई की गरिमा और मर्यादा को बनाए रखने की आवश्यकता।

— **श्री. राजीव गांधी**

(डा० एस. राधाकृष्णन की जन्म शताब्दी के अवसर पर संसद के केन्द्रीय कक्ष में दिये गये भाषण से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

पुष्प 23
दल 10

एक प्रति—1 रु० 50 पै०
वार्षिक—15 रु०

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका

जनवरी 1989

संपादकीय

राजनीतिक दलों की भाषा

सभी राजनीतिक दल इस बात का प्रयत्न करते हैं कि वे अपने आदर्शों और कार्यकलापों से साधारण जनता को अधिक प्रभावित कर सकें। इस के लिए वे कई प्रकार प्रचार कार्यक्रम आयोजित करते हैं जैसे जाथा, सम्मेलन, पोस्टर, भिति लेख आदि।

राजनीतिक दल के नेता जानते हैं कि जनता को प्रभावित करने का सर्वोत्तम माध्यम जनता की भाषा है। इसलिए वे उक्त कार्यों में यथासंभव जनता की भाषा का ही प्रयोग करने के पक्ष में है। प्रान्तीय प्रचार कार्यों में प्रान्तीय भाषा का उपयोग अधिकाधिक किया जाता है।

राष्ट्रस्तरीय सम्मेलन आदि जब आयोजित करते हैं तो बार बार यह बात भुलाई जाती है कि अंग्रेज़ी इस देश की जनभाषा नहीं है। भाषण अंग्रेजी में! चर्चा अंग्रेजी में! पोस्टर अंग्रेजी में! भित्ति-लेख अंग्रेजी में! नोटीस अंग्रेजी में! बाड्ज और थैली पर मुद्रण अंग्रेजी में! यद्यपि बोलनेवालों और लिखनेवालों की दृष्टि से यह सरल हो सकता है तो भी सुननेवालों और पढनेवालों के लिये यह कठिन अवश्य रह जाता है। यह बात भुलाई जा रही है कि भारत में अंग्रेजी जाननेवालों की संख्या केवल दो प्रतिशत है।

27 दिसंबर 1988 से 1 जनवरी 1989 तक केरल की राजधानी तिरुवनन्तपुरम में मार्क्सवादी साम्यवादी दल का तेरहवाँ अखिल भारतीय सम्मेलन जब आयोजित हुआ तो जिसमें देश के विविध प्रान्तों के अनेक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस अवसर पर तैयार किये गये पोस्टर, भित्ति लेख आदि में भी यद्यपि प्रान्तीय भाषा और अंग्रेजी का ही प्रामुख्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में

महान देशभक्त मौलाना अबुल कलाम आज़ाद श्री. राजीव गांधी	3
हिन्दी लेखकों की पंचदिवसीय कार्यगोष्ठी तिरुवनन्तपुरम में	10
ऐसी यात्रा कि थक गया : लेकिन आँखें नहीं भरीं श्री. शंकरदयाल सिंह	14
मूंगफली मूल : श्रीमती कमला दास अनु : श्री. के. राधाकृष्णन	20
भारत सोवियत मैत्री श्री. राजीव गांधी	27
उमाकेरलम : मलयालम का सर्वप्रथम ऐतिहासिक महाकाव्य डॉ० कटविल चन्द्रन	34
शुभाशंसायें (कविता) सुश्री ऋता शुक्ल	42

रहा तो भी हिन्दी का भी थोडा थोडा प्रयोग किया गया। सम्मेलन के मुख्य केन्द्र के फाटक पर देवनागरी में बडे अक्षरों में लिखा बोर्ड दिखाई दिया। भित्ति लेखों में भी देवनागरी लिपि और हिन्दी भाषा को पूर्वाधिक स्थान दिया गया। [कुछ दृश्यों का एक चित्र इसी अंक में प्रकाशित हैं] तिरुवनन्तपुरम में शायद पहली बार किसी अखिल भारतीय सम्मेलन में हिन्दी का इतना प्रयोग सार्वजनिक स्थानों पर किया गया।

हमारा विचार है कि इस दिशा में हर राष्ट्रस्तरीय राजनीतिक दल आगे बढे। जनता के पास पहुँचना हो तो जनता की भाषा का माध्यम अपनाये। सुननेवालों और पढनेवालों की रुचि और क्षमता को समझकर उसके अनुसार बोलें और लिखें। तब शब्दों का आशय जनता के मन-मस्तिष्क में आसानी से प्रवेश कर पायेंगे।

स्पष्ट शब्दों में हम राजनीतिक दलों से अनुरोध करना चाहेंगे कि राष्ट्रस्तरीय सम्मेलनों में राष्ट्रभाषा हिन्दी को कम से कम उतना स्थान दिया जाये जितना विदेशी भाषा अंग्रजी को दिया जा रहा है। यदि ऐसा नहीं किया गया तो उनके भाषणों, नोटीसों, पोस्टरों, भित्तिलेखों आदि का सन्देश शब्दो में और लिपि में आबद्ध रहेगा, जनता में वांछित मात्रा में संचरित नहीं हो पायेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महान देशभक्त मौलाना अबुलकलाम आज़ाद

श्री. राजीव गांधी

श्री. राजीव गांधी

[1-12-1988 को प्रधान मंत्री श्री. राजीव गांधी द्वारा नई दिल्ली में मौलाना आज़ाद की जन्मशती समारोह के उद्घाटन के अवसर पर दिया गया भाषण !]

"मौलाना अबुल कलाम आज़ाद एक महान् देशभक्त थे। उन्हें भारतीय

श्री. मौलाना अबुलकलाम आज़ाद

सभ्यता के मूल स्रोतों की गहरी समझ थी। देश की एकता में उनका अगाध विश्वास था। इसी एकता को बनाए रखने के लिए उन्होंने अथक कार्य किया। उन्होंने देश की आज़ादी के लिए संघर्ष किया और कई वर्ष जेल में बिताए और भारत जब स्वतंत्र हो गया तो नए भारत का निर्माण करने वाले अग्रणी व्यक्तियों में वे एक थे। राष्ट्र अपने एक महान् सपूत की जन्मशती के अवसर पर उसे श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा है।

उनके निकटतम मित्रों और सहयोगियों में जवाहरलाल नेहरू शामिल थे। उनकी मैत्री ऐसी थी कि उसने तमाम मतभेदों और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वभावगत विषमताओं को पाट दिया था। वे एक-दूसरे के निकट विशेषकर उस समय आए जब अहमद नगर किले में उन्हें जेल में साथ-साथ रखा गया था। इसी जेल में जवाहरलाल नेहरू ने "डिस्कवरी ऑफ़ इंडिया" नामक पुस्तक लिखी था। नेहरू जी ने अपनी इस पुस्तक की प्रस्तावना में लिखा है :

"हालांकि मैं अपने सभी सहयोगियों का कृतज्ञ हूँ लेकिन मैं विशेषकर मौलाना अबुल कलाम आज़ाद का उल्लेख करना चाहूँगा जिनकी अपार विद्वता मुझे प्रायः आनन्दित करती थी और कभी-कभी तो मैं उससे अभिभूत हो जाता था।"

मौलाना आजाद की गहरी जानकारी पवित्र कुरान और इस्लामी धर्मशास्त्रों के अध्ययन पर आधारित थी। इसमें भारत की बहुआयामी संस्कृतियों के अनेक पहलुओं का समृद्ध ज्ञान भी शामिल हो गया था। उन्होंने इस काल के अनेक सर्वोत्कृष्ट ऐतिहासिक, राजनीतिक और आर्थिक ग्रंथों का भी अध्ययन किया था।

कांग्रेस के इतिहास में सात वर्षों तक लगातार अध्यक्ष बने रहने का भी उन्हें गौरव प्राप्त हुआ।

मौलाना आज़ाद स्वतंत्रता संग्राम के हमारे प्रमुख सेनानियों में से थे। उन्हें अब इस बात का पक्का विश्वास हो गया कि 'भारतीय मुसलमानों को देश की राजनीतिक मुक्ति के कार्य में सहयोग अवश्य करना चाहिए" तो वे बडे विश्वास से स्वतंत्रता आन्दोलन में कूद पड़े। वे अभी 35 वर्ष के ही थे कि पहली बार कांग्रेस के अध्यक्ष चुन लिए गए और संभवत वे कांग्रेस के अब तक के सबसे कम उम्र के अध्यक्ष हैं। कांग्रेस के इतिहास में सात वर्षों तक लगातार अध्यक्ष बने रहने का भी उन्हें गौरव प्राप्त हुआ और वे सबसे अराजकतापूर्ण और कठिन दिन थे जब हमारे स्वतंत्रता संघर्ष का अंतिम चरण शुरु हो गया था और यह चरण वास्तव में स्वतंत्रता की पूर्व संध्या तक चला।

विभाजन की घटना समूचे देश के लिए एक भयानक अनुभव था और उसमें भी सबसे अधिक असर मुस्लिम समुदाय पर पड़ा था। अचानक ही उन्होंने पाया कि देश दो टुकड़ों में बँट गया। भाई, भाई से अलग हो गए, माँ बेटे से बिछुड़ गई, बाप, बेटी से अलग हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस समय तमाम तरह की उलझनें एक साथ-खड़ी हो गई थीं, जैसे राष्ट्रीय पहचान के साथ परिवार की पहचान, धार्मिक पहचान के साथ राष्ट्रीय पहचान और राष्ट्रीय हितों के साथ अल्पसंख्यकों के हित आदि समस्याओं का समाधान करना था। दंगों के बाद की विभीषिका जैसे संपत्ति का नुकसान, अपने सगे-संबंधियों से बिछोह जैसे दंगे की भयावह स्थिति से भी निबटना था।

अपने व्यक्तित्व में, अपनी मनोस्थिति में और अपनी गहरी देशभक्ति में उन्होंने इस्लाम के श्रेष्ठ तथा भारतीय सभ्यता के गुणों का एक साथ समावेश किया।

एक ओर ऐसे कट्टरपंथी थे जो अपने समुदाय को इस्लामी ढांचे के अन्दर फिर से लौट पड़ने के लिए आग्रह कर रहे थे तो दूसरी ओर ऐसे लोग थे जिन्होंने मुस्लिम समुदाय की इस्लामी पहचान को ऐसी पहचान के अंतर्गत रखने को कहा जिसमें सभी धार्मिक समानताएँ विलीन हो जाती हैं। दोनों ही रास्ते गलत थे और दोनों ही रास्ते खतरनाक थे।

इस संकट में मौलाना आजाद ने जम कर काम किया। कई दृष्टियों से यह उनके लिए सर्वोत्तम समय था। अपने व्यक्तित्व में, अपनी मनोस्थिति में और अपनी गहरी देशभक्ति में उन्होंने इस्लाम के श्रेष्ठ तथा भारतीय सभ्यता के गुणों का एक साथ समावेश किया। उन्होंने भारत के मुस्लिम समुदाय को यह बताया कि वे किस प्रकार अच्छे मुसलमान होने के साथ साथ अच्छे भारतीय भी हैं। उन्होने भारत के अन्य समुदायों को यह दिखा दिया कि "भारतीय मुस्लिम" का क्या अर्थ होता है।

देश के बंटवारे के भयंकर दौर के वावजूद भारत धर्मनिरपेक्ष बना रहा। इसके पीछे मौलाना आजाद के नेतृत्व और उनकी राजनितिक सूझबूझ के गुण थे। उनका व्यक्तित्व भारत की मिली-जुली संस्कृति का जिसने उन्हें भारतीय एकजुटता का प्रतीक बना दिया था मानवीकरण था। भारत के विभाजन के कुछ ही महीनों बाद दिल्ली के जामा मस्जिद में अपने एक महत्वपूर्ण भाषण में मौलाना आजाद ने कहा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आइए, हम यह शपथ लें कि यह देश हमारा है, हम इसके हैं और इसके भाग्य के बारे में बुनियादी फैसले तब तक अधूरे रहेंगे जब तक हम उनमें शामिल नहीं होते ।"

"आइए, हम यह शपथ लें कि यह देश हमारा है, हम इसके हैं और इसके भाग्य के बारे में बुनियादी फैसले तब तक अधूरे रहेंगे जब तक हम उनमें शामिल नहीं होते ।"

इस प्रसिद्ध भाषण के लगभग 40 वर्ष बाद हम गर्व के साथ कह सकते हैं कि भारत के मुसलमान भारत के साथ रहे और भारत अपने यहाँ के मुसलमानों के साथ रहा है। हमारा देश विश्व में दूसरा सबसे बडा मुस्लिम देश है। मुसलमानों ने देश के जीवन में पूरी तरह हिस्सा लिया है। मुस्लिम समुदाय और लाखों मुसलमानों ने व्यक्तिगत रूप से आधुनिक भारत का निर्माण करने में, हमारे देश की प्रगति और विकास में अमूल्य योगदान किया है।

भारत की कोई भी उत्तरदायी सरकार, भारत की कोई भी धर्मनिरपेक्ष सरकार, मुस्लिम समुदाय की संवेदनशीलता से अलग नहीं रह सकती। विकास से सभी समुदायों में परिवर्तन आता है। धर्मनिरपेक्षता का मतलब यह है कि समुदाय के अन्दर से बदलाव आए, बाहरी दबाव से नहीं। धर्मनिरपेक्षता का मतलब एक समुदाय की परम्पराओं, रीति रिवाजों और परिपाटियों पर, उस समुदाय की संवेदनशीलता की

हमारी धर्मनिरपेक्षता न तो अधार्मिक है और न ही धर्मविरोधी बल्कि यह सभी धर्मों के प्रति बराबर सम्मान रखती है।

परवाह किए बगैर बाहरी मूल्यों को लादना नहीं है।

हमारी धर्मनिरपेक्षता न तो अधार्मिक है और न ही धर्मविरोधी बल्कि यह सभी धर्मों के प्रति बराबर सम्मान रखती है। हमारी धर्मनिरपेक्षता का तात्पर्य यह है कि राष्ट्र हमें पूजा-पाठ करने की पूरी आज़ादी देता है जबकि यह भी सुनिश्चित करता है कि धर्म के आधार पर किसी प्रकार के पक्षपात या भेदभाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को अनुमति न दी जाए। भारत की धर्मनिरपेक्षता हमारे देश की वास्तविकताओं पर आधारित है। हमारे देश के अनुभव में, हमारे देश के इतिहास और संस्कृति में यह विद्यमान है। हमारी धर्मनिरपेक्षता पुस्तकों अथवा पाठ्यपुस्तकों या विदेशों में लिखे गए शब्दकोशों से नहीं ली गई है।

मौलाना साहब की बुद्धिमत्ता तथा विद्वता ने न केवल मुस्लिम समुदाय बल्कि समूचे देश के प्रति शाश्वत मूल्यों की अंतरदृष्टि में अभिव्यक्त पा ली है। उदाहरण के लिए उन्होंने कहा था—"अनुभव ने हमें सिखाया है कि सांस्कृतिक अथवा धार्मिक मामलों में एकता हासिल करने का एकमात्र रास्ता यह है कि वर्तमान मतभेदों को स्वीकार किया जाए।" इसलिए उन्होंने कहा कि हम महान भारतीय सभ्यता के योग्य उत्तराधिकारी तभी होंगे जब कि हम इसकी सबसे बहुमूल्य धरोहर की रक्षा करें और वह है—"विचार तथा सहिष्णुता की स्वतंत्रता"। उन्होंने भारत की इन धारणाओं के आधार पर स्वतंत्र भारत की शिक्षा व्यवस्था का निर्माण करने को कहा।

हमारी सभ्यता की महानता हमारी आधुनिक राष्ट्रीयता का मूल तत्व है। एक राष्ट्र के रूप में अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए हम अपनी सभ्यता के अनुरूप अपनी राष्ट्रीयता के सभी विभिन्न अंगों के प्रति समान आदर दें। यही कारण है धर्मनिरपेक्षता हमारे राष्ट्रीय अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण है। हमारा देश धर्मों, बोलियों, भाषाओं और सैकड़ों बोलियों का उद्गम स्थल रहा है और यहाँ तमाम संस्कृतियों का संगम हुआ है। इनमें से सभी अपनी-अपनी विशेषताओं और गुणों के आधार पर पहचानी जाती हैं। व्यापक भारतीय पहचान का स्वरूप लेने से उनको अपनी पहचान पर कोई असर नहीं पड़ता। वास्तव में भारत की पहचान इसके अनेक भागों के सम्मिलित रूप से है जो व्यापक समग्र का संघटक होते हुए भी अपने विशिष्ट गुणों को बनाए रखती हैं। विविधता में एकता को इस धारणा को स्पष्ट करते हुए मौलाना आज़ाद ने अपने लेखन के माध्यम से गहरी छाप छोड़ी और अप्रत्यक्ष रूप से आधुनिक भारत के सामयिक चिन्तन पर अपना प्रभाव डाला। मौलाना आज़ाद के सपनों का भारत बनाने के लिए हमें धर्मनिरपेक्षता के सिद्धान्तों और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसको व्यावहारिता के प्रति अपनी अडिग वचनबद्धता को बनाए रखना चाहिए।

मौलाना आज़ाद कई वर्षों तक 'यूनेस्को' से संबद्ध रहे। "यूनेस्को" की स्थापना के समय से ही प्रायः यह नाजुक सवाल बना रहा है कि यह अपने को राजनीतिक विवाद से कैसे दूर रख सकता है और इसकी बुनियादी चिन्ता क्या है जिसके प्रति यह अपनी भूमिका को सीमित रखे रहे। जो भी हो, इतना तो निर्विवाद है कि स्थायी शांति तब तक नहीं हो सकती जब तक मानव मन के अंदर शांति न हो। आज के परमाणु युग में विश्व को पहले की अपेक्षा ऐसी मूल्य प्रणाली की और अधिक आवश्यकता है जो अहिंसा और सहिष्णुता, करुणा, पूर्वाग्रह तथा घृणा से मुक्त होने के सिद्धान्तों पर अधारित हो। शिक्षा-जो यूनेस्को की कार्यसीमा का पहला सूत्र है—एक ऐसी कुंजी है जो आत्मा को पिछले बंधनों से मुक्त कराती है, जो बदलते हुए विश्व में स्थायी मूल्यों का स्रोत तथा प्रेरणा है और सभी को अवसर उपलब्ध कराने वाला है। यूनेस्को की अगली चिन्ता विज्ञान है। विज्ञान ने सभी के लिए सभी जगह

जो भी हो, इतना तो निर्विवाद है कि स्थायी शांति तब तक नहीं हो सकती जब तक मानव मन के अंदर शांति न हो।

समृद्धि को व्यावहारिक संभावना का द्वार खोल दिया है लेकिन यह तभी हो सकता है जब विश्व के संसाधनों का उपयोग विकास कार्यों के लिए हो और इसे अपने विनाश के साधनों में न लगाया जाए। यूनेस्को द्वारा संवर्धित संस्कृति ऐसी होनी चाहिए जो विभाजन करने वाली दीवार न हो बल्कि जोड़ने वाला सेतु हो। यूनेस्को के ये बुनियादी उद्देश्य हैं। हाल के वर्षों में यूनेस्को को कठिन दौर से गुजरना पडा है। अब इसे फिर से सशक्त बनाकर इसकी भूमिका को मजबूत बनाने के प्रयास जारी हैं। मौलाना आज़ाद के इस शताब्दी वर्ष के दौरान हमें इस बात पर लगातार जोर देना चाहिए। उन्होंने न केवल प्राचीन देशों पर बल्कि हमारे देश जैसे नव-स्वतंत्र राष्ट्रों पर यूनेस्को की संभावनाओं के विकास के लिए महत्वपूर्ण योगदान किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक मजबूत, आत्मविश्वासपूर्ण, धर्मनिरपेक्ष भारत, मौलाना साहब के सपनों का भारत था। आइए, उनकी जन्मशती के अवसर पर हम ऐसे ही भारत के निर्माण का संकल्प लें।

मौलाना आजाद के प्रति हमारी सबसे बडी श्रद्धांजलि यह होगी कि हम उन सिद्धांतों और मूल्यों के प्रति वफादार रहें जिनके वे प्रतीक थे तथा जिनका उन्होंने प्रतिनिधित्व किया। एक मजबूत, आत्मविश्वासपूर्ण, धर्मनिरपेक्ष भारत, मौलाना साहब के सपनों का भारत था। आइए, उनकी जन्मशती के अवसर पर हम ऐसे ही भारत के निर्माण का संकल्प लें।

क्षेत्रीय भाषाओं के समाचार पत्रों को प्रोत्साहन देने की योजना

सरकार देश में छोटे, मझोले और भाषायी समाचार-पत्रों के विकास और संवर्धन के लिए वचनबद्ध है। इसके अनुसरण में एक विशेष समिति जिसमें 5 प्रैस संगठनाओं के प्रतिनिधि शामिल हैं, को गठित किया गया है जो कि इनकी समस्याओं पर विचार करेगी तथा सरकार को अपनी सिफारिशें पेश करेगी। देशी भाषा के समाचार-पत्र अधिकांशतः छोटे और मझोले समाचार-पत्रों की श्रेणी में आते हैं।

उपरोक्त जानकारी 22-11-1988 संसदीय कार्य एवं सूचना तथा प्रसारण मंत्री श्री हर किशन लाल भगत ने लोकसभा में श्री जी. एस. वासवराजु तथा दो अन्य सदस्यों द्वारा पूछे गए एक प्रश्न के लिखत उत्तर में दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी लेखकों की पंचदिवसीय कार्यगोष्ठी तिरुवनन्तपुरम में

राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नयी दिल्ली की "पढ़ें और सीखें" योजना के अन्तर्गत हिन्दी लेखकों की एक कार्यगोष्ठी 29 - 11 - 1988 से 3 - 12 - 1988 तक केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम में आयोजित हुई। विद्यालयी अवस्था के बच्चों के अतिरिक्त वाचन के लिए उपयुक्त सरस एवं सरल पुस्तकों की रचना करना इस योजना का मुख्य उद्देश्य है। अब तक इस योजना के अन्तर्गत करीब एक सौ हिन्दी पुस्तकें रची गयी हैं। कार्यगोष्ठी में लेखक, अध्यापक एवं विविध विषयों के विशेषज्ञों के साथ बैठकर अपनी पांडुलिपियों पर विचार विमर्श करते हैं और उन में आवश्यक सुधार करते हैं।

तिरुवनन्तपुरम में आयोजित कार्यगोष्ठी के प्रतिभागी थे भूतपूर्व सांसद श्री. शंकर दयाल सिंह, जामिया मिलिया के हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० मुजीब रिजवी, दिल्ली विश्वविद्यालय के डा० मुकुन्द द्विवेदी, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के श्री. केदारनाथ कोमल, मध्यप्रदेश के डा. पूरन सहगल, श्री. के. एस. खुशवाह, दिल्ली के श्री मानसिंह डैगर, उत्तर प्रदेश के श्री. ओंकार सिंह "निर्भय", कोचिन विश्वविद्यालय के भूतपूर्व अध्यक्ष डा० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर, केरल विश्वविद्यालय की डा० एम. एस. गोमती अम्माल और तिरुवनन्तपुरम सरकारी महिला महाविद्यालय के प्रो० टी. के. भास्कर वर्मा। कार्यगोष्ठी के मानसेवी निदेशक थे केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री एवं केन्द्रीय हिन्दी समिति के सदस्य श्री. एम. के. वेलायुधन नायर। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद के डा० हीरालाल बाछोत्तिया ने कार्यगोष्ठी का समन्वयन किया।

संगोष्ठी में चार पुस्तकों की पांडुलिपियों को अन्तिम रूप दिया गया और कुछ पांडुलिपियों का आंशिक संशोधन किया गया। कार्यगोष्ठी के प्रतिभागियों के स्वागतार्थ 2 - 12 - 1988 को राजभवन में आयो-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी के प्रचार में हो रही प्रगति के साथ साथ हिन्दी का प्रगामी प्रयोग भी हो ।

जित कार्यक्रम में केरल की माननीय राज्यपाल श्रीमती रामदुलारी सिन्हा ने इस बात पर खेद प्रकट किया कि यद्यपि केरल में हिन्दी के प्रति कोई विरोध नहीं है और वर्षों से यहाँ हिन्दी का व्यापक प्रचार हो रहा है तो भी हिन्दी का प्रयोग करने में केरल की साधारण जनता संकोच करती है । उन्होंने आग्रह किया कि हिन्दी के प्रचार में हो रही प्रगति के साथ-साथ हिन्दी का प्रगामी प्रयोग भी हो । इस बात पर आपने संतोष प्रकट किया कि डा० एन. चन्द्रशेखरन नायर जैसे कुछ लेखक हिन्दी में उच्च स्तरीय साहित्य का निर्माण कर रहे हैं ।

डा० हीरालाल बाछोत्तिया के कविता संग्रह "अभी भी" का प्रमोचन श्रीमती रामदुलारी सिन्हा ने किया । डा० मुकुन्द द्विवेदी ने श्री.बाछोत्तिया के कृतित्व पर प्रकाश डाला और कहा कि उनकी कविता में हृदय को स्पर्श करने की क्षमता है । डा० मुजीब रिजवी ने कहा कि श्री. बाछोत्तिया की कविता मन और मस्तिष्क में गुनगुनाहट पैदा करने की क्षमता रखती है ।

3 - 12 - 1988 को आयोजित समापन सम्मेलन का उद्घाटन केरल सरकार के खेल एवं युवाकार्य मंत्री श्री. ए. नीललोहितदासन नाटार ने किया । आपने कहा कि साहित्य का सृजन केवल साहित्य के लिए नहीं बल्कि समाज कल्याण के लिए, समाज सुधार के लिए, सामाजिक परिवर्तन में शीघ्रता लाने के लिए, समाज के नव-निर्माण में सहायता पहुँचाने केलिए किया जाये । सामाजिक और सांस्कृतिक समस्याओं को सुलझाने में साहित्य सहायक हो । उन्होंने इस बात पर खेद प्रकट किया कि हिन्दी भाषी प्रान्तों की साधारण जनता तक साहित्य या समाचार पत्र बहुधा पहुँच नहीं पाता । उत्तर भारत में अनेकों ऐसे स्थान हैं जहाँ दुपहर तक कोई अखबार नहीं पहुँचता । इस

हिन्दी भाषी प्रान्तों की साधारण जनता तक साहित्य या समाचार पत्र बहुधा पहुँच नहीं पाता । उत्तर भारत में अनेकों ऐसे स्थान हैं जहाँ दुपहर तक कोई अखबार नहीं पहुँचता ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थिति में सुधार आवश्यक है। सरल और सरस पुस्तकों के माध्यम से साधारण जनता में ग्रंथ पारायण की रुचि उत्पन्न करनी है ताकि देश के नवनिर्माण में गति आये।

सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए केरल विश्वविद्यालय के उप-कुलपति डा० ए. सुकुमारन नायर ने इस बात पर ज़ोर दिया कि छात्रों में भाषा के कौशल विकसित करने में कक्षाध्यापन से भी अधिक महत्व पाठ्येतर पुस्तकों के वाचन को दिया जाना

पश्चिम में इस दिशा में जो कार्य हुआ है उसकी तुलना में भारत अभी बहुत पिछडा है।

है। पश्चिम में इस दिशा में जो कार्य हुआ है उसकी तुलना में भारत अभी बहुत पिछडा है। विद्यार्थियों केलिए हिन्दी में दो प्रकार की ऐसी पुस्तकें तैयार करनी है—एक प्रकार की पुस्तकें हिन्दी भाषी विद्यार्थियों के लिए और दूसरे प्रकार की पुस्तकें हिन्दीतर प्रान्तों के विद्यार्थियों केलिए। दक्षिण की लोक कथाओं और सांस्कृतिक परंपराओं पर आधारित हिन्दी पुस्तकें ही दक्षिण के विद्यार्थियों केलिए अधिक रोचक हो सकेंगी। ऐसी पुस्तकों की रचना में दक्षिण के हिन्दी लेखकों का अधिकाधिक सहयोग लिया जाये।

भूतपूर्व सांसद एवं हिन्दी के विख्यात लेखक श्री. शंकर दयालसिंह ने केरल वासियों से आग्रह किया कि जिस प्रकार वर्षों पहले जगद्गुरु शंकराचार्य ने केरल से कश्मीर तक के भारतवर्ष को एक बनाये रखने का प्रयत्न अद्वैत द्वारा किया उसी प्रकार आज की पीढी हिन्दी के माध्यम से भारत की एकता सुदृढ करने में योगदान दें। उन्होंने कहा कि बोलचाल की हिन्दी जो फुटपाथ की हिन्दी है बहुत आसान है जिसका बिना संकोच प्रयोग करके हिन्दीतर भाषा-भाषी हिन्दी भाषियों से संपर्क जोड सकते हैं। डा० मुजीब रिज़वी ने सुझाया कि केरल की एक अपनी हिन्दी शैली विकसित करें जो मलयालम शब्दों से भी संपुष्ट की जा सके। डा० मुकुन्द द्विवेदी ने हिन्दी की तुलना उस महासागर से की जिसमें अनेकों प्रान्तीय भाषायें आ मिल सकती हैं। श्री. केदारनाथ कोमल, डा० पूरन सहगल और श्री. ओंकारनाथ "निर्भय" ने अपनी-अपनी कविता सुनायी। डा० हीरालाल बाछोत्तिया ने संगोष्ठी की गति-विधियों का प्रतिवेदन प्रस्तुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया और डा० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर ने संगोष्ठी की उपलब्धियां पर प्रकाश डाला।

श्री. एम. के वेलायुधन नायर ने स्वागत भाषण में सुझाया कि ऐसी संगोष्ठियाँ हिन्दीतर प्रदेश में बार-बार आयोजित करें जिससे हिन्दी लेखकों को हिन्दीतर प्रान्तों की भौगोलिक सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का निकटतर परिचय प्राप्त करने और तद्वारा अपना दृष्टिकोण विकसित करने का पर्याप्त अवसर प्राप्त हो और उस पृष्ठभूमि पर वे अपनी रचनायें हिन्दी में कर सकें। ऐसी रचनायें हिन्दीतर भाषा-भाषियों में हिन्दी के प्रति अधिक अपनत्व उत्पन्न करेगा।

सारे देश में त्रिभाषा फार्मूला लागू किया जाएगा

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के शासी निकाय ने वर्ष 1989 से बोर्ड के सभी स्कूलों में सातवीं से दसवीं कक्षा तक त्रिभाषा फार्मूला लागू करने का निर्णय किया है। केन्द्रीय विद्यालय संगठन और दिल्ली प्रशासन के अधीन कुछ स्कूलों को छोडकर यह फार्मूला इस वर्ष लागू होगा। यह भी निर्णय किया गया है कि संस्कृत और विदेशी भाषाएँ त्रिभाषा फार्मूले के अंक के रूप में नहीं पढाई जाएगी फिर भी संस्कृत, हिन्दी पाठ्यक्रम के भाग "क" के रूप में पढाई जाएगी और इसे एक अतिरिक्त विषय के रूप में भी लिया जा सकता है। यह योजना वर्ष 1989 से केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के सभी स्कूलों में 9 वीं और 11 वीं कक्षाओं के लिए शुरू की जाएगी जबकि केन्द्रीय विद्यालयों में यह इसी वर्ष से लागू हो गई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसी यात्रा कि थक गया: लेकिन आँखें नहीं भरीं

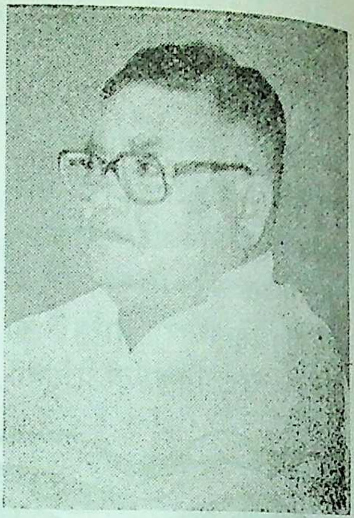

श्री. शंकर दयाल सिंह

तीन दिन हो गए और दो रातें, लेकिन अभी भी मंजिल दूर है। कितना बड़ा देश है यह कि एक छोर से दूसरी छोर जाओ तो हप्ता, दस दिन लग जाए। बिहार से उत्तर प्रदेश लांघकर दिल्ली आया, यहाँ केरल-एक्सप्रेस पकड़कर त्रिवेन्द्रम के लिए चला। रास्ते में हरियाणा, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, आंध्र, महाराष्ट्र, तमिलनाड, कर्नाटक यानी आधा भारत छान गया, तब पहुँचा केरल।

रास्ते में पहाडों की शृंखला, घनघोर जंगल, अनेक नदियाँ, शहर, गाँव, कस्बे, धान के लहलहाते खेत, निगौनी करते किसान, कवडी खेलते लड़के, हाथ हिलाते बच्चे, लाज बचाकर नित्य क्रिया से निपटती महिलाएँ और बेशर्मी को ताक पर रखकर गाड़ी की ओर निहारते हुए पुरुषत्व का प्रदर्शन करते हुए किशोर-नवजवान अथवा बुजुर्ग-बूढे भागती गाड़ी से देखकर ऐसा लगता है कि संस्कृति और संस्कार ही नहीं बल्कि देश का भूगोल भी एक दूसरे से भिन्न नहीं है।

वैसे शायद ही कोई गाँव-कस्बा ऐसा नजर आए जहाँ कोई न कोई मंदिर का शिखर या फिर मस्जिद का गुंबज न दिखाई दे जाए। भाषा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाव, रहन, सहन, बोलचाल, खान, पान सबमें भिन्नता होते हुए भी सांस्कृतिक और धार्मिक रूप से भारत कितना अभिन्न है, इसका भान तभी होता है, जब कोई बाहर, निकले और दो-चार-दस प्रांतों की धार्मिक स्थलों की, तीर्थों, की, सांस्कृतिक नगरों की या फिर आज के बड़े औद्यागिक शहरों का दौरा करे।

सच में कल्पना कीजिए कि बिना नहाए-धोए तीन दिनों से लगातार चल रहा हूँ या यह कहना ज्यादा सटीक होगा कि गाड़ी भागी जा रही है और मैं एक कूपे में बंद हूँ. जिसे चलते-फिरते कमरे का रूप मान सकते हैं। यह तो गत मत की बात है कि इस बार भगवान ने सुबुद्धि दी कि पत्नी भी साथ में है और फर्स्ट क्लास के कूपे में बाहर की दुनियाँ देखते-भालते रास्ता कट रहा है। त्रिवेन्द्रम जाते-आते छ: दिन और छ: रातों की यात्रा, थका देने वाली है, लेकिन पत्नी साथ थीं तथा बतिआने के लिए घर-गृहस्थी तथा दीन-दुनियाँ की अनेक बातें थीं, इसलिए रास्ता ऐसा कटा, जैसा शादी के बाद एक-दूसरे को निहारने में कट जाता था। बार-बार

बार-बार राजकपूर के उस फिल्म की पंक्तियाँ याद आती रहीं, जिसमें दोनों कमरे में बंद हो गए थे और चाभी खो गई थी।

राजकपूर के उस फिल्म की पंक्तियाँ याद जाती रहीं, जिसमें दोनों कमरे में बंद हो गए थे और चाभी खो गई थी।

आंध्र और तमिलनाड की धरती को पारकर ज्यों हमने केरल में प्रवेश किया—वहाँ की नारियल, सुपारी, केले और ताड़ के वृक्षों ने हमारी अगवानी की। एक-एक इंच पर पसरी हरियाली ने हमारा स्तवन किया। वृक्षों लताओं के बीच में घूँघट की ओट बहू के मुखड़े की तरह बने छोटे-छोटे घरों ने हमें ललचा कर रख दिया। सफाई, सुधरता, सुरुचिपूर्णता के कायल हम रेल से ही उनके मुखड़े को झांककर निहाल हो गए।

केरल से कश्मीर तक देश के फैलाव, बनाव, भौगोलिक-सामाजिक और धार्मिक-आध्यात्मिक स्थितियों के गीत हजारों बार हम सब ने गाए हैं, लेकिन सही भाव तभी होता है या अनुभूति होती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब हम केरल और कश्मीर दोनों को अपनी आँखों निहार लेते हैं। कहना कठिन होता है कि खूबसूरती और सुषमा-सौंदर्य के साए में हम किसे अधिक नम्बर दें। कश्मीर में

कश्मीर में केसर की सुगंध है तो केरल में नारियल-जल की मधुरता। कश्मीर में बर्फानी चोटियों की भरमार है, तो केरल में समुद्री लहरों का अल्हड़पन! कश्मीर में अमरी सेव की लाली है, तो केरल में सुपारी वृक्षों की मनभावन कतारें।

केसर की सुगंध है तो केरल में नारियल-जल की मधुरता। कश्मीर में बर्फानी चोटियों की भरमार है, तो केरल में समुद्री लहरों का अल्हड़पन! कश्मीर में अमरी सेव की लाली है, तो केरल में सुपारी-वृक्षों की मनभावन कतारें। कश्मीर की सुषमा का जयगान यदि हिमालय-शिखरों की धवल चोटियाँ करती हैं, तो केरल के सौंदर्य का बखान अरब-सागर की लहरों का उत्ताल तरंग है। कश्मीर की कीर्त्ति-पताका यदि अमरनाथ और वैष्णव देवी के मन्दिर हैं, तो केरल की कन्याकुमारी तथा पद्मनाभ मंदिर भी किसी मानी में कम नहीं हैं। वहाँ लोग खैरभवानी तथा मार्तण्ड मंदिर का दर्शन कर पवित्र होते हैं, तो यहाँ भी शबरीमला तथा विवेकानन्द शिलाखंड लाखों यात्रियों को आकर्षित करता है। इस प्रकार मानकर चलना होगा कि कश्मीर से लेकर केरल तक की विशाल भूमि भारत माता के लहराते आंचल का वह जागरूक तिलस्म है—जिसके कारण भारत अखंड और अविछिन्न है। तभी तो आचार्य शंकर का जयघोष केरल से चलकर कश्मीर तक पहुँचा था यानी सागर से शिखर तक भारतीय संस्कृति का जयघोष कल्पना या भावना न होकर एक सच्चाई है, जो न कभी घटती है, न मरती है। वरन् अखंड दीप के समान प्रज्वलित होती रहती है। प्रकृति ने यदि दोनों को अपने हाथों सजाया-संवारा है, तो पुरुषों ने उसे महिमामंडित किया है। केरल के शंकराचार्य से लेकर कश्मीर के आचार्य विश्वनाथ-मम्मट और राजशेखर तक ने ज्ञान-ध्यान-प्रकृति और पुरुष की चेतना का जो मार्ग भारत को दिखलाया, वह आज तक हमारा मार्ग-दर्शक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तभी तो आचार्य शंकर का जयघोषी केरल से चलकर कश्मीर तक पहुँचा था यानी सागर से शिखर तक भारतीय संस्कृति का जयघोष कल्पना या भावना न होकर एक सच्चाई है, जो न कभी घटती है, न मरती है।

ऐसी ही केरल की धानी धरती पर पहुँचकर हमें ऐसा लगा मानों तीन दिन चले हों या तीन साल-जैसा कि शंकर चले थे, यह समय हमने जाया नहीं किया और जीवन की सार्थकता यही है कि हम अपने देश को जानें। देश को जानने का मतलब यह नहीं होता कि किसी नक्शे में इसका शक्ल निहारें या फिर राजनेताओं के मुंह से 'केरल से कश्मीर तक' और 'गुजरात से अरुणाचल तक' की गुहार सुनें। बल्कि इसके लिए कुछ हिम्मत करें, आगे बढ़े, निकलें, निकालें—रात-दिनकी चिन्ता-चिन्तक-जलालत और एक तरह की जिन्दगी से अपने को बरी करें और निकल जाएँ एक ऐसे सफर पर, जिस के बाद हमें भान हो कि हमने अपने देश को जान लिया। उन बेचारों के लिए यह संभव नहीं है, जो रात-दिन रोजी-रोटी की फिक्र में ही जिन्दगी का अधिकांश हिस्सा गुजार रहे हैं या जिनके हिस्से में घर की चहार-दिवारी से बाहर जाना लिखा ही नहीं है। लेकिन मुझे दया आती है उन लोगों पर जो 'इन्दिरा विकास बोर्ड' से लेकर 'जीवन बीमा निगम' के 'जीवन धारा' तक और मकान-प्लाट से लेकर इधर का माल उधर करने में ही जिन्दगी बिता देते हैं, लेकिन यह नहीं समझ पाते कि जिन्दगी केवल सिमटने का नाम नहीं है, इसके अलावा भी कुछ और है। क्या खच पड़ता है इसमें शायद हजार, दो हजार, चार हजार रुपये। जबकि मैं यह देकर हैरान रहता हूँ कि हमारे अपने ही गाँव में दस-बीस ऐसे लोग होंगे, जिनके शरीर पर वस्त्र हो या न हो, लेकिन साल भर में उनके पीने का खर्च तीन-चार हजार से कम नहीं होता होगा। काश, यह बोतल की राशि ही हमारे देश के लोग भारत को जानने-समझने में खर्च कर देते, तो उनका और देश का कितना बड़ा लाभ होता।

छोड़िए इन विवेक-ज्ञान की बातों को। सीधे पहुँचिए कन्याकुमारी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत का अंतिम छोर, जहां एक ओर से बंगाल की खाडी, दूसरी ओर से अरब सागर और तीसरी ओर से हिन्द महासागर की लहरें एकजुट होकर भारतमाता के पांव पखारती है—वह दृश्य जैसा मन-भावन है, उसे कोई शब्दों का जामा पहनाना भी चाहे, तो न पहना पाएगा। हज़ारों लोग प्रतिदिन भारत के उस अंतिम छोर पर खड़े होकर सूर्योदय और सूर्यास्त का मनोहर दृश्य देखते रहते हैं, जिसे देखकर न तो आँखें भरती हैं और न दिल संतुष्ट होत है। प्राची से निकलने वाला सूरज लाल पिंड के समान गोलाकार जब निकलता है तो ऐसा मान होता है मानों समुद्र के गर्भ से धरती के अभिषेक के लिए कोई देव-पुरुष अरुणाभा लिए प्रकट हो रहा है। और वही जब संध्या में थका-मांदा घर लौटने की तैयारी करता हुआ उदास सा समुद्र के गर्भ में भी विलीन होने लगता है, तो उसकी सिन्दूरी ललाई की उदासी किसी विधवा की मांग के घुलते लाली का मान करा देते हैं। एक ही सूरज, लेकिन कितना अंदर है उसके उगने और डूबने में। मेरा शाश्वत मन दोनों के लिए समान रूप से लालायित रहता है। हर निष्ठावान प्राणी उगते और डूबते दोनों सूरज को समान श्रद्धा के साथ प्रणाम करता है।

कन्याकुमारी के आकर्षण का सबसे बडा केन्द्र इन दिनों वह शिलाखंड है, जिस पर ध्यानावस्थित होकर स्वामी विवेकानन्द ने भारत के उस विराट स्वरूप की कल्पना की थी, जो वेदान्तों तथा देव शक्तियों पर आधारित है। आज भी वहां स्वामीजी की आत्मा भटकती हुई दिखाई देती है। दूर-दूर से हज़ारों नर-नारी जिस भांति कन्याकुमारी के दर्शनों के लिए आते हैं, उसी श्रद्धा के साथ विवेकानन्दजी की शिला पर एकनिष्ठता के साथ खड़े होकर रोमांचित हुए बिना नहीं रहते। उनकी भव्य मूर्ति, स्वर्णभाल लिए, लगता है कि जब बोलेंगी तब बोलेंगी। कितनी जीवन्तता है उसमें।

कन्याकुमारी तमिलनाड का अंग है, अतः केरल के वास्तविक सौन्दर्य को देखने के लिए कोवलम जाना ज़रूरी है। समुद्र का वह शांत-समुन्नत तट इस समय सैलानियों का बहुत बड़ा अड्डा है। देशी और विदेशी सैकड़ों-हज़ारों भ्रमणकारी सुबह से शाम तक समुद्र के इस किनारे के एक-एक रेत की परत को अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल में हिन्दी का बढ़ता प्रयोग

मार्क्सवादी साम्यवादी दल का 13-वाँ 'अखिल भारतीय सम्मेलन' जब तिरुवनन्तपुरम में आयोजित हुआ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूसी कलोत्सव

तिरुवनन्तपुरम में नवंबर 1988 में रूसी कलोत्सव
धूमधाम से मनाया गया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पदचापों से मुखरित करते रहते हैं। कोवलम समुद्र तट पर खड़े होकर कई बार मैं ने यही सोचा है कि समुद्र यदि अपनी मर्यादा त्याग दें तब क्या हो? हर वर्ष देश की दर्जनों नदियों में बाढ और उससे होने वाले संहार की बातें आम हैं। लेकिन यह सागर, जहाँ सभी नदियाँ आश्रय पाती है, फिर भी नहीं उबलता, न तो अपनी बांध तोड़ता है और न अतिक्रमण करता है, वह यदि अपने आपको कभी उकसा दे, तब क्या हो? प्रलय या महाप्रलय? लेकिन उसके साथ ही कहीं से स्वयं ही उत्तर भी पाता हूँ कि समुद्र अपनी सीमा का अतिक्रमण इसलिए नहीं करता है, क्योंकि वह गौरवशाली है, धीर है, गंभीर है, रत्नखचित है, अमृतमय है और अगाध-अनन्त है। मर्यादा तो वे खोते हैं, जो छिछले होते हैं। सागर छिछला नहीं है। और वह जो अपनी मर्यादा खो दे, तो फिर शेष क्या रह जाएगा।

केरल या कश्मीर पहुँचकर ही देश की भव्यता का सही मान होता है। यहाँ तीन धर्मों की जागरूकता भी स्पष्ट रूप से देखने में आती है— सनातन धर्म यानी हिन्दू-धर्म, मुस्लिम-धर्म और क्रिश्चियन धर्म। सबका संगमस्थल है यह प्रदेश। हर और मंदिर, मस्जिद तथा गिरजाघर दिखाई पड़ते हैं। कहीं-कहीं तो साथ-साथ। लेकिन एक अच्छी बात यह है कि इनमें सहिष्णुता है. आपस में भाइचारा है और यदि कहीं इनके बीच रस्साकस्सी है तो वह है राजनीतिक मंच पर। राजनीति में धर्म का जितना वड़ा प्रवेश केरल में हैं, शायद देश के और किसी कोने में नहीं।

शिक्षा के क्षेत्र में केरल आज देश का सबसे प्रबुद्ध भू-भाग है। यहाँ 70 प्रतिशत से अधिक साक्षरता है। इसमें भी महिलाओं की शिक्षा पुरुषों से अधिक है। हमने पाया कि जहाँ कहीं भी गए वहाँ स्कूलों-कालेजों, विभिन्न प्रकार के शैक्षणिक-संस्थानों की भरमार है। बच्चे-बच्चियों का समूह हर जगह स्कूली वस्त्रों में सजा-संवरा तितलियों के समान देखने को मिला।

प्रकृति ने इस धरती-विशेष को सजाया-संवारा है और पुरुषों-महिलाओं ने इसे महिमा मंडित किया है। अत: यहाँ आकर जहाँ एक और यह मान हुआ था कि यात्रा करते-करते थक गया हूँ, वहीं यह देखकर विश्वास होने लगा है कि जितना देखा-सुना उससे मन नहीं भरा है। ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूँगफली

मूल : श्रीमती कमला दास
अनुवादक: श्री. के. राधाकृष्णन,
अयिरूर

[पंजाब के हत्याकांड पर आधारित एक कहानी]

जस्मीत अहलुवालिया अपनी चार साल की बेटी बिट्टु को अभी अभी नहाकर लायी ही थी, तब तक एक आटो रिक्शा घर के सामने आकर रुका। गुरदासपुर से उसको माँ साल में एक बार बेटी से मिलने आया करती है। आज भी वैसे ही आयी थी। "माँ, आप तो गुरु नानक जयन्ती के दो दिन पहले ही आया करती थी" आश्चर्य भाव से जस्मीत बोली। "मुझे ख़ुशी है कि आप इस बार कुछ दिन पहले ही आयी हैं।"

"दो दिन पहले मैं ने एक अजीब सपना देखा" रंगा हुआ ट्रंक लेकर रिक्शा से उतरते हुए माँ बोली। 'मैं ने सपना देखा कि प्यारी बिट्टु मुझे देखने केलिए रो रही है।"

जस्मीत की पकड छुडाकर बिट्टु ने दौडकर वृद्धा के पैरों को पकड लिया।

'रेलवे स्टेशन में जितना वादा किया था, उससे एक पैसा भी ज्यादा नहीं दूँगी' माँ रिक्शावाले से बोली। मैं एक बूढी विधवा हूँ, गुरदासपुर में अकेली रहती हूँ। दूध बेचकर किसी तरह गुजारा करती हूँ। मै तुमको पाँच रुपये ही दूँगी, एक पैसा भी ज्यादा नही दूँगी।'

'मैं ने तो एक पैसा भी ज्यादा नही माँगा, दादी माँ, सलवार की मोड के नीचे से दिखाई पडनेवाली जास्मीत को स्वर्णिम रंग के पैरों के एक हिस्से पर घूरते हुए उसने कहा। "अगर मुझे पैसा नहीं लेना है तो आप कह दीजिए। मैं एक शब्द भी बोले बिना चला जाऊँगा।'

छाती के अन्दर से बुढिया ने कपड़े का एक बटुआ निकाला, उसमें से पाँच रुपये का एक नोट निकालकर उसको दे दिया। फूला हुआ बटुआ देखकर जस्मीत को खुशी हुई। रिक्शा गली में कुछ दूर जाकर रुक गया। जस्मीत ने माँ से चाय पीने केलिए कहा। बुढिया नाराज हो गई। 'मैं ने तुम से कितनी बार कहा है कि चाय त्वचा केलिए ठीक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं। अभी तुम्हारी उम्र तीस भी नहीं हुई, फिर भी तुझे देखने से लगता है कि तुम कितनी बुढिया हो गयी हो। तुम्हारा लाल सुनहरा रंग सब खत्म यो गया। क्या तुम लस्सी नहीं पीती हो? रोहिणी (गाय) मुझे रोज अठारह पिंट दूध देती है तुम्हें मालूम है। एक दो लिटर मैं खुद लेती हूँ बाकी बेचती हूँ। ईंट के समान जमा हुआ एक टिन घी मैं तुम्हारेलिए लायी हूँ। बिट्टु के नाम से पोस्ट ऑफीस में एक खाता खोलने केलिये तीन सौ रुपये भी।

"माँ, आप हमें दिल खोलकर मदद करतो हैं।" बुढिया की विशाल गोद में बेटी को चढते देख जस्मीत बोली।

तुम्हारा पंडित पति मास्टरजी कैसे है?" बुढिया ने पूछा। "अभी भी नौ बजे रात तक देर करता है, क्या?

"माँ, आप खुद जानती हैं कि वे कितनी अच्छी तरह मेरी देखभाल करते हैं। वे न तो बुरी औरतों से मिलने जाते हैं और न शराबखाने में जाकर पाते हैं। मुझे और मेरी बेटी को पालने केलिए ट्यूशन पढाने जाते है। एक बच्चे को पढाने के उन्हें साठ रुपये मिलते हैं। सच पूछिये तो स्कूल में आठ घंटे पढाने पर जितना पैसा मिलता है, उससे ज्यादा पैसा उन्हें छः घर में ट्यूशन पढाने से मिल जाते हैं।"

"जमाना खराब है, बेटी। शाम को तुम्हें अकेला छोडना ठीक नहीं है।"

"लेकिन यहाँ डरने की तो कोई बात नहीं है, माँ। गली में सब लोग इन्हें जानते हैं। यहाँ हम लोगों को तंग करनेवाला कोई नहीं है।"

"यहाँ दूसरे मज़हब के लोग भी रहते हैं" बुढिया ने कहा। "हिन्दू लोग भी हैं।"

"हिन्दुओं से क्या तकलीफ है, माँ? वे लोग भी उतने अच्छे और उतने खराब हैं जितने सिख लोग हैं।"

"खैर, तुम ने सिखों पर गलती ढूँढना शुरू कर दिया है, क्या?" आँखें सख्त करके माँ ने डाँट दिया।

"हिन्दुओं से क्या तकलीफ है, माँ? वे लोग भी उतने अच्छे और उतने खराब हैं जितने सिख लोग हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हें मालूम है कि अकाल तख्त में क्या हुआ था। ऐसी एक कार्रवाई को कैसे माफी दी जा सकती है ?

दिल की धडकन थोडा कम करने के विचार से उसने छोटी मुन्नी को छाती से लगा दिया। पिछले कुछ महीनों से हमारे जातवाले पर क्या हो रहा है, यह बात क्या तुम्हें मालूम नहीं हैं, जस्मीत ? तुम्हारा पति मास्टरजी अखबार नहीं पढता है, क्या ? तुम्हें मालूम है कि अकाल तख्त में क्या हुआ था। ऐसी एक कार्रवाई को कैसे माफी दी जा सकती है ?

"मैं यह सब बातें नहीं जानती, माँ," युवती बोली। मैं राजनीति को लेकर परेशान होनेवाली नहीं हूँ। मैं बच्ची को देखभाल करती हूँ। पति को खाना खिलाती हूँ। सिर्फ यही है मेरा कर्तव्य। देश के शासन का काम प्रधान मंत्री करें।

"बहुत अच्छा, बढिया भाषण दिया तू ने। तुम्हें किसी चीज़ में रुचि नहीं है। ऊपर से तुम आलसी भी हो, यही तुम कह रही हो ?"

"मूँगफली, मूँगफली " फेरीवाले ने घर के सामने आकर शोर मचाया। "हमारी [illegible] बेटी बिट्टु के लिए चना भी है।" नातनी को जल्दी में गोदी से उतारकर बुढिया ने पूछा - "कौन है ?"

चनावाला करीब सत्तर साल का एक बूढा था। सिर पर एक टोकरी थी। घर के सामने आकर उसने टोकरी उतारा और उजाला रहित घर के अन्दर की ओर देखकर कहा - "बहनजी, चूल्हा जलाया है तो मुझे थोडा गरम पानी दीजिये। बहुत ठंड है। ऐसा लगता है कि मेरी छाती में कुछ फँस रहा है। अन्दर से खाँसी का स्वर सुनाई पडता है। तेल की चक्की घूमने पर जो आवाज सुनाई पड़ती है, वैसा स्वर।"

"मेरी बेटी से गरम पानी माँगने का साहस तुम्हें कैसे हुआ? इस घर में इतना अधिकार दिखानेवाले तुम कौन हो ?"

चनावाला बुढिया को देखकर मुस्कुराया और कहा—"बूढी माँ, इस गली में सब लोग मुझे जानते हैं। लगता है आप पहली बार मुझे देख रही हैं। ढाका का गुरुचरण हूँ, लेकिन विभाजन के बाद से मैं दिल्ली में रहता हूँ। मेरी इकलौती बेटी सीता मुसलमान प्रेमी के साथ भाग गई है। मजहब, रिस्ता कुछ भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसको रोक न सका । उसने इस्लाम धर्म अपनाया और उससे शादी कर ली । वह मुझे चिट्ठी तक लिखती नहीं । जिस दिन उसने अपने प्रेमी के बारे में मुझसे कहा था, उस दिन मैं ने उसकी बहुत पिटाई की थी । इसलिये वह अपने पिता को भूल गई । लेकिन अब जब भी मैं उसकी उम्र की लडकियों को देखता हूँ तो उसकी याद आती है और मैं रोता हूँ । जस्मीत बहनजा, मैं अक्सर रोया करता हूँ, न ?

'हाँ, हाँ, सच है'' जस्मीत बोली । ''चना कहाँ है ?''

भीगे कपडे में उभरे हुए उरोजों को दिखाती दीवार के सहारे बैठी हुई जस्मीत को देखकर बुढिया ने सोचा, यह आदमी जरूर एक शैतान है ।

उसने टोकरी के ऊपर से लाल रंग का कपडा उठाकर चमकता चना निकाला । बुढिया सब कुछ चुपचाप देख रही थी । उसने टोकरी में से अंगीठी निकालकर नीचे रखा । अंगीठी में कोयला डालकर तपाया । मूँगफली भूनने की गंध आस पास बिखर गई । बिट्टु ने भी गंध सूँघा ।

''चाचाजी, मुझे थोडा सी मूँगफली दीजिये'' छोटी लाल लाल हथेली फैलाकर वह मीठे तुतले स्वर में बोली । चनावाले ने उसका हाथ पकडा और एक एक उँगली को प्यार से चूम लिया । ''हाँ सोना बेटी, तुमको मूँगफली दूँगा'' हँसते हुए उसने कहा । उसके सामने का एक दांत गिर चुका था । बाकी पान खाते खाते लाल रंग के हो गये थे । भीगे कपडे में उभरे हुए उरोजों को दिखाती दीवार के सहारे बैठी हुई जस्मीत को देखकर बुढिया ने सोचा, यह आदमी जरूर एक शैतान है । ''मूँगफली ले लो और उसको जाने दो'' बुढिया गुर्रायी । ''इस भले आदमी को अपना माल कौलोनी के और लोगों तक भी पहुँचाने दो ।''

''बूढी माँ, मुझे कोई जल्दी नहीं है'' चनावाला बोला । ''मुझे पैसा भी नहीं चाहिये । पूरे एक साल तक आराम से जीने का पैसा घर में एक टिन में बंद किया हुआ है । लोगों से मिलने केलिये ही मैं मूँगफली बेचने निकलता हूँ । घर पर मैं अकेला हूँ । मेरे घर में हँसी नहीं है । बाहर निकलने से मैं बच्चों की हँसी सुन सकता हूँ । औरतों की कोमल बातें सुन सकता हूँ । जब ये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब सुनता हूँ, मुझे बहुत दुखी होती है ।"

मैं तुम्हारी गलती नहीं ढूँढ रही थी" उसकी आत्मीयता को सुनकर बुढिया शांत हो गयी थी । वह बोली—"मैं अपनी बेटी को याद दिला रही थी कि अनजान आदमी पर विश्वास नहीं करना चाहिये । ज़माना बदल गया है । खासकर हम सिखों केलिये । हम सिखों के पीछे लोग बिलावजह पडे हैं ।"

"इधर हम लोग सुरक्षित हैं, माँ" जस्मीत बोली । सब लोग हमको प्यार करते हैं । आपको और क्या बताना है, बिट्टु के पिताजी के दोस्त लोग सब हिन्दू हैं । शुक्लजी और देवीदयाल उनके खून के भाई जैसे हैं । उनकी तबीयत खराब होने से वे लोग पूसा रोड के मद्रासी डॉक्टर के यहाँ से दवा खरीदकर देते है और दिन में दो बार आकर देख जाते है ।"

"देखिये, मास्टरजी लौट रहे हैं" चनावाला चिल्लाया । वे क्यों भाग रहे है ?"

सडक से घर की ओर दौडकर आते पति को जस्मीत भी देख रही थी । "क्या हुआ ? उसने पूछा । उसकी आवाज़ अचानक ऊँची हो गयी । ":स्कूल में आग लग गयी है, क्या ?

'उन के निजी अंगरक्षकों ने ही उन्हें गोली मार दी । दोनों हत्यारे सिख हैं । अब सिख लोगों को दूसरे लोग मार रहे हैं ।

उसके पति ने आंगन में चारपाई पर बैठकर पगडी खोली । उसका पसीना देखने से लगता था कि सर्द हवा बर्फ पैदा करनेवाला सर्दी ही लाया हो । "बेटा तुम्हें कुछ हुआ, क्या ?" बुढिया ने पूछा । तुम्हें देखने से लगता है कि तुमने कोई भूत देखा हो ।"

"नहीं माँ, भूत नहीं । भूतों से ज्यादा डरावना लोगों को मैं ने देखा है । हम जैसे लोगों को वे मार रहे थे । उनको ....उनको उन्होंने मार डाला ।

"किनको मारा ?" बुढिया ने पूछा ।

"मुझे थोडी और मूँगफली दीजिए, चाचाजी" बिट्टु बोली ।

"इन्दिरा गांधी को" युवक ने कहा ।

"यह तो ईश्वर का फैसला है" बुढिया बोली । "अकाल तख्त में सेना भेजते समय उन्होंने और क्या इंतजार किया होगा ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"चुप रहिये, माँ" जस्मीत बोली। "आप खुद नहीं जानती हैं कि आपको क्या कहना चाहिए।"

"उन के निजी अंगरक्षकों ने ही उन्हें गोली मार दी। दोनों हत्यारे सिख हैं। अब सिख लोगों को दूसरे लोग मार रहे हैं। शहर में ढ़ेर सारे लोगों को मार रहे हैं। मैं यहाँ तक भाग आया। मुझे डर लग रहा था कि कहीं वे लोग यहाँ भी न आ गये हों।"

"कौन? सिखों को कौन मार रहा है?" बुढिया ने पूछा। बोलो, प्रीतम, कौन सिखों को मार रहा है? हिन्दु लोग?

"मुझे मालूम नहीं, माँ"

"ऐसा क्यों फैसला कर रही हो कि वे हिन्दू ही होंगे?" मुन्नी को चना देते हुए चनावाले ने पूछा।

"हम लोग क्या करेंगे?" जस्मीत ने पूछा। "वे लोग इधर आ गये तो हम क्या करेंगे?"

"उतने सारे लोगों के खिलाफ हम क्या कर सकते हैं?" उसके पति ने सवाल किया।

"यह तुम क्या कह रहे हो, बेटा?" बुढिया ने शोर मचाया। "हिन्दू लोग तुम्हारी बीबी को तंग करेंगे तो उसे बचाने केलिये तुम कुछ भी नहीं करोगे? तुम बहुत डरपोक हो। तुम मर्द नहीं हो। सिख जाति का तुम एक कलंक हो।"

"माँ, उनको ऐसी गाली नहीं दो" जस्मीत बोली। "पिछले साल भी मैं ने कहा था कि आपका इस प्रकार बिट्टु के पिताजी को गाली देना मैं सुन नहीं सकती।"

"ठीक है, बेटी। मैं फरियाद नहीं करती। मैं तो एक बूढी हूँ। मैं जानती हूँ कि किसी को मेरी ज़रूरत नहीं। मैं तुम्हें घी और तीन सौ रुपये......"

"भाग जाओ, घर के अन्दर घुस बैठो" चनावाला चिल्लाया। "लोगों की भीड आ पहुँची है।"

उसने जस्मीत को घर के अन्दर ढकेल दिया। बच्ची को टोकरी में बिठाकर लाल कपडे से ढक दिया।

"साडी पहनकर पीछे के दरवाजे से बाहर आइये, बहनजी" वह जस्मीत से बोला।

"आप उसको कहाँ ले जायेंगे, गुरुचरणजी?" उसके पति ने पूछा। "आपकी बीवी और बच्ची को मैं अपनी गली में ले चलूँगा। मैं सब को यही कहूँगा कि मेरी बेटी पाकिस्तान से वापस चली आई है। बाल कटवाकर खुद को बचाने की कोशिश कीजिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आपकी बीबी और बच्ची को मैं अपनी गली में ले चलूँगा। मैं सब को यही कहूँगा कि मेरी बेटी पाकिस्तान से वापस चली आई है।

"मेरा क्या होगा?" बुढिया छाती पीटकर रो रही थी।

भीड घर के करीब आ रही थी। जहाँ गली शुरू होती है वहाँ उनके दोस्तों के पाँच छ: घरों को उन्होंने आग लगा दी थी। शिशिर की धूप में आग की लपटें पहले तो फीकी थी, बाद में लाल रंग की हो गयीं। "खून के बदले खून" लोग गरज उठे।

दामाद को ढकेलते बाहर आँगन में निकालकर बुढिया चिल्ला उठी— "जाओ, उनका सामना करो। तुम नपुंसक हो! डरपोक मत बनो। तुम एक सरदार हो। यह बात कभी भूलना नहीं।

घर के अन्दर घुसकर उसने दरवाजे की छिटकनी लगा दी। चनावाला जस्मीत और बिट्टु को लेकर चल दिया था। बुढिया चुपचाप उसको कोस रही थी।

आँगन में पैरों की आहट नज़दीक आ गई। "भाइयो मैं ने आप लोगों को क्या किया, क्या बिगाड़ा?" कांपते स्वर में उस सिख युवक ने पूछा।

दो बार दामाद का आर्त्तनाद बुढिया ने सुना। उसके बाद लोगों द्वारा उसे गाली देना भी सुना। उन्होंने घर को आग लगा दी। कोई शोर मचा रहा था। लेकिन उसको लगा कि उसका पैर धरती पर अटक गया हो। डर ने उसे स्तब्ध कर दिया। ऊँचे स्वर में ईश्वर से प्रार्थना करने की उसकी इच्छा हुई। लेकिन आवाज़ नहीं निकली।

लाजपत नगर में चनावाले के पडोसियों ने कहा—"लगता है पाकिस्तान रहने के लिए अच्छी जगह है। आप ने पहले जो कहा था उसके मुताबिक आपकी बेटी अब चौबन साल की उम्र की होनी चाहिये। लेकिन इसे देखने से तीस साल की भी नहीं लगती है। लगता है पाकिस्तान के लोग अच्छा खाना खाते हैं।

"सीता, ये सब मेरे पडौसी हैं, भले लोग है।" चनावाला बोला। "इन सब को चाय पिलाओ, और मुन्नी को दूध भी।"

"ठीक है, पिताजी ' हामी भरते हुए जस्मीत ने कहा। ★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत सोवियत मैत्री

श्री. राजीव गांधी

[प्रधान मंत्री श्री. राजीव गांधी द्वारा 19 नवम्बर, 1988 को नई दिल्ली में सोवियत राष्ट्रपति तथा सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव महामहिम श्री. मिखाइल गोर्बाचोव को शांति निश्स्त्रीकरण तथा विकास के लिए 1987 का इंदिरा गांधी पुरस्कार प्रदान किए जाने के अवसर पर दिया गया भाषण]

श्री. राजीव गांधी

"भारत के विश्वस्त मित्र, एक महान राष्ट्र तथा मैत्रीमयी जनता के महान नेता और एक श्रेष्ठ विश्वनेता को दो वर्षों में दूसरी बार अपने बीच पाकर हम गौरवान्वित हुए हैं।"

राष्ट्रपति महोदय, शांति, निरस्त्रीकरण तथा विकास के लिए आपके योगदान के लिए आपका अभिनन्दन करने के उद्देश्य से यहाँ सभी वर्गों के भारतीय उपस्थित हैं। आपने जन-साहसिक तथा कल्पनाशील नेतृत्व प्रदान किया है, उससे परमाणु शस्त्रों के आविष्कार के बाद पहली बार विश्व में स्थायी शांति की संभावनाओं का द्वार खुला है। चार दशकों में पहली बार परमाणु शस्त्रों से सम्पन्न देशों ने परमाणु आतंक के संतुलन के विकल्प की तलाश शुरू की है। हमने देखा है कि परमाणु शस्त्रों की एक समूची प्रणाली नष्ट की गई है। अब सामरिक हथियारों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार दशकों में पहली बार परमाणु शस्त्रों से सम्पन्न देशों ने परमाणु आतंक के संतुलन के विकल्प की तलाश शुरू की है। हमने देखा है कि परमाणु शस्त्रों की एक समूची प्रणाली नष्ट की गई है।

में महत्वपूर्ण कटौती की भी संभावनाएँ बन गई हैं। आपने जो मार्ग खोला है, उसका स्वाभाविक परिणाम परमाणु हथियारों की समाप्ति तथा सामान्य एवं पूर्ण निरस्त्रीकरण होगा। इसी के बाद नई विश्व व्यवस्था सामने आएगी। दो वर्ष पूर्व दिल्ली घोषणा के माध्यम से आपने अहिंसा के रास्ते के प्रति अपनी वचनबद्धता प्रकट की थी। इसलिए अहिंसा और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धान्तों के आधार पर नई विश्व व्यवस्था की रचना में आपके सहयोग का हमें पूर्ण विश्वास है।

हम जिस नई विश्व व्यवस्था की ओर देख रहे हैं, वह इंदिरा गांधी के सपनों के अनुरूप होगी। उनके अमर शब्द हैं:

हमारा संसार छोटा है, किन्तु इसमें इतना स्थान है कि हम सब मिलकर शांति और गरिमा के साथ रह सकें और सभी वर्गों तथा जातियों के लोगों का जीवन-स्तर बेहतर बना सकें।"

भारत की सरकार, जनता तथा अपनी ओर से मैं आपको इस वर्ष के इंदिरा गांधी पुरस्कार का योग्यतम प्राप्तकर्ता बनने पर हार्दिक बधाई देता हूँ।

इस ऐतिहासिक मौके पर जब शांति, निरस्त्रीकरण तथा विकास के संदर्भ में इंदिरा गांधी और मिखाइल गोर्बाचोव के नाम साथ-साथ लिए जा रहे हैं, हमारा ध्यान इंदिरा गांधी द्वारा हमारे इतिहास के महत्वपूर्ण दौर में 1971 में सोवियत संघ के साथ की गई शांति, मैत्री और सहयोग की संधि की ओर जाता है।

सोवियत संघ ने ऐसे समय पर हमारे औद्योगिक विकास में सहायता दी जब अन्य देश आतमनिर्भर बनने

"हमारा संसार छोटा है, किन्तु इसमें इतना स्थान है कि हम सब मिलकर शांति और गरिमा के साथ रह सकें और सभी वर्गों तथा जातियों के लोगों का जीवन-स्तर बेहतर बना सकें।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह हमारे दो देशों द्वारा मिलकर तथा अन्यों के सहयोग से विश्व शांति और विश्व सहयोग की दिशा में संयुक्त प्रयासों का संकेत है।

की क्षमता में हमारे विश्वास को डिगाने की कोशिश कर रहे थे। व्यापार की नई पद्धतियाँ अपनाई गईं, जिससे सोवियत संघ व्यापार में हमारा सबसे बड़ा भागीदार बन गया है। सांस्कृतिक आदान-प्रदान तथा वैज्ञानिक सहयोग से दोनों देशों में गहरी मैत्री बनी है। सोवियत संघ हमारा विश्वस्त मित्र बना, इसके लिए हम उसके आभारी हैं।

जैसा आपने सोवियत संघ में किया है, हम भी अपने यहाँ बदलती चुनौतियों तथा परिस्थितियों के अनुरूप नए रास्ते ढूँढ रहे हैं। मन अतीत के बंधनों में बन्दी नहीं बना रह सकता। हम अपने सिद्धान्तों तथा नीतियों पर अडिग हैं लेकिन नई घटनाओं के प्रति हमारा रवैया लचीला है। गरीबी समाप्त करने के लिए हम कृत संकल्प हैं। इस लक्ष्य को पाने में हम पूरी एकाग्रता से जुटे हुए हैं।

तीन दशक से अधिक समय से भारत और सोवियत संघ के संबंध अत्यन्त निकट के रहे हैं। आज पूरे औचित्य के साथ हम यह दावा कर सकते हैं कि निरस्त्रीकरण एवं नई विश्व व्यवस्था के संबंध में नया चिन्तन भारत-सोवियत मैत्री की प्रेरणा से विकसित हुआ है। शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के आदर्श हैं कि किस प्रकार अलग-अलग अर्थ-व्यवस्थाओं वाले दो देश समानता तथा परस्पर सद्भाव और विश्वास के आधार पर घनिष्ठ सहयोग के साथ काम कर सकते हैं। भारत-सोवियत मैत्री से लाभ लाखों को हुआ है किन्तु हानि किसी को नहीं हुई। यह दो देशों की जनता के बीच कई दशकों में पनपा संबंध है। यह इस बात का उदाहरण है कि सद्भाव तथा आपसी विश्वास और सम्मान के माध्यम से क्या कुछ प्राप्त किया जा सकता है। दिल्ली घोषणा से हमारे आपसी संबंधों को व्यापक विश्व संदर्भ मिला है। यह हमारे दो देशों द्वारा मिलकर तथा अन्यों के सहयोग से विश्व शांति और विश्व सहयोग की दिशा में संयुक्त प्रयासों का संकेत है। इसका ऐतिहासिक महत्व उस संदेश में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निहित है जो हम विश्व को देना चाहते हैं ।

हम राष्ट्रपति श्री. गोर्बाचोव के गतिशील नेतृत्व में सोवियत संघ द्वारा विश्व को टकराव संघर्ष तथा तनावों से मुक्त करने के लिए दिए जा रहे योगदान की सराहना करते हैं । विश्व को सुरक्षा की एक व्यापक प्रणाली की आवश्यकता है जिसमें सभी शांति, समानता तथा परस्पर विश्वास के साथ रह सकें । हम इस प्रणाली को विकसित करने केलिए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय, विशेष कर सोवियत संघ के साथ मिलकर काम करने को उत्सुक हैं ।

विश्व को सुरक्षा की एक व्यापक प्रणाणी की आवश्यकता है,जिस में सभी शांति, समानता तथा परस्पर विश्वासके साथ रहसकें।

हमारा काम आर्थिक विकास शांति और सुरक्षा तक सीमित नहीं है । विज्ञान तथा टेक्नोलोजी की प्रगति ने गरीबी दूर करने, सबके लिए अवसरों के द्वार खोलने तथा सबके भौतिक विकास की संभावनाओं को हमारे निकट ला दिया है । परन्तु विज्ञान हमें वो मूल्य नहीं दे सकता जो व्यक्ति तथा राष्ट्र के रूप में पूर्ण जीवन जीने केलिए आवश्यक हैं। आध्यात्मिकता के साथ विज्ञान के मेल से ही पूर्णता आती है। हमारे जीवन को हज़ारों वर्षों तक चिरंतन बनाए रखने वाले मूल्यों से विमुख होकर केवल भौतिक उन्नति से जीवन में संतोष नहीं आ पाता। इसी प्रकार गरीबी दूर करने के उपायों से विमुख होकर केवल आध्यात्मिकता का सहारा लेने का भी क्रूरता और उदासीनता माना जाएगा ।

हमारे जीवन को हजारों वर्षों तक चिरंतन बनाए रखने वाले मूल्यों से विमुख होकर केवल भौतिक उन्नति से जीवन में संतोष नहीं आ पाता।

राष्ट्रपति गोर्बाचोव तथा उनके देश के लोग अपने प्राचीन इतिहास में उन आधारभूत सत्यों से साक्षात्कार कर सकते हैं, जिनके आधार पर महान राष्ट्रों तथा महान संस्कृतियों का निर्माण हुआ है। हम भी विश्व की एक मात्र ऐसी सभ्यता का प्रतिनिधित्व करने वाली अपनी अतीत की परम्पराओं के दर्शन कर सकते हैं, जो विविधता के गुण से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिन मूल्यों की मैं चर्चा कर रहा हूँ, वे हैं—सत्य, अहिंसा, सहिष्णुता, करुणा, विश्वमानवता तथा विश्व एकता।

विभूषित प्राचीनता और निरंतरता का संगम है। अपनी इसी राष्ट्रीय स्मृति के बल पर हम अपने मूलभूत मूल्यों को पुनस्थापित करके अपनी सभ्यताओं, बल्कि विश्व की सभ्यता को और आगे ले जाएगी। जिन मूल्यों की मैं चर्चा कर रहा हूँ, वे हैं—सत्य, अहिंसा, सहिष्णुता, करुणा, विश्व मानवता तथा विश्व एकता। जो नई विश्व व्यवस्था हम बनाना चाहते हैं, वह आज की व्यवस्था से भिन्न होगी जो संपन्नता से शक्ति के मापदण्डों पर आधारित है और उन मानसिक दृष्टिकोणों तथा मूल्य प्रणालियों से अछूती है, जो स्थायी, शांति तथा सतत विश्वास के लिए अनिवार्य है।

राष्ट्रपति महोदय, विश्व को आपसे बहुत आशाएँ हैं। आप ने अपने देश में यह दिखा दिया है कि मूल सिद्धान्तों के प्रति निष्ठावान बने रहकर किस प्रकार गतिशील परिवर्तन लाए जा सकते हैं। ग्लैस्नोस्ट तथा पेरे स्जोइका शब्द सब देशों में प्रचलित हो गए हैं। अपने देश को पुरानी लीक से हटाकर अपने समूचे संसार को पुराने चिन्तन की दल दल से निकालने की कोशिश की है। ऐसा बहुत कम हुआ है कि एक व्यक्ति ने नए चिन्तन को इतना पुष्ट किया हो, नए विचारों को जन्म दिया हो और मानवीय मामलों के प्रति इतना ताजा तथा नया दृष्टिकोण दिया हो।

समूचे विश्व के चिन्तन में नई क्रांति का आपने जो सूत्रपात किया है, उससे आपके कंधों पर एक नया दायित्व भी आ गया है। हम जिस नई विश्व अर्थव्यवस्था की रचना करना चाहते हैं, उसके सभी तत्व समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। सब तत्वों को मिलाकर ही एक संपूर्ण इकाई बनती है। इन सब तत्वों को व्यापकता से मिलाया जाना चाहिए। आंशिक समाधान करने से अंतर्राष्ट्रीय संबंध उनसे भी कहीं अधिक जटिल और खतरनाक बन सकते हैं। इसलिए आपने जो प्रक्रियाएँ प्रारंभ की हैं, उन्हें पूर्णता तक पहुँचाने का दायित्व भी आपका है।

हमें ऐसे विश्व की आवश्यकता है, जिसमें छोटे-बड़े तथा आर्थिक और नैतिक दृष्टि से शक्तिशाली और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमजोर सभी देशों की प्रभुसत्ता और लोकतांत्रिक एकता का सम्मान किया जाए। विश्व में परस्पर निर्भरता को मान्यता मिलनी चाहिए। एक अभाव को सभी की हानि समझा जाना चाहिए तथा समृद्धि में सबको भागीदार बनाया जाना चाहिए, क्योंकि बांटने से समृद्धि का चारों ओर प्रसार होता है। हमें ऐसा विश्व चाहिए जो रंगभेद तथा उपनिवेशवाद से एकदम किनारा कर ले। हमें ऐसा विश्व चाहिए, जहाँ पर्यावरण की रक्षा की जाए, प्राकृतिक संतुलन बचाया जाए और प्रदूषण को तुरंत दूर किया जाये। हमें सहयोग एवं सह-अस्तित्व की आवश्यकता है। हम भय और धमकियों तथा इनके कारण होने-वाली मृत्यु तथा विनाश को समाप्त करना चाहते हैं।

भारत और सोवियत संघ ने विश्व को यह रास्ता दिखाने के लिए मिल कर काम किया है। हम अपनी यह यात्रा जारी रखने को उत्सुक हैं।

एक अभाव को सभी की हानि समझा जाना चाहिए तथा समृद्धि में सबको भागीदार बनाया जाना चाहिए।

विश्व व्यवस्था को नया रूप देने की प्रक्रिया में शामिल होने के लिए हमें मौजूद रहना चाहिए ताकि नई व्यवस्था हमारे सिद्धान्तों, नीतियों और प्राथमिकताओं के अनुरूप हो।

कभी कभी यह दलील दी जाती है कि विश्व में गुटों की राजनीति समाप्त हो जाने से जिसके लिए आप प्रयास कर रहे हैं, गुटनिरपेक्षता की सार्थकता नहीं रहेगी। बल्कि गुट निरपेक्षता की आज जितनी सार्थकता है उतनी संभवतः पहले कभी नहीं रही। इसका कारण यह है कि अब विश्व हमारी बात समझने लगा है कि विश्व व्यवस्था को नया रूप देने की प्रक्रिया में शामिल होने के लिए हमें मौजूद रहना चाहिए ताकि नई व्यवस्था हमारे सिद्धान्तों, नीतियों और प्राथमिकताओं के अनुरूप हो।

यदि आप मुझे व्यक्तिगत भावना को व्यक्त करने की अनुमति दें तो मुझे महसूस होता है कि मेरी माँ इंदिरा गांधी इस समय हम सबको देख रही है। मेरे नाना जवाहर लाल नेहरू ने जेल से उन्हें जो पत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखे थे, उनसे उन्हें महान अक्तूबर क्रान्ति के, न केवल आपके देश पर बल्कि समूचे विश्व पर पड़े प्रभाव की जानकारी मिली। जब जवाहर लाल नेहरू स्वतंत्र भारत के प्रधान मंत्री के रूप में 1955 में ऐतिहासिक सोवियत यात्रा पर गए तो इंदिरा गांधी उनके साथ गई। स्वयं प्रधान मंत्री के रूप में भी इंदिरा गांधी ने भारत-सोवियत मैत्री के पौधे की स्नेहपूर्वक देखभाल की।

वह पौधा अब हमें सौंपा गया है। आप लगभग उसी समय सोवियत संघ के नेता बने, जिस समय मैं भारत का प्रधान मंत्री चुना गया। हमने मिलकर मैत्री की महान परम्पराओं को अगे बढ़ाया है। पिछले तीन वर्षों में दोनों देशों के बीच जितना अधिक उच्च स्तरीय विचार-विमर्श हुआ है, उतना हाल के वर्षों में पहले कभी नहीं हुआ। दोनों देशों के संबंधों में इतनी व्यापकता तथा विविधता पहले कभी नहीं रही। सोवियत जनता ने भारतीय संस्कृति का इतना विविध और व्यापक रूप पहले कभी नहीं देखा। इससे पहले कभी भारतीय जनता ने आपकी जीवन शैली को इतनी निकटता से नहीं देखा है।

आप और हम गर्व से कह सकते हैं कि हम अपने अपने पूर्ववर्ती नेताओं का जिन्होंने भारत सोवियत मैत्री को एक दूसरे के राष्ट्रीय जीवन ही नहीं, अपितु अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के महत्वपूर्ण तत्व के रूप में पल्लवित किया, पूरी तरह अनुसरण करने में सफल हुए हैं। हमारी मित्रता विश्व शांति तथा अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग को नया और आशाजनक आयाम देते रहने में भी सफल हुई है।

आपका सम्मान करते हुए हम, हमारी मैत्री की महान निर्माता इंदिरा गांधी का भी सम्मान कर रहे हैं, जो अद्वितीय राजनेता थीं और शान्ति, निरस्त्रीकरण तथा विकास में जिनका योगदान समसामयिक इतिहास का अंग है।

"हम भारत में आपके आगमन का स्वागत करते हैं और हमारी सराहना के प्रतीक इस पुरस्कार को ग्रहण करने के लिए आपके प्रति आभार व्यक्त करते हैं।"

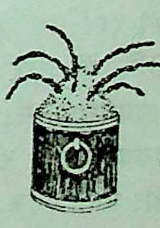

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उमाकेरळम: मलयालम् का सर्वप्रथम ऐतिहासिक महाकाव्य

डा० कटविल चन्द्रन

डा० कटविल चन्द्रन

तिरुवनन्तपुरम तालूके के उळ्ळूर नामक गाँव में सन् 1877 ई० को एस परमेश्वरय्यर का जन्म हुआ था। पिता का नाम सुब्रह्मण्य अय्यर तथा माता का भगवति अम्माळ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा चङ्ङनाश्शेरि में आरंभ हुई थी। बाद में तिरुवनन्तपुरम में उनका शैक्षिक-जीवन जारी रहा और वे बी. ए., बी. एल., एम. ए. आदि ऊँची परीक्षायें पास हुए। पहले वे अध्यापक बने। फिर 1909 ई० तक वे तहसीलदार रहे। तदुपरान्त न्याय-विभाग में उनकी नियुक्ति हुई। क्रमश: उनकी पदोन्नति होती गयी और वे मजिस्ट्रैट; हजूर-सचिव, पेष्कार आदि पदवियों पर पहुँच सके। अंततोगत्वा लैंड रवन्यु कमीशनर के पद पर विराजित होते हुए सन् 1931 ई० को उनकी सेवा-निवृत्ति हुई।

परमेश्वरय्यर अपने मुहल्ले के नाम 'उळ्ळूर' से ही ज्यादातर विख्यात हैं। बचपन से ही लेकर काव्य-रचना में उनकी रुचि थी। वे तमिळ, मलयालम्, संस्कृत तथा अंग्रेजी के पहुँचे हुए विद्वान थे मृत्यु-पर्यंत वे साहित्य-सेवा में तल्लीन रहे। सन् 1949 ई० को आपने अपना पार्थिव शरीर छोड़ दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रचनायें :

उमाकेरळम्*, पिंगळा, चित्रशाला, कर्णभूषणम्, तरंगिणि, तारहारम, किरणावलि रत्नशाला, अमृतधारा, हृदयकौमुदि, कल्पशाखि, तप्तहृदयम्, आर्षभूमियुटे आत्मचैतन्यम्, चित्रोदयम्, शरणोपहारम्, अरुणोदयम्, मिथ्यापवादम्-भक्तिदीपिका, मणि-मंजुषा, दीपावलि, भाषाचंपुक्कळ् विज्ञानदीपिका और केरल साहित्य-चरित्रम् आदि उनकी बहुचर्चित रचनायें हैं ।

युगीन विशेषतायें :

महाकवि उळ्ळूर प्रासवादियों के नेता केरळवर्मा वलियकोयित्तंपुरान के प्रतिनिधि थे जहाँ महाकवि के. सी. केशव पिळ्ळा प्रास-विरोधियों के नेता ए. आर. राजराजवर्मा तंपुरान के । द्वितीयाक्षर-प्रास संबंधी भाषिक क्रान्ति, जो 'प्रासवाद' के नाम से विख्यात है, के अंत में केशवपिळ्ळा ने जब राजराजवर्मा-प्रणाली के आधार पर 'केशवीयम्' नामक महाकाव्य रचा तब उळ्ळूर ने केरळवर्मा-प्रणाली के अनुसार, याने सजातीय-द्वितीयाक्षर-प्रास का पूर्णतः प्रयोग करते हुए, 'उमाकेरळम' शीर्षक महाकाव्य का प्रणयन किया। क्लासिक-प्रवृत्ति को बनाये रखना ही इस का खास उद्देश्य था । इस के उन्नीस सर्ग हैं ।

कथावस्तु :

सत्रहवीं सदी में महाराजा आदित्यवर्मा वेणाट (प्राचीन तिरुवितांकूर) में शासन कर रहे थे । वे दुर्बल तथा असमर्थ थे । उनकी रानी थीं, उमयम्मा । कल्याणि उन दंपतियों की खूबसूरत लडकी थी । राजा के मंत्री रविवर्मन तंपान तो अक़्लमंद, होशियार एवं भरे जवान थे । कल्याणि और तंपान की चार आँखें हुईं । महाराजा तो इनके विवाह के अनुकूल थे, मगर तत्कालीन मुखियें 'एट्टुवीट्टिल् पिळ्ळमार' इस शादी के संपन्न होने से सहमत नहीं थे । तंपान से वे बेहतर डर रहे थे । यदि तंपान उत्तराधिकारी बन गये होते तो उनके साथ मुखियों की दाल नहीं गल जाती । अतएव वे तंपान को महाराजा से अलग करने की सोचने लगे । आखिर उन्होंने एक कूटनीति

* सन् 1913 ई को यह काव्य प्रकाशित हुआ था।

1. केरलवर्मा-युग में कोहल्ला मचाया साहित्यिक आन्दोलन था, 'प्रासवाद'।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही का प्रयोग किया। उनके दल ने राजमहल पर आग लगा कर यह समाचार फैला दिया कि मंत्री तंपान ने ही आग लगायी है। उन्होंने राजा को भी किसी-न-किसी प्रकार विश्वास दिलाया। फलत षड्यंत्र का अभियोग लगवा कर मंत्री को देश निकाले का दंड दिलवाया।

अब 'एट्टुवीटर' को अपने उद्देश्य की पूर्ति केलिए अनुकूल नौबत मिल गयी। उन्होंने राजा को दैवी-प्रसाद खीर में जहर मिला दे कर मार डाला। रामनामठत्तिल पिळ्ळा नामक मुखिये ने रानी के पाँचों संतानों को कळिप्पानकुळम नामक तालाब में डुबो कर उनको मृत्यु के घाट उतार दिया। इस दरमियान राजमहल पर असल में आग लगाने-वाले मुखिये का भतीजा कल्याणि को बलात् उठा ले कर भाग खडा हुआ। रास्ते में एक मुगल सरदार ने उन्हें देख लिया जिसने पहले वेणाट पर चढ़ाई की। उसी अवसर निर्वासित मंत्री तंपान खुद अपनी प्रेमिका के उद्धार के लिए वहाँ पहुँच गये। इस बीच जनचोर को यमपुरी पहुँचा कर मुग़ल ने कल्याणि का अपहरण किया था। तंपान निसहाय और निराश हो कर वेणाट लौट चले।

आदित्यवर्मा के बाद रानी उमयम्मा शासक बन बैठी थीं। तंपान ने रानी को सारी कहानी कह सुनाई। उन्होंने रानी का दूत बन कर उत्तर-कोट्टयम के युवराज केरळवर्मा के पास पहुँच कर सहायता मांगी। केरळवर्मा ने तुरंत ही वेणाट पधार कर अद्भुत मंत्र-प्रयोग के सहारे मुग़ल को परास्त किया। ज्यों ही पराजित मुग़ल ने कल्याणि की मर्यादा का भंग करने की चेष्टा की त्योंही उस होशियार राजकुमारी ने उसका एकदम वध कर डाला।

मुग़ल-दमन के पश्चात् क़तले-आम के जिम्मेदार रामनामठत्तिल पिळ्ळा को ढूँढ निकाल कर फांसी पर चढाया गया। तब जाकर राज्य में शान्ति और चैन की पुन: स्थापना हुई। तदनंतर मंत्री तंपान व राजकन्या कल्याणि की शादी भी संपन्न हुई। मंत्री की सलाह के मुताबिक रानी ने अंग्रेजों को अंचुतेङ्ङ् नामक प्रदेश में एक दुर्ग बनाने की अनुमति भी दी। यही इस महाकाव्य के कथानक का सारांश है।

काव्य-सौष्ठव :

समूचे काव्य में हृदयवेग पैदा करनेवाले कई प्रसंग मिलते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजकुमारी कल्याणि का विरह-वर्णन अच्छा किया गया है। विरहाग्नि में जलती कल्याणि स्वपिता से निवेदन करती है कि मंत्री वास्तव में निरपराध है; उसे सुनाया गया दंड रद्द करना चाहिए। राजा अपनी दुहिता को सांत्वना देते हुए कहते हैं—वह पुरुष जो तृण-सा तुच्छ है, चला जाये। मैं तुझे सुयोग्य वर प्रदान करूँगा। क्या, वांका (बबूल के पेड़) की नई मंजरी के लिए कंटीला पौधा शोक ही दे सकता है। सुखद कैसे हो सकता है?[1] मगर राजा की तसल्ली का प्रभाव उसपर लेश-मात्र भी नहीं पडता। वह बिजली-गिरी-वल्लरी मानो बेहोश गिर पड़ती है।

उसकी विरह-व्यथा की कोई आर-पार नहीं है। उसका कथन है कि चाँद को अपने ताप को दूर करने के लिए तारा-गण से ले कर कई पदार्थ उपलब्ध हैं। लेकिन उस रजनी तथा कुमुदिनी के लिए चाँद के अलावा और कौन सहायक हो सकता है?[2] मतलब यह कि पुरुष तो कहीं भी सुख प्राप्त कर सकता है और नारी ही बेहाल पडी रहती है। विरहिणी नायिका को प्रत्येक क्षण ब्रह्मा के शत-वर्ष के समान प्रतीत होता है। वह दिन-रात एक करके अपने प्रियतम के पुनरागमन की बाट जोहती रहती है।[3]

रानी उमयम्मा अपने प्राण-धन पति और आँखों के पुतले पुत्रों के वध के बाद पगली-सी हो जाती हैं। मरे पडे बच्चों को देख कर वे छाती कूट-कूट कर प्रलाप करती हैं। ब्रह्मा की क्रूर नीति पर उनकी उक्तियाँ पत्थर-से कठोर-दिलवालों को भी पिघला देती हैं। विरंचि से वे पूछती हैं—'मैं ने तुझ से क्या बदला लिया ताकि तू मुझ से बार-बार यों प्रतिकार करता है? हे कमलोद्भव, तेरे हृदय के बाहर-भीतर क्या इतना

1. पोकट्टे पुल्लापुरुषन्; निनक्कु-
पाकत्तिल् आन् कान्तने वेरे नल्काम्
वाकप्पुतुत्तारिनु कळ्ळिमुळ्ळु-
शोकत्तिनल्लाते सुखत्तिनामो?"
— उमाकेरळम्, सर्ग: 3, छंद-21

2. उमाकेरळम्, सर्ग-3, छंद-54

3. " वही, सर्ग-3, छंद-107

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजभक्ति और देशभक्ति का मनोहर सम्मिश्रण उसमें प्राप्त है।

कठोर वैर है?[1] रानी इस प्रकार रोती-कलपती दिन काटती हैं।

ग्यारहवें सर्ग में रानी अपने मंत्री को जो संदेश सुनाती हैं उसमें सिद्ध-हस्त कवि की लोक-निरीक्षण-सामर्थ्य लबालब भरी हुई है। पन्द्रहवें सर्ग में मुगल-वध का जो चित्रण किया गया है वह भी सराहनीय है।

इस काव्य में केरल की प्रकृति का सुन्दर चित्रण हुआ है।[2] मातृ-भूमि के प्रति कवि के मन में जो प्रेम है वह इस में छहर रहा है।[3] राज-भक्ति और देशभक्ति का मनोहर सम्मिश्रण उसमें प्राप्त है। उन दिनों

1. "पकयेंतिवळ चेय्तु मेल्कुमेल्-
ग्पकरं वीट्टुवतित्तरत्तिल् नी?
अकवु पुरवु निनक्कु तार-
मकने हृत्तिन्नु कट्टिवैरमो?"

— उमाकेरलम् सर्ग-8, छंद-55

2. इल्लीषलिङ्ङु, हिमबिंदुवहिच्च कुन्निन्
वल्लीतृणङ्ङळिलिन प्रथमांशु चेन्नाल्
चोल्लीटुमारुमिळ मौक्तिकमाल पच्च-
विल्लीसु रौक्कियुटे मेलणियुन्नुवेन्नाय्।"

— उमाकेरळम्, सर्ग-1 छंद-21

(प्रभात-वर्णन: ओसःकणों से ढँकी पहाडी की तृण-वल्लरियों पर सूरज की प्रथम किरण के पड़ने पर ऐसा लगता है मानो भूमि हरी मखमल की कुरती पर मोती की माला पहन लेती हो।)

3. "अटियनिनियुमुंटां जंममेन्नालतेल्ला-
मटिमुतल् मुटियोळम् निन्निलाकट्टे ताये!
अटिमलरिणवेणम् ताङ्ङुवान्; मट्टरोट-
त्तटियुवतुमेरुक्कम् मुक्तिसिद्धिक्कुवोळम्।"

— उमाकेरळम्, सर्ग-18, छंद-78

(हे माता, यदि मुझ दास के और भी जन्म हो वे सब पूर्णतः तुझ पर ही हों। मेरी रक्षा के लिए तेरे चरण-कमलों की बडी जरूरत है। जब तक जीवन-मुक्ति नहीं होगी तब तक और कहीं टिकना मेरे लिए मुश्किल ही है।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की परिस्थिति ही ऐसी थी कि राजभक्ति व देशभक्ति दोनों का अलग-अलग अस्तित्व ही न था।

शब्दालंकार और अर्थालंकार की बहुलता महाकाव्य-धारा की अपनी निजी विशेषता है। काव्य विषय और रीति में भावात्मकता प्राय: गौण ही होती है। मगर इन दोषों के बावजूद भी भावात्मकता को कम से कम मात्रा में ही सही, स्थान देने का प्रयत्न उळ्ळूर ने किया है। कवि ने अपने काव्य में इधर-उधर वर्ण्य-विषय के साथ बहुत कुछ सहृदयता भी दिखाई है।[1]

प्रकृत काव्य में अनावश्यक लंबी वर्णनायें देखने को मिलती हैं। महाकाव्य के संपूर्ण लक्षणों की पूर्ति के लिए, जान-बूझकर वर्णनाओं के लिए, प्रसंग पैदा किए गये हैं। अर्णव-वर्णन के लिए विरहाकुल नायिका को घसीट ले जाना, संदेश-वर्णन आदि प्रसंगों में यह अनौचित्य देखा जा सकता है।[2]

'उमाकेरळम्' की भाषा मणि-प्रवाल है। दरअसल साधारण पाठक इसके भावों की गहराइयों में गोता नहीं लगा सकता।[3] इसमें ऐसे श्लोकों की कमी नहीं है जिनमें मलयाळम् के प्रत्ययों का बिलकुल अभाव है। यहाँ भी अर्थ-ग्रहण में दिक्कत होती है; पाठक को बुद्धि से काम लेना पड़ता है। किंतु फिर भी, ऐसे श्लोक भी उपलब्ध हैं जो ठेठ-मलयालम-शब्दों से बने हैं।

संस्कृत-प्रभाव :

विवेच्य महाकाव्य पर संस्कृत का प्रभाव उल्लेखनीय है। पांडित्य-प्रदर्शन की दृष्टि से हर्ष-कृत 'नैषधीय चरितम्' संस्कृत के समस्त काव्यों का अग्रणी है। इसी कारण आलोचक इसे सफल शास्त्रीय काव्य की संज्ञा से अभिहित किया करते हैं। काव्य-शास्त्रों के पारंगत श्रीहर्ष ने पंडितों को लक्ष्य करते हुए ही इस महाकाव्य की रचना की है। इसके तेरहवें सर्ग में, दमयंती के स्वयंवर के प्रसंग में, एक बार 'पितृमुखी' शब्द से उसका संबोधन हुआ है। इसका मतलब यही है कि पिता का-सा मुखवाली। सामुद्रिक शास्त्र में "धन्या पितृमुखी

1. पी. के. परमेश्वरन नायर, "आधुनिक मलयाळसाहित्यम्", पृ० 325
2. चुम्मार, "पद्यसाहित्य चरित्रम्", पृ० 182
3. चुम्मार, "पद्यसाहित्य चरित्रम", पृ० 183

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कन्या, धन्यो मातृमुखस्सुतम्' बताया गया है। तब तो पूर्व सूचित संबोधन का अर्थ 'भाग्यवती' अथवा 'हे धन्ये' निकलता है। वैसे 'उमाकेरळम्' में राजकुमारी को 'हे तन्वी', 'वधूटिकुलमौलिमुक्तामाले', 'मनोज्ञांगी', 'मरालयाने', तथा 'बालेंदुफाले' संबोधित किया गया है।[1] कहने का तात्पर्य यही है कि वहीं पाठक ऐसे शास्त्रीय प्रयोगों का

भाव-पक्ष और कला-पक्ष दोनों दृष्टियों से 'उमाकेरळम्' ,नैषधीयम्' से निकटतम संबध स्थापित करनेवाली रचना है।

सही अर्थ समझ पायेगा जो शास्त्रीय ग्रंथों का अभिज्ञ हो।

भाव-पक्ष और कला-पक्ष दोनों दृष्टियों से 'उमाकेरळम्' 'नैषधीयम्' से निकटतम संबंध स्थापित करने-वाली रचना है। इस रचना में मूर्द्धन्य-पंडित कवि की ही झांकी मिलती है। आम पाठक इस काव्य का भी भली-भाँति रसास्वादन नहीं कर सकता।[2] सचमुच उळ्ळूर मुश्किल पसंद और पंडितक रचनाकार थे। शायद इसीलिए कुछ आलोचकों ने आपको कवि मानने से इनकार कर दिया भी था।

ऐतिहासिक दृष्टि में :

'उमाकेरळम्' ऐतिहासिक काव्य होते हुए भी पूर्णत: ऐतिहासिकता की कसौटी पर खरा नहीं उतरता। कवि ने कल्पित कथापात्रों तथा घटनाओं का सहारा लिया है। खुद कवि ने इसका संकेत भी किया है। इस काव्य की प्रमुख कथा महाराज आदित्यवर्मा की कन्या कल्याणि तथा उनके सचिव रविवर्मा की जीवनी है। यह घटना इतिहास-

---

1. उमाकेरळम्, सर्ग-3, छंद-11 तथा 36

2. "........ये दोनों ही महाग्रंथ (नैषधीयम् और उमाकेरळम्) अपंडित तथा अनवधान पाठकों को दृष्टिगत करते हुए नहीं, अपितु बुद्धिविलास तथा रसात्मकता को ध्यान लगाए पढ़कर ग्रहण करने की क्षमता व फुरसत रखनेवाले पाठकों को ही लक्ष्य करते हुए रचे गये हैं।......"

—केरळवर्मा, उमाकेरळम् की पृष्ठभूमि, पृ० xii

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार इतिहास से कथावस्तु स्वीकारना समूचे मलयालम साहित्य में सर्वप्रथम प्रयास था।

सम्मत थोड़ा ही है ।[1] मगर यही कथा काव्य को आद्योपांत रसीला और भावात्मक बनाये रखती है। यदि इसे निकाल दिया जाय तो काव्य ही आत्मा-विहीन घट-सा हो जायेगा। यहाँ कवि की मौलिक उद्भावना दृष्टिगोचर होती है।

इस काव्य में वर्णित घटनाओं के संबंध में पश्चात्कालीन इतिहास-कारों ने खोज की और उन्होंने राजकुमारों का वध आदि घटनाओं को निर्मूल साबित भी किया ।[2] बहरहाल काव्याध्ययन से सभी घटनायें सच्ची लगती हैं और उनमें कहीं कोई कटुता या रोक थाम नहीं महसूस होती।

उपसंहार

'उमाकेरळम्' एक बहुचर्चित महाकाव्य है। इसकी रचना के साथ कवि ने पूर्वसूरियों की परंपरा को तोड़ डाला है। विवेच्य युग तक महाकाव्य के निर्माण के लिए केवल पुराणों और अन्य धर्म-ग्रंथों ही से कथानक चुन लिए जाते थे। इस क्षेत्र में कवि ने अपनी स्वच्छंद-प्रवृत्ति प्रदर्शित की है। इस प्रकार इतिहास से कथावस्तु स्वीकारना समूचे मल-यालम साहित्य में सर्वप्रथम प्रयास था। ऐतिहासिक कथावस्तु शुष्क या नीरस हुआ करती है जिसे रोचक बनाना तो बायें हाथ का खेल नहीं है। इस कठिन प्रयत्न में कवि ने अजीब फ़तह की है। इस दृष्टि से यह परंपरानिष्ठ काव्य मलयालम के समस्त महाकाव्यों के बीच अपने निजी सुवर्ण-सिंहासन पर विराजता है।

❀

13. "जैसे अभिज्ञान-शाकुंतल में अंगूठी की कथा प्रमुखता रखती है वैसे इस काव्य में आदित्यवर्मा की पुत्री कल्याणि व सचिव रविवर्मा की जीवन-गाथा आद्यन्त रसीली हो कर चमकती रहती है। चाहे वह दाम्पत्य हो या उनका पारस्परिक प्रेम हो, इतिहास में है ही नहीं। मगर इसी को इस काव्य में प्रमुखता दी गयी है।"

—चुम्मार, "पद्यसाहित्य चरित्रम", पृ० 181

14. "ऐतिहासिक शोध ने इस काव्य की आधार-शिला को डाइनामिट से चूर-चूर कर दिया है .... ।"

—माटश्शेरी, "कुंचम्टे शेषम्", पृ० 140

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुभाशंसायें

सुश्री ऋता शुक्ल

गुरुकुल की पावनता...
ज्ञान की उदग्रता,
ताल-पत्र पर टँकी सार्वभौम
सत्यता !
प्राणों की शुद्धता
ताप-त्रय मुक्तता
शब्दों के राग पर चिर नूतन छंदता !
मनु की अहम्मन्यता (?)
श्रद्धा की आस्था !
राम अग्नि-पथ वरें सुफला हों
सीता !
कल्मष के घट में
ज्ञान-सिंधु सकुचा-सा
यह कैसा समारोह ? कैसी है
भव्यता ? ?
संस्कृति की साधना में
बीते युग संवत्सर ...
परिभाषा इस पद की सहज
अंतरंगता !
करुणा के राग से
जीवन हो अभिषिक्त
पीड़ाएँ पराभूत....ज्ञान-ज्योति
उद्‌भासित,
भेद-मुक्ति....शुभ्रभाव

प्राणों का आधार
धैर्य, क्षमा धन्वंतरि आस्थाएँ
उपचार।
गर्भ में अनागत के
संवेदना शिशु
पार्श्व परिवर्त्तन ले मातृ रूपा
वेदना से कह रहा -
काल-निशा दुर्भेद्य....(?)
भीति नहीं !
वट तरु विश्वास होगा...
सृजन के हिंडोले में झूलेगी नव
शक्ति !
भारत की भास्वरता
स्वर में समेट कर
एक नया काल-चिंतन आगत के
क्रोड़ में
अँकुरेगा - निश्चय ही
उस मंगलमय मुहूर्त्त के लिए
शास्ति-पाठ
शुभाशंसाएँ करें !
★

राजकुटीर,
मोराबादी,
राँची

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरभाष : 61378

तार : "जय हिन्दी"

केरलज्योति

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका

फरवरी 1989

पुष्प 23
दल 11

एक प्रति—1 रु० 50 पै०
वार्षिक—15 रु०

संपादकीय

राष्ट्रीय चरित्र हिन्दी द्वारा

भारत के 40 वें गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर महामहिम राष्ट्रपति श्री. आर. वेंकटरामन ने राष्ट्र के नाम दिये गये संदेश में कई महत्वपूर्ण वातों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है। उन्होंने इस वात की आवश्यकता पर बल दिया है कि हमारे राष्ट्रीय चरित्र को, जो कई उपराष्ट्रीय भावनाओं का सम्मिश्रण है, राष्ट्र की प्रगति में पूरी तरह से आत्मसात किया जाये ताकि राष्ट्र की जनता का जीवन वेहतर बन सके।

हमें विचार करना है कि हिन्दी के कार्यकर्ता इस दिशा में क्या कर सकते हैं।

जिस प्रकार एक व्यक्ति का चरित्र दूसरे व्यक्ति के चरित्र से भिन्न है उसी प्रकार एक राष्ट्र का चरित्र दूसरे राष्ट्र के चरित्र से भिन्न है। राष्ट्र की परम्पराओं, आदर्शों धारणाओं और रुचियों का वह संचित कोष ही राष्ट्रीय चरित्र कहलाता है। चूंकि यह कोष हर राष्ट्र का अपना होगा इसलिए हर राष्ट्र की जनता के व्यवहार का ढंग भी तदनुकूल और उस कारण अन्यराज्य की जनता के व्यवहार के ढंग से भिन्न होगा।

भारत के राष्ट्रीय चरित्र की विशेषतायें हम कहाँ देख सकते हैं? देश की अधिकांश जनता के व्यवहार को देखें तो हमें शायद निराश होना पडेगा। वहाँ कहीं कहीं हमें निरक्षरता मिलेगी, अन्धविश्वास मिलेगा, भाग्य वादिता मिलेगी, सांप्रदायिकता मिलेगी, भ्रष्टाचार मिलेगा, अकर्मण्यता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में

राष्ट्रीय चरित्र को आत्मसात करें — 3
श्री. आर. वेंकटरामन
राष्ट्रपति

सन् 1857 का प्रथम स्वाधीनता संग्राम — 11
जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी

हिन्दी भाषी प्रान्त एक-भाषासूत्र छोड़ दें और त्रिभाषा सूत्र अपनायें — 20
श्री. के. चन्द्रशेखरन
शिक्षा मंत्री, केरल

सांस्कृतिक आदान-प्रदान से राष्ट्रीय एकता बढ़ायें — 24

संपर्कभाषा और संपर्क लिपि के द्वारा देश को अखण्ड बनाये रखें — 30

रामकथापाट्ट् — 34
श्री. एम. पुरुषोत्तमन

मिलेगी, मद्यप्रियता मिलेगी, हिंसा मिलेगी, अशुद्ध मार्ग से भी लक्ष्य सिद्धि की इच्छा मिलेगी, और कई ऐसी बातें मिलेंगी जो हमारी गौरवपूर्ण परंपराओं और महान आदर्शों के अनुरूप नहीं हैं।

तो फिर हम अपने राष्ट्रीय चरित्र को कहाँ ढुंढें ?

राष्ट्रपिता का उज्वल चरित्र हमारे सामने है। क्यों न हम उसी को राष्ट्रीय चरित्र का आदर्श मानें? क्यों न हम सत्य अहिंसा और साधनशुद्धि को राष्ट्रीय चरित्र के आधारस्तंभ मानकर चलें ?

यदि यह प्रस्ताव स्वीकार्य है तो हमें अपनी जनता के व्यवहार में तदनुकूल परिवर्तन करने का प्रयत्न करना होगा। निरक्षरता की जगह साक्षरता, अन्धविश्वास की जगह वैज्ञानिक चिन्तन, भाग्यवादिता की जगह आत्मविश्वास, सांप्रदायिकता की जगह सर्वधर्म समानत्व, अकर्मण्यता की जगह कर्मोन्मुखता, मद्यप्रियता की जगह मद्यविरोध, अशुद्ध मार्ग की जगह साधनशुद्धि आदि को विकसित करना होगा। हिंसा की जगह अहिंसा और असत्य की जगह सत्य का इस तरह विकास करना होगा कि राष्ट्र की अधिकांश जनता तदनुकूल आचरण करे।

यह काम हिन्दी प्रचारक ही कर सकते हैं। क्यों न कबीर और तुलसी का साहित्य भाषा सिखाने का ही नहीं, राष्ट्रीय चरित्र को आत्मसात करने और विकसित करने का भी उत्तम साधन बनायें ? ★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय चरित्र को आत्मसात करें

श्री. आर. वेंकटरामन
राष्ट्रपति

[40 वें गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्रपति के राष्ट्र के नाम दिये गये संदेश का अंश]

मित्रो,

भारत के 40 वें गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर मैं सभी साथी नागरिकों को अपनी भ्रातृवत् बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

चार दशक पूर्व महात्मा गांधी के नेतृत्व में स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद हमारे विशाल एवं विविधता पूर्ण राष्ट्र ने गणतंत्र का रूप धारण किया और देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद हमारे प्रथम राष्ट्रपति के रूप में पदासीन हुए। विख्यात कवि रामधारी सिंह दिनकर ने उस शुभ अवसर पर लिखा (और मैं उद्धृत करता हूँ) :

सबसे विराट् जनतंत्र जगत् का आ पहुंचा,
तैंतीस कोटि-हित सिंहासन तैयार करो,
अभिषेक आज राजा का नहीं, प्रजा का है,
तैंतीस कोटि जनता के सिर पर मुकुट धरो।

गणतंत्र की स्थापना से हमारी वैविध्यपूर्ण जनता में अधिक सामीप्य आया। यह उल्लेखनीय है कि हमारा राष्ट्रीय समेकन बड़े हिंसात्मक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपद्रवों के बिना हुआ। इसके लिए श्रेय है हमारे प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की दूरदृष्टि को, सरदार वल्लभभाई पटेल की निर्णय-शक्ति को और हमारे राष्ट्रीय नेताओं की व्यवहार-कुशलता को।

समेकन तथा एकीकरण की यह प्रक्रिया बराबर तीव्र गति से चली है। उत्तर पूर्व में पूर्ण राज्यों के आविर्भाव से उस क्षेत्र के लोगों का राष्ट्र की मुख्यधारा में और पूरी तरह से प्रवेश हुआ है। कुछ क्षेत्रों के ऐसे तत्वों के साथ, जो अभी तक इस प्रक्रिया में शामिल नहीं हुए थे, रचनात्मक वार्ताओं के माध्यम से समझौता हुआ है।

हाल में त्रिपुरा में एक नए अध्याय का सूत्रपात हुआ है जहाँ कुछ वर्गों ने हिंसा की निरर्थकता को समझा और वे राष्ट्रीय विकास प्रक्रिया की मुख्य-धारा में शामिल हुए। इसी प्रकार दार्जिलिंग में पर्वतीय परिषद की स्थापना तथा उसके लिए निर्वाचनों से उस क्षेत्र का वातावरण, जो विस्फोटक बन सकता था शांतिपूर्ण बना है।

हमारी समग्र जनता का शांतिप्रिय स्वभाव सकारात्मक संकेत है और हममें ऐसी आशा जागृत करता है

किसी भी समय समाज में हिंसा एवं आतंकवाद के लिए कोई गुंजाइश नहीं है और भारत में, जोकि अहिंसा का घर है, इसके लिए स्थान रहता ही नहीं है।

कि पंजाब की पीड़ा का व्यावहारिक हल निकलेगा। उस राज्य में आतंकवादी हिंसा का बना रहना हम सबको कष्टदायक है। किन्तु यह उत्साहवर्धक बात है कि प्राधि-कारियों को आतंकवाद का मुकाबला करने के अपने प्रयासों में राज्य की जनता का पूरा सहयोग मिल रहा है। मेरा ऐसा विश्वास है कि पंजाब में पंचायतों के लिए निर्वाचन कराने से उस प्रदेश में शान्ति एव सामान्य स्थिति पुनः स्थापित करने की प्रक्रिया में मदद मिलेगी।

किसी भी समय समाज में हिंसा एवं आतंकवाद के लिए कोई गुंजाइश नहीं है और भारत में, जोकि अहिंसा का घर है, इसके लिए स्थान रहता ही नहीं है। अतः हिंसक करतूतों से, विशेष रूप से पूर्णतः निर्दोष पीड़ितों पर इस प्रकार की करतूतों से, हम सबको अत्यधिक दुःख पहुंचता है। किन्तु बुद्धिमानी इसी में है कि हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ व्यक्तियों के कार्यों से समुदायों या क्षेत्रों के बीच विद्वेषपूर्ण या दुर्भावनापूर्ण कोई कार्यवाही करने के लिए उत्तेजित न हो जायें। भारत की जनता का शान्तिपूर्ण लोकतंत्रीय व्यवस्था में गहरा विश्वास है। हमारी जनता में इस विश्वास की उत्साहपूर्वक रक्षा की जानी चाहिए तथा उसे मजबूत बनाया जाना चाहिए।

जैसा कि आप सबको ज्ञात है, पिछले सप्ताह ही तमिलनाडु के साथ

इस बात की आवश्यकता है कि हमारे राष्ट्रीय चरित्र को, जो कई उपराष्ट्रीय भावनाओं का सम्मिश्रण है राष्ट्र की प्रगति में पूरी तरह से आत्मसात किया जाए ताकि राष्ट्र की जनता का जीवन बेहतर बन सके।

साथ नागालैंड तथा मिजोरम में भी निर्वाचन हुए। इससे एक बार फिर इस बात की पुष्टि होती है कि राष्ट्र लोकतंत्रीय प्रक्रिया के प्रति कितने गहन रूप से वचनबद्ध है। यह महत्वपूर्ण नहीं कि कौन या कौन सा राजनैतिक दल निर्वाचन में विजयी होता है, असली विजेता तो मतदाता है।

तथापि, एक विकासशील समाज में मात्र प्रतिनिधित्व ही पर्याप्त नहीं है; भागीदारी तथा सतत प्रगति भी आवश्यक हैं। इस बात की आवश्यकता है कि हमारे राष्ट्रीय चरित्र को, जो कई उपराष्ट्रीय भावनाओं का सम्मिश्रण है, राष्ट्र की प्रगति में पूरी तरह से आत्मसात किया जाए ताकि राष्ट्र की जनता का जीवन बेहतर बन सके।

चालीस वर्ष पूर्व देश के बहुत बड़े भाग में जीवन-रूपी चिराग की रोशनी मद्धिम थी। हमारी कृषि और हमारा उद्योग निम्नतम स्तरों पर था। किन्तु आर्थिक विकास के लिए हमारी क्रमिक योजनाओं तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी को उपयोग में लाने के फलस्वरूप तस्वीर बहुत बदल गई है। अर्थव्यवस्था ने कई प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना किया जिनमें 1987 का हाल का गंभीर सूखा भी शामिल है, और इस प्रकार उसने उल्लेखनीय क्षमता एवं लोचशीलता का परिचय दिया। 1988 में अर्थव्यवस्था में उल्लेखनीय पुनरुद्धार हुआ है। उम्मीद है कि कृषि उत्पादन सूखे के प्रतिकूल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभावों से पूरी तरह से उभर जाएगा और आशा है कि वर्ष 1989-89 में खाद्यान्नों तथा तिलहनों का रिकार्ड उत्पादन होगा। यह इन वर्षों में विकसित आधारिक संरचना एवं सरकार के नीति संबंधी प्रयासों के साथ ही भारत के कृषि समुदाय के परिश्रम एवं निष्ठा से संभव हुआ है।

हाल के वर्षों में अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण पहलू रहा है उद्योग का द्रुत विकास तथा उसका सतत विविधीकरण। 1988-89 की पहली छमाही में औद्योगिक क्षेत्र में 10 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई। आधारिक संरचना क्षेत्र का कार्य-निष्पादन बरावर प्रशंसनीय रहा है और उसने निरंतर प्रबल सहायता प्रदान की है। कोयला, बिजली, इस्पात, दूरसंचार, उर्वरक, कच्चा तेल, रेलवे भाड़ा तथा साथ ही बड़े पत्तनों पर संचालित कार्गो यातायात जैसे कई क्षेत्र लक्ष्यों से आगे बढ़ गए हैं। कई क्षेत्रों में तीव्र वृद्धि के परिणामस्वरूप ऐसी संभावना है कि 1988-89 में सकल घरेलू उत्पाद के संबंध में 10 प्रतिशत की प्रभावशाली वृद्धि-दर होगी। हमारे किसानों, कामगारों तथा प्रबंधकों की जिस समर्पण-भावना से यह संभव हुआ है, वह प्रशंसा के योग्य है।

हमारे गणतंत्र की स्थापना के समय से दो उल्लेखनीय विशेषताएं रही हैं: योजना की प्रक्रिया का स्थापित होना तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के लिए मुख्य समर्थन। इसके परिणामस्वरूप मुख्य क्षेत्रों में स्वदेशी तथा आत्मनिर्भर क्षमताओं का विकास हुआ है तथा तीस लाख कुशल वैज्ञानिक तथा तकनीकी कर्मचारियों की विशाल आधारिक

> उतना ही महत्वपूर्ण है उत्पादन के फलों का वितरण, विशेष रूप से समाज के सबसे निर्धन वर्गों में।

संरचना का सर्जन हुआ है। नए क्षेत्रों जैसे जीवप्रौद्योगिकी महा-नागरीय विज्ञान, पर्यावरण, सूक्ष्म इलैक्ट्रानिक्स, इन्फारमेटिक्स, ऊर्जा के नए स्रोतों आदि को भी उच्च प्राथमिकता प्राप्त हुई है। यह सब एसी उपलब्धियाँ हैं जिन पर राष्ट्र गर्व कर सकता है।

किन्तु आर्थिक विकास तथा उत्पादन आख्यान के केवल भाग हैं। उतना ही महत्वपूर्ण है उत्पादन के फलों का वितरण, विशेष रूप से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक सक्रिय होकर मिले जुले प्रयास करने की आवश्यकता है ताकि 14 वर्ष से कम आयु वाले सभी बच्चों के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का संवैधानिक लक्ष्य प्राप्त किया जा सके।

समाज के सबसे निर्धन वर्गों में। इसी कारण से हमारी योजना नीति में हमेशा इस पर बल दिया गया है कि विकास के साथ औचित्य एवं सामाजिक न्याय का जुडा होना आवश्यक है। हमें गरीबी दूर करने की उच्चतम प्राथमिकता देते रहना चाहिए। यह सुनिश्चित करने के मार्गोपाय निकालने की आवश्यकता है कि प्रगति के लाभ जनसाधारण तक पहुंच सकें। हमारे लिए यह संतोष की बात है कि गरीबी की रेखा के नीचे हमारी जनसंख्या का प्रतिशत घट गया है। किन्तु हमारी जनता का बडा भाग अभी भी गरीबी की रेखा के नीचे है। इसलिए हमारे लिए यह जरूरी है कि हम गरीबी समाप्त करने तथा साथ ही विषमताएं कम करने के काम में अपने को पूरे मन से समर्पित करें।

सरकार निःसंदेह ग्रामीण विकास कार्यक्रमों, लघु उद्योगों के संवर्धन, स्वयं रोजगार की योजनाओं तथा सेवा क्षेत्र को बढावा देने एवं सहायक आधारिक संरचना के विकास को उच्चतम प्राथमिकता दे रही है। किन्तु कपडा, खाद्य तेलों और चीनी जैसे खाद्य पदार्थों तथा बिजली व परिवहन जेसी आधारिक सेवाओं की प्रति व्यक्ति उपलब्धि में पर्याप्त वृद्धि अभी भी प्राप्त करनी है। इन सेवाओं के संबन्ध में इस बात की भी आवश्यकता होगी कि उपलब्धि के समय उनमें कार्यकुशलता एवं गुणवत्ता की अपेक्षाओं के प्रति अधिक से अधिक चेतना आती जाए।

गरीबी की समस्या को ऐसी प्रक्रिया से हल करना होगा जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि ग्रामीण विकास के लिए तथा अनुसूचित जातियाँ एवं जन-जातियों और शहरों के साधनहीन लोगों जैसे अल्प-विशेषाधिकार-प्राप्त वर्गों की दशा में सुधार के लिए पर्याप्त मात्रा में संसाधन उपलब्ध हों। अधिक सक्रिय होकर मिले-जुले प्रयास करने की आवश्यकता है ताकि 14 वर्ष से कम आयु वाले सभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का संवैधानिक लक्ष्य प्राप्त किया जा सके। बालिकाओं को शिक्षा की सुविधा देने की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

जनसख्या में । करोड 60 लाख की वार्षिक दर से वृद्धि हो रही है जिसके परिणामस्वरूप बेरोजगारी की समस्या और उसके साथ जुडी हुई दुदर्शा हमारे लिए बराबर चिंता का कारण बनी हुई है। अत: हमारी योजनाओं में स्वयं रोजगार के क्षेत्र विस्तार को उच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

इस संदर्भ में यह आवश्यक हो जाता है कि हम अपने संसाधनों को संरक्षित रखें और जो कुछ हम खर्च करते हैं उस पर उत्पादन क्षमता में वृद्धि करके पूरा मूल्य प्राप्त करें। इस बात की आवश्यकता है कि लागत कारगरता और अधिकतम लोगों को उसकी उपयोगिता की दृष्टि से प्रत्येक परियोजना की जांच की जाए।

अपने दुर्लभ संसाधनों का उपयोग करने में अर्थव्यवस्था हमारे लिए केवल एक नीति न होकर एक आधार होनी चाहिए, केवल एक

> हमें विकास के लिए संसाधनों की पर्याप्त उपलब्धि सुनिश्चित करनी है तथा साथ ही भीतरी और बाहरी ऋणों को विवेकपूर्ण सीमाओं के अंदर रखना है।

वांछनीय लक्ष्य नहीं अपितु एक व्यावहारिक सिद्धात होनी चाहिए। प्रत्येक को उसके प्रति जागरूक रहना है। गत समय में "इकॉनामी ड्राइव" की अवधारणा का प्रयोग बार-बार किया गया है। किन्तु कभी भी एक अच्छे नुस्खे को दोहराने से रोगी को हानी नहीं पहुंची है। हमें विकास के लिए संसाधनों की पर्याप्त उपलब्धि सुनिश्चित करनी है तथा साथ ही भीतरी और बाहरी ऋणों को विवेकपूर्ण सीमाओं के अंदर रखना है।

यह आवश्यक है कि वृद्धि की शब्दावली को वित्तीय अनुशासन के व्याकरण और सामाजिक विचार-धारा के चिह्नांकनों से नियंत्रित बनाए रखा जाए।

वास्तविक अर्थों में प्रगति के लिए एक और पूर्व दशा भी आवश्यक है अर्थात् शांतिपूर्ण अंतराष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय वातावरण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गत वर्ष [illegible] सुखद परिवर्तन यह हुआ है कि अन्तराष्ट्रीय वातावरण में सुधार आया है। आई एन. एफ. संधि के उपरांत सोवियत संघ तथा संयुक्त राज्य अमरीका के बीच तनाव में कमी आई है जिससे निःशस्त्रीकरण की दिशा में और आगे बड़े कदमों की ही केवल आशा नहीं बनी है अपितु उससे क्षेत्रीय संघर्षों के समाधान में भी सहायता मिली है। अफगानिस्तान के बारे में जेनेवा समझौता, ईरान-इराक युद्ध विराम, नमीबिया की स्वतंत्रता प्राप्त करने के उद्देश्य से समझौता तथा कम्पूचियाई एवं फिलिस्तीनी मसलों के बारे में आगे प्रगति की संभावनाएँ, ठोस परिवर्तन साबित हुए हैं।

सार्क की रूपरेखा के अंतर्गत क्षेत्रीय सहयोग की प्रक्रियाएँ निरंतर जारी रही हैं तथा इस क्षेत्र के देशों की जनता के बीच संपर्कों का बढ़ना आरंभ हो गया है। क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य योजना— "सार्क 2000" —तैयार करने के निर्णय से इस क्षेत्र को सामान्य समस्याओं पर ध्यान देने में सहायता मिलेगी। इलाहाबाद की अपनी यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री श्री. राजीव गांधी ने पाकिस्तान की नवनिर्वाचित लोकतंत्रीय सरकार के साथ जो विचार-विमर्श आरंभ किया है, उससे हमारे दोनों देशों के बीच संबंधों में सुधार की संभावनाएँ बनी हैं। भारत पाकिस्तान के साथ संबंधों के शीघ्र सामान्यीकरण को बढ़ावा देने के लिए सभी संभव प्रयास करेगा।

जुलाई 1987 में भारत-श्रीलंका समझौते के कार्यान्वयन में बराबर प्रगति हुई है तथा हाल में कई महत्वपूर्ण बातें हुई हैं। श्रीलंका के उत्तर-पूर्व में एक अस्थायी सरकार स्थापित की गई है जो स्थिति को सामान्य बनाने की दिशा में कार्य कर रही है। तमिल को भाषा के रूप में समान स्तर देने केलिए तथा भारतीय मूल के लोगों में राज्य-विहीनता की समस्या हल करने के लिए कानून बनाया गया है। हमें आशा है कि अपने संबंधों में और सुधार लाने के लिए हम श्रीलंका सरकार के साथ घनिष्ठ रूप से कार्य करेंगे।

दिसम्बर, 1988 में प्रधानमंत्री की चीन यात्रा एक ऐसी घटना है जो भारत चीन संबंधों के एक नए एवं निर्णायक चरण की द्योतक है। इससे चीन के साथ हमारे संबंधों के सामान्यीकरण की दिशा में संभावनाएँ बनी हैं जो एशिया एवं विश्व में शांति तथा सहयोग के क्षेत्र में एक मुख्य योगदान साबित होगा।

हम आशा करते हैं कि सभी पक्षों द्वारा जेनेवा समझौते का पूर्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुपालन किया जाएगा और इस प्रकार अफ़गानिस्तान के सामने जो समस्याएँ हैं, उनका समाधान निकाला जाएगा ।

ये कार्यवाहियाँ विश्व में शांति की शक्तियों को मजबूत बनाने की दिशा में शुभ लक्षण हैं । इनसे विकास समृद्धि के लिए उसके संसाधन उपलब्ध हो सकेंगे ।

मैं एक बार फिर हमारे किसानों व मज़दूरों को, उद्यमियों को, तकनीशियनों को, बुनकरों तथा कारीगरों को, सृजनशील कलाकारों को, लेखकों को, अध्यापकों, विद्यार्थियों तथा भारत के सभी सपूतों को गणतंत्र दिवस की बधाई देता हूँ। मैं हमारे बहादुर जवानों, नाविकों तथा वायुसैनिकों को विशेष रूप से बधाई तथा शुभकामनाएँ देना चाहूँगा जो हमारी पराक्रमी रक्षा सेनाओं के अंग हैं। उनकी देशभक्ति, वीरता तथा हमारी सीमाओं पर उनकी निगरानी से हमारी स्वतंत्रता की रक्षा हुई है और हम समृद्धिशाली भविष्य के लिए योजना बना सके हैं एवं कार्य कर सके हैं ।

लब्ध-प्रतिष्ठ तमिल कवि कवि-मणि देसिक विनायकम पिल्लै ने लिखा था; जिसका हिन्दी रूपांतर इस प्रकार है :—

न अपने भोजन की याचना करते हुए
न ही अपने वस्त्रों की
हम कई उत्पादक उद्यम स्थापित करेंगे
और अपने बीच में से
दुर्भिक्ष रूपी राक्षस को भगा देंगे
तथा गांधी जी के पदचिह्नों पर चलकर
हम विश्व ख्याति प्राप्त करेंगे ।

जब हम कल प्रातः तिरंगे को ऊपर उठता हुआ देखें तो हमारे सब मस्तक बेहतर तथा अधिक उज्वल भविष्य के लिए गर्व एवं विश्वास की भावना से उन्नत रहें। मैं राष्ट्र को उन शब्दों को याद दिलाना चाहूँगा जो कि भारत कोकिला श्रीमती सरोजिनी नायडू ने संविधान सभा में कहे थे (और मैं उद्धृत करता हूं) ।

स्मरण रहे, इस झण्डे के नीचे कोई
राजा नहीं और कोई किसान नहीं, कोई
धनी नहीं और कोई निर्धन नहीं ।
कोई विशेषाधिकार नहीं, केवल कर्तव्य
और उत्तरदायित्व और बलिदान है ।
हम चाहे हिंदू हों, मुस्लिम हों, ईसाई
हम, जैन हों, सिख हों या पारसी हों
या कोई भी हों, हमारी भारत माता
का एक अविभक्त हृदय है और उसकी
एक अविभाज्य आत्मा है ।

पुनर्जीवित भारत के
पुरुष एवं महिलाओ, उठिए और
इस झण्डे का अभिवादन कीजिए ।
मेरा आपसे अनुरोध है, उठिए
और झण्डे का अभिवादन कीजिए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् 1957 का प्रथम स्वाधीनता संग्राम

जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी

भारत ने अंग्रेज़ी राज्य को स्वेच्छा से स्वीकार नहीं किया। अंग्रेज़ों ने कभी दो भारतीय राजाओं या शासकों को लड़ाकर और एक का साथ देकर अपने को उनका मित्र घोषित किया और जब वे अंग्रेज़ों पर निर्भर हो गये तो उन्हें हटाकर अपना शासन स्थापित किया। प्राय: जिन-जिन राजाओं के साथ अंग्रेज़ों की संधि थी और जिनको ये आश्वासन दिये गये थे कि उनकी राजगद्दी पर उनके वंशाधरों का अधिकार रहेगा, उन्हें ब्रिटिश भारत में यानी अंग्रेजी राज में मिला लिया गया। ऐसा पंजाब में हुआ जहां महाराजा रणजीत सिंह की रानी ज़िन्दा गिरफ्तार की गयी और उन के पुत्र तथा उतराधिकारी दिलीप सिंह को ब्रिटेन भेज दिया गया। महाराजा शिवाजी के वशज सतारा के राजा और नागपुर के भोंसले राजाओं के दत्तक पुत्रों को पुत्र नहीं माना गया और उनके राज्य ब्रिटिश भारत में मिला लिये गये। यही झांसी में हुआ। बाजीराव पेशवा द्वितीय को पहले बिठूर में रहने के लिए बाध्य किया गया और बाद में

ऐसा पंजाब में हुआ जहां महाराजा रणजीत सिंह की रानो ज़िन्दा गिरफ्तार को गयो और उनके पुत्र तथा उत्तराधिकारी दिलीप सिंह को ब्रिटेन भेज दिया गया।

उनके पुत्र धुंधु नानासाहिब धुंधु पन्त को पेशवा नहीं माना गया। इसी तरह झांसी के राजा गंगाधर राव के पुत्र को झांसी का राजा नहीं माना गया। अवध के नवाब बाजिद अली शाह को संधि की शर्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होते हुए भी गिरफ्तार कर कलकत्ता में नज़रबंद कर दिया गया और दक्षिण में तन्जौर, राजस्थान में करौली आदि राजाओं के उत्तराधिकार के मामलों में भी यही नीति अपनायी गई। चूँकि हिन्दुओं के गोद लेने के प्रसिद्ध धार्मिक अधिकार को चुनौती दी गयी थी और मुस्लिम नवाब अवध का राज्य अकारण ब्रिटिश शासन में मिला दिया गया था तथा मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर अंग्रेज़ों के पेंशनर मात्र रह गये थे, इसलिए उत्तर और दक्षिण हिन्दू और मुसलमान सभी में अंग्रेज़ी शासन के प्रति घृणा उत्पन्न हो गयी थी और उनके नेता यह सोचने लगे थे कि किस प्रकार भारत को अंग्रेज़ों से स्वाधीन कराया जाये। इधर अंग्रेज़ शासक समूचे भारत में अपनी दुंदुभी बजाकर निश्चिंत हो गये थे और भारतीय सेनाएं बर्मा, चीन और ईरान में ब्रिटिश हितों की रक्षा के लिए भेज दी गयीं। उस समय देश के नेताओं ने एकसाथ मिलकर यह विचार किया कि किस प्रकार भारत को अंग्रेज़ों से मुक्त किया जाये। योजना सशस्त्र आन्दोलन की थी और उस में भारतीय सिपाहियों का, जो अंग्रेज़ी सेना में प्रमुख शक्ति हो चुके थे, सहयोग लेना आवश्यक समझा गया।

अगर ऐसा नहीं हुआ होता तो संभवतः इसे प्रथम स्वाधीनता संग्राम नहीं कहा जाता, यह प्रथम और अंतिम स्वाधीनता संग्राम होता।

जिसे अंग्रेज़ सरकार और इतिहासकारों ने सिपाहियों का विद्रोह या गदर का नाम दिया है, वह भारतीयों द्वारा संचालित स्वाधीनता संग्राम था। वह क्यों सफल नहीं हुआ? इसका कारण न तो भारतीय सैनिकों की बहादुरी की कमी थी न जनता के सहयोग की, पर यह बात अवश्य थी कि उस क्रान्ति को प्रारंभ करने वाला और संचालित करने वाला कोई एक नेता नहीं था। दूसरे कुछ घटना क्रम ऐसा हुआ कि जब क्रान्ति का आयोजन सोचा गया था उससे पहले ही विद्रोह की चिंगारी फूट पड़ी। अगर ऐसा नहीं हुआ होता तो संभवतः इसे प्रथम स्वाधीनता संग्राम नहीं कहा जाता, यह प्रथम और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंग्रेज़ी फौज को इलाहाबाद शहर और जिले में हर पेड़ पर लटकी हुई लाशें मिली थीं। कानपुर और बिठूर में सैकड़ों घर जला दिये गये और उनके निवासियों को जला दिया गया।

अंतिम स्वाधीनता संग्राम होता। लेकिन जो कुछ भी हुआ इस संग्राम ने एक तरफ देश को ऐसे अद्वितीय वीरों के दर्शन कराये जिनकी शौर्य गाथाएँ भारत के इतिहास को अलौकिक करती रहीं। दूसरी ओर इस संग्राम ने यह भी दिखा दिया कि साधारण भारतीय किस प्रकार अपने मान-सम्मान और स्वाधीनता की रक्षा के लिए कठोर से कठोर बलिदान करने के लिए तैयार हैं। सन् 1857 की क्रान्ति में जितने सिपाही बलिदान हुए उसके कई गुने साधारण नागरिकों ने अपनी आहुति दी। जो बच गये उन्होंने यातनाएँ झेलीं, गांव के गांव, शहर के शहर भस्मसात कर दिये गये। अंग्रेज़ी फौज को इलाहाबाद शहर और जिले में हर पेड़ पर लटकी हुई लाशें मिली थीं। कानपुर और बिठर में सैकड़ों घर जला दिये गये और उनके निवासियों को जला दिया गया। लखनऊ के सिकन्दर बाग में भारतीय सैनिकों ने हर घर के एक-एक दरवाज़े पर, हर मकान के जीने की एक-एक सीढ़ी पर अंग्रेज़ी फौज का उसी तरह मुकाबला किया, जिस तरह 90 वष बाद स्तालिनग्राद और लेनिनग्राद के निवासियों ने जर्मन डिक्टेटर हिटलर की सेनाओं का मुकाबला किया था। यह अशांति बहुत व्याप्त थी। पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार और बंगाल तो इसमें शुरू से शामिल हो गये थे, लेकिन वर्ष 1859 तक मध्य प्रदेश में तांत्या टोपे ने अंग्रेज़ों को चैन नहीं लेने दिया। समझा यह जाता है कि दक्षिण में कुछ नहीं हुआ, ऐसा नहीं है। महाराष्ट्र उबल रहा था और हैदराबाद में निज़ाम के होते हुए बोलाराभ की ब्रिटीश रेज़िडेंसी पर धावा बोला था। ब्रिटीश हाऊस आफ कामन्स में ये सवाल उठाये गये थे कि मद्रास नगर में छात्रों ने क्यों हड़ताल की थी। अंग्रेज़ इतिहास लेखकों ने इस आन्दोलन को दो प्रकार से सीमित कर दिखाया। एक यह उत्तर भारत के कुछ क्षेत्रों तक सीमित था और दूसरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिपाहियों का विद्रोह था। साथ ही साथ वे यह भी कहते हैं कि विद्रोह से पहले गुड़गांव के कलक्टर ने यह रिपोर्ट भेजी थी कि रोटियां बट रही हैं और एक गांव से दूसरे गांव भेजी जा रही हैं, जो इस बात का संकेत है कि कोई ऐसी भीषण घटना घटनेवाली है, जिनमें गांव-गांव के लोग सम्मिलित होंगे।

इस विद्रोह के प्रारंभकर्ताओं में मंगल पाण्डे का नाम लिया जाता है जो पहले शहीद हुए। मंगल पाण्डे सात वर्ष से भारतीय सेना में नौकर थे और कलकत्ता के पास बारकपुर छावनी में तैनात थे। वे उस परेड में शामिल थे जो 17 मार्च, 1857 में सेनाध्यक्ष हेयर्स ने सम्बोधित की थी और कहा था—"सरकार के दुश्मन सिपाहियों को भड़काते हैं। वे सिपाहियों को बताते हैं कि सरकार उनके धर्म और जाति का नाश करेगी, पर यह बात असत्य है। बहरामपुर की 19 नम्बर की सेना ने आज्ञा भंग करके (कारतूस न लेकर) घोर अपराध किया है, इसलिए सरकार उससे नाराज़ है। अधिक संभव है कि सरकार इस सेना के हथियार ले लेने की आज्ञा दे। ऐसा हुआ तो सारी गोरी और काली पैदल सेनाओं तथा तोपखानों को उनसे हथियार ले लेने के अवसर पर इस मैदान पर फिर इकट्ठा होना पड़ेगा।" इस भाषण ने बारकपुर के सैनिकों को विचलित कर दिया और जब उन्हें सूचना मिली कि बहरामपुर की 19 नम्बर की पदाति सेना को बारकपुर के लिए रवाना कर दिया गया है तो उनसे यह सहन न हुआ कि बारकपुर के भारतीय सिपाही अपने ही भाइयों को बन्दूक

इसलिए मंगल पाण्डे ने एक रात हथियारबन्द होकर अपनी बैरक से बाहर निकल अन्य साथियों को अंग्रेजों के विरुद्ध इकट्ठा होने के लिए आमन्त्रित किया।

और तोपखाने का डर दिखाकर उनसे हथियार छीन लें और उन्हें नौकरी से निकाल दें। इसलिए मंगल पाण्डे ने एक रात हथियारबन्द होकर अपनी बैरक से बाहर निकल अन्य साथियों को अंग्रेजों के विरुद्ध इकट्ठा होने के लिए आमंत्रित किया। उसे एक अंग्रेज़ी अफसर दिखायी दिया, उसने उस पर गोली चला दी लेकिन निशाना चूक गया। तब समाचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाने पर उस पलटन का एडज्यूटेंट घोड़े पर सवार होकर और हैथियारों से लैस होकर मंगल पाण्डे को ढूंढने आता है। मंगल पाण्डे ने निशाना लगाया, गोली घोड़े को लगी जिसके बाद वह गिर गया, पर उसने उठकर मंगल पाण्डे पर पिस्तौल चलायी पर निशाना खाली गया। तब उस अफसर ने तथा उसके सहयोगी ने मंगल पाण्डे पर तलवार से वार किया। मंगल पाण्डे ने अपनी तलवार से उसका जवाब दिया और

मंगल पाण्डे ने गिरफ्तार होने के बजाय खुद मरना स्वीकार किया और पैर के अंगूठे से अपने आपको गोली मार ली, लेकिन वह मरा नहीं, घायल हो गया।

एक अफसर को जमीन पर गिरा दिया, तो दूसरे अफसर ने उसका हाथ पकड़ा, इस पर मंगल पाण्डे ने उसका बांया हाथ भी काट दिया। परन्तु अफसर बच गया। भारतीय सिपाही इस युद्ध को देख रहे थे, पर किसी ने अंग्रेज अफसरों की सहायता नहीं की। तब सेनाध्यक्ष हेयर्स मंगल पाण्डे को गिरफ्तार करने के लिए आया। मंगल पाण्डे ने गिरफ्तार होने के बजाय खुद मरना स्वीकार किया और पैर के अंगूठे से अपने आपको गोली मार ली, लेकिन वह मरा नहीं, घायल हो गया। बारकपूर में आतंक छ गया। उसी समय बहरामपुर की सेना बारकपुर आ गयी और दूसरे दिन उस सेना को हथियार डालने के लिए कहा गया। जनरल हेयर्स ने उनको ताना देते हुए कहा—"सरकार की आज्ञा से आज से तुम सेना से निकाल दिये गये। तुम सबको सरकार घर पहुंचने का मार्ग-व्यय देगी। आज सबको अपने-अपने घर जाने की आज्ञा मिल गयी। अब यह सब अपने पवित्र तीर्थस्थानों को जा सकते हैं। अपने बाप-दादाओं के पूज्य देवताओं की उपासना कर सकते हैं।" 6 अप्रैल को मंगल पाण्डे पर मकदमा चला और उसे फासी की सजा सुनायी गयी। 8 अप्रैल को सेना के सामने उसे फाँसी दे दी गयी। 10 अप्रैल को उस पलटन के जमादार ईश्वर पाण्डे को भी इसलिए फांसी दे दी गयी कि उसने मंगल पाण्डे को पकडने का हुक्म नहीं माना और न अग्रेज अफसरों की सहायता की। मंगल पाण्डे भारतीय स्वाधीनता संग्राम के प्रथम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहीद हो गये और जब उनकी शहादत की चर्चा मेरठ में पहुंची तो 24 अप्रैल, 1857 को अफगानिस्तान और बारकपूर की लडाइयों में प्रशंसा प्राप्त नम्बर तीन रिसाले के सिपाहियों को कारतूस लेने के लिए बुलाया गया। 90 सैनिकों में से 85 ने उन्हें नहीं छुआ। इस अपराध में 6 मई को फौज़ी अदालत ने दस-दस साल की कडी कैद की सजा दी। उधर 6 मई को बारकपूर में भी एक बूसरी पलटन से हथियार छीन लिए गये। 9 मई को मीरठ में परेड के मैदान में सारी सेना एकत्र की गयी, तोपें लगा दी गयीं, रिसाले के 85 सिपाहियों से हथियार ले लिए गये और उनके शरीर से वार्दियां भी उतार लीगयीं। वे केवल बनियान या लंगोट पहने रह गये। फिर उनको हथकडियां डालकर सेना के सामने जेल भेज दिया गया। अंग्रेज़ अधिकारियों का ख्याल था कि इस कठोर कृत्य से मेरठ के सैनिक डर जायेंगे, परन्तु ऐसा हुआ नहीं। दूसरे दिन यानी 10 मई को जो रविवार था, अंग्रेज अफसरों के सारे भारतीय सेवक बेरा-खानासामा गायब हो गये। नंबर तीन रिसाले के कुछ सिपाहियों ने घोड़ो पर सवार होकर जेलखाने पर धावा किया और जेलखाना तोड़कर अपने साथियों की बेडियाँ काट दीं। और वे लोग अपने साथियों से मिल लिये। दूसरी रेजिमेंट भी मेरठ में थीं, विद्रोह कर गयीं। एक रेजिमेंट के कर्नल फ़िनिस को दूसरे रेजिमेंट के एक सिपाही ने गोली मार दी और मेरठ में विद्रोह हो गया और इसके बाद मेरठ की सेना दिल्ली के लिए रवाना हो गयी।

मेरठ की इस सेना ने यमुना नदी पारकर लालकिले में बहादुरशाह ज़फर को गोहार की कि वे विद्रोह का नेतृत्व संभालें। पहले वे हिचके फिर सम्मिलित हो गये। उनका हिचकना स्वाभाविक था क्यों कि उन्होंने तथा उनके अन्य साथियों ने-बिठूर के नानासाहव, अवध के नवाब बिरजिस क़द्र या झांसी की रानी लक्ष्मीबाई-अंग्रेजों के विरुद्ध कार्रवाई का जो समय चुना था, उससे पहले केवल एक छावनी ने विद्रोह कर दिया था। लेकिन लड़ाई शुरू हो गयी थी, उसे रोकना संभव नहीं था। धीरे-धीरे दूसरी छावनियों तक संदेश पहुँचे और हर जगह सैनिक और जनता विद्रोह में शामिल हो गयी। इस कारण सारे देश में एक समय अंग्रेजों के विरुद्ध कार्रवाई नहीं हो सकी। दिल्ली विजय हो गयी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिठूर के नानासाहब के प्रमुख सलाहकार अज़ीमुल्ला खां नें पैगामे आज़ादी नाम से एक समाचार पत्र उर्दू और हिन्दी में दिल्ली से प्रकाशित किया।

अंग्रेज़ वहाँ से हटा दिये गये, कानपुर नगर अंग्रेज़ों के हाथ से छिन गया, इलाहाबाद में लियाकतअली ने किले में असीमित गोला-बारूद होते हुए भी शहर पर कब्जा कर लिया और मुगल बादशाह का झण्डा फहराया। बिठूर के नानासाहब के प्रमुख सलाहकार अज़ीमुल्ला खां ने पैगामे आज़ादी नाम से एक समाचार पत्र उर्दू और हिन्दी में दिल्ली से प्रकाशित किया। नानासाहब के प्रमुख सेनापति तांत्या टोपे ने कानपुर शहर को दोबारा जीत लिया। ग्वालियर पर कब्जा कर लिया और रानी झांसी का युद्ध में साथ देने के लिए कालपी आ पहुँचा। रानी झांसी ने बड़ी बहादुरी से स्त्रियों की फौज संगठित की और पुरुषों की सेना का नेतृत्व किया। उत्तर भारत के अनेकों राजे-महाराजे, ज़मींदार अपनी-अपनी सेना लेकर अंग्रेज़ों के विरुद्ध लड़ने आ गये। बिहार में जगदीशपुर के बाबू कुंवर सिंह ने आज़मगढ़ तक अंग्रेज़ सेना को पीछे भगाया। लखनऊ में सेना की कमान बेगम हज़रतमहल के आदेशों पर चलने लगी जबकि राजवंश के ही कई लोगों ने अंग्रेज़ों का साथ दिया। परन्तु अवध के जो सिपाही बारकपुर और बहरामपुर से निकाल दिये गये थे, उन्होंने स्थानीय राजाओं की सहायता से अवध पर अंग्रेज़ों के प्रभाव को कम किया कालाकांकर के युवराज प्रताप सिंह अंग्रेज़ों के साथ

कालाकांकर के युवराज प्रताप सिंह अंग्रेज़ों के साथ लड़ते हुए युद्ध में शहीद हुए।

लड़ते हुए युद्ध में शहीद हुए। रूहेलखण्ड के बख्त खां ने मुगल बादशाहों के परम्परागत वैमनस्य और वैर को भूलकर मुगल सेनाओं का बहादुरी से नेतृत्व किया। परन्तु योजनापूर्वक कार्य न होने के कारण जीतते-जीतते भारतीय सैनिक हार गये। जहाँ-जहाँ अंग्रेज़ सेना सफल हुई गाँव के गाँव वीरान कर दिये गये, जला दिये गये और पुरुषों को पेड़ों से लटका कर मार दिया गया। फिर भी केवल तांत्या टोपे ने ही नहीं बल्कि मध्य भारत के अनेक सरदारों ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1859 तक अंग्रेज़ों फौजों को कहीं न कहीं युद्ध में उलझाये रखा। नाना साहब और बेगम हज़रतमहल नेपाल निकल गये और तात्या टोपे राजस्थान और मध्यप्रदेश होता हुआ महाराष्ट्र के रायगढ़ तक पहुंच गया। उसे कुछ लोगों के अनुसार एक परिचित ने ही सोते हुए अंग्रेज़ों से पकड़वा दिया, पर कुछ लोग मानते हैं कि जिस व्यक्ति को तांत्या टोपे के नाम से फांसी दी गयी, वह तांत्या

जहाँ-जहाँ अंग्रेज सेना सफल हुई गाँव के गाँव वीरान कर दिये गये, जला दिये गये और पुरुषों को पेडों से लटका कर मार दिया गया।

टोपे था ही नहीं। रानी लक्ष्मीबाई ग्वालियर के समीप शहीद हुई, पर अंग्रेज़ों के हाथ नहीं आयीं। बाबू कुंवर सिंह अपराजित रहे पर युद्ध में प्राप्त चोट के बाद कालकवलित हो गये। फिर भी वर्ष 1858 के समाचारपत्र स्थान-स्थान पर लड़ाइयों के समाचार दे रहे थे यद्यपि कहने को ब्रिटेन तथा अन्य स्थानों से आयी हुई सेना ने भारत में शांति

इस संग्राम में कई नाम उभरकर आये, पर ऐसे सैकडों अनाम सेनापति और सैनिक थे, जनता के प्रतिनिधि थे जिन्होंने खुशी-खुशी मृत्यु का वरण किया ताकि देश आजाद रह सके।

स्थापित कर दी थी। क्रांति का यह प्रयास असफल हो गया, पर साथ ही साथ ईस्ट इंडिया कम्पनी का पत्ता कट गया और लार्ड केनिंग को इलहबाद में दरबार कर महारानी विक्टोरिया की यह घोषणा सुनानी पड़ी कि भारतीयों का ब्रिटन की दूसरी प्रजा के समान बराबर की सुविधाएँ होंगी और उनके क्षेत्र को हड़पने का प्रयास नहीं किया जायेगा। इस संग्राम में कई नाम उभरकर आये, पर ऐसे सैकडों अनाम सेनापति और सैनिक थे, जनता के प्रतिनिधि थे जिन्होंने खुशी-खुशी मृत्यु का वरण किया ताकि देश आज़ाद रह सके। भारत में जब-जब स्वाधीनता के आन्दोलन की प्रगति हुई तो रानी लक्ष्मीबाई, तांत्या टोपे, श्री. अज़ीमुल्ला खाँ और अहम्मद शाह, बाबू कुंवर सिंह राव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुलाराम जैसे विभिन्न नेताओं से प्रेरणा ली गयी। यह ऐसा आन्दोलन था जिस में सिपाही, राजे, आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द और उनके गुरु स्वामी बिरजानन्द से लेकर बेगम हज़रतमहल, बेगम ज़ीनतमहल और नानासाहब जैसे विभिन्न प्रान्तवासी, विभिन्न धर्मावलम्बी और विभिन्न विचारधाराओं के लोग एक उद्देश्य पर दृढ थे कि अंग्रेज़ों को भारत से निकाला जाये। कलकत्ता के हिन्दी दैनिक समाचार सुधावर्षण" और दो उर्दू अखबारों पर राजद्रोह का मुकदमा चला कि उन्होने बहादुरशाह ज़फर का वह फरमान छापा जिसमें कहा गया था कि अग्रेज़ों को बाहर निकाल दो। दिल्ली और उत्तर प्रदेश के अनेक समाचारपत्र बन्द हो गये और भारतीय समाचारपत्रों पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए लाड केनिंग ने नया कानून बनाया। सरकारी रिपोर्टों में कहा गया कि समाचारपत्रों ने विद्रोह को हवा दी है। इस प्रकार सन् 1857 का विद्रोह वह शुरूआत थी जिसने आगे बढकर भारतीय स्वाधीनता संग्राम का स्वरूप ग्रहण किया और देश को स्वतंत्र कराया। 10 मई इसलिए चिरस्मरणीय है। ★

गुरु का अर्थ

शिक्षकों को सम्मानजनक स्थान प्रदान करना भारत की परंपरा रही है। शिक्षक मात्र शिक्षा देने वाला नहीं माना जाता है बल्कि उसे एक ऐसे व्यक्ति के रूप में देखा गया है जो अपने कर्म और वचन से, आदर्श स्थापित करता है। वस्तुतः संस्कृत का शब्द "गुरु" विभिन्न भाषाओं में भारतीय मूल का वह शब्द माना गया है, जिसका अर्थ है शिक्षक, मार्गदर्शक और मित्र।

श्री. आर. वेंकटरामन
राष्ट्रपति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी भाषी प्रान्त एक-भाषा सूत्र छोड़ दें और त्रिभाषा सूत्र अपनायें

श्री. के. चन्द्रशेखरन
शिक्षा मंत्री, केरल

केरल हिन्दी प्रचार सभा के तिरुवनन्तपुरम परिसर में आरब्ध हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय का उद्घाटन करते हुए 12-1-1989 को केरल सरकार के शिक्षा मंत्री श्री. के. चन्द्रशेखरन ने आग्रह किया कि हिन्दी भाषी प्रान्त स्कूली अध्यापन में जो एक भाषा सूत्र अपनाये हुए हैं उसे छोड़कर राष्ट्रीय शिक्षा नीति द्वारा निर्धारित त्रिभाषा सूत्र का सफल कार्यान्वयन आरंभ करें। 1968 में स्वीकृत प्रथम राष्ट्रीय शिक्षा नीति में ही त्रिभाषा सूत्र अपनाया गया था।

श्री. चन्द्रशेखर नें आगे कहा:- 1985 की द्वितीय राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी त्रिभाषा सूत्र पर बल दिया गया है। द्वितीय शिक्षा नीति प्रस्तुत करते हुए प्रधान मंत्री ने संसद में कहा था कि हिन्दी भाषा

हिन्दी भाषी प्रान्त स्कूली अध्यापन में जो एक भाषा सूत्र अपनाये हुए हैं उसे छोड़कर राष्ट्रीय शिक्षा नीति द्वारा निर्धारित विभाषा सूत्र का सफल कार्यान्वयन आरंभ करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल हिन्दी प्रचार सभा के तिरुवनन्तपुरम परिसर में हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महा विद्यालय का उद्घाटन केरल के शिक्षा मंत्री श्री के. चन्द्रशेखरन ने किया। बैठे हैं—(बायें से) डा० मावेलिकरा अच्युतन, श्री. पी. टी. भास्कर पणिकर, डा० जी. रामचन्द्रन, प्रो० पी जे जोसफ और श्री. एम. के. वेलायुधन नायर।

त्रों ने त्रिभाषा सूत्र का कार्यान्वयन नहीं किया हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया था कि हिन्दी भाषा प्रान्त भी त्रिभाषा सूत्र का सफल कार्यान्वयन करें। 1987 में केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार समिति की बैठक में कुछ प्रान्तों के शिक्षा मंत्रियो ने त्रिभाषा सूत्र की उपयोगिता और आवश्यकता पर बल दिया था। तमिनाड को छोड़कर दक्षिण के अन्य तीनों प्रान्तों में—आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक और केरल में—तीन भाषायें सिखायी जा रही हैं। केरल में पहले तीसरी कक्षा में हिन्दी अध्यापन का आरंभ होता था। बाद को पाँचवीं कक्षा में हिन्दी अध्ययन का आरंभ होने लगा। आर्थिक कारणों से निचली कक्षाओं में हिन्दी अध्यापन का आरंभ नहीं हो पा रहा है। पर देश की पाँचों हिन्दी भाषी प्रान्तों की स्थिति क्या है? वहाँ न त्रिभाषा सूत्र है, न द्विभाषा सूत्र है। वहाँ है केवल एक-भाषा सूत्र। वहाँ केवल हिन्दी भाषा सिखायी जाती है। केरल वालों की दृष्टि में हिन्दी राष्ट्रभाषा

केरल वालों की दृष्टि में हिन्दी राष्ट्रभाषा है, स्वतंत्रता संग्राम की भाषा है और स्वतत्रता का शस्त्र है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, स्वतंत्रता संग्राम की भाषा है और स्वतंत्रता का शस्त्र है। पर हिन्दी भाषी लोगों की दृष्टि में हिन्दी केवल उन की मातृभाषा है। हिन्दी उनकी संपूर्ण शिक्षा का एकमात्र माध्यम बनी हुई है। इस स्थिति में परिवर्तन लाना होगा। हिन्दी भाषी प्रान्तों में भी त्रिभाषा सूत्र कार्यान्वित करना होगा। इसके अन्तर्गत हिन्दी और अंग्रेजी के साथ-साथ दक्षिण भारत की कोई भाषा सिखाने का निर्णय किया गया है। केन्द्रीय विद्यालयों, नवोदय विद्यालयों, तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के पाठ्यक्रम के अनुसार संचालित विद्यालयों में प्रान्तीय भाषा सिखायी नहीं जाती थी। केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार समिति ने भाषा संबन्धी मामलों के लिए जो उपसमिति गठित की है उसकी तीन बैठकें हुई हैं। बैंगलूर की बैठक में लिये गये निर्णय के अनुसार केरल स्थित उक्त प्रकार के विद्यालयों में आठवीं से दसवीं कक्षा तक प्रान्तीय भाषा मलयालम भी सिखायी जायेगी। त्रिभाषा सूत्र का कार्यान्वयन उक्त निर्णय के अनुसार जब होने लगेगा तब हिन्दी अध्यापकों की और हिन्दी माध्यम

यदि हम इस देश को एक पागलखाना बनने से बचाना चाहते हैं तो हम सब भारतीयों को हिन्दी सीखनी होगी।

में मलयालम जैसी दक्षिण की भाषायें सिखानेवाले अध्यापकों की मांग बढ़ेगी। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा और केरल हिन्दी प्रचार सभा जैसी संस्थायें विश्व विद्यालयों के समकक्ष ही हैं। ऐसी संस्थाओं द्वारा प्रशिक्षित हिन्दी अध्यापक उक्त मांग की पूर्ति कर पायेंगे। भारत की एकता, सुस्थिति और प्रगति के लिए हिन्दी का विकास और प्रचार अनिवार्य है।

सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए विख्यात गांधीवादी विद्वान एवं गांधीग्राम ग्रामीण विश्वविद्यालय मदुरै के भूतपूर्व कुलपति देशोत्तम डा० जी. रामचन्द्रन ने हिन्दी के प्रचार में तीव्रता लाने की आवश्यकता पर बल दिया। यद्यपि तमिल बंगला आदि भाषायें काफी समृद्ध हैं तो भी हिन्दी के अलावा और कोई भाषा भारत की राष्ट्रभाषा नहीं बन सकती। यदि हम इस देश को एक पागलखाना बनने से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रचार संस्थायें काशी विद्यापीठ, गुजरात विद्यापीठ जैसी राष्ट्रीय शैक्षिक संस्थाओं की महान परंपरा को बनाये रखें ताकि उन के द्वारा प्रशिक्षित युवक और युवतियाँ देश सेवा को अपना जीवनव्रत बना लें ।

बचाना चाहते है तो हम सब भारतीयों को हिन्दी सीखनी होगी । हिन्दी एक ऐसी भाषा है जिसके अध्ययन से देश के नव-निर्माण की अनेक बातें स्वत: संलग्न हैं । केरल हिन्दी प्रचार सभा के हिन्दी अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालय के छात्राध्यापकों ने खादी पहनना आरंभ किया यही इस बात का ज्वलंत प्रमाण है ।

आशीर्वाद भाषण में मलयालम के विख्यात विश्वकोशकार एवं शिक्षाविद श्री. पी. टी भास्कर पणिक्कर ने आग्रह किया कि हिन्दी प्रचार संस्थायें काशी विद्यापीठ, गुजरात विद्यापीठ जैसी राष्ट्रीय शैक्षिक संस्थाओं की महान परंपरा को बनाये रखें ताकि उन के द्वारा प्रशिक्षित युवक और युवतियाँ देश-सेवा को अपना जीवन व्रत बना लें । इन संस्थाओं में प्रशिक्षित युवक हिन्दी प्रान्तों में हिन्दी के माध्यम से हिन्दीतर भारतीय भाषाओं और भारत के नव निर्माण के लिए अवश्यक अन्य बातों का प्रचार करने के लिए स्वयं प्रेरित होकर काम करें । स्वागत भाषण में केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री एवं केन्द्रीय हिन्दी समिति के सदस्य श्री. एम. के. वेलायुधन नायर ने सभा के हिन्दी शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालय के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि सभा ऐसे हिन्दी शिक्षकों को तैयार करना चाहती है जो हिन्दी प्रचार को देश-सेवा का प्रमुख कार्य समझकर अपना जीवन-व्रत बना लें और साथ ही हिन्दी भाषी क्षेत्रों में त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत मलयालम सिखाने में सक्षम हों । हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य डा० मावेलिक्करा अच्युतन ने कृतज्ञता प्रकट की । छात्राध्यापकों ने भारतीय भाषा गान प्रस्तुत किये ।

उक्त प्रशिक्षण महाविद्यालय में केरल हिन्दी प्रचार सभा की अचार्य परीक्षा का एकवर्षीय पाठ्यक्रम चलाया जा रहा है । यह पाठ्यक्रम बी. एड के समकक्ष है । "हिन्दी माध्यम में मलयालम अध्यापन" भी इस पाठ्यक्रम में सम्मिलित है । केरल सरकार ने इस परीक्षा को उचित मान्यता प्रदान की है । ★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांस्कृतिक आदान प्रदान से
राष्ट्रीय एकता बढ़ायें

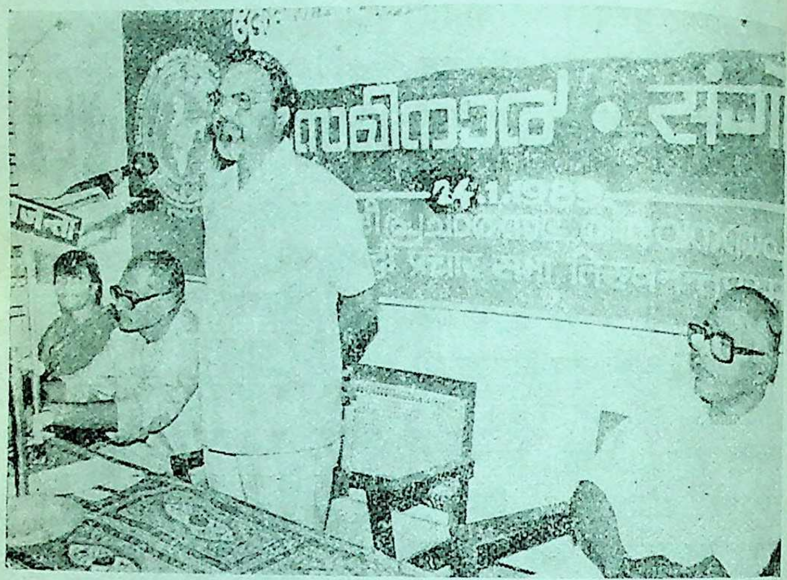

केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा आयोजित संगोष्ठी में बोल रहे हैं उत्तर प्रदेश सरकार के सांस्कृतिक कार्य एवं पर्यटन विभाग के प्रधान सचिव श्री. सुरेन्द्र मोहन ।

बैठे हैं (बायें से) गोरखपूर विश्वविद्यालय के प्राध्यापक एवं 'दस्तावेज' पत्रिका के संपादक डा० विश्वनाथ तिवारी और श्री. एम. के. वेलायुधन नायर ।

भारत की संस्कृति यद्यपि एक है तो भी विविध भाषा प्रान्तों की अपनी-अपनी सांस्कृतिक विशेषतायें हैं जो कला के विविध रूप में परिलक्षित होती हैं। प्रान्त विशेष के जीवन, आचार-विचार आदि की झांकी कलाओं में मिलती है। एक प्रान्त के कला रूपों को इतर प्रान्तों में प्रस्तुत करने से आस्वादकों के हृदय में उस प्रान्त की जनता के प्रति रागात्मक संबंध जुड सकेगा। यह प्रक्रिया देश की भावात्मक एकता को सुदृढ़ करने में सहायक होगी। इसी उद्देश्य से भारत के विविध प्रान्तों के कला रूप इतर प्रान्तों में प्रस्तुत किये जाते हैं और साहित्यिक आदान-प्रदान होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनवरी, 1989 में केरल की राजधानी तिरुवनन्तपुरम में जो उत्तर प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश सरकार के सांस्कृतिक कार्य विभाग की ओर से आयोजित हुआ. इस दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रहा । टैगोर शताब्दी भवन में एक सप्ताह तक नित्य सायंकाल उत्तर प्रदेश के विख्यात कलाकारों ने केरलीय जनता को विविध श्रव्य और दृश्य कलाओं से आह्लादित किया और उद्बुद्ध किया । दिल्ली के श्री. अनन्तलाल का शहनाई वादन, बनारस की श्रीमती एन. राजम का वयलिन वादन, लखनउ की श्रीमती कुंकुमधर और आगरा की श्रीमती काजल शर्मा का कथक, हजीरपुर के श्री. मुरालीलाल पांडेय और संघ तथा महोबा के श्री. लखनलाल यादव और संघ द्वारा प्रस्तुत बुन्देलखण्ड के लोकनृत्य, नई दिल्ली के पार्वती कला केन्द्र द्वारा प्रस्तुत कूमायूनी लोकनृत्य, लखनऊ के श्री. राजा खुशीराम और संघ द्वारा प्रस्तुत ताल वाद्य संगम तथा वाराणसी के श्री. विकास महाराज और संघ द्वारा प्रस्तुत पंचनाद इस कार्यक्रम के कुछ विशेष आकर्षण थे ।

कार्यक्रम का उद्घाटन केरल के मुख्य मंत्री श्री. ई. के. नायनार ने 18-1-1989 को किया। उद्घाटन सम्मेलन में केरल सरकार के सांस्कृतिक मंत्री श्री. के. रामकृष्णन, उत्तर प्रदेश सरकार के सांस्कृतिक कार्य पर्यटन एवं परिवहन विभाग की उपमंत्री श्रीमती प्रमीला बध्वार मेहर आदि ने भी भारत की सांस्कृतिक एकता पर भाषण दिया।

इस कार्यक्रम के दौरान केरल हिन्दी प्रचार सभा में 19-1-1989 को "राष्ट्रीय एकता में ललित कलाओं की भूमिका" पर जा संगोष्ठी आयोजित हुई उस में यह आह्वान किया गया कि ऐसे सांस्कृतिक आदान-प्रदान से हम देश की भावात्मक एकता को सुदृढ़ करें ।

स्वागत भाषण में केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री एवं अखिल भरतीय हिन्दी संस्था संघ के कोषाध्यक्ष श्री. एम. के. वेलायुधन नायर ने उत्तर प्रदेश और केरल के सदियों पुराने संबंध पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उत्तर के पावन तीर्थ-स्थानों से आये घुमक्कड साधुओं ने सदियों पहले केरल में हिन्दी प्रचार का सूत्रपात किया था। इन्हीं तीर्थ स्थानों ने केरल के भगवान शंकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

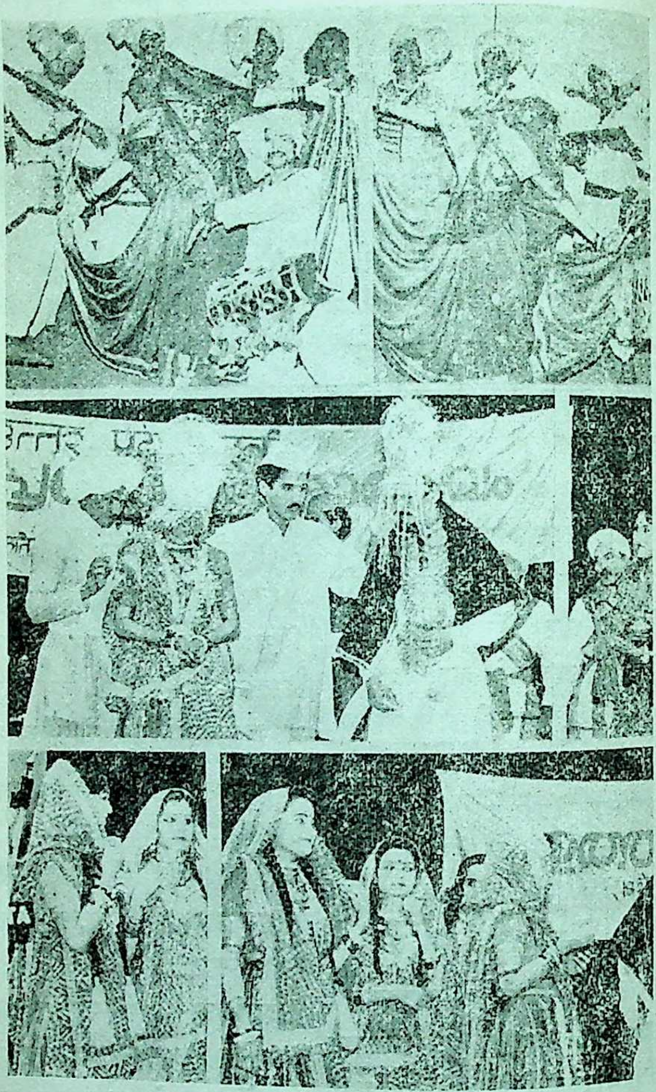

केरल में आयोजित
उत्तर प्रदेश कला पर्व के कुछ दृश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कला रूप कथकलि, मोहिनि आट्टम, कृष्णनाट्टम, कलरिप्पयट्टु आदि केरलीय कला-रूपों का आस्वादन हिन्दी भाषी प्रान्तों में उसी प्रकार किया जाता है जिस प्रकार उत्तर के कथक, शहनाई आदि का आस्वादन केरल में किया जाता है।

को केदारनाथ तक आकृष्ट किया था। उत्तर के सूर, तुलसी आदि की रचनाओं से केरल के विद्यार्थी भली-भांति परिचित हैं। स्वाति-तिरुनाल, डा० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर, डा० एन. चन्द्रशेखरन नायर जैसे केरल के हिन्दी साहित्यकारों को उत्तर की हिन्दी भाषी जनता अपने ही साहित्यकार मानती है। राष्ट्रीय एकता में ललित कलाओं की भूमिका पर विचार करते हुए श्री नायर ने बताया कि कला की अपनी भाषा है जो लिपि या वर्णों से परे है। कला रूप कथकलि, मोहिनि आट्टम, कृष्णनाट्टम, कलरिप्पयट्टु, आदि केरलीय कला-रूपों का आस्वादन हिन्दी भाषी प्रान्तों में उसी प्रकार किया जाता है जिस प्रकार उत्तर के कथक, शहनाई आदि का आस्वादन केरल में किया जाता है। यद्यपि इन कलाओं के कलेवर भिन्न हैं तो भी इन में एक ही भारतीय आत्मा है। जब विघटनकारी शक्तियाँ हमारे देश की भावात्मक एकता को चुनौती देने लगी हैं, हमें इन कलाओं के आदान-प्रदान से भी भारत की भावात्मक एकता को सुदृढ़ करना है।

दीप जलाकर **संगोष्ठी** का उद्घाटन करते हुए उत्तर प्रदेश सरकार के सांस्कृतिक कार्य, पर्यटन एवं परिवहन विभाग की उपमंत्री श्रीमती प्रमीला बध्वार मेहरा ने कहा कि सांस्कृतिक आदान-प्रदान और पर्यटन देश की एकता को संपुष्ट करने में सहायक हैं। दोनों साधनों से हम एक दूसरे को अधिक जान सकेंगे, पहचान सकेंगे, एक दूसरे की संस्कृति सीख सकेंगे। कलाकार अपने अन्दर जो प्यार की भावना है उसे बढ़ाते-बढ़ाते एक-दूसरे के साथ एकता स्थापित कर सकते हैं। कला हमारे क्रोध और दु:ख को मिटा कर एक दूसरे के करीब लाती है। केरल की सुन्दर प्रकृति को देखकर पर्यटक अपना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रोध और दुःख सब भूल जायेंगे। वे यहाँ से एकता और प्यार की भावना ले जायेंगे। उत्तर-प्रदेश की भी प्रकृति सुन्दर है। वहाँ के किले, पहाड, मंदिर आदि में हिन्दुस्थान का पुराना इतिहास सोया पडा है। इस प्रकार के स्थानों का पर्यटन आयोजित करें तो पूरे हिन्दुस्थान में शांति और एकता ज़रूर पैदा होगी।

केरल की सुन्दर प्रकृति को देखकर पर्यटक अपना क्रोध और दुःख सब भूल जायेंगे। वे यहाँ से एकता और प्यार की भावना ले जायेंगे।

अध्यक्षीय भाषण में उत्तर प्रदेश ललित कला अकादमी की अध्यक्षा एवं अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिऔध" की पौत्री श्रीमती वीणा दुग्गल ने ललित कलाओं और भावात्मक एकता का संबंध स्पष्ट करते हुए कहा कि जीवन के नवरसों के मेल से उत्पन्न कलायें मनुष्य में विनम्रता और प्रेम से पूर्ण व्यक्तित्व का विकास कर सकती हैं। कला सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करती है, विघटन को नहीं। कला जोड़ती है, तोड़ती नहीं।

प्रो० डी तंकप्पन नायर ने कहा कि प्रेम का अभाव ही विघटन को जन्म देती है और प्रेम की भावना बढाने में ललित कलायें सहायक हैं। कला ही सब प्रकार को भेद भावनाओं की दीवार को तोड़ सकती है। केरल साहित्य-अकादमी के सदस्य प्रो० सुकुमारन नायर ने बताया कि कलाकारों से ही राष्ट्रीय एकता संभव है। उत्तर की नृत्तकला कथक और दक्षिण की नृत्यकला कथकलि की प्रस्तुति सब के प्रति प्रेम उत्पन्न करेगी।

उत्तर प्रदेश ललित कला अकादमी के सचिव श्री० खन्ना ने कहा कि कला के सरल एवं सरस माध्यम से भाषा का झगडा समाप्त किया जा सकता है और राष्ट्रीय एकता को प्रश्रय दिया जा सकता है। डा० रति साक्सेना ने कृतज्ञता प्रकट करते हुए सुझाया कि केरल के हिन्दी विद्यार्थियों को हिन्दी प्रान्तों में भ्रमण करने का अवसर दिया जाये, ताकि उत्तर की जिस संस्कृति का परोक्ष ज्ञान उन्हें पुस्तकों से मिलता है उसका प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त कर सकें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल के हिन्दी विद्यार्थियों को हिन्दी प्रान्तों में भ्रमण करने का अवसर दिया जाये, ताकि उत्तर की जिस संस्कृति का परोक्ष ज्ञान उन्हें पुस्तकों से मिलता है उसका प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त कर सकें।

24-1-1989 को केरल हिन्दी प्रचार सभा में संगोष्ठी का दूसरा सत्र आयोजित हुआ जिस का उद्घाटन करते हुए उत्तर प्रदेश सरकार के सांस्कृतिक कार्य एवं पर्यटन विभाग के प्रधान सचिव श्री० सुरेन्द्र मोहन ने कहा — जैसे योरोप का हर नागरिक अपनी मातृभाषा के अलावा योरोप की दो-तीन भाषायें भी जानता है उसी प्रकार भारत का हर नागरिक अपनी मातृभाषा के अलावा भारत की दो-तीन भाषायें भी जान ले ताकि देश की विशिष्ट संस्कृति को वह समझ सके। हिन्दी समाचार पत्रों के रविवारीय परिशिष्ट में यदि किसी हिन्दीतर भारतीय भाषा की रचना के नागरी लिप्यंतरण और हिन्दी अनुवाद दिये जायें तो हिन्दीवालों को मालूम होगा कि देश का सारा वाङ्मय एक जैसा है।

गोरखपूर विश्वविद्यालय के प्राध्यापक एवं "दस्तावेज़" पत्रिका के संपादक डा० विश्वनाथ तिवारी ने आग्रह किया कि उत्तर की सरकारें दक्षिण की किसी भाषा का अध्ययन हिन्दी भाषी जनता के लिए अनिवार्य कर दें। उन्होंने कहा कि मनुष्य की चेतना का संस्कार कला और साहित्य ही कर सकता है।

दक्षिण की भाषायें और साहित्य के प्रति उत्तर की जनता का ध्यान आकृष्ट किया जाये।

केरल विश्वविद्यालय की रीडर डा० तंकमणि अम्मा ने बताया— यद्यपि हिन्दी की साधारण कृतियाँ दक्षिण में काफी प्रचलित हैं तो भी दक्षिण भी पुरस्कृत साहित्यक कृतियाँ भी उत्तर में अभी प्रचलित नहीं हो पायी हैं। आपने सुझाया कि दक्षिण की भाषायें और साहित्य के प्रति उत्तर की जनता का ध्यान आकृष्ट किया जाये।

श्री० के. केशवन नायर ने कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा कि केरल के हिन्दी विद्यार्थी प्रेमचन्द और प्रसाद की मिट्टी के दर्शन और स्पर्शन के इच्छुक हैं। ★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपर्क भाषा और संपर्क लिपि के द्वारा देश को अखण्ड बनाये रखें

केरल हिन्दी प्रचार सभा के तिरुवनन्तपुरम परिसर में आयोजित गणतंत्र दिवस समारोह का उद्घाटन केरल विधान सभा के अध्यक्ष श्री. वर्कला राधाकृष्णन ने किया । बैठे हैं—(बायें से) श्रीमती नफीसत बीबी, श्री. ए. पी. उदयभानु, श्री. जूवा रामकृष्णपिल्लै और श्री. एम. के. वेलायुधन नायर ।

केरल हिन्दी प्रचार सभा के तिरुवनन्तपुरम परिसर में 26-1-1989 को आयोजित सार्वजनिक सम्मेलन में केरल के मनीषी नेताओं एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं ने आह्वान किया कि संपर्क भाषा और संपर्क लिपि के द्वारा भारत की अखण्डता को बनाये रखें। अखण्डता से उत्पन्न शक्ति द्वारा ही स्वतंत्रता का संरक्षण संभव है ।

मलयालम के महाकवि श्री. एम. पी. अप्पन ने ध्वजारोहण करते हुए बताया कि जो स्वतंत्रता पाने में हमारे और पूर्वजों ने जीवन की बलि दी थी उस को बनाये रखने केलिए हमें कठिन परिश्रम करना है ।

सार्वजनिक सम्मेलन में आगतों का स्वागत करते हुए केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री एवं अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के कोषाध्यक्ष श्री. एम. के. वेलायुधन नायर ने वेलुत्तम्पी, सरदार भगत सिंह जैसे वीर स्वतंत्रता सेनानियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो स्वतंत्रता पाने में हमारे धीर पूर्वजों ने जीवन की बलि दी थी उस को बनाये रखने केलिए हमें कठिन परिश्रम करना है ।

के जीवोत्सर्ग का अनुस्मरण करते हुए युवा पीढ़ी से आह्वान किया कि राष्ट्रभाषा प्रचार में सहयोग देकर राष्ट्र के नव-निर्माण में अपनी भूमिका निभायें ।

सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए केरल विधान सभा के अध्यक्ष श्री. वर्कला राधाकृष्णन ने इस बात पर खेद प्रकट किया कि जिस हिन्दी को स्वतंत्रता संग्राम के अभिन्न अंग के रूप में देश-भर में स्वीकृत किया गया था उस का आज कहीं कहीं विरोध किया जा रहा है ।

एक ओर यह आशंका है कि हिन्दी के प्रति अतिमोह प्रान्तीय भाषाओं के विकास में बाधक होगा । दूसरी और प्रादेशिक भाषाओं के प्रति अमित अभिष्वंग । ये दोनों बातें देश केलिए अहित-कर हैं ।

कुछ एक राजनीतिक दल भाषाई पागलपन को अपने अस्तित्व का आधार बनाये हुए हैं । यह स्थिति हमारे देश केलिए आपत्तिजनक है । हर राष्ट्र की अपनी एक राष्ट्रभाषा होनी ही चाहिए । विश्व के सभी राष्ट्रों की अपनी अपनी राष्ट्रभाषा है । भाषा समस्या हमारे देश की एकता और सुस्थिति केलिए बड़ी चुनौती बनी हुई है । इस समस्या को सुलझाने केलिए हमें प्रयत्नशील होना है । प्रान्तीय भाषाओं का वकास करें और राष्ट्रभाषा का भी विकास करें ।

भूतपूर्व तिरुवितांकोर - कोच्चि प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष एवं मलयालम के यशस्वी पत्रकार तथा लेखक श्री. ए. पी. उदयभानु ने बताया कि विविध भाषा-भाषी भारतीय जनता को एक सूत्र में पिरोने का कार्य महात्मा गाँधी ने हिन्दी प्रचार सभाओं को सौंपा था । जनता को एक बनाये रखने में संपर्क भाषा का बडा महत्व है । यह तत्व जान कर ही भारत के ब्रिटीश शासकों ने अपनी भारतीय सेना की संपर्क भाषा

एक ओर यह आशंका है कि हिन्दी के प्रति अतिमोह प्रान्तीय भाषाओं के विकास में बाधक होगा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के रूप में रोमन उर्दू को अपनाया था। रोमन लिपि में उर्दू भाषा सिखायी जाती थी। यही तत्व समझ कर महात्मा गांधी, स्वामी श्रद्धानंद जैसे हिन्दीतर भाषा भाषियों ने हिन्दी को भारत की संपर्क भाषा के लिए चुना था। हिन्दी का काम जोडने का है। स्नेह और भ्रातृत्व की भावना द्वारा विविध भाषा-भाषी भारतीयों को जोडना हिन्दी का दायित्व है।

एक संपर्क लिपि भी देश की एकता को सुदृढ बनाने के लिए अत्यंत आवश्यक है। भारत की प्राय: सभी लिपियाँ ब्राह्मी लिपि से उत्पन्न मानी जाती हैं। किसी भाषा केलिए कोई लिपि अनिवार्य नहीं है। केरल में संस्कृत का पठन पाठन प्राय: देवनागरी लिपि में नहीं, अपितु मलयालम लिपि में हुआ करता था। हमें देवनागरी लिपि या और कोई लिपि चाहे वह रोमन लिपि ही क्यों नहीं, देश की संपर्क लिपि के रूप में चुनना है।

स्नेह और भ्रातृत्व की भावना द्वारा विविध भाषा-भाषी भारतीयों को जोडना हिन्दी का दायित्व है।

भाषा और प्रदेश के नाम पर राजनीतिक दल बनाने की कुत्सित प्रवृत्ति हमारे महान गणतंत्र की जनतंत्रात्मक प्रणाली को विकल बना देगी।

केरल विधान सभा कीं भूतपूर्व उपाध्यक्षा एवं अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी को साधारण सभा की सदस्य श्रीमती नफीसत बीवी ने कहा कि भारत को भावात्मक एकता प्रदान करने का कार्य राष्ट्र-भाषा ही कर सकती है। हिन्दी का ज्ञान हो तो भारत के हर कोने में हमें अपनत्व का अनुभव होगा। भाषा और प्रदेश के नाम पर राज-नीतिक दल बनाने की कुत्सित प्रवृति हमारे महान गणतंत्र की जनतंत्रात्मक प्रणाली को विकल बना देगी।

स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी एवं हरिजन सेवक श्री० जूबा रामकृष्ण पिल्लै ने स्वतंत्रतापूर्व के उन दिनों की याद की जब केरल में महात्मा गांधी, पंडित जवाहरलाल नेहरु जैसे नेताओं का स्वागत समारोह सरकार की दमन-नीति के बावजूद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी कार्यकर्ताओं के नेतृत्व में हुआ करता था। हिन्दी प्रचार, खादी प्रचार, मद्यनिषेध, विदेशी माल का बहिष्कार आदि रचनात्मक कार्यक्रम स्वतंत्रता सग्राम से जुड़े हुए थे।

आओ प्यारे भाइयो, आओ क्रान्तिकारियो,
आओ प्यारी मातृभूमि केलिए लडेंगे हम।

आदि हिन्दी गीत केरल के स्वतंत्रता सेनानियां में भी जोश भर देते थे।

केरल हिन्दी प्रचार सभा के हिन्दी अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राध्यापक श्री. के. केशवन नायर ने कृतज्ञता प्रकट का। छात्राध्यापकों ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

पोंकाला

तिरुवनन्तपुरम में आट्टुकाल मंदिर में प्रतिवर्ष जनवरी महीने में पोंकाला का मेला लगता हे जब हजारों स्त्रियाँ अपने घर से लाये बर्तनों में सडकों के किनारे चावल का नैवेद्य पकाती हैं। इस में पुरुषों को प्रवेश नहीं दिया जाता। अनेक धर्मों की स्त्रियाँ इसमें भाग लेती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामकथाप्पाट्टु

मलयालम का सर्वप्रथम सम्पूर्ण रामकाव्य

एम. पुरुषोत्तमन एम. ए., बी. एड.

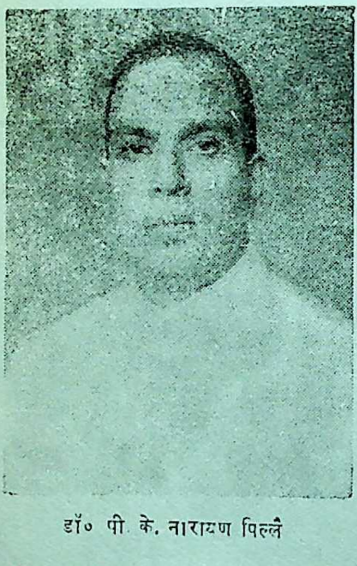

डॉ० पी. के. नारायण पिल्लै

केरल के अन्ताराष्ट्रीय पर्यटक केन्द्र कोवलम के निकट 'अव्वाट्टुतुरा' नामक गाँव में अय्यिपिल्लै 'आशान' का जन्म हुआ था। यह पवित्र भूमि विंषत्रम से डेढ़ मील दूर "लाइट हाउस" के निकट है। प्राकृतिक सौन्दर्य की दृष्टि से यह गाँव कवि की उपयुक्त जन्मभूमि है। समुद्र सामीप्य, लहरों की आवाज, नारियल के पेडों के बाग और ऊँचे-ऊँचे पत्थरों से यह स्थान बहुत रमणीय दिखाई पड़ता है। उनके जन्मगृह का अवशिष्ट आज भी यहाँ देख सकते हैं। घर के समीप ही एक छोटा सा दुर्गाक्षेत्र है। लोगों का विश्वास है कि मृत्युकाल निकट आते ही आशान मंदिर में बैठकर समाधि में लग गये।

अय्यिपिल्लै आशान का जीवन वृत्तान्त अधिकतर जनश्रुतियों तथा किंवदन्तियों पर आधारित है। उन्होंने काव्य में अपने विषय में बहुत थोड़ा ही कहा है। खोजों के फलस्वरूप यह जानकारी प्राप्त हुई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खोजों के फलस्वरूप यह जानकारी प्राप्त हुई है कि अय्यिपिल्लै आशान का जन्म आज से लगभग छः सौ वर्ष पहले हुआ था।

है कि अय्यिपिल्लै आशान का जन्म आज से लगभग छ: सौ वर्ष पहले हुआ था।

अय्यिपिल्लै आशान कवि, पंडित, भक्त और दार्शनिक थे। उनमें विश्वकल्याण की कामना थी। रामचरित रूपी मणिमाणिक्य को उन्होंने रामकथाप्पाटट् के माध्यम से प्रस्तुत किया। मलयालम भाषा में रामकथा साहित्य का उद्भव एवं विकास "रामचरित" के साथ होता है। द्राविड छन्दों में विरचित इस काव्य के रचयिता का नाम चीरामन है। विद्वान इसका रचनाकाल तेरहवीं शताब्दी मानते हैं। वाल्मीकि रामायण के आधार पर विरचित इस काव्य में केवल युद्ध-काण्ड का ही प्रतिपादन हुआ है। काव्य सौष्ठव की दृष्टि से यह काव्य अत्युत्तम नहीं। तो भी यह गेय पदों से संपन्न है।

1400 ई० के आसपास कोवलम में जीवित अय्यिपिल्लै आशान कृत 'रामकथाप्पाट्ट्' अथवा रामकाव्य को मलयालम की सर्वप्रथम संपूर्ण रामायण कृति मानते हैं। युद्ध वर्णन का आस्वादन करने की रुचि उस ज़माने के लोगों में प्रबल थी। जहाँ वाल्मीकि ने रामायण का एक तिहाई भाग युद्धकाण्ड के वर्णन केलिए ले लिया है वहाँ अय्यिपिल्लै आशान ने अपने काव्य का आधा भाग इस केलिए लिया है। जिस समय तमिल, तेलुगू, कन्नड़ आदि भाषाओं के रामकाव्यों में श्रीराम को ईश्वर माना जाता रहा उसी समय आशान ने श्रीराम को अधिक मानव मानने का प्रयत्न किया है। उनके राम सर्वगुण संपन्न एक मानव हैं। इस प्रकार के गेय रामकाव्य मलयालम में ही नहीं, अन्य भारतीय भाषाओं में भी दुर्लभ होंगे।

प्रकाण्ड पंडित अय्यिपिल्लै ने वाल्मीकि रामायण के आधार पर अपनी विश्वोत्तर कृति 'रामकथा-प्पाट्ट्' की सृष्टि की है। पर राम-कथाप्पाट्ट् वाल्मीकि रामायण का

मलयालम भाषा में रामकथा साहित्य का उद्भव एवं विकास "रामचरित" के साथ होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक पूर्ण अनुवाद नहीं है। यह एक समान्तर सृष्टि है। कुछ स्थानों पर मूलकृति के अनुवाद की थोडी सी छाप दिखाई पड़ती है। उदाहरणार्थ जब लक्ष्मण श्रीराम के साथ वनवास केलिए तैयार हो जाता है तब सुमित्रा उसे उपदेश देती है। इस प्रसंग में आशान ने अनुवाद का थोडा सहारा लिया है। ऐसे सन्दर्भों में आशान ने केवल अनुवाद ही अपनाया है।

आशान ने श्रीराम को अधिक मानव मानने का प्रयत्न किया है।

कवि ने स्थान स्थान पर आवश्यकतानुसार कथावस्तु में परिवर्तन भी किया है। आशान अपने काव्य में विश्वामित्र की तपस्या का भंग कराने केलिए मेनका को भेजता है। लेकिन वाल्मीकि रामायण में ऐसा कोई प्रसंग नहीं है। इस प्रकार का दूसरा एक प्रसंग पातालरामायण कथा में है। यह प्रसंग शायद् आशान को तमिल से मिला होगा। इसी प्रकार "मय्यरावण" की कथा को भी उन्होंने कृति में स्वीकार किया है जो उन्हें तमिल से मिली है।

एक बार रावण माया प्रयोग से श्रीराम का सा एक सिर सीताजी को दिखाता है। यह देखकर सीता बहुत अधिक दुःखी होती है और विलाप करती है।

मय्यरावण की कथा तमिल में बहुत प्रसिद्ध थी और इस कथा के आधार पर एक सिनेमा की सृष्टि भी वहाँ हुई है।

रामकथाप्पाट्ट् में आशान की अनेक नयी मौलिक उद्भावनायें भी मिलती हैं। एक बार रावण माया प्रयोग से श्रीराम का सा एक सिर सीताजी को दिखाता है। यह देखकर सीता बहुत अधिक दुःखी होती है और विलाप करती है। इस प्रकार दूसरे एक प्रसंग में, मायासीता का वध करते देखकर हनुमान को यह धारणा हो गयी कि सीता की मृत्यु हुई और हनुमान इस घटना का वर्णन श्रीरामचन्द्रजी के सम्मुख प्रस्तुत करता है। यह घटना भी मूलकृति में नहीं है।

वर्णन प्रणाली में भी आशान ने अपना तरीका अपनाया। उदाहरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए सर्वाभरणभूषित होकर अन्तपुर में सोनेवाले रावण को जहाँ वाल्मीकि ने उनतीस श्लोकों में चित्रित किया है वहाँ आशान ने केवल बारह पंक्तियों में यह चित्र खींचा है। कभी कभी हम पाते हैं कि वाल्मीकि ने अपने कथापात्रों को विस्मृति में छोड़ दिया है। लेकिन आशान ने इस कमी को दूर किया है। अयोध्या की ओर जानेवाली जुलूस में वाल्मीकि ने सीताजी को छोड़ दिया है। लेकिन आशान ने यहाँ सीता का विशेष रूप से स्मरण किया है। इसी प्रकार रामाभिषेक के लिए पुण्यतीर्थ लाने के अवसर पर हनुमान को वाल्मीकि ने छोड़ दिया। पर आशान इस शुभ कार्य के अवसर पर हनुमान को भी साथ लाते हैं।

भावपक्ष और कलापक्ष दोनों की दृष्टियों से रामकथापाट्ट् एक महत्वपूर्ण रचना है। मलयालम भाषा में 'पाट्ट्' का तात्पर्य गेय पदों से है। दक्षिण के गेय पदों में इस काव्य का भी स्थान रहा। इसलिए बहुत काल तक ऐसी धारणा रही कि इसका कलापक्ष दुर्बल होगा। लेकिन यह धारणा गलत स्थापित हुई है। आशान ने इस काव्य का नाम "रामकाव्य" रखा था— 'रामकथापाट्ट्' नहीं। काव्य सौष्ठव और गानात्मकता में यह तमिल भाषा के सुप्रसिद्ध ग्रन्थ "चिलप्पतिकारम" के निकट है।

इस काव्य में अलंकारों का प्रयोग अन्य रामायण काव्यों की तुलना में कम है। अलंकारों का प्रयोग करने मात्र के लिए कवि ने अलंकारों का प्रयोग नहीं किया है। व्यंग्य का प्रयोग भी आशान ने बड़े चमत्कार से किया है। हनुमान रात के समय रावण के अन्तपुर में पहुँचा। वहाँ उसने अनेक सुन्दरियों को देखा। जहाँ वाल्मीकि ने इन युवतियों के सौन्दर्य के बारे में विस्तृत वर्णन किया है वहाँ आशान ने इतना ही कहा कि हनुमान का मन चंचल हुआ और वह मन राक्षसी सुन्दरियों के पास पहुँचा।

काव्य सौष्ठव और गानात्मकता में यह तमिल भाषा के सुप्रसिद्ध ग्रन्थ "चिलप्पतिकारम" के निकट है।

नवरसों के वर्णन में भी कवि को बड़ी सफलता मिली है। यह काव्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह काव्य वीर रस प्रधान गेय पदों की एक शृंखला है।

वीर रस प्रधान गेय पदों की एक शृंखला है। वीर स्थिरोत्साही, रजोगुण संपन्न श्रीराम के चरित्र का वर्णन करते समय वीर रस का होना स्वाभाविक ही है। श्रीराम और लक्ष्मण की वीरता का वर्णन जब अकम्पनन विस्तृत रूप से रावण के सामने करता है तब वीर रस बहुत अधिक प्रभावपूर्ण दिखाई पड़ता है। नागास्त्र से घायल और बेहोश श्रीराम को देखकर सीता जहाँ विलाप करती हैं वहाँ करुण रस का सबसे श्रेष्ठ उदाहरण मिलता है। रावण की अधीनता स्वीकार कराने केलिए राक्षसियाँ जहाँ सीता को रावण के भयानक रूप का वर्णन सुनाती हैं वहाँ भयानक रस का उत्तम उदाहरण मिलता है। सदस्यों को आकृष्ट करने केलिए आशान ने हास्य रस का जो प्रयोग किया है वह भी महत्वपूर्ण है।

इस रामकाव्य की भाषा को लेकर विद्वानों में बड़ा मतभेद है। मलयालम के प्रसिद्ध महाकवि और इतिहासकार उल्लूर एस. परमेश्वर अय्यर के अनुसार इस काव्य की भाषा शुद्ध मलयालम नहीं है- तमिल है। कवि संस्कृत, तमिल, मलयालम—इन तीनों भाषाओं के प्रकांड पंडित थे। इस कारण इनके काव्य में इन तीनों भाषाओं का प्रभाव होना स्वाभाविक है। बहुत अधिक खोज के बाद आज यह सिद्ध हुआ है कि इस काव्य में जिस भाषा का प्रयोग किया गया है वह तमिल

कवि संस्कृत, तमिल, मलयालम-इन तीनों भाषाओं के प्रकांड पंडित थे।

मिश्रित मलयालम है। यही भाषा उस समय दक्षिण तिरुवितांकूर में प्रचलित थी। इसी देश भाषा को आशान ने अपनी रचना केलिए स्वीकार किया।

महाकवि उल्लूर ने अय्यिप्पिल्लै आशान को नवरसों में प्रथमगणनीय माना है। आशान पूर्ण रूप से एक कवि हैं। उनका सम्बन्ध काव्य कला से है, न धर्म या भक्ति से। इसलिए उनका राम सर्वगुण संपन्न मानव है। मलयालम के प्रसिद्ध पंडित डा० पी. के. नारायणपिल्लै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रीक साहित्य के प्रसिद्ध काव्य 'इलियट' और 'ओडीसी' की रचना रीति के समान ही आशान ने रामकथाप्पाट्ट् की सृष्टि की है।

के मतानुसार ग्रीक साहित्य के प्रसिद्ध काव्य 'इलियट' और 'ओडीसी' की रचना रीति के समान ही आशान ने रामकथाप्पाट्ट् की सृष्टि की है। दो समय पर जीवित रहने पर भी विश्वविख्यात होमर और महाकवि अय्यिपिल्लै आशान ने एक ही प्रकार की काव्य रचना की। दोनों की कृतियों को देवालयों में कीर्तन केलिए स्वीकार किया गया। दोनों काव्यों में सार्वलौकिकता है। इन सब कारणों से अय्यिपिल्लै आशान को मलयालम का "होमर" कहना उचित ही है।

सरकारी आदर्श हाई स्कूल
तिरुवनन्तपुरम, केरल

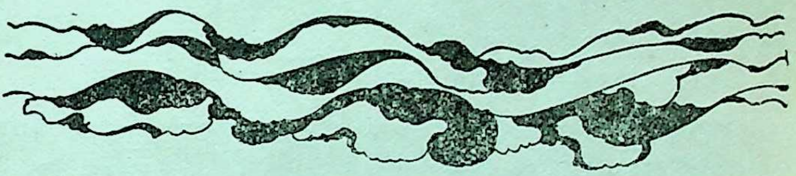

संसदीय कार्य मंत्रालय में हिन्दी को बढावा

केन्द्रीय संसदीय कार्य तथा सूचना और प्रसारण मंत्री श्री हरकिशन लाल भगत ने नई दिल्ली में 22-12-1988 को आयोजित केन्द्रीय संसदीय कार्य मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति में अपने अध्यक्षीय भाषण में बताया कि संसदीय कार्य मंत्रालय अपने कार्य क्षेत्र से सम्बन्धित विषयों पर हिन्दी में मौलिक लेखन के लिए विश्व-विद्यालयों अथवा अन्य संस्थानों को शोध छात्रवृत्तियाँ देने के प्रस्ताव पर विचार कर रहा है।

यह आम राय थी कि मंत्रालय के उन अधिकारियों को पुरस्कृत करने की योजना बनाई जाए, जो हिन्दी में अधिक से अधिक पत्र लिखवाते हैं या हिन्दी में डिक्टेशन देते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व शान्ति दिवस समारोह

30 जनवरी 1948 को हमारे राष्ट्रपिता ने मानव जाति को हिंसा से मुक्ति दिलाने के लिए अपनी जान दे दी थी। उस पावन स्मृति में 30-1-1989 को विश्व शान्ति दिवस मनाया गया। केरल हिन्दी प्रचार सभा में आयोजित सम्मेलन में अभिभाषण दे रहे हैं डा० बाबु विजयनाथ। बैठे हैं (बायें से) श्री. एम. के. वेलायुधन नायर, श्री. के. जनार्द्दनन पिल्लै, डा० मावेलिक्करा अच्युतन और आर्ट्टिंगल गांधी श्री. माधव वारियर।

30-1-1989 को केरल हिन्दी प्रचार सभा और केरल गान्धी स्मारक निधि के संयुक्त तत्वावधान में विश्वशान्ति दिवस मनाया गया और तिरुवनन्तपुरम के महात्मा गान्धी मार्ग में शान्तियात्रा का आयोजन किया गया। यात्रा का नेतृत्व कर रहे हैं केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री श्री. एम. के. वेलायुधन नायर, केरल गांधी स्मारक निधि के मंत्री श्री लूकोस बंजमिन, स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी श्री. जूबा रामकृष्णपिल्लै आदि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरभाष : 61378 तार : "जय हिन्दी"

केरल ज्योति

पुष्प 23
दल 12

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका
मार्च 1989

एक प्रति—1 रु० 50 पै०
वार्षिक—15 रु०

संपादकीय

हिन्दी प्रचार का सही अर्थ

हिन्दी प्रचार का अर्थ समय के साथ साथ बदलता रहा है। स्वतंत्रता संग्राम के समय हिन्दी प्रचार का अर्थ था स्वतंत्रता पाने की इच्छा हिन्दी के द्वारा जनता में प्रबल बनाना और समस्त भारतीय जनता को एक राष्ट्रभाषा के सूत्र में पिरो लेना। उन दिनों राष्ट्रपिता के रचनात्मक कार्यक्रमों में हिन्दी प्रचार का एक मुख्य स्थान था। हिन्दी प्रचारक खादी पहनते थे, अन्य रचनात्मक कार्यक्रमों में सक्रिय भाग लेते थे और मुख्य देश सेवा मानकर हिन्दी का प्रचार करते थे। अनेकों हिन्दी कार्यकर्ता—जिनमें केरल के श्री. पी. नारायण, पंडित नारायण देव आदि भी थे—जेल भी गये।

लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी प्रचार का एक अलग माहौल बन गया। भाषा के प्रचार पर अधिक ज़ोर दिया जाने लगा। भाव पक्ष और भावना पक्ष गौण होता गया। हिन्दी का जो जीवन दर्शन है उसकी ओर ध्यान कम जाने लगा।

इसी पृष्ठभूमि में अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ और केरल हिन्दी प्रचार सभा के संयुक्त तत्वावधान में एक अखिल भारतीय कार्यकर्ता शिविर 25-2-1989 से 1-3-1989 तक तिरुवनन्तपुरम में आयोजित हुआ जिसमें "राष्ट्रीय चेतना—हिन्दी द्वारा" विषय पर विशद चर्चा हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में

हिन्दी के द्वारा भारतीय मूल्यों की पुन:स्थापना हो — 3

स्वतंत्रता आन्दोलन में हिन्दी की भूमिका — 10
डॉ० एन. चन्द्रशेखरन नायर

विख्यात मलयालम साहित्यकार पी. के. परमेश्वरन नायर — 21
श्री. जे. आर. बालकृष्णन नायर

राधे राधे — 23
डॉ० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर

काश तू अनागत रहता — 30
डॉ० एम. षण्मुखन

ईश्वर नहीं है — 32
मूल : मलयाट्टूर रामकृष्णन
अनु : के. राधाकृष्णन अयिरूर

शिविर का सचित्र विवरण इस अंक में दिया गया है। शिविर में प्रस्तुत किये आलेख केरल ज्योति में खण्डश: प्रकाशित किये जा रहे हैं। शिविर की चर्चा हिन्दी कार्यकर्ताओं केलिए विचरोत्तेजक और प्रेरणाप्रद रही।

शिविर से जो मुद्दे उभर कर आये उन में प्रमुख यही है कि हिन्दी प्रचार को अपने भावपक्ष और भावनापक्ष को पुन: प्रबल करना होगा। हिन्दी भाषा सिखाने मात्रसे हिन्दी प्रचार का लक्ष्य सिद्ध नहीं हो सकता। हिन्दी एक माध्यम हो राष्ट्रीय चेतना जगाने का। हिन्दी के कार्यकर्ता अपने को केवल हिन्दी प्रचार कार्यों तक सीमित नहीं रखें। देश के नवोत्थान के लिए जो भी महत्वपूर्ण अभियान चल रहे हैं उन सबसे अपने को और अपने छात्रों को जोडते रहें। विशेष कर खादी प्रचार और निरक्षरता निवारण के अभियानों से उनका निकटतम संपर्क रहे।

केरल हिन्दी प्रचार सभा के कार्यकर्ता खादी प्रचार और निरक्षरता निवारण में सक्रिय भाग लेने लगे हैं। आशा है इससे संस्थाओं के कार्यकर्ताओं में भी इस नये आवेश की लहर उठेगी और हिन्दी प्रचार का सही अर्थ उभर आयेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिविर समाचार

हिन्दी के द्वारा भारतीय मूल्यों की पुनःस्थापना हो

हिन्दी प्रचार के द्वारा भारतीय संस्कृति के मूल्यों को पुनःस्थापना करने का आह्वान तिरुवनन्तपुरम में 25-2-1989 से 1-3-1989 तक आयोजित अखिल भारतीय हिन्दी कार्यकर्ता शिविर में विविध विद्वानों एवं नेताओं ने किया। केन्द्र मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा नई दिल्ली में संस्थापित अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ और केरल हिन्दी प्रचार सभा के संयुक्त तत्वावधान में केरल हिन्दी प्रचार सभा के तिरुवनन्तपुरम परिसर में आयोजित शिविर में देश के विविध भागों में स्थित ऐसी करीब बीस प्रमुख स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं के पचास प्रतिनिधियों ने भाग लिया जो अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ की सदस्य संस्थायें हैं और करीब आधी शताब्दी से हिन्दी का प्रचार-प्रसार करने में लगी हुई हैं।

शिविर के उद्घाटन सम्मेलन में स्वागत भाषण में केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री एवं अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के कोषाध्यक्ष श्री. एम. के. वेलायुधन नायर ने स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं की कार्य-शैली का विवरण प्रस्तुत करते हुए बताया कि स्वतंत्रता संग्राम के अभिन्न अंग के रूप में जब हिन्दी प्रचार आरंभ हुआ तब हिन्दी के माध्यम से देश की अखण्डता को बनाये रखने के उद्देश्य से इन संस्थाओं की स्थापना हुई।

हिन्दी के द्वारा हम भारत के उत्तम सांस्कृतिक मूल्यों की पुनःस्थापना करें और उन शक्तियों का विरोध करें जो देश के सांस्कृतिक उत्थान में व्यवधान उत्पन्न करती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

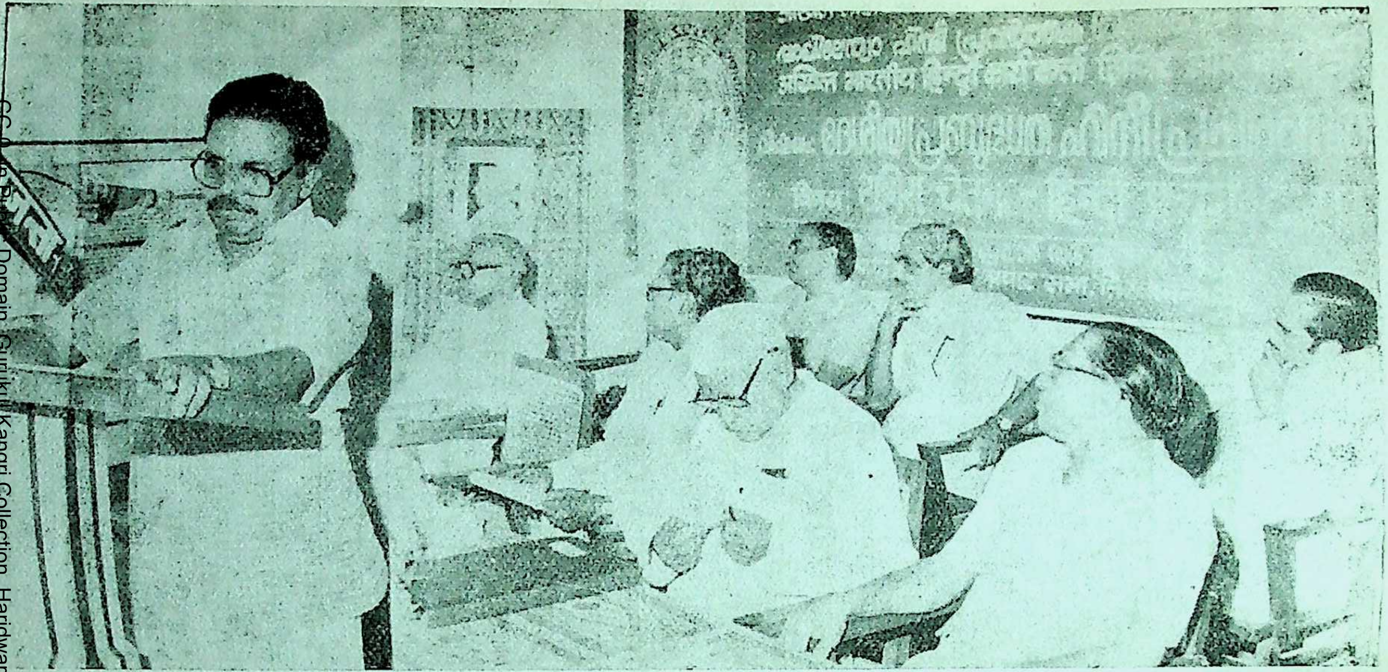

अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ और केरल हिन्दी प्रचार सभा के संयुक्त तत्वावधान में तिरुवनन्तपुरम में आयोजित अखिल भारतीय हिन्दी कार्यकर्ता शिविर का उद्घाटन केरल के युवा एवं खेल विभाग मंत्री श्री. ए. नीललोहितदासन नाटार ने किया।

बैठे हैं प्रथम पंक्ति (बायें से) श्री० एम. के. वेलायुधन नायर, डा० ए. गुरुमारन नायर, श्री० शंकर राव लोंढे और डा० मो. दि. पराड़कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल हिन्दी प्रचार सभा में श्री० शंकर राव लोंढे और प्रो० रामलाल परीख के अभिनन्दन समारोह का उद्घाटन कर रहे हैं केरल के वन मंत्री प्रो० एन. एम. जोसफ।

बैठे हैं—प्रथम पंक्ति : श्री० पी. टी. भास्कर पणिक्कर, डा० एन. ए. करीम, प्रो० रामलाल परीख, डा० शूरनाट कुञ्जन पिल्लै, श्री० शंकर राव लोंढे और श्री० पी. मावसवेल।

द्वितीय पंक्ति (बायें से) डा० के. शिवदासन पिल्लै और श्री. एम. के. वेलायुधन नायर।

शिविर का उद्घाटन करते हुए केरल के खेल एवं युवा कार्य मंत्री श्री. ए. नीललोहितदासन नाटार ने आह्वान किया कि हिन्दी के द्वारा हम भारत के उत्तम सांस्कृतिक मूल्यों की पुन:स्थापना करें और उन शक्तियों का विरोध करें जो देश के सांस्कृतिक उत्थान में व्यवधान उत्पन्न करती हैं। आप ने आग्रह किया कि देश की एकता को सुदृढ़ करने केलिए देवनागरी को आम लिपि के रूप में स्वीकृत किया जाये।

उद्घाटन सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए केरल विश्वविद्यालय के उप-कुलपति एवं प्रमुख शिक्षाविद डा० ए. सुकुमारन नायर ने कहा कि हिन्दी का, जिसके सहारे देश की अखण्डता में विघ्न पहुंचानेवाली प्रवृत्तियों का हमें सामना करना है, अधिक वैज्ञानिक ढंग से विद्यालयों में और समाज में अध्यापन और प्रचार करना है। आप ने कहा कि विविध प्रान्तों के स्कूली पाठ्यक्रमों में हिन्दी को जो स्थान दिया जाता है उस का स्पष्ट उल्लेख हमारी शिक्षा नीति में नहीं किया गया है।

केन्द्रीय हिन्दी समिति के सदस्य एवं तपोनिष्ठ हिन्दी सेवी श्री. शंकरराव लोंढ़े ने सुझाया कि दक्षिण की भाषाओं के लोकगीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिण की भाषाओं के लोकगीत और लोक कथाओं का देवनागरी में लिप्यन्तरण हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित करें

और लोक कथाओं का देवनागरी में लिप्यन्तरण हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित करें तो हिन्दी भाषियों को इन प्रान्तों का निकटतर परिचय मिल सकेगा जिससे भावात्मक एकता बढ़ेगी। अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के कार्यालय सचिव श्री जगदीश प्रसाद शर्मा ने कृतज्ञता प्रकट की।

शिविर में 'राष्ट्रीय चेतना हिन्दी द्वारा' विषय पर जो राष्ट्रीय संगोष्ठी चली उसमें डा० एन. चन्द्रशेखरन नायर, डा० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर, डा० किशोर बासवानी, डा० वी. गोविन्द शेनाय, डा०एस. तंकमणी अम्मा, श्री. के वी. कृष्णन कुट्टी, डा० रति सक्सेना और श्री. सुभाष चन्द्र गैंधर ने विषय के

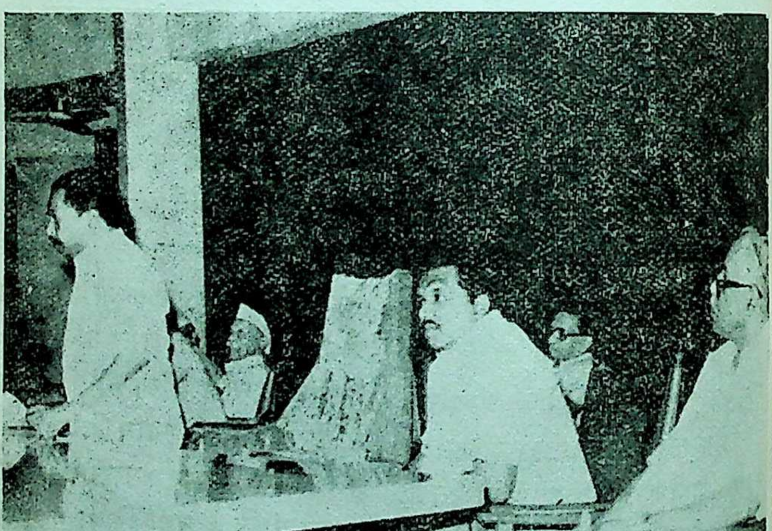

तिरुवनन्तपुरम में आयोजित अखिल भारतीय हिन्दी कार्यकर्ता शिविर के प्रतिभागियों का तिरुवनन्तपुरम नगर निगम भवन में स्वागत करते हुए महापौर श्री० पी. मैक्सवेल बोल रहे हैं। समीप है (बायें से) श्री. शंकर राव लोंढे, श्री० वी. के. हरिकुमार (आयुक्त, तिरुवनन्तपुरम नगर निगम) डा० मो. दि. पराडकर और श्री० एम. के. वेलायुधन नायर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

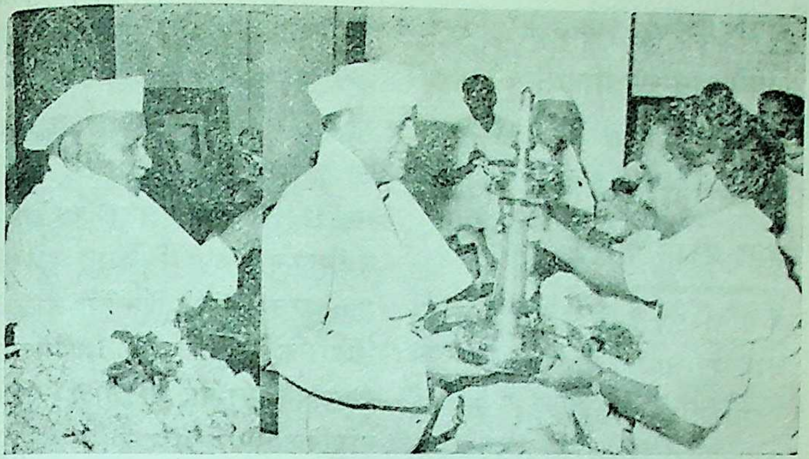

दो विश्व हिन्दी सम्मेलनों के आयोजक श्री० शंकर राव लोंढेजी (बायें) और जवाहरलाल नेहरु साक्षरता पुरस्कार तथा मैडम क्रुप्स्काया पुरस्कार के विजेता प्रो० रामलाल परीख (बीच में) को केरल हिन्दी प्रचार सभा का उपहार प्रदान कर रहे हैं तिरुवनन्तपुरम के महापौर श्री० पी. माक्सवेल।

विविध पहलुओं पर विचारोत्तेजक आलेख प्रस्तुत किये। (आलेख केरल ज्योति में प्रकाशित किये जा रहे हैं)

शिविर के प्रतिभागियों के सम्मानार्थ तिरुवनन्तपुरम नगर निगम द्वारा निगम भवन में आयोजित प्रीतिमिलन में प्रतिभागियों के नेता अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के अध्यक्ष एवं गुजरात हिन्दी विद्यापीठ के कुलपति प्रो० रामलाल परीख को हिन्दी में तैयार किया गया अभिनन्दन पत्र देते हुए तिरुवनन्तपुरम के महापौर श्री. पी. माक्सवेल ने कहा कि हिन्दी प्रचार संस्थायें

हिन्दी प्रचार संस्थायें भारत के एकता तीर्थ के पवित्र धाम हैं

भारत के एकता तीर्थ के पवित्र धाम हैं और आग्रह प्रकट किया कि राष्ट्र-भाषा के माध्यम से भारत जननी एक-हृदय हो जाये।

श्री. परीखजी ने कहा कि हमें साबित करना है कि प्रान्तीय स्तर पर प्रान्तीय भाषाओं को और राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी को प्रशासन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनौपचारिक शिक्षा द्वारा हम अपने अन-पढ़ भाइयों को उत्तम नागरिक बनायें और अपना जीवन सुधारने केलिए आवश्यक ज्ञान प्रदान करें ।

में प्रतिष्ठित करने से हम तेजी से आगे बढ़ सकेंगे ।

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ के जवाहरलाल नेहरू पुरस्कार तथा युनेस्को के मैंडम क्रुप्स्काया पुरस्कार से सम्मानित प्रो० रामलाल परीख का और दो विश्व हिन्दी सम्मेलनों के आयोजक श्री शंकर राव लोंढे का सार्वजनिक अभिनन्दन विविध संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने माल्यार्पण और अंगवस्त्र समर्पण से किया । केरल हिन्दी प्रचार सभा के उपहार भेंट करते हुए तिरुवनन्तपुरम के महापौर श्री. पी. माक्सवेल ने अपना भाषण हिन्दी में दिया । अभिनन्दन समारोह का उद्घाटन करते हुए केरल के वन विभाग के मंत्री प्रो० एन. एम. जोसफ ने कहा कि देश की बढ़ती हुई निरक्षरता देश की एक प्रमुख समस्या है । आप ने आह्वान किया कि हर एक शिक्षित व्यक्ति के स्वैच्छिक प्रयत्न से पाँच-पाँच निरक्षरों को साक्षर बनाने का जो अभियान गुजरात में आरंभ हुआ है उसका अनुकरण देश के इतर प्रान्त भी करें और यथाशीघ्र पूर्ण साक्षरता का हमारा स्वप्न साकार करें। समारोह की अध्यक्षता करते हुए मलयालम के विख्यात लेखक डा० शूरनाट कुंजन पिल्लै ने आह्वान किया कि अनौपचारिक शिक्षा द्वारा हम अपने अन-पढ़ भाइयों को उत्तम नागरिक बनायें और अपना जीवन सुधारने केलिए आवश्यक ज्ञान प्रदान करें। मलयालम के प्रमुख विश्व-कोशकार श्री. पी. टी भास्कर पणिक्कर ने कहा कि प्रो० परीख और श्री. लोंढे की जीवन शैली, जोकि गाँधीवाद पर अधिष्ठित है, का अध्ययन और अनुसरण युवा पीढ़ी करे तो देश की उन्नति होगी। गाँधीवाद का सन्देश अनीतियों का विरोध करते हुए खादी प्रचार, हिन्दी प्रचार, साक्षरता प्रचार आदि रचनात्मक कार्यक्रमों के द्वारा देश का नवनिर्माण करते जाना है। केरल विश्वविद्यालय के पूर्व उप-कुलपति डा० एन. ए. करीम, भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ के प्रमुख कार्यकर्ता डा० के. शिवदासन पिल्लै, अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के सचिव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर भारतीय किसी दूसरी भारतीय भाषा में बोलना सीखे जिससे भाषायी समन्वय बढ़े ।

एवं बंबई हिन्दी विद्यापीठ के कुलपति डा० मो. दि. पराडकर, हिन्दी विद्यापीठ, देवधर के श्री राधावल्लभ शर्मा, गुजरात विद्यापीठ के श्री. लल्लूभाई आदि ने अभिनन्दन भाषण दिया। प्रो० परीख ने अपना भाषण मलयालम में प्रारंभ किया और कहा कि हर भारतीय किसी दूसरी भारतीय भाषा में बोलना सीखे जिससे भाषायी समन्वय बढे। हिन्दी के संगम के आस-पास अन्य भारतीय भाषाओं का विकास हो। निरक्षरता को दूर करना और हिन्दी का प्रचार बढ़ाना देश के विकास और प्रगति केलिए अत्यन्त आवश्यक है। आप ने आह्वान किया कि इन क्षेत्रों में हम दृढता से, प्रेम से आगे बढ़ें।

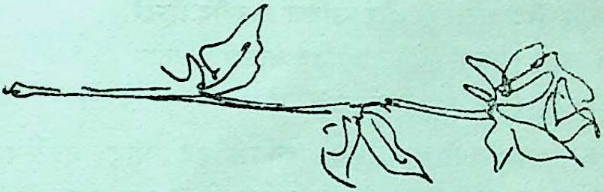

आई. आई. टी. की संयुक्त परीक्षा सभी भारतीय भाषाओं में होगी

सरकार ने निर्णय किया है कि भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, आई. आई. टी. के स्नातकपूर्व कार्यक्रमों में प्रवेश के लिए संयुक्त प्रवेश परीक्षा, 1990 अंग्रेजी भाषा के साथ-साथ, सभी प्रमुख आधुनिक भारतीय भाषाओं में आयोजित की जाएगी। छात्रों को इन भाषाओं में उत्तर देने की अनुमति दी जाएगी। प्रश्न पत्र अंग्रेजी भाषा के अलावा इन भाषाओं में भी उपलब्ध होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

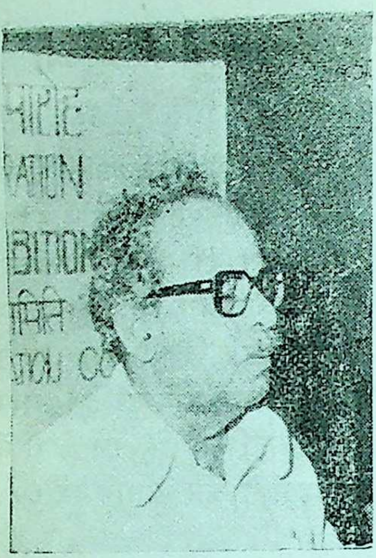

स्वतंत्रता आन्दोलन में हिन्दी की भूमिका

डा० एन. चन्द्रशेखरन नायर

[केरल हिन्दी प्रचार सभा और अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित अखिल भारतीय हिन्दी कार्यकर्ता शिविर में प्रस्तुत आलेख]

भारत का स्वाधीनता-आन्दोलन देशीय संस्कृति का आन्दोलन था। विदेशी शासन से मोचन पाने मात्र का वह आन्दोलन नहीं रहा था। प्रारंभ में राष्ट्रीयमुक्ति का स्वरूप था उसका। परन्तु फिर भी दासता से मोचन पाने के साथ मध्यकालीन रूढियों से भी मुक्त होकर युगीन अपेक्षाओं को अपनाने और अपनी महती संस्कृति को पुन: जागृत करने में प्रतिबद्ध था। इस विशाल चित्र-पट को अपनाते हुए ही उस आन्दोलन ने हिन्दी को अपना सहयोगी बना लिया था। राष्ट्रीय मुक्ति-संघर्ष को जब हिन्दी का सहयोग हुआ तभी राष्ट्र की भावधारा में नवीन चेतना कायम हुई और नवोत्थान-पुनरुत्थान की कामना बलवती हो सकी। महर्षि दयानन्द सरस्वती, केशवचन्द्र सेन, लाला लजपतराय, मदनमोहन मालवीय, लोकमान्य तिलक, नवीन चन्द्र राय, राम मोहन राय जैसे भारतीय विभूतियों ने जब अपनी देशीय चेतना एवं सांस्कृतिक

राष्ट्रीय मुक्ति-संघर्ष को जब हिन्दी का सहयोग हुआ तभी राष्ट्र की भावधारा में नवीन चेतना कायम हुई और नवोत्थान-पुनरुत्थान की कामना बलवती हो सकी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरासत को प्रश्रय दिया वहाँ हिन्दी की नवोन्मेषदायिनी उक्ति को भी उजागर कर दिया।

उन्नीसवीं सदी के सर्वादरणीय महापुरुष स्वामी दयानन्द सरस्वती हिन्दी का जैसा समर्थन कर सका वैसा उस समय कोई भी कर नहीं सका था। उन्होंने अनपी कलकत्ता-यात्रा के दरमियान सन् 1871-72 में

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भारत में जातीय एकता अथवा राष्ट्रीय उन्नति में हिन्दो का सर्वोत्कृष्ठ कर्तव्य घोषित किया।

ब्रह्मसमाज के नेता बाबू केशवचन्द्र सेन की सलाह को स्वीकार करके संस्कृत के बदले हिन्दी को अपने भाषण और लेखन का माध्यम अपनाया और बाद में 1874 में उन्होंने काशी में संपन्न विराट सभा में अपना भाषण हिन्दी में ही दिया। आगे चलकर, जहाँ-जहाँ वे घूमे वहाँ-वहाँ, यहाँ तक, अपने प्रान्त गुजरात में भो हिन्दी में ही धर्मोपदेश एवं प्रवचन दिये। उन्होंने हिन्दी में ही ग्रन्थ-निर्माण करने का अपनी सोसाइटी को आदेश दिया और स्वयं अपनी आत्म-कथा गुजराती में न लिखकर हिन्दी में लिखी। इसके अंग्रेजी अनुवाद का प्रकाशन थियोसफिकल सोसायटी के मुख-पत्र में हुआ। स्वामीजी ने यह दृढ विश्वास रखा था कि भारत की राष्ट्र भाषा होने की सामर्थ्य सिर्फ हिन्दी में ही है। स्वामीजी और उनके अनुयायिओं ने हिन्दी प्रचार-प्रसार के साथ राष्ट्रीय भावधारा को जो बढावा दिया था वह ऐतिहासिक मूल्य रखता है। पंजाब जैसे उर्दू प्रभावित प्रांत में भी उनका कार्यक्रम प्रभावकारी रहा था और उसका अच्छा परिणाम भी निकला था। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भारत में जातीय एकता अथवा राष्ट्रीय उन्नति में हिन्दो का सर्वोत्कृष्ट कर्तव्य घोषित किया। वस्तुतः भारत के स्वाधीनता-संग्राम के पुरोधाओं को स्वामी जी का हिन्दी प्रेम ही मार्गदर्शन दिया करता था।

केशवचन्द्र सेन जैसे उपर्युक्त प्रारंभकालीन हिन्दी के समर्थकों ने भी हिन्दी को देश की राष्ट्रभाषा बनाने की दिशा में जिस हद तक सहयोग दिया है वह सारे राष्ट्रीय इतिहास में अंकित हो चुका है।

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्हीं महान पुरुषों ने राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीय संस्कृति दोनों की पुनः स्थापना केलिए हिन्दी को ही माध्यम के रूप में अपनाया था।

राष्ट्र की स्वाधीनता का संग्राम हिन्दी को लेकर ठोस रूप से जो प्रकट हुआ वह गाँधीजी के राजनैतिक क्षेत्र में आने के पश्चात् ही हो पाया था। जहाँ गान्धीजी ने देश भर का भ्रमण किया और भारत का नाडी-स्पन्दन अनुभव किया तब उन्हें एक बात सही अनुभूत हुई कि देश को एक सूत्र में तभी लाया जा सकता है जब हिन्दी देश की राष्ट्रभाषा बन जायेगी। हिन्दी भाषा का सीधा तथा स्थाई गठबन्धन राष्ट्रीय गति-विधि के साथ तभी हो पाया जब महात्मा ने दक्षिण भारत में हिन्दी का प्रचार-कार्य शुरू किया। उन्होंने मद्रास में सन् 1918 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन की नींव डाली थी। पहले उसी वर्ष कांग्रेस के इन्दौर अधिवेशन में गान्धीजी ने हिन्दी को अपनाने की ओर नेताओं का ध्यान आकर्षित किया था। मद्रास में हिन्दी साहित्य सम्मेलन की शाखा की स्थापना वहाँ के गोखले हाल में डा० सी. पी. रामस्वामी अय्यर की अध्यक्षता में डा० एनीबेसेंट ने की। इस समय प्रथम हिन्दी वर्ग शुरू किया गान्धीजी के पुत्र स्व० देवदास गान्धी ने। इस कार्यालय स्थापना के साथ दक्षिण के चारों प्रदेशों में प्रान्तीय शाखाएँ खोली गयीं।

हिन्दी के प्रचार का इतिहास प्रत्येक प्रान्त में अत्यधिक भव्य एवं रोचक है। केरल के हिन्दी साहित्य का बृहद इतिहास इस पंक्ति के लेखक ने तैयार किया है। मतलब यह है

कांग्रेस के इन्दौर अधिवेशन में गान्धीजी ने हिन्दी को अपनाने की ओर नेताओं का ध्यान आकर्षित किया था।

कि दक्षिण के हिन्दी और हिन्दी साहित्य का इतिहास भी राष्ट्रीय मुक्ति-संघर्ष का और देश की पुनः सृष्टि का इतिहास है। दक्षिण के हिन्दी साहित्यकारों ने भी हिन्दी के माध्यम से देशीय संस्कृति एवं देशीय एकता को प्रश्रय दिया है और दक्षिण में रचा हिन्दी साहित्य अनेक दृष्टियों से देश हित के काम आने वाला है। महात्मा गान्धी के नेतृत्व में ही हिन्दी भाषी क्षेत्रों में भी राष्ट्र भाषा समितियाँ स्थापित हुई हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल में दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की शाखा के अलावा केरल हिन्दी प्रचारसभा की भी सन् 1934 में स्थापना हुई थी। 1948 से लेकर यह सभा स्वतंत्र रूप से कार्यनिरत है। भारत भर की इन प्रान्तीय हिन्दी-प्रचार सभाओं को एक केन्द्रीय संस्था 'अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ' नाम से कार्यशील है। कहने की आवश्यकता नहीं कि इन संस्थाओं ने देश की एकता, राष्ट्रीय स्थायित्व, देश-प्रेम, देशीय संस्कृति आदि देश हितकारी महत्वपूर्ण कामों को बराबर बनाए रखा था। हिन्दी भाषी देशों में निम्नलिखित सभाओं की स्थापना देशीय एकता और राष्ट्रीय महत्व को दृष्टि में रखकर की गयी थी: नागरी प्रचारिणी सभा (1893), हिन्दी साहित्य सम्मेलन (1910), गुजरात विद्यापीठ (1920), महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे (1937), राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा (1936), सौराष्ट्र हिन्दी प्रचार समिति, राजकोट (1939), हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, बम्बई (1938), हिन्दी विद्यापीठ, देवधर (1929), बंबई हिन्दी विद्यापीठ, बंबई (1938) ओडिया राष्ट्रभाषा परिषद, जगन्नाथ धाम (1932)।

आज भारत को स्वतंत्र हुए इकचालीस वर्षों के पश्चात् भी अंग्रेजियत का प्रभुत्व ही दृष्टिगोचर हो रहा है।

उपर्युक्त सभाओं के अलावा दक्षिण में कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा-समिति (1952), कर्नाटक हिन्दी प्रचार समिति, बेंगलूर (1939), हिन्दी-प्रचार सभा, हैदराबाद (1932) भी कार्यरत हुई।

ऊपर उल्लिखित प्रांतीय सभाओं के राष्ट्रीय मंच के रूप में ही दिल्ली में अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ की स्थापना हुई है। (1964) गत 25 वर्षों से यह संस्था प्रांतीय सभाओं के बीच समन्वय एवं एकसूत्रता लाने में अपनी निष्ठा तथा लगन के साथ प्रयत्नशील रही है। वस्तुत: इन प्रचार सभाओं ने संपूर्ण देश में जहाँ राष्ट्रीयता का आन्दोलन हिन्दी के माध्यम से किया वहाँ समूचे राष्ट्र को सांस्कृतिक नव-चेतना भी प्रदान की। उनके बहु-आयामी कार्यक्रमों ने स्वाधीनता संग्राम की यथासाध्य भूमिका निभायी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज हम मानते हैं कि सरकार द्वारा हिन्दी का कार्यान्वयन प्रगति पथ पर है। लेकिन हिन्दी के प्रति प्रेम और सहयोग की मानसिकता में बाधा उपस्थित है । भारतीय जनता में हिन्दी के प्रति जो अति आकर्षण गान्धीजी के समय रहा था वह आज नहीं रहा। सरकार द्वारा होनेवाली कार्यायोजनाओं में सर्वत्र दिली सहयोग प्राप्त नहीं हो रहा है। आज भारत को स्वतंत्र हुए इकचालीस वर्षों के पश्चात् भी अंग्रेजियत का प्रभुत्व ही दृष्टिगोचर हो रहा है। इसके मूल में भी कई कारण बताये जा सकते हैं। जहाँ गान्धीजी के अंतिम दिनों में अन्तर्राष्ट्रीय शक्तियाँ भारत को दो खण्ड बनाने में सक्षम हुई थीं वहाँ वे आज अनेक खण्डों में विभक्त करने में जागरूक हैं। इसके लिए दो माध्यमों का सहारा लिया जा रहा है, वे हैं, भाषा और क्षेत्रीयता। क्षेत्रीयता की भावना को उभाडने में और भाषा को संकुचितता का परिवेश देने में विरुद्ध शक्तियों की जीत होती जा रही है। देश के भीतर जहाँ-जहाँ ऐसी घातक मनोवृत्तियों के दृश्य दिखाई दे रहे हैं वहाँ-वहाँ देश प्रेमी जनो में कुढन और जलन महसूस हो रही है।

इस दुःखद वातावरण को देखकर देश हितेच्छुओं में कठोर कुण्ठा अनुभव हो रही है। भारतेन्दु से लेकर शत-शत कवियों, कथाकारों, नाटक-रचयिताओं ने अपनी देशी संस्कृति और स्वाधीनता-संग्राम को उत्तेजित करने का कठोर प्रयत्न किया था। उनके लक्ष्य को कुठाराघात करते देखकर वस्तुतः हमारा दिल निराश हो जाता है।

भारतेन्दु ने अंग्रेज़ सरकार की कडी आलोचना की है। उन्होंने अपनी अधिकतर गद्य-पद्य रचनाओं द्वारा अंग्रेज़ी शासन को व्यंग्य करके देश के वीर पुरुषों को जगाने का प्रयत्न किया। "नीलमदेवी" के नवें दृश्य में सोमदेव का कहना है: "इन दुष्टों से पाप किया जायगा तो वह पुण्य ही माना जायगा"। 'भारत माता" भारत जननी नाटक में कहती है: "मेरे शरीर का अब रक्त भी शेष नहीं, यवन सब चूस ले गए।"

"महाराणा प्रताप" नाटक में प्रताप की वीरता पर मुग्ध होकर अकबर का कहना है: "वाह प्रतापसिंह! मैं ने बहुत-सी तवारीख देखी है मगर इसकी मिसाल मुझे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह बडे गौरव की बात है कि भारतीय भाषाओं ने स्वातंत्र्य आंदोलन को समवेत स्वर से उत्तेजना दे दी है।

कोई न मिली। शबाश! गज़ब का बहादुर और गज़ब का जफाकश।"

तात्पर्य यह है कि जिस दुर्धष आकांक्षा से हिन्दी के कवियों एवं साहित्यकारों ने देश में वीरों को उत्तेजित करके आज़ादी के पवित्र संकल्प को जागरित कर दिया उसका क्या नतीजा हुआ।

माखनलाल चतुर्वेदी की देश प्रेम भरी पंक्तियों को आज भी कितनी बार दुहराया जाता है :

चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में
गूँथा जाऊँ

x x x x

मुझे तोड लेना वनमाली उस पथ परा
देना तुम फेंक
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ
जावें वीर अनेक।

जयशंकर प्रसाद के "बढ़े चलो बढ़े चलो" के आह्वान से देश-प्रेमी भारतीय जन छाती ताने मंत्र मुग्ध होकर स्वाधीनता संग्राम केलिए तैयार हो जाते थे।

यह बडे गौरव की बात है कि भारतीय भाषाओं ने स्वातंत्र्य आन्दोलन को समवेत स्वर से उत्तेजना दे दी है। इनमें हिन्दी और उसके साहित्य ने अपना योगदान अर्पित करने में कोई कसर उठा नहीं रखी है।

बीसवीं शताब्दी को गान्धी-युग से अभिहित किया गया है। गांधीजी के आह्वान से प्रेरित होकर राष्ट्रीयता के विविध रूप दर्शित हुए। हिन्दी और अन्य भाषाओं में भी ये रूप प्रकट हुए हैं। हिन्दी के नाटक इनमें आगे आये हैं। सांस्कृतिक चेतना, सत्याग्रह आंदोलन की पृष्ठभूमि, हिन्दु-मुस्लिम ऐक्य-भाव, इन गांधी वादी चेतनाओं से प्राणान्वित नाटकों में समयुगीन सामाजिक समस्याओं की भी अभिव्यक्ति हुई है।

स्वाधीनता संग्राम में हिन्दी की भूमिका, सही अर्थ में भली-भांति निभा दी गया है, लेकिन सन् उन्नीस सौ उनचास के बाद से हिन्दी से संबन्धित मनोभाव में काफी ढीलापन लाया गया है। संविधान में हिन्दी भाषा की मान्यता को स्वीकार किया था इसलिए अखिल भारतीय भाषा के रूप में हिन्दी को राष्ट्र-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा घोषित किया गया। वहाँ राजभाषा अथवा संपर्क भाषा थी। लेकिन, सन् उन्नीस सौ पचास के साथ शासन की शक्ति जब बढ़ गयी, तब शासन की ओर से हिन्दी की मान्यता में बट्टा होने लगा। तभी हमें यह महसूस होने लगा कि हमारे राष्ट्रीय संकल्प और शासन की नीति में फरक हो सकता है। उस समय तक जिस राष्ट्रीय संकल्प के साथ हिन्दी को विविध आयामों में सारे देश की भाषा बनाने की योग्यता प्रदान करते आ रहे थे वहाँ शासन केलिए दूसरी भाषा, संपर्क करने के लिए तीसरी भाषा, इस प्रकार हिन्दी के नाना स्वरूपों का संकल्प लाया गया। साथ ही राजभाषा और संपर्क भाषाओं में अंग्रेज़ी का विकल्प भी निश्चित किया गया। आगे चलकर शासकों द्वारा यह आश्वासन भी दिया जाने लगा कि राजभाषा हिन्दी का अंग्रेज़ी विकल्प जब तक चाहे, ले लिया जा सकता है। इसका मतलब यह है कि हिन्दी की राजभाषा बनने की अवधि सौ वर्ष बाद तक भी हो सकती है। इसका अंजाम क्या होगा, अभी कुछ कहा नहीं जा सकता। लेकिन, हिन्दी का सम्बन्ध समूचे राष्ट्र जीवन के ऐक्य के साथ है। आज जहाँ प्रान्त-प्रान्त में विघटन का नारा मुखरित हो रहा है, जाति-सम्प्रदाय का नारा सुनायी दे रहा है वहाँ इसका अन्त कभी होना है, यह अभिवांच्छा हो, तभी राष्ट्र-जीवन मज़बूत रह सकता है। जब अंग्रेज़ी राजभाषा रही थी, पता नहीं, उससे अलग कोई राश्ट्र भाषा रही थी। आज हिन्दी के लिए तीन-तीन स्वरूप अथवा अब प्रत्येक मंत्रालय की अलग-अलग हिन्दी बनती जा रही है। अलग-अलग टेर्मिनोलजी बनायी जा रही है। शायद यह नारा उठ सकता है कि हमारे मंत्रालय केलिए अलग हिन्दी चाहिए। सन् 1950 के पश्चात् से हिन्दी के नाम पर यह जो वादविवाद छिड़ गया है उससे लोगों में यह शंका होने लगी है कि भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी ही क्यों हो। मैं हिन्दी का समर्थक हूँ, भारतीयता का पक्षधर हूँ, भारत राष्ट्र की कामना करनेवाला हूँ, इसलिए मैं तमिलनाड़ की समस्या पर बोलना नहीं चाहता। संक्षेप में इतना ही कहूँगा कि तमिलनाड़ में हिन्दी खूब चलती है। बाज़ार में, गाडी में, स्टेशनों में, तीर्थस्थानों में, राष्ट्रीय व्यावसायिक केन्द्रों में, कॉलेजों में, घरों में सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तमिलनाड़ में हिन्दी खूब चलती है । बाज़ार में, गाडी में, स्टेशनों में, तीर्थस्थानों में, राष्ट्रीय व्यावसायिक केन्द्रों में, कॉलेजों में, घरों में सब कहीं हिन्दी चलती है ।

कहीं हिन्दी चलती है। गान्धीजी नें जब से वहाँ हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना की थी तब से दक्षिण मैं सबसे अधिक लोग तमिलनाड में हिन्दी पढ़ते थे । हिन्दी में बोलते ये । वह सिलसिला आज भी चल रहा है। लेकिन. नेताओं की मुट्ठी जब ऊपर उठती है तब अनजाने मुँह बोल पड़ता है । "हिन्दी ओ्लिका" बस, उन्हें उतना अधिकार अवश्य होना चाहिए, होने दें ।

बात यह है, हिन्दी के समर्थकों को, भारत की राष्ट्रीय अखण्डता को मान्यता देनेवालों को, यह कभी आश्वासन नहीं देता कि हिन्दी के विकल्प मैं अंग्रेज़ी को हमेशा के लिए स्थान दिया जाय ।

तब मतलब यह है कि सरकार अपने लिए राजभाषा की समस्या को हल करने में सरतोड़ परिश्रम करती है। उसे कार्यान्वित करनेवाले अफसरों को समझा रही है, फिर भी संकट का निवारण नहीं होता । यह आशा करके कि एक दिन उन्हें अपने लक्ष्य पर पहुँचने का सन्दर्भ मिलेगा ही, हम राजभाषा की समस्या को सरकार के हित में छोड दें । परन्तु फिर भी समस्या यह अब भी है कि सरकार के बाहर एक रष्ट्रभाषा है, जो शासन को नहीं, राष्ट्र की जनता को एक सूत्र मैं ला सके । जनता की भाषा है, राष्ट्रभाषा । जनता अपने राष्ट्र को एक माने और समूचे राष्ट्र जीवन को शान्तिमय वातावरण प्रदान करे, यही सबसे प्रमुख बात है । जब इस सत्य पर सोचना पड़ता है तब हमें लगता है, कि राष्ट्र-भाषा हिन्दी केलिए वही पुराना वातावरण लाया जाना है जब गान्धीजी ने एक राष्ट्र का संकल्प करके राष्ट्र की भाषा चुन ली थी। गान्धीजी ने हिन्दी को चुन लिया था, क्योंकि

राष्ट्र-भाषा हिन्दी के लिए वही पुराना वातावरण लाया जाना है जब गान्धीजी ने एक राष्ट्र का संकल्प करके राष्ट्र की भाषा चुन ली थी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय शब्द का अर्थ उन्होंने केवल भौगोलिक संकल्प में सीमित नहीं रखा था। वे जानते थे कि राष्ट्रभाषा का धर्म बहु-आयामी है जो देश की संस्कृति को बढावा देगा. देश की जनता में आपसी समन्वय के लिए बल देता रहेगा। विभिन्न धर्मों में सामंजस्य और सहभाव रखेगा, देश के प्रति जीने का संकल्प बनाये रखेगा, आगे से किसी विदेशी शक्ति को यहाँ अधिकार करने से बचाये रखेगा, स्वयं अपने पैरों पर खडे रहने

राष्ट्रभाषा का धर्म बहु-आयामी है, जो देश की संस्कृति को बढ़ावा देगा, देश की जनता में आपसी समन्वय के लिए बल देता रहेगा।

का बल प्राप्त कर अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों को शान्ति के मार्ग से समाधान का सन्देश देता रहेगा और सब से बढ़कर राष्ट्रांतरीय स्तर पर भारत का मान हमेशा के लिए सुरक्षित रखेगा और आगोल-संग्राम कारणों का निवारण करने में क्षमता हासिल करेगा।

लेकिन, हम इस पवित्र संकल्प का कैसे साक्षात्कार करेंगे? हमें पूरा विश्वास है कि एक राष्ट्रभाषा इन सबके मूल में आधार-शिला का काम देगी। वही हिन्दी देशीय जीवन का एक सबल अंक बना रहे। यही कारण है, गुजराती होने पर भी, स्वामी दयानन्द सरस्वती, महात्मा गान्धी, पंजाबी होने पर भी, लाला लजपतराय, बंगाली होने पर भी केशवचन्द्र सेन, मराठी होने पर भी लोकमान्य तिलक, तमिल भाषी होने पर भी कवि भारती और मोट्टूरी सत्यनारायण, मलयाली होने पर भी जी शंकर कुरुप आदि महान राष्ट्र प्रेमी लोग हिन्दी के लिए आवाज़ उठाते रहे थे।

अन्त में, पूरे भारत के प्रतिनिधियों, कर्मठ हिन्दी पक्षधरों, अनुभवी विद्वानों, हिन्दी संस्थाओं के कुशल कार्यकर्ताओं, सबसे बढ़ कर देशभक्त सेवकों से भरे इस सम्मेलन में मेरा यह सुझाव है कि हिन्दी आन्दोलन को बंद करने का यह समय नहीं है, प्रत्युत राष्ट्रभाषा की समस्या को लेकर उसे जन-जन तक पूरे विश्वास और उत्साह के साथ पहुँचाने का आन्दोलन करना शेष रह गया है। हमें जमकर सोचना है, कि इस बदलती परिस्थिति में राष्ट्र-भाषा का आन्दोलन कैसे आगे चलावें। कतिपय निर्देशनों की ओर आप मनीषी लोगों का ध्यान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा की समस्या को लेकर उसे जन-जन तक पूरे विश्वास और उत्साह के साथ पहुँचाने का आन्दोलन करना शेष रह गया है।

आकर्षित कर रहा हूँ। मेरा विश्वास है कि केरल में सवश्री एम. के. वेलायुधन नायर, के. जी. बालकृष्ण पिल्लै, के. वी. कृष्णनकुट्टि जैसे कुछ हिन्दी के कार्यकर्ता और लेखक होते हैं, जो तहे दिल से हिन्दी को बढ़ावा देने में कार्यशील हैं। निम्न-लिखित सुझावों पर ध्यान दें। यह न सोचने का कष्ट करें कि हम युगों से हिन्दी के ही काम करते-करते थक चुके हैं। अब आप कौन आये हैं हमें समझानेवाले ? मैं भी, आप से दिल से कहता हूँ, कभी आप से धृष्टता करने का प्रयत्न तो नहीं कर रहा हूँ। मेरे दिल में आप लोगों के प्रति पवित्र आत्मीय भाव है. आदर है क्योंकि आप लोगों ने गान्धीजी की आज्ञा का पालन दिल से कर दिया है, अब भी कर रहे हैं। बीच में अपनी निजी बातों केलिए नहीं छोड़ा है।

अच्छा मेरा यह निवेदन है :

1. जो कार्य अब आप लोग व्यक्तिगत रूप से या संस्था की ओर से करते आ रहे हैं. उनको जारी रखें। साथ कुछ नयी, एकदम नवीन सी लगनेवाली, योजनाएँ भी अपनाते जायें।

2. आप की संस्थाएँ प्रत्येक प्रान्त में कार्य करती हैं। इसलिए इस आयोजन पर सुगमता से आप प्रयत्न कर सकते हैं कि हिन्दी को राष्ट्र-भाषा के स्थान पर बनाये रखने के लक्ष्य से उसके राष्ट्रीय स्वरूप पर अवरोध न लाने के लिए हम एक विराट् समिति बनावें जिसके एक हज़ार सदस्य हों, जो हिन्दी के कार्यकर्ता, हिन्दी के समर्थक, अपने-अपने स्थान पर और कार्य-क्षेत्र में मान्य हों। उन हज़ार सदस्यों में से (21 से 51 तक सुविधानुसार) कार्य-कारिणी समिति बनावें और प्रति-वर्ष एक बार पूरे सदस्यों का एक सम्मेलन हो, और अपने कार्यायोजन को गति देने केलिए दो-दो महीनों में समितियाँ (कार्य कारिणी) बुलाया जायें और प्रत्येक समिति के निर्णयों की हज़ार सदस्यों को भी सूचना दी जाय। इस ओर अधिक बातें आप लोग ही सोचें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2. समिति के सभापति प्रधान-मंत्री अथवा प्रेसिडेंट (यदि नियम अनुकूल हो) रहें।

3. संस्था संघ की ओर से ऐसे पाठ्य-संकलनों को तैयार किया जाय जो सारे देश के स्कूली-कालेजी पाठ्यक्रमों में चुन लिये जायें और ऐसी व्यवस्था भी हो कि इन पाठ्य-संकलनों की सिफारिश करने अथवा अनुमोदन करने का सरकारी अथवा यू जी. सी. को तरफ से आदेश प्राप्त हो। संकलन का लक्ष्य हो राष्ट्रीय भावों, देशप्रेम, भारतीय संस्कृति और आदान-प्रदान का सन्देश दिलाना।

4 वार्षिकोत्सव के संदर्भ में राष्ट्रीय स्तर पर त्योहार मानाया जाय।

5. संस्था-संघ के निरीक्षण में भारतीय संस्कृति को उजागर देने-वाले ग्रंथों का निर्माण हो जिन्हें संस्थाओं के पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से संकलित किया जाये।

6 संस्था-सघ की ओर से हिन्दी माध्यम से भारत की दो-तीन (बंगला, कश्मीरी, मराठी और मलयालम) भाषाओं को पढाने की पाक्षिकी निकाली जाय।

7. एक ऐसी छोटी मासिक पत्रिका निकाली जाय जिसमें हिन्दी-

संस्था संघ की ओर से ऐसे पाठ्य-संकलनों को तैयार किया जाय जा सारे देश के स्कूली-कालेजी पाठ्यक्रमों में चुन लिये जायें

तर प्रदेश की नयी हिन्दी पुस्तकों का विवरण दिया जाय और हिन्दीतर प्रदेशों में सम्पन्न होनेवाले हिन्दी संबंधी कार्यक्रमों की वार्ता दी जाय।

8. आजकल सरकारी स्तर पर और समितियों की ओर से हिन्दी साहित्यकारों को (हिन्दीतर प्रदेशों के) सम्मान पुरस्कार दिये जाते हैं। संस्था संघ ऐसी सरकारी और गैर सरकारी समितियों को अपनी सिफारिशें दे। जिन्होंने हिन्दी को सेवा को महत्व देते हुए ग्रंथ निर्माण किया है (ऐसे बहुत से ग्रंथकार हिन्दी में, अहिन्दी प्रदेशो में हैं, जिन्होंने पुरस्कार पाने केलिए नहीं, सेवाधर्म के रूप में हिन्दी में सर्जनात्मक कार्य किया है) ऐसे प्रतिष्ठित व्यक्तियों को पुरस्कार संस्था सघ भी प्रतिवर्ष देता रहे।

अच्छा, उपर्युक्त वक्तव्य और सुझावों को मैं आप मनीषियों के सामने प्रस्तुत करता हूँ।

जय हिन्द! जय हिन्दी!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विख्यात मलयालम साहित्यकार पी. के. परमेश्वरन नायर

श्री. जे. आर. बालकृष्णन नायर

सुप्रसिद्ध गांधीवादी लेखक पी. के. परमेश्वरन नायर जी के निधन की वार्ता से केरल के लोग हताहत हो गये हैं। आपके गाँधीवादी लेखों का संकलन "एकभारतत्तिन्टे दीपशिखकल" में हुआ है, जिसका हिन्दी में अनुवाद मैं ने "अखण्ड भारत की दीपशिखायें" नाम से किया है जो कि "केरल ज्योति" मासिक पत्रिका में खण्डशः प्रकाशित हुआ था। उनका "मलयालम साहित्य का इतिहास" भी हिन्दी में अनूदित हुआ है। मलयालम के अन्य लेखकों की कृतियाँ इतनी बडी मात्रा में, हिन्दी में अनूदित नहीं हुई है।

मलयालम के अन्य लेखकों की कृतियाँ इतनी बडी मात्रा में, हिन्दी में अनूदित नहीं हुई हैं।

विडंबना काव्य की रचना से ही उन्होंने अपना साहित्य परिश्रम शुरू किया था। महाकवि वल्लत्तोल की एक प्रसिद्ध रचना है "गोली खायी चिडिया" (वेटि कोन्ट पक्षी)। पी. के. जी ने इसकी विडंबना के रूप में "मार खाया कुत्ता" (अटि कोन्ट पट्टि) नामक एक कविता लिखी, जिसे पढकर वल्लत्तोल जी हँसते-हँसते लोट-पोट हो गये। उन्होंने पी. के. जी की बडी प्रशंसा की।

थोडा सा परिचय

2 नवंबर 1903 को, उत्तराषाढ नक्षत्र के दिन पी. के. परमेश्वरन नायर जी का जन्म हुआ था। केरल के अंपलप्पुषा ग्राम का एक प्रसिद्ध घराना है पूवक्काट। पूवक्काट की नारायणी अम्माजी उनकी माता थीं। पिताजी थे अंपाट्टु मठ के कृष्ण पणिक्करजी। मा-बाप के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीमन्त पुत्र थे परमेश्वरन नायरजी। अपनी विद्यार्थी दशा में, वे सभी अर्थों में एक निपुण छात्र थे। देशीय आन्दोलन में बडी रुचि रखते थे। परिस्थिति ने उन्हें एक सर्वोदय साहित्यकार बना दिया। जीवनी लिखने में आप अपना खास स्थान रखते थे। जैसा कि पण्डितराज स्व० एन. गोपाल पिल्लै जी ने बताया है वे एक विनय-नम्र साहित्य-कार हैं। अनेक फुटकर लेखों के अतिरिक्त उन्होंने निम्नलिखित कृतियाँ रची हैं।

क्रम संख्या	ग्रन्थ का नाम	प्रकाशन वर्ष
1.	नेपोलियन और जोसफ़ाइन	1932
2.	तुंचत्ताचार्य	1935
3	नेपोलियन का जीवन-सायाह्न	1939
4	साहित्य पंचानन (जीवनी) (महाराज मार्ताण्डवर्मा पुरस्कार प्राप्त)	1944
5	साहित्य पंचानन (एक अध्ययन)	1946
6.	वोल्टायर (जीवनी)	1947
7.	सी. वी. रामन पिल्लै (प्रथम ऐतिहासिक उपन्यासकार की जीवनी) [मलयाल मनोरमा वज्रजूबिली पुरस्कार प्राप्त]	1947
8.	प्रेमगौतम (जीवनी)	1948
9.	भाव-रश्मियाँ (भावात्मक लेखों का संकलन)	1948
10.	महात्मा गाँधी (जीवनी)	1949
11.	सी. वी. साहित्य	1951
12.	श्रीकण्ठेश्वरं पद्मनाभ पिल्लै (केरल के प्रथम कोशकार की जीवनी)	1952
13	आधुनिक मलयालम साहित्य	1954
14	साहित्य समीक्षायें	1954
15.	वर्धमान साहित्य	1957
16.	मलयालम साहित्य का इतिहास (केन्द्र साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित तथा अंग्रेज़ी, तमिल, एवं हिन्दी में अनूदित)	1957
17.	अहिंसा और विश्व शांति	1961
18.	अखण्ड भारत की दीपशिखायें	1964

आदि।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राधे राधे

डा० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर

अध्यक्षीय भाषण दे रहे हैं डा० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर, पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कोचिन विश्वविद्यालय। समीप हैं (बायें से) श्री. गोविन्द शर्मा और डा० कैलाशचन्द्र भाटिया।

नगरों में बढती स्वार्थ-भावना एवं धन-लोभ का वर्णन एक सरस संस्कृत छंद में बडे प्यारे शब्दों में किया गया है। इसमें एक नागरिक और नगर में आये एक गरीब देहाती का संवाद वर्णित है।

देहाती—"हे ब्राह्मण! इस नगर में बडा कौन है?

नागरिक—ताड के पेडों का झुंड।

देहाती—दाता कौन है?

नागरिक—धोबी सबेरे कपडे लेकर (उन्हें साफ़ करके) रात को देता है।

देहाती—विद्वान कौन है?

नागरिक—धोखे से औरों का धन हड़पने में सभी विद्वान हैं।

देहाती—तो तुम कैसे जीते हो दोस्त?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरिक जहर के कीडे की तरह जीता हूँ।

ज़हर में जन्म लेनेवाला कीडा ज़हर से नहीं मरता। नागरिक लोग बुराइयों से इतने परिचित रहते हैं कि बुराई उन्हें बिलकुल नहीं अखरती। नगर में रहकर बुराई से बचना भी मुश्किल सा हो जाता है। तथापि मानव-मन अपनी सहज प्रकृति के कारण शांति केलिए बेकरार रहता है। हम अपना सारा दुःख किसी के साथ बाँटकर अपने मन को हलका बना लेने केलिए अधीर होते हैं। यही कारण है कि अधिक से अधिक नागरिक मंदिरों, तीर्थों तथा दिव्य शक्तिवाले महात्माओं की तरफ़ दौडते हैं।

भारतीय धार्मिक परंपरा में तीर्थों व मंदिरों का अनन्य महत्व रहा है। यहाँ एक तरफ़ धनी राजे महाराजे हुए हैं जो दान-पुण्य, मंदिर-निर्माण आदि को अपना कर्तव्य समझते थे, कालिदास की उक्ति—"त्यागाय संभृतार्थानां" को सार्थक बना लेते थे। दूसरी तरफ़ काया को माया समझकर प्रभु के नाम भजते रहने में ही कल्याण माननेवाले विरागी भक्त होते थे। दोनों पुण्य तीर्थों की यात्रा करते थे। ये तीर्थ हमारे चिरनवीन देश की चिरपुरातन प्रकृति के प्रतीक बने हुए हैं।

भारत के तीर्थों में वृन्दावन अन्यतम रहा है। वहाँ जाने को लोग लालायित रहते हैं। इसलिए मित्रवर डॉ० कैलाशचंद्र भाटिया ने वृन्दावन-शोध-संस्थान की तरफ़ से भारत के भावपुरुष कृष्ण पर त्रिदिवसीय विचार--गोष्ठी में भाग लेने का निमंत्रण दिया तो मैं ने अपने को धन्य माना। मित्र ने परोक्ष रूप से शायद यह चेतावनी दी थी कि अब सारा माया-मोह छोड वृन्दावन चलो —भज गोविन्दं मूढमते। कर्ममय संसार में फँसे हुए मुझ जैसे लोगों की स्थिति अजामिल की सी है। हम अजामिल की तरह किसी कपटी नारी के पाश में ज़रूर नहीं फँसे हैं। परन्तु सांसारिक जीवन के कर्ममय जाल में फँसे हैं। अतः कुछ दिनों के लिए—कुछ घंटों के लिए ही सही प्रभु के दर्शन व स्मरण कर सकूँ तो अंतिम समय में हमारा भय उतना ही कम रहे। फलतः मैं ने निमंत्रण स्वीकार किया और प्रस्थान-दिवस की प्रतीक्षा करने लगा।

दक्षिण भारत में वृन्दावन जानेवालों को 'मथुरा' जंकशन पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यावहारिक जीवन में बडे शिक्षित नर नारी—भाई बहन, माँ-बाप से अदालत-कचहरी करके यही स्वार्थी व्यवहार करते हैं।

उतरना पडता है। मथुरा स्टेशन पर पेठे व पंडे दोनों के दर्शन होते हैं। मगर काशी या प्रयाग की तरह यहाँ पंडे हमें तंग नहीं करते। मथुरा कंस का स्मरण कराता है। कृष्णजन्मभूमि का स्थान अब भी सुरक्षित है, जहाँ तीर्थाटक दर्शनार्थ जाते हैं। कंस की कालकोठरी में कृष्ण का जन्म हुआ। यह प्रतीकात्मक दृष्टि से कितना सार्थक है! पुण्यात्मा पापियों के समाज में जन्म लेते हैं। राजनीति के क्षेत्र में तानाशाहों को कालकोठरी में बंदी बनाये गये बागी ही बाद में तानाशाह को समाप्त करते हैं। कंस का व्यवहार बताता है कि स्वार्थ—अपने नुकसान के डर के सामने बहन की ममता—मासूम नन्हे के भोलापन की कोई कीमत नहीं मानता। व्यावहारिक जीवन में बडे शिक्षित नर नारी—भाई-बहन, माँ-बाप से अदालत-कचहरी करके यही स्वार्थी व्यवहार करते हैं।

मथुरा से वृन्दावन पन्द्रह किलोमीटर से कम दूरी पर है! मथुरा की कई सडकें भारी परिवहनों के सतत पदाघात से जीर्ण शीर्ण हो गई हैं। कुछ सही सलामत भी हैं। आधुनिकता की ओर बढती इस नगरी की सडक से चलते हम देखते हैं कि कंसों का भय शायद अब भी है। इसीलिए उग्रसेन का सैनिक शिबिर किसी भी कंस को पछाडने तैयार खडा है। नगर से गाँव का अंतर नामपट्टों से हो पहचाना जाता है। संभवत: अहं के मुखौटे ने हमारे मन पर पर्दा डाला है। हमारा कर्तव्य हो जाता है कि इस मुखौटे को हटाते हुए स्वच्छ मन से 'हरि' बोलें। तभी हम तीर्थयोग्य हो जायेंगे।

यमुना वृन्दावन को तीन ओर से घेरे हुए बह रही है। वृन्दावन का यशोगान भागवत के दशम स्कंध में किया गया है। नन्द आदि गोप कृष्णसहित गोकुल छोड वृन्दावन आये और यहीं पर प्रभु ने अद्भुत बाललीलाएँ की थीं। 'वृन्दावन' शब्द की कई व्युत्पत्तियाँ दी गई हैं—एक यह कि 'वृन्दा' का अर्थ तुलसी का पौधा है। वृन्दावन में तुलसी के पौधों की बहुतायत से इसे वृन्दावन पुकारा गया। दूसरी व्याख्या यह है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि राजा केदार की पुत्री वृन्दा ने इस वनस्थली में तप किया और इसीलिए वृन्दावन नाम पडा। तीसरी व्याख्या के अनुसार राधा के कई नामों में एक नाम वृन्दा है। वृन्दा अर्थात् राधा अपने प्रिय कृष्ण से मिलने की आकांक्षा लिये इस वन में रहती है।

प्राचीन वृन्दावन और आधुनिक वृन्दावन को लेकर शास्त्रार्थ चलता रहा है। इतिहास की घटनाओं ने वृन्दावन की भौतिक स्थिति पर भी अपनी मुहर लगा ली है। कुछ लोगों ने इस हैन्दव धार्मिक स्थान को तहस नहस करने और वहाँ इस्लामी नामवाले स्थान बसाने का प्रयत्न किया था। किंतु कृष्ण भक्ति की संजीवनी से वृन्दावन की भूमि फिर से लहलहा उठी। भागवत मधुर भक्तिकथा में भक्तों को कृष्ण की ओर आकृष्ट करने की अभ्दुत शक्ति रही है।

वृन्दावन का यश अमर करनेवाले कितने ही महात्मा हुए! चैतन्य महाप्रभु उनमें सब से मुख्य थे। कहते हैं कि उन्होंने वर्तमान वृन्दावन में श्रीकृष्ण लीलाओं के विविध स्थान निर्धारित किये तथा नामसंकीर्तन की अपनी पद्धति चलाई। चैतन्य

विद्यापति व जयदेव के पद सुनते सुनते प्रभु के विरह में मूर्च्छित होनेवाले महाप्रभु चैतन्य वृन्दावन में पूर्णतः समाये हुए हैं।

महाप्रभु के शिष्यों की परंपरा में बडे, बडे पंडित व कवि हुए। उन्होंने भक्ति व दर्शन के अनेक ग्रंथ भी लिखे हैं। विद्यापति व जयदेव के पद सुनते सुनते प्रभु के विरह में मूर्च्छित होनेवाले महाप्रभु चैतन्य वृन्दावन में पूर्णतः समाये हुए हैं। बंगाल से आयी चैतन्य-शिष्यपरंपरा के उत्तराधिकारी बडी संख्या में वृन्दावन में बसे हैं। संभवतः इसी से वृन्दावन में बंगला भाषियों की संख्या काफ़ी बडी है। प्रसंगवश एक पहेली सी लगती बात पेश करूँ। वृन्दावन की तरह पांडिचेरी में अरविन्द आश्रम में बडी संख्या में बंगला-भाषी मिलते हैं। साहित्य, संगीत, चित्रकला आदि ललितकलाओं में बंगला भाषियों ने कमाल हासिल किया है। उसी भूमि के लोग साम्यवाद के पक्के समर्थक निकले हैं। यह मनोवैज्ञानिक पहेली रह गई है।

व्रजभाषा-कवियों में सर्वश्रेष्ठ सूरदास का व्रजमंडल से ही गहरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संबन्ध रहा । उनके गुरु वल्लभाचार्य दक्षिण से वृन्दावन आये थे । उनकी श्रीवैष्णव परंपरा यहाँ अब भी है । वृन्दावन के मंदिरों में शिल्पकला की दृष्टि से अद्वितीय रंगजी का मंदिर वृन्दावन में वैष्णव धर्म के प्रचार का प्रमाण है ।

सूर के भी गुरु स्वामी हरिदास ने वृन्दावन को अपने निवास से पवित्र किया था । निंबार्क संप्रदाय के श्रेष्ठतम उपासक के रूप में स्वाम हरिदासजी की प्रसिद्धि है । उनके

आखिर खुद बादशाह तानसेन के साथ पोशाक बदले भक्ति विभोर हो लौटे ।

चमत्कारों की अनेक कथाएँ हैं । फिर भो प्रशस्त गायक तानसेन के गुरु के रूप में उनकी विशेष प्रसिद्धि रही । बादशाह अकबर तानसेन के गायन पर अत्यधिक मुग्ध थे । तानसेन ने अकबर को बताया कि मेरे गुरुदेव हरिदासजी के गायन के सामने मैं कुछ नहीं हूँ । इसपर बादशाह ने हरिदासजी को दरबार में बुलाना चाहा । मगर संतन का कहा टीकरे सों काम । आखिर खुद बादशाह तानसेन के साथ पोशाक बदले भक्ति विभोर हो लौटे । वृन्दावन में स्वामी हरिदास की शिष्य परंपरा और उनका आश्रम अब भी हैं ।

वृन्दावन के साथ मीरबाई का नाम भी जुडा हुआ है । राजस्थान की कृष्ण भक्त मीरा के ती गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई थे । कथा है कि मीरा वृन्दावन में प्रसिद्ध गुरु से मिलने गई तो उन्होंने कहला भेजा कि मैं स्त्रियों से नहीं मिलूँगा । मीरा ने उत्तर में सूचित किया कि वृन्दावन में एक ही पुरुष है कृष्ण शेष सब स्त्रियाँ हैं । यह राधा भाव है । वृन्दावन में कृष्ण भक्त अपने को राधा के ही रूप में मानते हैं और सब कृष्ण से मिलने केलिए आतुर हैं । इसी मधुर कल्पना से वृन्दावन में भक्त जन जब आपस में मिलते हैं तब एक दूसरे का अभिवादन "जय राधे" या "राधे राधे" शब्दों से करते हैं । बडा प्यारा अभिवादन लगा ।

वृन्दावन में भक्त जन जब आपस में मिलते हैं तब एक दूसरे का अभिवादन "जय राधे" या "राधे राधे" शब्दों से करते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामानुजाचार्य की परंपरा, वल्लभ-परंपरा, हरिदास-परंपरा आदि कितने ही आचार्यों के मठ वृन्दावन में हैं। उनकी दार्शनिक व्याख्याएँ बदल सकती हैं। परन्तु वे सभी भगवान कृष्ण का यश गाने में समान हैं। किसी ने विनोदपूर्वक कहा है कि वृन्दावन में घर घर में मंदिर है घर घर में कुआँ है, घर घर में बंगाली हैं।

वृन्दावन के कल्पवृक्ष के कुसुम की सुगंध भक्तभ्रमरों को दूर दूर से आकर्षित करती रही है। ये आगत भक्तगण ही वृन्दावन की रौनक, चहलपहल बनाए हुए हैं। गोपाल लीलाएँ जिस पुण्यभूमि में हुईं उसके रज में लोटने की इच्छा भावुक भक्तों को हो जाती है। भागवत में अक्रूर गोकुल आकर वहाँ की धरती पर लोटते है ताकि कृष्ण के चरण स्पर्श से पवित्र भूमि का स्पर्श अक्रूर के शरीर को भी पवित्र करे। यहीं वृन्दावन की कुंज-गलियों में कान्हा बांसुरी की नई नई तान छेडते थे। भावविभोर गोपियाँ उनसे मिलने पहुंच जाती थीं उसके पहले नन्दलाल इसी भूमि पर ग्वालबालकों के साथ कितनी ही अद्भुत क्रीडाएँ करते थे। भक्तों को ग्वाल-बालक होने की इच्छा होना सहज ही है। रसखान ने इसी वृन्दावन के विषय में गाया था —

मानुस हौं तो वही गिरि को जो कियो
ब्रज छत्र पुरन्दर कान
जो पसु हौं तो बसेरो करौं मिली
गोकुल ग्वाल कदंब की डारन"।

वृन्दावन की विशेषता मठों मंदिरों की बहुलता है। दानी धनी लोगों ने बडी राशि खर्च करके अश्रम, धर्मशाला आदि स्थापित किये हैं। इनमें अपने अपने प्रिय नाम

अब तो माइक-लौड़ स्पीकर की कृपा से वृन्दावन के कोने-कोने में भजन-कीर्तन ज़ोर से गूँज उठते हैं।

से कक्ष बनवाने की व्यवस्था है। ऐसा ही फोगला अश्रम वृन्दावन शोध संस्थान के अधिकारियों ने हम लोगों के निवास केलिए चुना था। इन मठों, आश्रमों में हरिकीर्तन होता है। अधिकतर अखंड कीर्तन होता है। अब तो माइक-लौड़ स्पीकर की कृपा से वृन्दावन के कोने कोने में भजन-कीर्तन ज़ोर से गूंज उठते हैं। प्रातः काल हरि-कीर्तन सुनते हुए जगने का विशेष

वसर
ल से
ती हैं
ारत
की
ष्ट से
—गो
मा
हारी
वृन्दा
ष्ण क
ताया
लगना
र्थाटन
थानों
जाते
वाकुंज
शीवट
माने
नों क
बनों
थापि
न' न
चार
न आ
विभिन्न
ाट,
वृन्द
ोनेवा
रुषों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वसर यहाँ प्राप्त होता है। प्रातः ाल से मंदिरों की झाँकियाँ प्रारंभ ती हैं। दक्षिण में दीपाराधना आरती) का महत्व है तो उत्तर में ांकी का महत्व है। तीर्थाटकों की ष्टि से वृन्दावन के मंदिरों में प्रमुख —गोविंद देवजी का मंदिर, रंगजी ा मंदिर, गोपेश्वर मंदिर, बाँके हारी मंदिर आदि।

वृन्दावन के विभिन्न स्थानों को ष्ण की विभिन्न लीलाओं का स्थान ताया जाता है। यह रूढियों, ल्पनाओं पर निर्भर है। फिर भी ीर्थाटक अपनी श्रद्धा के कारण इन थानों के दर्शन-स्पर्शन से अभिभूत ो जाते हैं—ऐसे स्थानों में कालीदह, वाकुंज, चीरघाट, रासमंडल, शीवट आदि प्रसिद्ध हैं। किसी माने में वृन्दावन में पेड-पौधों के नों की बहुतायत थी, अब भवनों बनों को बहुत कम कर दिया है। थापि कई स्थान अब भी पुराने वन' नाम से प्रसिद्ध है। जैसे— ीचारणवन, कालियावन, बिहार-न आदि। यों जमुना नदी के विभिन्न घाट भी मशहूर हैं—महन्त ाट, सूर्यघाट, गोविन्दघाट आदि।

वृन्दावन में दान-पुण्य के भरोसे ीनेवाले विरागियों एवं वृद्ध स्त्री-ुरुषों की संख्या काफ़ी बडी है। ये मठों के अन्नदान पर और समय समय पर धनिकों द्वारा आयोजित होनेवाले भंडारे पर भोजन के लिए निर्भर करते हैं। भंडारे को अन्न-सत्र भी कहा जाता है। सिक्खों के गुरुद्वारे में यही भंडारा 'लंगर' कहलाता है। यह भक्ति व दानशीलता की परंपरा अब भी जारी है।

धर्म, दर्शन, भक्ति आदि का गहन अध्ययन करानेवाली कई संस्थाएँ वृन्दावन में स्थापित हुई हैं। इनके माध्यम से संस्कृत भाषा व साहित्य का अध्यापन भी होता है। उच्चतर अध्ययन संस्थानों में रमण रेती में बसा हुआ वृन्दावन - शोध-संस्थान अन्यतम है। इसकी समिति की अध्यक्षता उत्तर प्रदेश के संस्कृति विभाग के सचिव करते हैं। निदेशक हैं डा० कैलाशचंद भाटिया। ये प्रमुख भाषाविद, साहित्यकार और कुशल प्रशासक हैं। इन्हीं के नेतृत्व में भारत के भावपुरुष कृष्ण पर त्रिदिवसीय संगोष्ठी चली। (सक्षेप)

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काश तू अनागत रहता !

डा० एम षण्मुखन

(1)

मेरे नादान शिशु के मासूम चेहरे पर
अनजान क्षणों में झलकती
हँसी और रुदन की झुर्रियों को
निहारते रहते-
दिमाग में
गत-आगत की घटनायें
सूली सी अटक जाती हैं
और यह हविस
ज्वर ताप सी तपाती है—
काश तू अनागत रहता !

(2)

मैं साक्षी हूँ
किसी अभागे पल में
रोते बच्चे को सहलाती-दुलारती
माँ की उंगलियाँ
भयानक छुरी सी
नन्हे गले में धँस जाती हैं
और स्याह निशान की जगह
फंस गयी हैं
माँ की कटी उंगलियां ।

(3)

चौराहे पर भीड़ है
धकेलकर झांकता हूँ मैं
कोई नन्हा सिर
गेंद सा लुढ़क कर
सडक के उस पार पडा है
खून से लथपथ
चिथड़े की पहचान से उठी
मानस की चीख
अंतरिक्ष को न बेधकर
भीड़ के रव में कहीं
गुम हो जाती है !

(4)

सुबह को
चाय की घूंट के साथ
खबर पीती आंखों में
अटक जाता है
एक काला धब्बा
फिसाद में गायब
बेटे की तस्वीर पहचानने में
नाकाबिल
सिर धुनती है, मेरी इनसानियत !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(5)

होशी से जागरित
क पल के अंतराल में
खिड़की की अधखुली-पाटियों से
खते रहते हैं मेरे ऊंघते नयन-
ड़क से
नगिनत बूट्स
क निरीह को
सीटते ले जा रहे हैं—
नी बंद मुट्ठियों में
थकड़ियाँ झनझना रही हैं
तकाल ली गयीं आँखों के सुराखों में
र दिया गया है चूना ।
ीभ उखाड़े गए उसके मुंडित
सिर को
धे पर बिठाकर
ाज पथ से अनगिनत अनजान चेहरे
ाँकते जा रहे हैं ।
वतसिक्त नयनों को
निमीलित करने में असमर्थ
सायास पलकों को
मिट्टी से रौंदता रहता है—
मेरा पितृत्व ।

(6)

नवागत शिशु को देखते रहते
मेरे दिमाग में
गत आगत की घटनायें
कील सी अटक जाती हैं
और यह हविस आंधी सी
उमड़ आती है—
काश, यह कितना अच्छा होता
तेरा जन्म नहीं हुआ होता !

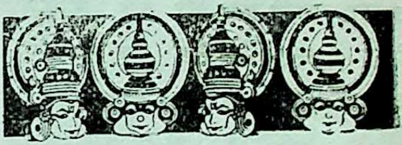

अन्तर राष्ट्रीय हवाई अड्डों पर सूचना हिन्दी में

देश के चारों अन्तर राष्ट्रीय हवाई अड्डों पर कुछ ही महीनों में क्लोज सर्किट टी. वी. पर सूचनाएँ हिन्दी में उपलब्ध कराई जाएगी । इन हवाई अड्डों पर लगे क्लोज सर्किट टी. वी. पर शीघ्र ही यात्रियों के लिए सूचनाओं का प्रदर्शन अंग्रेज़ी के साथ-साथ हिन्दी में भी शुरू हो जाएगा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलयालम कहानी

ईश्वर नहीं है

मूल: मलयाट्टूर रामकृष्णन

अनुवाद: के. राधाकृष्णन अयिरूर

यहाँ की ब्राहमण टोली का गप्पी वैत्तीश्वर और झुका हुआ शरीर वाला पादरी कुछ भी कहे, लेकिन मेरा पक्का विश्वास यह है कि अमृतनाथ अय्यर ज़रूर स्वर्ग गये हैं।

क्या वह स्वर्ग नहीं जा सकते ? मेरी जान पहचान के बहुत से लोगों से सबसे भले आदमी थे अमृतनाथ अय्यर उनमें दया थी करुणा थी।

पहली बार जब उनसे मेरी मुलाकात हुई तब उनकी उम्र करीब चवालीस साल की थी। कसरत करके शरीर गठीला बना लिया था, मोटे टूथ ब्रश जैसी मूछें थी, कोई साधारण 'अय्यर' नहीं थे वे। वेद पंडित गोविन्दशास्त्री के बेटे तथा

क्या वह स्वर्ग नहीं जा सकते? मेरी जान पहचान के बहुत से लोगों से सबसे भले आदमी थे अमृतनाथ अय्यर। उनमें दया थी, करुणा थी।

रूढी ब्राहमण थे वे। लेकिन थे वे पक्के बदमाश।

बदमाश शब्द की व्याख्या करना ज़रूरी है।

उसका मतलब सिर्फ यही है कि अमृतनाथ अय्यर वहाँ के मुनिसिपा- लिटी के चेयरमैन थे ओर थे एक नामी क्रिमिनल वकील। अगर उन्हें कोई स्त्री अच्छी लगती थी तो वे किसी भी तरह अपनी लालसा पूरी करते थे।

पहली मुलाकात के समय अय्य- सिर पर एक तौलिया लपेटे मका- के सामने की गली में खडे थे। पा- में विनम्र भाव से एक हरिज- मज़दूर खडा था। लगता था व- स्वामी (अय्यर ब्राह्मणों को केरल

अगर उन्हें कोई स्त्री अच्छी लगती थी तो वे किसी भी तरह अपनी लालसा पूरी करते थे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'स्वामी' नाम से संबोधन करते है) का काश्तकार या उन पर निर्भर आदमी था। उसके हाथ में एक बोतल अरक था।

अंधेरा छा गया था।

अमृतनाथ अय्यर ने गौर से मेरी ओर देखा।

"तुम.....?"

मैं ने अंदाज़ लगाया कि सवाल करनेवाला आदमी ही अमृतनाथ अय्यर है। उस प्रश्न का एक लंबा जवाब मैं ने दिया। मैंने कहा कि मैं ने आपको चिट्ठी भेजी थी, कि मैं आप के मामा के बेटे का दूर का रिश्तेदार हूँ, मैं ने वकालत की परीक्षा पास की है, मैं आपका जूनियर बनकर प्रैक्टीस करना चाहता हूँ।

अमृतनाथ अय्यर ने एक लंबी हुँकार भरी जो अनुमति सूचक थी।

उसके बाद सेवक की ओर हाथ बढ़ाया। बोतल छीन ली। पानी के समान एक ही सांस में बोतल का सारा अरक उन्होंने पी लिया।

इसके बाद मेरे कंधे पर हौले से हाथ रखते हुए कहा– "चलो!"

मैं उनके पीछे पीछे गया।

उनका मकान बडा था।

विस्तृत आंगन के एक ओर आफीस के रूप में एक अलग कोठरी थी।

"शंकर, ओ शंकर!" अमृतनाथ अय्यर ने पुकारा।

उनका गुमाश्ता शंकर सामने आया।

"सुनो शंकर, यह आदमी कल से मेरा जूनियर होगा। दूसरे जूनियर वकीलों से इसका परिचय कराना। हम लोगों के पास सिविल और क्रिमिनल जितने केस हैं सीखने केलिये इसको दे देना।"

मैं विनम्र भाव से खडा था। तब उन्होंने एक सवाल किया जिसका अर्थ मैं समझ नहीं पाया। उन्होंने पूछा था– "क्या तुमने जनेऊ पहना है?"

"अभी नहीं है" मैं ने जवाब दिया।

"कभी कभी पहनते होगे, क्यों?"

इस सवाल का मैं ने कोई जवाब नहीं दिया।

"जनेऊ उतारने का मंत्र तुमको याद है?"

मैं असमंजस में पड गया।

"पूछा याद है कि नहीं!"

मैं दिक्कत में पड गया। मंत्र के एक हिस्से को बोलने की कोशिश की मैं ने..... 'उपवीतं भिन्नतंतुम जीर्णम कश्मल दूषित......।

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं दिक्कत में पड गया । मंत्र के एक हिस्से को बोलने की कोशिश की मैं ने...'उपवीतं भिन्नततुम जीर्णम कश्मल दूषित...'

'हाँ, थोडा सा आता है'' उनकी आवाज़ ऊँची थी । ''अरे, सुनो, मैं शराब पीता हूँ । लोग तुमसे कहे, कि मैं बदमाश हूँ । यह सच है, मैं ज़रूर बदमाश हूँ । लेकिन मैं इस बात को भूला नहीं कि मैं 'गोविन्द शास्त्रीजी' का बेटा हूँ । मैं ने अपना जनेऊ नष्ट नहीं किया है । दोपहर की पूजा में कभी कभी बाधा पड जाती है । लेकिन मैं प्रातसंध्या वन्दन और सयंसंध्या वन्दन रोज करता हूँ । तुम तो ये सब नहीं करते हो ! सुना है कि तुम साम्यवादी हो ।''

उनके स्वर में गुंजन और ज़रा सी अस्पष्टता थी । मेरी समझ में नहीं आया कि उन्होंने ऐसा क्यों कहा ।

ठीक इसी वक्त पाँच छ: साल की एक लड़की मकान के अन्दर से दौडती हुई बाहर आयी । देखने में बहुत सुन्दर थी-उसका नाम था माला । अमृतनाथ अय्यर ने उसको गोदी में ले लिया और बहुत प्यार-दुलार किया ।

जूनियर वकील बनने के बाद अमृतनाथ अय्यर के घर में मेरा रोज आना जाना शुरू हुआ । अन्य जूनियर वकीलों से मैं ने स्वामी की कुछ पारिवारिक बातें जान ली । अमृनाथ अय्यर की पत्नी मर चुकी है । एक बेटा है जो बंबई में कंपनी एक्सीक्यूटीव के पद पर काम कर रहा है । वहाँ चहलकदमी करनेवाली छोटी लडकी है न, वह कौन है? वह एक अनाथ लडकी है । उसके पालन पोषण की जिम्मेदारी स्वामी ने ली है । ऐसा भी सुना है कि किसी स्त्री से उत्पन्न उन्हीं की लडकी है वह । इस तरह बहुत कुछ मैं ने सुना ।

चंद महीनों के बाद मुझे एक नौकरी मिली । मैं ने अमृतनाथ अय्यर से बिदा ली । नौकरी के चाल चलन के अनुसार मुझे चलना था, इसलिये करीब आठ साल के बाद ही हमारी पुन: मुलाकात हो पायी । वह भी एक बिलकुल अप्रत्याशित घटना थी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब मिला तो अमृतनाथ अय्यर ने मेरा हालचाल पूछा। उसके बाद बम फेंकने जैसे भाव से अमृतनाथ अय्यर बोला –"ऑल हिन्दू गोडस आर फॉल्स! क्रिस्त्यानिटी ईस द ओनली ट्रू रिलिजियन!" (सभी हिन्दू देवता झूठे हैं। एक ही सच्चा धर्म है, जो ईसाई धर्म है।)

उनकी आंखें कमरे की दीवार की ओर थी। डाक द्वारा उन्होंने बाइबिल पढ ली था। डाक द्वारा बहुत सारे देशों से बाइबिल की परीक्षा पास करके उपाधियाँ पा चुके थे। उपाधियों को फ्रेम कराके दीवार पर टाँग रखा था।

"ऑल हिन्दू गोडस आर फाल्स! क्रिस्त्यानिटी ईस द ओनली ट्रू रिलिजियन!"

"ओ, माला" स्वामी ने पुकारा।

माला आ गयी तो स्वामी पूछ बैठा—"इसकी याद है न?"

माला कॉफी लायी। कॉफी पीने के बाद मैं वहाँ से चल दिया।

हिन्दू देवताओं के बारे में अमृतनाथ अय्यर ने और बहुतों से अपशब्द कह दिये होंगे। यह बात गप्पी वैत्तीश्वर तक पहुँच गई। उसने और ब्राह्मण समाज के अन्य लोगों ने अमृतनाथ अय्यर को धर्मभ्रष्ट समझकर समाज से निकाल दिया।

चार पाँच साल बीत गये।

अमृतनाथ अय्यर के पैर में 'गेंग्रीन' की बीमारी हुई। कमर के नीचे से एक पैर काट देना पडा। खबर मिली तो मैं उनसे मिलने गया। व्हील चेयर और खाट में जिन्दगी बिताने को बाध्य बन गये थे अमृतनाथ अय्यर। असहाय स्थिति में पडे उस आदमी को सिर्फ माला का सामीप्य ही थोडी खुशी दे रहा था।

अमृतनाथ अय्यर ने मुझसे कहा- मेरे मरने का समय अभी नहीं हुआ। माला की शादी करानी है। उसके एक बच्चे को देखने की मेरी बहुत इच्छा है। उसके बाद मरने को मैं तैयार हूँ। मरने के बाद मुझे एक ईसाई के समान दफन करना। एक कैथोलिक के समान। थोडा रुकने के बाद उन्होंने पूछा—"ब्रोलो, विल यू गिव मी ए क्रिस्त्यन बरियल?"

उन्हें क्या जवाब दूँ, इसी विचार में पड गया मैं। मरने के बाद अपने शरीर का कैसे अन्तिम संस्कार हो, उस के बारे में फैसला करने का अधिकार अमृतनाथ अय्यर को है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैथोलिक धर्म अपनाने के बाद ही उनको कैथोलिक के समान चर्च में दफन किया जा सकेगा। लगता है उसका इंतजाम वे ठीक वक्त पर करगे। लेकिन अनके अंतिम संस्कार का दायित्व मैं कैसे ले सकता हूँ? बंबई में उनका जो बेटा है उसी को लेना चाहिए यह दायित्व।

उसके बारे में मैंने उन्हें बताया तो अमृतनाथ अय्यर मुस्कराये। "मेरा बेटा पक्का ब्राह्मण है। वह मुझे एक ईसाई के समान दफन नहीं करायेगा। यह भी मालूम हो गया कि तुम भी मेरा साथ नहीं दोगे। खैर, देखते है क्या होता है।"

करीब दो साल पहले मुझे अप्रैल मास में अमृतनाथ अय्यर की एक चिट्ठी मिली। लिखा था कि मुझसे मिलने की इच्छा है।

मैं उनके घर गया।

इस बार अमृतनाथ अय्यर पूरी तरह टूट चुके थे। पूरी तरह हार चुके थे।

उनका स्वस्थ पैर बहुत पतला हो गया था। पैर का रंग और काला हो गया था। चलने फिरने की ताकत भी पैर में नहीं रह गयी थी। अमृतनाथ अय्यर खाट पर बैठे हुए थे। लेकिन सच में क्या उसको बैठना

एक के ऊपर एक करके तीन तकिये रखे हुए थे। उस पर चिपक कर आगे की तरफ झुककर बैठे हुए अय्यर कमर तक जिन्दा एक आदमी थे।

कहा जा सकता है? एक के ऊपर एक करके तीन तकिये रखे हुए थे। उस पर चिपक कर आगे की तरफ झुककर बैठे हुए अय्यर कमर तक जिन्दा एक आदमी थे।

"तुम आ गये? ठीक है, मैं जानता था कि तुम ज़रूर आओगे।" उन्होंने कहा।

मैंने चारों ओर देखा। यहाँ और कुछ बदलाव भी आ गया है क्या? मेरी नजर के साथ साथ उनकी नजर भी घूम रही थी।

"तुम क्या देख रहे हो? यही कि दीवार खाली है? मैंने बाईबिल की उपाधियाँ सब फेंक दी। लोग कहते हैं कि क्रैस्ट करुणामय है। उसने मेरी माला को मार डाला! तुम जानते हो, उसे मारा! मैंने सोचा था कि हिन्दू ईश्वर सब झूठे है, इसलिये क्राइस्ट की शरण ली थी। लेकिन पता चला कि वह भी झूठा है। द सन ऑफ गोंड ईज़ फॉल्स! नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द सन ऑफ़ गोंड ईज़ फॉल्स ! नहीं तो उसने मेरी माला को क्यों मार डाला ?"

तो उसने मेरी माला को क्यों मार डाला ?"

क्या करना है, क्या बोलना है इसी विचार में चिंतित होकर मैं उनके खाट के पास अकेला खडा था। अचानक अमृतनाथ अय्यर चिल्ला उठे—"अरे, ईश्वर नहीं है ! सब झूठ है। टोटली फॉल्स। अब मुझे कोई क्रिया कर्म की ज़रूरत नहीं है। मंत्र भी नहीं चाहिये, दफन भी नहीं चाहिये। मेरे शव को सडक पर फेंकने से हो जायेगा। यहाँ की मुनिसिपालिटी को प्रदूषण का ख्याल है, वे मेरे शव की ज़रूर कोई व्यवस्था करेंगे।"

धीमे स्वर में उन्होंने कहा—"सिर्फ यही बात कहने केलिये तुमको बुलाया था।"

सांत्वना देने वाले कोई शब्द मैं ने नहीं कहे।

माला की मौत के बारे में, उसे क्या हुआ ? कैसे मरी, ये सब पूछा नहीं। हालाँकि मुझे लगा कि उसकी मृत्यु ने उनको बिलकुल शिथिल बना दिया था।

जब आगे की ओर झुककर तकिये के ढेर पर चिपककर अपने नास्तिकवाद की घोषणा अमृतनाथ अय्यर कर रहे थे, तो मैं बाहर निकल आया।

अमृतनाथ अय्यर की मृत्यु की खबर दो हफ्ता पहले मैं ने अखबार में पढी।

मृत्यु के समय बंबई में काम करने वाला बेटा उनके पास था।

तब... ....

तब किसी ने अमृतनाथ अय्यर के शव को रास्ते पर नहीं फेंका होगा।

ब्राह्मणों की क्रियाविधि के अनुसार ही उनके पुत्र ने पिता का अंतिम संस्कार किया होगा ... गृहयज्ञ आदि क्रिया कर्म किया होगा।

अमृतनाथ अय्यर की मृत्यु के बाद गुमाश्ते शंकर (जिसको बहुत दिन से मैं भूल गया था) ने मुझे एक चिट्ठी लिखी। उसमें लिखा था कि गप्पी वैत्तीश्वर और स्वामी को ईसाई बनाने की कोशिश जो पादरी ने की थी। उसने यह भी लिखा था कि अमृत स्वामी ज़रूर नरक में जायेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं ऐसा नही होगा।

मेरा विश्वास यही है कि अमृतनाथ अय्यर जरूर स्वर्ग गये हैं।

अगर स्वर्ग है तो।

ऐसा सोचना व्यर्थ नहीं है। वह भला आदमी था।

अमृतनाथ अय्यर की एक चिट्ठी कल मुझे मिली। मृत्यु से पहले लिखी थी। किसी ने (जो भी हो, उसको धन्यवाद!) वह मेरे नाम से भेजी थी। देरी से फिर भी सही!

खत छोटा है। उसका सारांश दे रहा हूँ।

मैंने सोचा था कि माला की मृत्यु के बारे में तुम पूछोगे। मेरी इच्छा थी कि तुम पूछो। लेकिन जब मैं सिर नीचा करके रो रहा था तो तुम भाग निकले। पहली मुलाकात के समय ही मैं ने तुम से कहा था कि मैं एक बदमाश हूँ। कुछ लोगों का विश्वास यही है कि माला मेरी एक भूल की सन्तान हैं। तुम्हें मैं सच्चाई कह देता हूँ। बहुत साल पहले हमीद नामक एक मुसलमान की वकालत मैं ने की थी। उस पर हत्या का अभियोग लगा था। लेकिन मैं उसको निरपराधी नहीं साबित कर पाया। मैं उसको नहीं बचा पाया। उसकी बेटी है माला। उसकी अपील तथा दया अरजी भी स्वीकृत नहीं हुई। तत्कालीन गृह मंत्री की कृपा से एक दिन केलिये पेरौल में बाहर आने की अनुमति उसको मिली। उस दिन उसने अपनी बेटी को मुझे सौंपा – पालन करने के लिये। वही बच्ची है माला। एक पिता का प्यार देकर मैं ने उसे बडा किया। जितनी शिक्षा देनी जरूरी थी वह भी मैं ने उसको दी। मैं ने उसको जात पाँत या धर्म की शिक्षा नहीं दी। लेकिन मुझे सन्देह है कि मेरे साथ उस पर भी ईसाई धर्म का थोडा प्रभाव पडा है। आज यह सन्देह बिना वजह का एक मानसिक व्यापार ही है। खैर, माला को एक समर्थ वकील से प्यार हो गया। मेरा एक जूनियर था वह। लेकिन ब्राह्मण धर्मवाला था। मैं ने इसे अपराध नहीं समझा। न हमीद के धरवालों ने। विरोध करने केलिये जो सामने आये, वे थे मरे हुए हमीद के घरवाले की ओर मुडकर भी न देखनेवाले उसके मुसलमान पड़ोसी, ब्राह्मण समाज के भोजनप्रिय लोग और टेढा स्वभाव वाला वह पादरी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या, माला को एक मुसलमान पति नहीं मिल सकता है ?

माला का वर ब्राह्मण युवक ही होना चाहिये ।

यहाँ ईसाई लडकों की कोई कमी नहीं ।

संक्षेप में कहता हूँ । इस प्रकार के विरोध का सामना करना जब दिक्कत बन गया तो माला ने आत्महत्या कर ली ।

अमृतनाथ अय्यर की श्रद्धांजली में मेरी आँख से आँसू की बूँदें टपक पड़ीं ।

उन्हें क्राईस्ट को ठुकराने की प्रेरणा दी होगी माला की मृत्यु ने ।

लेकिन वेद पंडित गोविन्द शास्त्री के बेटे अमृतनाथ अय्यर को सभी हिन्दू देवताओं की निन्दा करने की क्या वजह थी ?

मुझे मालूम नहीं ।

110272

20 हजार अध्यापकों को योग प्रशिक्षण देने का कार्यक्रम

शिक्षा और संस्कृति राज्य मंत्री श्री. ललितेश्वर प्रसाद शाही ने योग को महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि सभी स्कूलों में योग शिक्षा को शामिल किया जाना चाहिए । उन्होंने बताया कि उनके मंत्रालय ने इसके लिए उचित कार्यक्रम तैयार किये हैं । इन कार्यक्रमों के अन्तर्गत स्कूलों में करीब 20 हजार अध्यापकों को योग प्रशिक्षण दिया जायेगा जिससे वे नियमित रूप से विद्यार्थियों को योग में प्रशिक्षण दे सकें । श्री. शाही ने योग पर यह बात पंडित शंभुनाथ द्वारा लिखित एक पुस्तक का विमोचन करते हुए 16 नवम्बर, 1988 को कही ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्रिका सम्बन्धी घोषणा पत्र

फार्म 4

1.	प्रकाशन स्थान	:	तिरुवनन्तपुरम
2.	प्रकाशन अवधि	:	मासिक
3.	मुद्रक का नाम	:	एम. के. वेलायुधन नायर
	क्या, भारत का नागरिक है	:	हाँ, भारतीय
	पता	:	मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम-695 014
4.	प्रकाशक का नाम	:	एम. के. वेलायुधन नायर
	क्या, भारत का नागरिक है	:	हाँ, भारतीय
	पता	:	मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा तिरुवनन्तपुरम-695 014
5.	संपादक का नाम	:	के. जी. बालकृष्ण पिल्लै
	क्या, भारत का नागरिक है	:	हाँ, भारतीय
	पता	:	के. जी. बालकृष्ण पिल्लै, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम-695 014
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों	}	केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम-695 014

मैं, एम. के. वेलायुधन नायर, एतद्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

ता० 1-3-1989

(ह०)

प्रकाशक के हस्ताक्षर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

110272

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri